Hindi Edition

OF

Pandit Ishwar Chandra Vidyasagar's

VYAKARAN KAUMUDI

PART II & III

(For Students of the I. A., B. A., and Matriculation Classes).

TRANSLATED AND EDITED

BY

N. C. CHATTERJEE, B. A.

Retired Head master

Shree Vishuddhananda Saraswati Vidyalaya, Calcutta

AND

Author of Hindi Upakramanika, Chanakya Shloka Sangraha,
Hindi Mankhik Ganit, Etc., Etc.

PUBLISHED BY

P. C. Dwadash Shreni & Co.,

Publishers and Book-sellers,

ALIGARH.

 1932. Price Re. 1-4.

PUBLISHED BY

MASTER HIRA LAL,

TRADING AS

P. C. Dwadash Shreni & Co.,

ALIGARH.

PRINTED BY

SETH PHOOL CHAND

At the Hira Lal Printing Works,

ALIGARH.

भूमिका ।

सम्वत् १९०८ (अं १८५१) मैं चिरस्मरणीय विद्यासागर कृत संस्कृत व्याकरणकी "उपक्रमणिका" बङ्गभाषामैं प्रकाशित हुई थी। सम्वत् १९१० (अं १८५३) मैं उनकी "व्याकरण-कौमुदी" प्रथम भाग तथा द्वितीय और तृतीय भाग दो खण्डोँ मैं प्रकाशित हुई। उसके दूसरे वर्ष अर्थात् सम्वत् १९११ (अं १८५४) मैं कौमुदीका चतुर्थ भाग प्रकाशित हुआ। पण्डित-प्रवर विद्यावारिधि ईश्वरचन्द्रजीकी इन पुस्तकोँको पढ़नेसे संस्कृत व्याकरणका इतना ज्ञान होजाता है जिससे संस्कृत काव्य, पुराण, धर्म्मशास्त्र, न्याय, दर्शनादि सभी सुगमतासे पढ़े और सीखे जा सकते हैं। इनके अध्ययनमैं साधारण बुद्धिके विद्यार्थियोँ को भी दो वर्ष से अधिक नहीँ लग सकता अङ्गरेज़ी विद्यालयोँ के छात्रोँ के लिये चार पाँच वर्ष बहुत हैं। देवभाषा संस्कृत सीखने के लिये पाणिनि, कलाप, सिद्धान्त कौमुदी, संक्षिप्तसार, सुपद्म, सारस्वत, मुग्धबोध, प्रयोगरत्नमाला प्रभृति कोई न कोई व्याकरण पढ़नेमैं कमसे कम दस वर्ष बिताना पड़ता है और तोभी इसमैं व्युत्पत्तिलाभ करना कठिन है। दयार्द्रहृदय विद्यासागरजीने कोमलमति विद्यार्थियोँ के कष्ट लाघव करनेके और उनको स्वल्प समयमैं सुगमताके साथ संस्कृत व्याकरण सिखलानेके अभिप्रायसे ही संस्कृत व्याकरण-समुद्रका मन्थन कर उपक्रमणिका और कौमुदी यह दो रत्न उत्पन्न किये हैं।

हिन्दी-भाषा-भाषी संस्कृत शिक्षार्थी बालकोँ के लिये और विशेषकर अङ्गरेज़ी स्कूल कॉलेज़ोँ मेँ पढ़नेवाले संस्कृत परीक्षार्थियोँ के लिये विद्यासागरजीकी यह पुस्तकेँ बहुत ही उपयोगी समझी जाती हैँ। किन्तु अब तक इनके जितने हिन्दी संस्करण निकले हैँ उनमेँ बहुत अभाव और त्रुटियाँ हैँ। अतएव इन विद्यार्थियोँ के उपकार के लिये वर्त्तमान समयके उपयोगी यह नया संस्करण निकाला गया है। इसमेँ विद्यासागरजी की पुस्तकोँ मेँ जो कुछ है सभी दिया गया है और इसके अतिरिक्त निम्नलिखित बातेँ हैँ :—

(१) संस्कृत सूत्र (जो कहीँ मूलमेँ और कहीँ पादटीकामेँ —यङन्त प्रकरणसे लेकर प्रायः सर्व्वत्र मूलमेँ—दिये गये हैँ)।

(२) धातुओँका अर्थ (भाषा तथा अङ्गरेज़ीमेँ) और साथ साथ तुमन्तका रूप।

(३) प्रत्येक गणके अन्तमेँ उस गणके अङ्गरेज़ी अर्थ तथा लट् और लङ्के प्र० पु० एकवचनके रूप सहित बहुत प्रचलित धातुएं।

(४) विद्यासागरजीकी पुस्तकमेँ जिन धातुओँ के रूप असम्पूर्ण थे उनके सम्पूर्ण रूप।

(५) अङ्गरेज़ीसे संस्कृत अनुवाद करनेके लिये अनुवादादर्श (*Translation model*) तथा अनुशीलनी Exercise— कितने हैँ सूचीपत्रसे ही जाने जा सकते हैँ।

(६) "अतिरिक्त"—जिसमेँ परस्मैपद-विधान, आत्मनेपद-

जितने विधान, कृत्-प्रकरण आदिके नियम जानने चाहियें किन्तु विद्यासागरजी की पुस्तकमें नहीं हैं वे सब दिये गये हैं।

(७) पाणिनि, मुग्धबोध, संक्षिप्तसार, कलाप आदि व्याकरणोंसे अवश्य ज्ञातव्य विषय और व्याकरणकी जटिल शङ्काओंके समाधान आदि—जो पादटीकाओं में दिये गये हैं।

(८) बहुतसे शब्द, धातु और पदोंके अंगरेज़ी प्रतिशब्द तथा वाक्यों के अंगरेजी अनुवाद।

(९) हितोपदेश, रघुवंश, कुमारसम्भव, शकुन्तला आदि प्रामाणिक संस्कृत ग्रन्थोंसे अतिरिक्त उदाहरण—जो प्रायः पादटीकाओंमें दिये गये हैं।

संस्कृत शिक्षार्थियोंके उपकारके लिये इस संस्करणको उनके उपयोगी बनानेके अभिप्रायसे मैंने यथेष्ट परिश्रम किया है। मुझे पूरा विश्वास है कि इस संस्करणसे उन्हें बड़ी सहायता मिलेगी। जिन जिन विषयोंकी उन्हें आवश्यकता होती है उनके लिये उन्हें भटकना नहीं पड़ेगा; एक ही पुस्तकसे उनकी आवश्यकता पूरी होजायगी। यदि इस संस्करणसे विद्यार्थियों का कुछ भी उपकार होगा तो मैं अपना परिश्रम सार्थक समझूँगा।

मेरी उपक्रमणिका पढ़नेपर कौमुदी प्रथम भाग पढ़नेकी आवश्यकता नहीं होती इसलिये मैंने कौमुदी प्रथम भागका हिन्दी संस्करण नहीं निकाला।

इस संस्करणको निर्म्माण करनेके लिये मुझे जिन ग्रन्थ-

कारोंकी पुस्तकोंकी तथा पण्डित महोदयोंकी सहायता लेन. पड़ी है, उन्हें मेरा हार्दिक धन्यवाद है। मैं उनसे अपनी आन्तरिक कृतज्ञता ज्ञापन करता हूँ। शुभमिति।

गाज़ीपुर,
सम्वत् १९८३। } श्रीनारायणचन्द्र देवशर्म्मा।

सूचीपत्र।

व्याकरण-कौमुदी—द्वितीय भाग।

॥ श्री ॥

व्याकरण-कौमुदी ।

द्वितीय भाग ।

तिङन्त-प्रकरण (Conjugation) ।

१ । क्रियावाचक प्रकृति को धातु कहते हैं । यथा—भू, स्था, गम्, दृश्, हस्, इत्यादि (१) । धातु के उत्तर दस विभक्तियाँ होती हैं । यथा—लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ्, लुट्, लृट्, लृङ्, आशीर्लिङ्, लिट्, लुङ् (२)। प्रत्येक विभक्ति के तीन पुरुष हैं; प्रथमपुरुष, मध्यमपुरुष, उत्तमपुरुष । अस्मद् शब्द से उत्तमपुरुष समझा जाता है, युष्मद् शब्द से मध्यमपुरुष और इन को छोड़कर सब शब्द प्रथमपुरुष हैं (३)। एक एक पुरुष में विभक्ति के तीन तीन वचन होते हैं; एकवचन, द्विवचन, बहुवचन ।

२ । सब विभक्तियाँ दो भागों में विभक्त हैं । प्रथम भाग को परस्मैपद कहते हैं, द्वितीय भाग को आत्मनेपद । प्रत्येक

---

(१) भूवादयो धातवः । (२) पाणिनि के मत से दस विभक्तियों के नाम ये हैं—लट्, लिट्, लुट्, लृट्, लेट्, लोट्, लङ्, लिङ्, लुङ्, लृङ् । लेट् विभक्ति का प्रयोग वेद में ही होता है, इसलिये दूसरे वैयाकरणों ने "लेट्" को छोड़ दिया और लिङ् विभक्ति को विधिलिङ् और आशीर्लिङ् इन स्वतन्त्र नामों में विभक्त कर विभक्तिकी संख्या दस ही रक्खी है। पाणिनिकी लट् प्रभृति प्रत्येक विभक्ति के आदि में "ल" है, इसलिये इन विभक्तियों को "ल" या "लकार" कहते हैं; जैसे— लट् लकार, लोट् लकार इत्यादि । प्रचलित प्रधान प्रधान व्याकरणों में लट् प्रभृति के नाम ये हैं :—

विभक्ति के अठारह रूप होते हैं; परस्मैपद में नव और आत्मने पद में नव; अतएव परस्मैपद में नब्बे और आत्मनेपद में नब्बे, सब मिलाकर विभक्तियों के रूप एक सौ अस्सी हैं। विभक्ति के ये सब प्रत्येक रूप भी विभक्ति के नाम से निर्दिष्ट हैं।

विभक्ति की आकृति।

लट्—वर्तमानकाल (Present tense)

परस्मैपद

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	ति (प्)	सि (प्)	मि (प्)
द्विवचन	तस्	थस्	वस्
बहुवचन	अन्ति	थ	मस्

पाणिनि, सुपद्म और संक्षिप्तसार	कलाप	मुग्धबोध
लट्	वर्त्तमान	की
विधिलिङ्	सप्तमी	खी
लोट्	पञ्चमी	गी
लङ्	ह्यस्तनी	घी
लुङ्	अद्यतनी	टी
लिट्	परोक्षा	ठी
लुट्	श्वस्तनी	डी
आशीर्लिङ्	आशीः	ढी
लृट्	भविष्यन्ती	ती
लृङ्	क्रियातिपत्ति	थी

(२) अर्थात्, अस्मद् शब्द के कर्तृपद अहम्, आवाम्, वयम् इन तीनों के साथ सम्बन्ध जताने के लिये जिन विभक्तियों का प्रयोग होता है उन्हें उत्तम पुरुष की विभक्ति, युष्मद शब्द के कर्तृपद त्वम्, युवाम्, यूयम् इन तीनों के साथ सम्बन्ध दिखलाने के लिये जिन विभक्तियों का प्रयोग होता

आत्मनेपद्

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	ते	से	ए
द्विवचन	आते	आथे	वहे
बहुवचन	अन्ते	ध्वे	महे

लोट्—अनुज्ञा (Imperative mood)

परस्मैपद्

एकवचन	तु(प्)	हि	आनि(प्)
द्विवचन	ताम्	तम्	आव(प्)
बहुवचन	अन्तु	त	आम(प्)

आत्मनेपद्

एकवचन	ताम्	स्व	ऐ(प्)
द्विवचन	आताम्	आथाम्	आवहै(प्)
बहुवचन	अन्ताम्	ध्वम्	आमहै(प्)

लङ्—भूतकाल (Imperfect or First preterite tense)

परस्मैपद्

एकवचन	द्(दिप्)	स्(सिप्)	अम्(प्)
द्विवचन	ताम्	तम्	व
बहुवचन	अन्	त	म

आत्मनेपद्

एकवचन	त	थास्	इ
द्विवचन	आताम	आथाम्	वहि
बहुवचन	अन्त	ध्वम्	महि

है उन्हें मध्यमपुरुष की विभक्ति और ये छः कर्तृपदों को छोड़कर दूसरे कर्तृ पदों से सम्बन्ध जताने के लिये जिन विभक्तियों का प्रयोग होता है उन्हें प्रथम पुरुष की विभक्ति कहते हैं।

विधिलिङ् (Potential mood)

परस्मैपद

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	यात्	यास्	याम्
द्विवचन	याताम्	यातम्	याव
बहुवचन	युस्	यात	याम

आत्मनेपद।

एकवचन	ईत	ईथास्	ईय
द्विवचन	ईयाताम्	ईयाथाम्	ईवहि
बहुवचन	ईरन्	ईध्वम्	ईमहि

लुट्—भविष्यत्काल

(Periphrastic or First future tense)

परस्मैपद

एकवचन	ता	तासि	तास्मि
द्विवचन	तारौ	तास्थस्	तास्वस्
बहुवचन	तारस्	तास्थ	तास्मस्

आत्मनेपद

एकवचन	ता	तासे	ताहे
द्विवचन	तारौ	तासाथे	तास्वहे
बहुवचन	तारस्	ताध्वे	तास्महे

लृट्—भविष्यत्काल (Second future tense)

परस्मैपद

एकवचन	स्यति	स्यसि	स्यामि
द्विवचन	स्यतस्	स्यथस्	स्यावस्
बहुवचन	स्यन्ति	स्यथ	स्यामस्

आत्मनेपद

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	स्यते	स्यसे	स्ये
द्विवचन	स्येते	स्येथे	स्यावहे
बहुवचन	स्यन्ते	स्यध्वे	स्यामहे

ऌङ् (Conditional mood)

परस्मैपद

एकवचन	स्यत्	स्यस्	स्यम्
द्विवचन	स्यताम्	स्यतम्	स्याव
बहुवचन	स्यन्	स्यत	स्याम

आत्मनेपद

एकवचन	स्यत	स्यथास्	स्ये
द्विवचन	स्येताम्	स्येथाम्	स्यावहि
बहुवचन	स्यन्त	स्यध्वम्	स्यामहि

आशीर्लिङ् (Benedictive mood)

परस्मैपद

एकवचन	यात्	यास्	यासम्
द्विवचन	यास्ताम्	यास्तम्	यास्व
बहुवचन	यासुस्	यास्त	यास्म

आत्मनेपद

एकवचन	सीष्ट	सीष्ठास्	सीय
द्विवचन	सीयास्ताम्	सीयास्थाम्	सीवहि
बहुवचन	सीरन्	सीध्वम्	सीमहि

लिट्—भूतकाल (Perfect or Second preterite tense).

परस्मैपद

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	अ (णप्)	थ (प्)	अ (णप्)
द्विवचन	अतुस्	अथुस्	व
बहुवचन	उस्	अ	म

आत्मनेपद

एकवचन	ए	से	ए
द्विवचन	आते	आथे	वहे
बहुवचन	इरे	ध्वे	महे

लुङ्—भूतकाल (Aorist or Third preterite tense)

परस्मैपद

एकवचन	द् (दि)	स् (सि)	अम्
द्विवचन	ताम्	तम्	व
बहुवचन	अन्	त	म

आत्मनेपद

एकवचन	त(न्)	थास्	इ
द्विवचन	आताम्	आथाम्	वहि
बहुवचन	अन्त	ध्वम्	महि (१)

लकारों का संक्षिप्त विवरण (अतिरिक्त)।

लट् प्रभृति दस लकारों में से लट्, लङ्, लिट्, लुङ्, लुट् और लृट् ये छः कालनिर्णायक (कालबोधक, Tense-forming) लकार हैं; और लोट्, विधिलिङ्, लृङ् तथा आशीर्लिङ् ये चार भावबोधक (Mood-forming) लकार हैं।

---

	(१) परस्मैपद।			आत्मनेपद।		
	प्र० पु०	म० पु०	उ० पु०	प्र० पु०	म० पु०	उ० पु०
एकवचन	तिप्	सिप्	मिप्	त	थास्	इट्
द्विवचन	तस्	थस्	वस्	आताम्	आथाम्	वहि
बहुवचन	झि	थ	मस	झ	ध्वम्	महिङ्

लट् से वर्त्तमान काल (Present tense) का बोध होता है। यथा, स गच्छति (वह जाता है, He goes ; वह जा रहा है, He is going)।

लङ्, लिट् और लुङ् से अतीत अर्थात् भूत काल (Past tense) का बोध होता है । यथा, सः अगच्छत्, जगाम, अगमत् (वह गया, He went; वह गया था, He went, He had gone; वह जा रहा था, He was going)।

अंगरेज़ी से संस्कृत अनुवाद करने में Present tense के लिये लट् का प्रयोग होता है; और Past tense के लिये लङ् लिट् अथवा लुङ् का प्रयोग होता है; और Future tense के लिये लृट् अथवा लुट् का प्रयोग होता है। अंगरेज़ी Imperative mood का अनुवाद करने में लोट् का प्रयोग होता है । Potential mood का अनुवाद साधारणतः विधिलिङ् से, Conditional mood का लृङ् से और Benedictive mood का आशीर्लिङ् से किया जाता है । उत्तमपुरुष में प्रायः लिट् का प्रयोग नहीं होता । लकारों के सम्बन्ध में विशेष विचार "लकारार्थ निर्णय" में देखो ।

धातु-विभाग (Classification of Verbs) ।

३ । संस्कृत के सब धातु दस श्रेणियों में विभक्त हैं। उन में से एक एक श्रेणी का नाम गण है । तुदादि (Sixth Conjugation), भ्वादि (First conjugation) दिवादि (Fourth conjugation), स्वादि (Fifth conjugation), क्र्यादि (Ninth conjugation), तनादि (Eighth conjugation), रुधादि (Seventh conjugation), अदादि (Second con-

---

पाणिनिने प्रथमतः यही अठारह विभक्तियों को निर्देश करके इन्हीं के स्थान में क्रम क्रम से एक सौ अस्सी विभक्तियाँ आदेश की हैं । बोपदेव आदि वैयाकरणों ने पाणिनि के अनुवर्त्ती न होकर एकही बार एक सौ अस्सी विभक्तियाँ बनाई हैं। प्रथम विभक्ति तिप् का आदि अक्षर ति और शेष विभक्ति महिङ् का अन्त्य अक्षर ङ, यही आदि और अन्त्य वर्ण लेकर वैयाकरण लोगों ने धातु-विभक्ति को तिङ् संज्ञा निर्दिष्ट की है । धातु के अन्त में तिङ् का योग होने से पद निष्पन्न होता है इसी हेतु उस पद को तिङन्त पद कहते हैं ।

jugation), ह्वादि (Third conjugation), चुरादि (Tenth conjugation ये दस गण हैं (१)

साधारण नियम (General rules)।

४। विभक्ति का अकार अथवा एकार परे रहने से पूर्ववर्ती अकार का लोप होता है (२) यथा, भव–अन्ति, भवन्ति; सेव-ए सेवे ।

५। विभक्ति का म अथवा व परे रहने से पूर्ववर्ती अकार के स्थान में आकार होता है (३) । यथा, भव-वस्, भवावः; भव-मस्, भवामः ।

६। अकार के परस्थित आते, आथे, आताम्, आथाम् इन कई एक विभक्तियों के आकार के स्थान में इकार होता है (४) । यथा, सेव-आते, सेवेते; सेव–आथे, सेवेथे; सेव–आताम्, सेवेताम्; सेव-आथाम्, सेवेथाम् ।

७। अकार के परस्थित विधिलिङ् के "युस्" के स्थानमें इयुस् और "याम्" के स्थान में इयम् होता है; तद्भिन्न समस्त या भाग के स्थान में इ होता है (५)। यथा, भव-युस्, भवेयुः; भव-याम्, भवेयम्; भव-यात्, भवेत्; भव-यातम्, भवेतम् ।

८। अकार के और उ, नु इन दोनों आगमों के परस्थित हि विभक्ति का लोप होता है (६)। यथा, भव-हि, भव; कुरु-हि, कुरु; शृणु-हि, शृणु। नु अन्य वर्ण के साथ संयुक्त रहने से हि विभक्ति का लोप नहीं होता। यथा, आप्नु-हि, आप्नुहि ।

---

(१) भ्वाद्यदादी जुहोत्यादिर्दिवादिः स्वादिरेव च ।
तुदादिश्च रुधादिश्च तनक्र्यादिचुरादयः ॥

(२) अतो गुणे (३) अतो दीर्घो यञि । (४) आतो ङितः । (५) अतो येयः । (६) अतो हेः । उतश्च प्रत्ययादसंयोगपूर्वात् ।

९। वर्ग के प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ वर्ण अथवा श्, ष्, स्, ह् इन सब वर्णों के परस्थित "हि" के स्थान में धि होता है (१)। यथा, वच्-हि, वग्धि ; विद्-हि, विद्धि इत्यादि ।

१०। अकार भिन्न वर्ण के परस्थित अन्त, अन्ताम्, अन्ते इन तीनों विभक्तियों के नकार का लोप होता है (२)। यथा, आस्-अन्त, आसत ; आस्-अन्ताम्, आसताम् ; आस्-अन्ते, आसते । धातु अभ्यस्त होने से अन्ति और अन्तु विभक्तियों के भी नकार का लोप हो जाता है। यथा, जुहु-अन्ति, जुह्वति ; जुहु-अन्तु, जुह्वतु ।

११। अभ्यस्त धातु (३) के परस्थित लङ् के "अन्" के स्थान में उस् होता है (४) और वही उस् आगे रहने से अन्त्य स्वर का गुण होता है। यथा, अजुहु-अन्, अजुहवुः ।

१२। लङ्, लुङ् और लृङ् विभक्ति परे रहने से धातु के आदि में अकार होता है (५)। यथा, अभवत्, अभूत, अभविष्यत् । मा और मास्म शब्द का योग रहने से अ नहीं होता। यथा, मा भवत्, मास्म भूत् ।

१३। लङ्, लुङ् और लृङ् विभक्तियों में धातु के आदिस्थित इ ई के स्थान में ऐ, उ ऊ के स्थान में औ, तथा ऋ के स्थान में आर् होता है (६)। यथा, इन्द्, ऐन्दीत् ; ईह् ऐहिष्ट ; उख्, औखीत् ; ऊह् औहिष्ट ; ऋच्छ् आर्च्छत् । मा और मास्म

---

(१) हुझल्भ्यो हेर्धि । (२) आत्मनेपदेष्वनतः । (३) जब धातु द्वित्व होता है तब उसे अभ्यस्त धातु कहते हैं। द्वित्व न होने पर भी जक्ष, जागृ, दरिद्रा, चकास्, शास्, दीधी और वेवी इन सात धातुओं की अभ्यस्त संज्ञा होती है । (४) सिजभ्यस्तविदिभ्यश्च । (५) लुङ्-लङ्-लृङ्क्ष्वडुदात्तः । (६) आडजादीनाम् । आटश्च ।

शब्द का योग रहने से नहीँ होता। यथा, मा ईहिष्ट, मास्म ऋच्छत्।

१४। व्यञ्जनवर्ण के परस्थित लङ् की द्, स् इन दोनोँ विभक्तियोँ का लोप होता है (१)। यथा, अवेद्-द्, अवेत्; अवेद्-स् अवेत्।

१५। स्वरवर्ण परे रहने से धातु के अन्तस्थित इ ई के स्थान मेँ इय् और उ ऊ के स्थान मेँ उव् होता है (२)। यथा, अधि-इ-अते अधीयते; स्तु-अन्ति, स्तुवन्ति; ब्रू-अन्ति, ब्रुवन्ति।

१६। यदि धातु एक से अधिक स्वरविशिष्ट हो तो (३) इ ई के स्थान मेँ य् होता है (४)। यथा चिकि-इरे चिक्यिरे; दीधी-ईत, दिध्यीत; निनी–इरे, निन्यिरे।

१७। असमान स्वरवर्ण परे रहने से अभ्यस्त धातु के पूर्व-भागस्थित इ ई के स्थान मेँ इय् और उ ऊ के स्थानमेँ उव् होता है। यथा, इ-आय, इयाव; उ-ओष, उवोष (५)।

१८। च्, छ्, ज्, श्, ष्, ह्, घ् इन अक्षरोँ के परे स रहने से, दोनोँ मिलकर क्ष् होता है (६)। यथा, वच्–स्यति, वक्ष्यति; प्रछ्–स्यति, प्रक्ष्यति; यज्–स्यति, यक्ष्यति इत्यादि।

---

(१) संयोगान्तस्य लोपः। (२) अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ। गुण और वृद्धि की सम्भावना रहने से नहीँ होता। यथा, जिगि-इथ, जिगयिथ; जिगि-अ, जिगाय; निनी-इथ, निनयिथ; निनी-अ, निनाय। (३) अभ्यस्त करके एक से अधिक स्वर विशिष्ट होने पर भी होता है। (४) एरनेकाचोऽसंयोगपूर्व्वस्य। किन्तु "अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ" इस सूत्र के अनुसार इकार और ईकार संयुक्त वर्णोँ में मिले रहने से इय् होता है। यथा, चिक्षि-अतुः, चिक्षियतुः; चिक्री-अतुः, चिक्रियतुः। (५) समानस्वर परे रहने से नहीँ होता। यथा, उ-उषतुः, ऊषतुः। (६) व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः। झलाँ जशोऽन्ते। चोः कुः। षढोः कः सि। ष्टुना ष्टुः।

१९। छ् अथवा श् के परे त् रहने से दोनों मिलकर ष्ट् और थ् रहने से दोनों मिलकर ष्ठ् होता है (१)। यथा, प्रछ्-ता, प्रष्टा; द्रश्-ता, द्रष्टा; पप्रछ्-थ, पप्रष्ठ; दद्रश्-थ, दद्रष्ठ।

२०। छ्, श्, ष् इन तीनों वर्णों के परे ध् रहने से छ्, श्, ष् के स्थान में ड् और ध् के स्थान में ढ् होता है (१)। यथा, अप्रछ्-ध्वम्, अप्रड्ढ्वम्; अवेश्-ध्वम्, अवेड्ढ्वम्; अवेष्-ध्वम् अवेड्ढ्वम्।

२१। त् अथवा थ् परे रहने से च् और ज् के स्थान में क् होता है; और ध् परे रहने से ग् होता है (१)। यथा, मोच्-ता, मोक्ता; योज्-ता, योक्ता; वच्-धि, वग्धि इत्यादि।

२२। मृज्, सृज्, यज् इन तीनों धातुओं के जकार के परे त् रहने से दोनों मिलकर ष्ट् होता है, थ् रहने से ष्ठ् होता है (१); और यदि ध् रहे तो ज् के स्थान में ड् और ध् के स्थान में ढ् होता है। यथा, यज्-ता, यष्टा; असृज्-थाः, असृष्ठाः इत्यादि।

२३। त्, थ्, ध् परे रहने से हकार का लोप होता है और त्, थ्, ध् के स्थान में ढ् होता है और लुप्त हकार के पूर्वस्थित ह्रस्वस्वर (२) दीर्घ होता है (३)। (४) यथा, गुह्-तः गूढः; लिह्-तः, लीढः इत्यादि।

---

(१) व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः। झलां जशोऽन्ते। चोः कुः। षढोः कः सि। ष्टुना ष्टुः। (२) ऋकार भिन्न। यथा, दृह्-त, दृढः। गुण की सम्भावना रहने से भी नहीं होता। यथा, मिह्-ता, मेढा। (३) सहिवहोरोदवर्णस्य। सह् और वह् धातु के लुप्त हकार के पूर्ववर्ती अकार का ओकार होता है। यथा, सह्-ता, सोढा; वह्-ता, वोढा। (४) हो ढः। ढो ढे लोपः। ढ्लोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः।

२४। दह्, दिह्, दुह् आदि के हकार के परे त्, थ् अथवा ध् रहे तो दोनोँ मिलकर ग्ध् होता है (१)। यथा, दह्-तम्, दग्धम्; दिह्-तम्, दिग्धम्; दुह्-तम्, दुग्धम्; अदह्-थाः, अदग्धाः। (२)

२५। मुह् आदि के हकार के परे त्, थ् अथवा ध् रहने से दोनोँ मिलकर ग्ध् होता है; अथवा हकार का लोप होता है; और त्, थ्, ध् के स्थान मैं ढ् होता है और लुप्त हकार के पूर्व-स्थित ह्रस्वस्वर दीर्घ होता है। यथा, मुह्-तः मुग्धः, मूढः। (३)

२६। विभक्ति का स् अथवा ध् परे रहने से अथवा विभक्ति का लोप होने से, दह्, बुध् प्रभृति धातुओँ के आदि स्थित वर्ग के तृतीय वर्ण के स्थान मैं चतुर्थ वर्ण होता है (४)। यथा, दह्-स्यति, धक्ष्यति; अबुध्-साताम्, अभुत्साताम्।

२७। विभक्ति का ध् परे रहने से, स्, के स्थान मैं द् होता है, अथवा सकार का लोप होता है (५)। यथा, असेविस्-ध्वम्, असेविद्ध्वम्; असेविध्वम्।

२८। अ आ भिन्न स्वर के परवर्ती, लिट्, लुट्, आशीर्लिङ्

---

(१) दादेर्धातोर्घः। (२) नहो धः। नह् धातु के हकार के परे त् थ् अथवा ध् रहने से दोनोँ मिलकर द्ध् होता है। यथा, नह्-तम्, नद्धम्। (३) "वा द्रुहमुहष्णुहष्णिहाम्"। हो ढः। ढो ढे लोपः। ढ्लोपे पूर्व्वस्य दीर्घोऽणः। द्रुह्, स्नुह्, स्निह्, धातुओं का भी ऐसा ही है। यथा, द्रुह्-त द्रुग्धः, द्रूढः; स्निह्-त, स्निग्धः, स्नीढः। (४) एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्ध्वोः। दह् दिह्, प्रभृति दकारादि हकारान्त धातु, गाह् गुह् प्रभृति गकारादि हकारान्त धातु और जिन सब धातुओँ के आदि मैं वर्ग का तृतीय वर्ण और अन्त मैं वर्ग का चतुर्थ वर्ण रहता है उन सब धातुओँ के इसी नियम के अनुसार कार्य्य होते हैं। (५) धि च।

इन तीन विभक्तियों के ध् के स्थान में ढ् होता है (१)। यथा, लिट्—चकृ-ध्वे, चकृढ्वे; लुङ्—अकृस्-ध्वम्, अकृढ्वम्; आशीर्लिङ्—कृ-सीध्वम्, कृषीढ्वम्। य्, र्, ल्, व्, ह् इन पाँच व्यञ्जनवर्णों में मिले हुए इट् के परवर्ती होने पर विकल्प से होता है (२)। यथा, लिट्—शिशयि-ध्वे, शिशयिढ्वे; शिशयिध्वे; लुङ्—अशयि-ध्वम् अशयिढ्वम्; अशयिध्वम्; अशयिढ्ढ्वम्; आशीर्लिङ्—शयि-सीध्वम्, शयिषीढ्वम, शयिषीध्वम्।

२९। धकार के परे त् थ् अथवा ध् रहे तो दोनों मिलकर द्ध् होता है (३)। यथा, सिध्-तम्, सिद्धम्; विध्-तम्, विद्धम्।

३०। भकार के परे त्, थ् अथवा ध् रहने से दोनों मिलकर ब्ध् होता है (३)। यथा, आरभ्-तम्, आरब्धम्; लभ्-तम्, लब्धम् अलभ्-थाः, अलब्धाः; अलभ्-ध्वम्, अलब्ध्वम्।

३१। त्, थ् अथवा स् परे रहने से द् के स्थान में त् होता है (४)। यथा, वेद्-ता, वेत्ता; विद्-थ, वित्थ; छेद्-स्यति, छेत्स्यति।

३२। स् परे रहने से ध् के स्थान में त् और भ् के स्थानमें प् होता है (४)। यथा, सेध्-स्यति, सेत्स्यति; लभ्-स्यते, लप्स्यते।

३३। लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् भिन्न विभक्तियों का स् परे रहने से, धातु के अन्तस्थित स् के स्थान में त् होता है (५)। यथा, अवास्-सीत्, अवात्सीत्; वस्-स्यति, वत्स्यति।

३४। पद के अन्तस्थित र् और स् के स्थान में विसर्ग होता है (६)। यथा, भवतस्, भवतः; भवेयुस्, भवेयुः।

---

(१) इणः षीध्वं लुङ्लिटां धोऽङ्गात्। (२) विभाषेटः। (३) झषस्तथोर्धोऽधः। झलां जश् झशि। (४) खरि च। (५) सः स्यार्द्धधातुके। (६) ससजुषो रुः। खरवसानयोर्विसर्जनीयः।

३५। पद के अन्त में स्थित वर्ग के द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ वर्ण के स्थान में प्रथम वर्ण (१) होता है। यथा, अलेलिख् अलेलिक्; अभूद्, अभूत्; अभवद्, अभवत्; अरोरुध्, अरोरुत्।

३६। पद के अन्त में स्थित च् और ज् के स्थान में क् होता है (२)। यथा, अवच्, अवक्; अभुनज्, अभुनक्। (३)

३७। पद के अन्तस्थित छ्, श्, ष्, और ह् के स्थान में ट् और ड् होता है। यथा, प्राछ्, प्राट्, प्राड्; अवश्, अवट्, अवड्; अद्वेष्, अद्वेट्, अद्वेड्; अलेह्, अलेट् अलेड्।

३८। दकारादि धातुओं के पद के अन्तस्थित ह् के स्थान में क् होता है। यथा; अदोह्, अधोक्।

३९। एकवर्गीय तीन वर्ण एकत्र होने से, मध्यवर्ण का लोप होता है (४)। यथा, रुन्ध्-धि, रुन्धि।

४०। लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् के अतिरिक्त विभक्तियों में एकारान्त, ऐकारान्त और ओकारान्त धातु आकारान्त होते हैं (५)। यथा, धे-स्यति, धास्यति; गै-ता, गाता; सो-ता, साता।

---

(१) वावसाने। विकल्प से तृतीय वर्ण भी होता है। इस लिये अलेलिग्, अभूद्, अभवद्, अरोरुद् ऐसे पद भी होते हैं। (२) चोः कुः। परन्तु पद के अन्तस्थित मृज् धातु के ज् के स्थान में ट् होता है। (३) बहुतों के मत से च् ज् के स्थान में ग् भी होता है; इस लिये अवग्, अभुनग् ऐसे पद भी होते हैं। (४) झरो झरि सवर्णे। (५) आदेच उपदेशेऽशिति।

कर्त्तृवाच्य (Active voice) ।

कर्त्तृवाच्य में धातु तीन प्रकार के हैं; परस्मैपदी, आत्मनेपदी और उभयपदी । परस्मैपदी धातु के उत्तर परस्मैपद की विभक्ति, आत्मनेपदी धातु के उत्तर आत्मनेपद की विभक्ति और उभयपदी धातु के उत्तर दोनों पदों की विभक्तियाँ होती हैं।

धातु में उत्तमपुरुष की विभक्ति का योग होने से अस्मद् की क्रिया, मध्यमपुरुष की विभक्ति का योग होने से युष्मद् की क्रिया और प्रथमपुरुष की विभक्ति का योग होने से अस्मद्, युष्मद् भिन्न सब की क्रिया समझी जाती हैं (१) ।

कर्त्तृवाच्य के कर्त्तृपद में विभक्ति का जो वचन रहता है, क्रियापद में भी विभक्ति का वही वचन होता है; अर्थात् कर्त्तृपद में एकवचन की विभक्ति रहने से क्रियापद में भी एकवचन की विभक्ति होती है; कर्त्तृपद में द्विवचन की विभक्ति रहने से, क्रियापद में भी द्विवचन की विभक्ति होती है और कर्त्तृपद में बहुवचन की विभक्ति रहने से, क्रियापद में भी बहुवचन की विभक्ति होती है । कर्त्ता के लिङ्ग के कारण तिङन्त क्रिया का कुछ भी रूपान्तर नहीं होता ।

लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् इन चार विभक्तियों में गणभेद से धातु के रूप की विभिन्नता है; इस लिये इन चार विभक्तियों

(१) अर्थात् कर्त्तृवाच्य में अस्मद् शब्द का अहम् (I), आवाम् (We two) या वयम् (We) कर्त्ता होने से क्रिया में उत्तमपुरुष की विभक्ति होती है; युष्मद् शब्द का त्वम् (thou), युवाम् (you two) या यूयम् (you) कर्त्ता होने से क्रिया में मध्यम पुरुष की विभक्ति होती है; और इन सबों को छोड़ कर दूसरा कर्त्ता होने से क्रियामें प्रथमपुरुष की विभक्ति होती है । सर्वनाम भवत् शब्द का अर्थ "तुम" होने से भी यह युष्मद् शब्द से भिन्न है, इस लिये इसकी क्रिया में प्रथम पुरुष की विभक्ति होती है, मध्यम पुरुष की नहीं ।

में एक एक गण के धातु के रूप पृथक् पृथक् प्रदर्शित होते हैं। इनको छोड़ और सब विभक्तियों में गण भेद से रूप भेद नहीं हैं; इस लिये एक एक विभक्ति में सब गणों के धातुओं के रूप दिखाये जायँगे।

धातुरूप (Conjugation of Verbs)।

लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ्।

तुदादि (Sixth conjugation).

४१। "तुदादिभ्यः शः"। लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् इन चार विभक्तियों में तुदादिगणीय धातुओं के उत्तर अ होता है। अकार अन्त्य वर्ण में युक्त होता है।

स्पृश्-धातु (परस्मैपदी, सकर्मक) छूना to touch.

Infin.—स्प्रष्टुम्।

लट्

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	स्पृशति	स्पृशसि	स्पृशामि
द्विवचन	स्पृशतः	स्पृशथः	स्पृशावः
बहुवचन	स्पृशन्ति	स्पृशथ	स्पृशामः

लोट्

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	स्पृशतु	स्पृश	स्पृशानि
द्विवचन	स्पृशताम्	स्पृशतम्	स्पृशाव
बहुवचन	स्पृशन्तु	स्पृशत	स्पृशाम

लङ्

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	अस्पृशत्	अस्पृशः	अस्पृशम्
द्विवचन	अस्पृशताम्	अस्पृशतम्	अस्पृशाव
बहुवचन	अस्पृशन्	अस्पृशत	अस्पृशाम

विधिलिङ्

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	स्पृशेत्	स्पृशेः	स्पृशेय
द्विवचन	स्पृशेताम्	स्पृशेतम्	स्पृशेव
बहुवचन	स्पृशेयुः	स्पृशेत	स्पृशेम

विज्—धातु (१) (आत्मनेपदी, अकर्मक) डरना, to fear ; काँपना, To tremble, to shake.

Infin.—विजितुम्।

लट्

एकवचन	विजते	विजसे	विजे
द्विवचन	विजेते	विजेथे	विजावहे
बहुवचन	विजन्ते	विजध्वे	विजामहे

लोट्

एकवचन	विजताम्	विजस्व	विजै
द्विवचन	विजेताम्	विजेथाम्	विजावहै
बहुवचन	विजन्ताम्	विजध्वम्	विजामहै

लङ्

एकवचन	अविजत	अविजथाः	अविजे
द्विवचन	अविजेताम्	अविजेथाम्	अविजावहि
बहुवचन	अविजन्त	अविजध्वम्	अविजामहि

विधिलिङ्

एकवचन	विजेत	विजेथाः	विजेय
द्विवचन	विजेयाताम्	विजेयाथाम्	विजेवहि
बहुवचन	विजेरन्	विजेध्वम्	विजेमहि

(१) तुदादिगणीय विज्धातु का इन अर्थों में प्रयोग प्रायशः उत् उपसर्ग के साथ होता है। रुधादिगणीय विज् धातु का अर्थ यही है किन्तु यह परस्मैपदी है। यथा, विनक्ति।

तुद्-धातु (उभयपदी, सकर्मक) पीड़ा देना, To oppress, to inflict pain upon. Infin.—तोत्तुम।

लट्—परस्मैपद

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	तुदति	तुदसि	तुदामि
द्विवचन	तुदतः	तुदथः	तुदावः
बहुवचन	तुदन्ति	तुदथ	तुदामः

आत्मनेपद

एकवचन	तुदते	तुदसे	तुदे
द्विवचन	तुदेते	तुदेथे	तुदावहे
बहुवचन	तुदन्ते	तुदध्वे	तुदामहे

लोट्—परस्मैपद

एकवचन	तुदतु	तुद	तुदानि
द्विवचन	तुदताम्	तुदतम्	तुदाव
बहुवचन	तुतन्तु	तुदत	तुदाम

आत्मनेपद

एकवचन	तुदताम्	तुदस्व	तुदै
द्विवचन	तुदेताम्	तुदेथाम्	तुदावहै
बहुवचन	तुदन्ताम्	तुदध्वम्	तुदामहै

लङ्—परस्मैपद

एकवचन	अतुदत्	अतुदः	अतुदम्
द्विवचन	अतुदताम्	अतुदतम्	अतुदाव
बहुवचन	अतुदन्	अतुदत	अतुदाम

आत्मनेपद

एकवचन	अतुदत	अतुदथाः	अतुदे
द्विवचन	अतुदेताम्	अतुदेथाम्	अतुदावहि
बहुवचन	अतुदन्त	अतुदध्वम्	अतुदामहि

विधिलिङ्—परस्मैपद

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	तुदेत्	तुदेः	तुदेयम्
द्विवचन	तुदेताम्	तुदेतम्	तुदेव
बहुवचन	तुदेयुः	तुदेत	तुदेम

आत्मनेपद

एकवचन	तुदेत	तुदेथाः	तुदेय
द्विवचन	तुदेयाताम्	तुदेयाथाम्	तुदेवहि
बहुवचन	तुदेरन्	तुदेध्वम्	तुदेमहि

इष्, प्रच्छ्, मस्ज्, भ्रस्ज् धातु।

४२। लट् आदि चार विभक्तियों में इष् धातु के स्थान में इच्छ्, (१) प्रच्छ् धातु के स्थान में पृच्छ्, मस्ज् धातु के स्थान में मज्ज् और भ्रस्ज् धातु के स्थान में भृज्ज् होता है (२)।

इष्—धातु (परस्मैपदी, सकर्मक) इच्छा करना, To wish.

Infin.—एषितुम्।

लट्

एकवचन	इच्छति	इच्छसि	इच्छामि
द्विवचन	इच्छतः	इच्छथः	इच्छावः
बहुवचन	इच्छन्ति	इच्छथ	इच्छामः

लोट्

एकवचन	इच्छतु	इच्छ	इच्छानि
द्विवचन	इच्छताम्	इच्छतम्	इच्छाव
बहुवचन	इच्छन्तु	इच्छत	इच्छाम

(१) इषुगमियमां छः (इष्, गम्, यम् इन तीन धातुओं के अन्त्य वर्ण के स्थान में छ आदेश होता है)। (२) ग्रहिज्यावयिव्यधिवष्टिविचतिवृश्चति-पृच्छतिभृज्जतीनां ङिति च।

लङ्

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	ऐच्छत्	ऐच्छः	ऐच्छम्
द्विवचन	ऐच्छताम्	ऐच्छतम्	ऐच्छाव
बहुवचन	ऐच्छन्	ऐच्छत	ऐच्छाम

विधिलिङ्

एकवचन	इच्छेत्	इच्छेः	इच्छेयम्
द्विवचन	इच्छेताम्	इच्छेतम्	इच्छेव
बहुवचन	इच्छेयुः	इच्छेत	इच्छेम

प्रच्छ्-धातु (परस्मैपदी, सकर्मक) पूछना, To ask.
Infin.—प्रष्टुम् ।

लट्

एकवचन	पृच्छति	पृच्छसि	पृच्छामि
द्विवचन	पृच्छतः	पृच्छथः	पृच्छावः
बहुवचन	पृच्छन्ति	पृच्छथ	पृच्छामः

लोट्—पृच्छतु, पृच्छताम्, पृच्छन्तु; पृच्छ, पृच्छतम्, पृच्छत; पृच्छानि, पृच्छाव, पृच्छाम ।

लङ्—अपृच्छत, अपृच्छताम्, अपृच्छन्; अपृच्छः, अपृच्छतम्, अपृच्छत; अपृच्छम्, अपृच्छाव, अपृच्छाम ।

विधिलिङ्—पृच्छेत्, पृच्छेताम्, पृच्छेयुः; पृच्छेः, पृच्छेतम्, पृच्छेत; पृच्छेयम्, पृच्छेव, पृच्छेम ।

मस्ज्-धातु (परस्मैपदी, अकर्मक) डूबना, मग्न होना, To sink. Infin.—मङ्क्तुम् ।

लट्

एकवचन	मज्जति	मज्जसि	मज्जामि
द्विवचन	मज्जतः	मज्जथः	मज्जावः
बहुवचन	मज्जन्ति	मज्जथ	मज्जामः

लोट्—मज्जतु, मज्जताम्, मज्जन्तु; मज्ज, मज्जतम्, मज्जत; मज्जानि, मज्जाव, मज्जाम।

लङ्—अमज्जत्, अमज्जताम्, अमज्जन्; अमज्जः, अमज्जतम्, अमज्जत; अमज्जम्, अमज्जाव अमज्जाम।

विधिलिङ्—मज्जेत्, मज्जेताम्, मज्जेयुः; मज्जेः, मज्जेतम्, मज्जेत; मज्जेयम्, मज्जेव, मज्जेम।

भ्रस्ज्-धातु (उभयपदी, सकर्मक) भूँजना, To fry.

Infin.—भ्रष्टुम्।

लट्—परस्मैपद

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	भृज्जति	भृज्जसि	भृज्जामि
द्विवचन	भृज्जतः	भृज्जथः	भृज्जावः
बहुवचन	भृज्जन्ति	भृज्जथ	भृज्जामः

आत्मनेपद

एकवचन	भृज्जते	भृज्जसे	भृज्जे
द्विवचन	भृज्जेते	भृज्जेथे	भृज्जावहे
बहुवचन	भृज्जन्ते	भृज्जध्वे	भृज्जामहे

लोट् (प० पद)—भृज्जतु, भृज्जताम् भृज्जन्तु; भृज्ज, भृज्जतम्, भृज्जत; भृज्जानि, भृज्जाव, भृज्जाम।

आत्मनेपद—भृज्जताम्, भृज्जेताम्, भृज्जन्ताम्; भृज्जस्व, भृज्जेथाम्, भृज्जध्वम्; भृज्जै, भृज्जावहै, भृज्जामहै।

लङ् (प० पद)—अभृज्जत्, अभृज्जताम्, अभृज्जन्; अभृज्जः, अभृज्जतम्, अभृज्जत; अभृज्जम्, अभृज्जाव, अभृज्जाम।

आत्मनेपद—अभृज्जत, अभृज्जेताम्, अभृज्जन्त; अभृज्जथाः, अभृज्जेथाम्, अभृज्जध्वम्; अभृज्जे, अभृज्जावहि, अभृज्जामहि।

विधिलिङ् (प० पद)—भृज्जेत्, भृज्जेताम्, भृज्जेयुः; भृज्जेः, भृज्जेतम्, भृज्जेत; भृज्जेयम्, भृज्जेव, भृज्जेम।

आत्मनेपद—भृज्जेत, भृज्जेयाताम्, भृज्जेरन्; भृज्जेथाः, भृज्जेयाथाम्, भृज्जेध्वम्; भृज्जेय, भृज्जेवहि, भृज्जेमहि।

ऋकारान्त धातु।

४३। "रिङ्शयग्लिङ्क्षु"। लट् आदि चार विभक्तियों में ह्रस्व ऋकारान्त धातु के अन्तस्थित ऋ के स्थान में रिय् होता है।

मृ-धातु (आत्मनेपदी, अकर्मक) मरना, To die.

Infin.—मर्त्तुम्।

लट्

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	म्रियते	म्रियसे	म्रिये
द्विवचन	म्रियेते	म्रियेथे	म्रियावहे
बहुवचन	म्रियन्ते	म्रियध्वे	म्रियामहे

लोट्—म्रियताम्, म्रियेताम् म्रियन्ताम्; म्रियस्व, म्रियेथाम्, म्रियध्वम्; म्रियै, म्रियावहै, म्रियामहै।

लङ्—अम्रियत, अम्रियेताम्, अम्रियन्त; अम्रियथाः, अम्रियेथाम्, अम्रियध्वम्; अम्रिये, अम्रियावहि, अम्रियामहि।

विधिलिङ्—म्रियेत, म्रियेयाताम्, म्रियेरन्; म्रियेथाः, म्रियेयाथाम्, म्रियेध्वम्; म्रियेय, म्रियेवहि, म्रियेमहि।

ॠकारान्त धातु।

४४। "ॠत इद्धातोः"। लट् आदि चार विभक्तियों में दीर्घ ॠकारान्त धातु के अन्तस्थित ॠ के स्थानमें इर् होता है।

कॄ-धातु (परस्मैपदी, सकर्मक) फैलाना, To scatter.

Infin.—करितुम्।

लट्

एकवचन	किरति	किरसि	किरामि
द्विवचन	किरतः	किरथः	किरावः
बहुवचन	किरन्ति	किरथ	किरामः

लोट्—किरतु, किरताम्, किरन्तु; किर, किरतम्, किरत; किराणि, किराव, किराम।

लङ्—अकिरत, अकिरताम्, अकिरन्; अकिरः, अकिरतम्, अकिरत; अकिरम्, अकिराव, अकिराम।

विधिलिङ्—किरेत्, किरेताम्, किरेयुः; किरेः, किरेतम्, किरेत; किरेयम्, किरेव, किरेम।

मुचादि।

४५। "शे मुचादीनाम्"। नुम् स्यात् शे परे। लट् आदि चार विभक्तियों में मुच् धातु के स्थान में मुञ्च्, सिच् धातु के स्थान में सिञ्च्, लिप् धातु के स्थान में लिम्प्, लुप् धातु के स्थान में लुम्प्, कृत् धातु के स्थान में कृन्त्, विद् धातु के स्थान में विन्द्, खिद् धातु के स्थान में खिन्द् और पिश् धातु के स्थान में पिंश् होता है। इनमें से खिद्, कृत् और पिश् परस्मैपदी हैं और अवशिष्ट सब उभयपदी होते हैं।

मुच्-धातु (उभयपदी, सकर्मक) छोड़ना, To release, to give up, to set free, to discharge.

Infin.—मोक्तुम्।

लट्—परस्मैपद

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	मुञ्चति	मुञ्चसि	मुञ्चामि
द्विवचन	मुञ्चतः	मुञ्चथः	मुञ्चावः
बहुवचन	मुञ्चन्ति	मुञ्चथ	मुञ्चामः

आत्मनेपद

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	मुञ्चते	मुञ्चसे	मुञ्चे
द्विवचन	मुञ्चेते	मुञ्चेथे	मुञ्चावहे
बहुवचन	मुञ्चन्ते	मुञ्चध्वे	मुञ्चामहे

लोट् (प० पद)—मुञ्चतु, मुञ्चताम्, मुञ्चन्तु; मुञ्च, मुञ्चतम्, मुञ्चत; मुञ्चानि, मुञ्चाव, मुञ्चाम।

आ० पद—मुञ्चताम्, मुञ्चेताम्, मुञ्चन्ताम्; मुञ्चस्व, मुञ्चेथाम्, मुञ्चध्वम्; मुञ्चै, मुञ्चावहै, मुञ्चामहै।

लङ् (प० पद)—अमुञ्चत्, अमुञ्चताम्, अमुञ्चन्; अमुञ्चः, अमुञ्चतम्, अमुञ्चत; अमुञ्चम्, अमुञ्चाव, अमुञ्चाम।

आ० पद—अमुञ्चत, अमुञ्चेताम्, अमुञ्चन्त; अमुञ्चथाः, अमुञ्चेथाम्, अमुञ्चध्वम्; अमुञ्चे, अमुञ्चावहि, अमुञ्चामहि।

विधिलिङ् (प० पद)—मुञ्चेत्, मुञ्चेताम्, मुञ्चेयुः; मुञ्चेः, मुञ्चेतम्, मुञ्चेत; मुञ्चेयम्, मुञ्चेव, मुञ्चेम।

आ० पद—मुञ्चेत, मुञ्चेयाताम्, मुञ्चेरन्; मुञ्चेथाः, मुञ्चेयाथाम्, मुञ्चेध्वम्; मुञ्चेय, मुञ्चेवहि, मुञ्चेमहि।

प्रचलित तुदादि गणीय धातु।

परस्मैपदी

इष्—to wish. इच्छति। ऐच्छत्।

उज्झ्—to avoid, to give up, to shun. उज्झति। औज्झत्।

उञ्छ्—to glean. उञ्छति। औञ्छत्

ऋच्—to pray. ऋचति। आर्चत्।

ऋच्छ्—to go. ऋच्छति। आर्च्छत्।

कृत्—to cut. कृन्तति। अकृन्तत्।

कॄ—to scatter. किरति। अकिरत्।

खिद्—to bewail. खिन्दति। अखिन्दत्।

गॄ—to devour, to swallow. गिरति, गिलति। अगिरत्, अगिलत्।

चर्च्—to discuss. चर्चति। अचर्चत्।

छुर्—to cut. छुरति। अछुरत्।

लुट्—to cut. लुटति। अलुटत्।

धू—to shake. धुवति। अधुवत्।

पिश्—to press. पिंशति। अपिंशत्।

प्रच्छ्—to ask. पृच्छति। अपृच्छत्।

मस्ज्—to sink, to immerse, to bathe. मज्जति। अमज्जत्।

मृश्—to touch, to shake. मृशति। अमृशत्।

लुभ्—to entice. लुभति। अलुभत्।
विश्—to enter. विशति। अविशत्।
व्यच्—to cheat. विचति। अविचत्।
व्रश्च्—to cut. वृश्चति। अवृश्चत्।
सृज्—to create, to give up. सृजति। असृजत्।
स्पृश्—to touch. स्पृशति। अस्पृशत्।
स्फुट्—to split open. स्फुटति। अस्फुटत्।
स्फुर्—to throb. स्फुरति। अस्फुरत्।

आत्मनेपदी

कु, कू—to coo. कुवते। अकुवत।
दृ (आङ् पूर्व)—to worship, to regard. आद्रियते। आद्रियत।
धृ—to contain. ध्रियते। अध्रियत।
पृ (वि+आ पूर्व)—to be busy or active. व्याप्रियते। व्याप्रियत।
मृ—to die. म्रियते। अम्रियत।
लस्ज्—to be ashamed. लज्जते। अलज्जत।
विज्—to fear, to shake (generallay with उत्) उद्विजते। उद्विजत।
शद्—to decay, to perish. शीयते। अशीयत।

उभयपदी

कृष्—to plough. कृषति-ते। अकृषत्-त।
क्षिप्—to throw. क्षिपति-ते। अक्षिपत्-त।
तुद्—to trouble, to oppress. तुदति-ते। अतुदत्-त।
दिश्—to give, to allow. दिशति-ते। अदिशत्-त।
नुद्—to throw. नुदति-ते। अनुदत्-त।
भ्रस्ज्—to fry. भृज्जति-ते। अभृज्जत्-त।
मिल्—to join, to be united. मिलति-ते। अमिलत्-त।
मुच्—to leave, to release. मुञ्चति-ते। अमुञ्चत्-त।
लिख्—to write. लिखति-ते। अलिखत्-त।
लिप्—to anoint, to plaster. लिम्पति-ते। अलिम्पत्-त।
लुप्—to obliterate to elide. लुम्पति-ते। अलुम्पत्-त।
विद्—to get, to gain, to obtain. विन्दति-ते। अविन्दत्-त।
सिच्—to sprinkle, to water. सिञ्चति-ते। असिञ्चत्-त।

Translation model.—I (अहम्) wish (इच्छामि) to ask (प्रष्टुम्) him (तम्) this (इदम्)=अहं तमिदं प्रष्टुमिच्छामि or तमहमिदं प्रष्टुमिच्छामि । Ram (रामः) asked (अपृच्छत्) me (माम्) to touch (स्प्रष्टुम्) his (तस्य) hand (हस्तम्)=रामः (तस्य) हस्तं स्प्रष्टुं मामपृच्छत् । The rich (धनिनः) always (सततं) wish (इच्छन्ति) happiness (सुखम्)=धनिनः सततं सुखमिच्छन्ति ।

EXERCISE I.

I. *Translate into Sanskrit:*—Pious men are not afraid of death. Why did you give me pain ? No one wishes to die. What do you ask me ? We were plunged in grief. Let them sprinkle water on all sides. Thou shouldst not touch impure things. Black will take no other hue. They got immense wealth by their hard labour. Farmers glean ripe crops from their fields. Why did you ask the boy his father's name ?

2. Correct:—मुञ्च मां भवान् । कथं त्वं रजः अकिरत् ? गात्राणि मे ते मा स्पृशताम् । आवां जले अमज्जताम् । भो बालकाः, मातरं मा तुदथ । वयमस्मात् नोद्विजेयुः । बान्धवाः धनमिच्छति । त्वं मे गात्राणि मा स्पृशत ।

भ्वादि (First conjugation).

४६ । "कर्त्तरि शप्" (भ्वादेः) । लट्, लोट्, लङ्, विधि-लिङ्, इन चार विभक्तियों में भ्वादिगणीय धातुओं के उत्तर अ होता है; अ अन्त्य वर्ण में युक्त होता है ।

वद्-धातु (परस्मैपदी, सकर्मक) बोलना, To say, to speak.

Infin.—वदितुम् ।

लट्

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	वदति	वदसि	वदामि
द्विवचन	वदतः	वदथः	वदावः
बहुवचन	वदन्ति	वदथ	वदामः

लोट्

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	वदतु	वद	वदानि
द्विवचन	वदताम्	वदतम्	वदाव
बहुवचन	वदन्तु	वदत	वदाम

लङ्

एकवचन	अवदत्	अवदः	अवदम्
द्विवचन	अवदताम्	अवदतम्	अवदाव
बहुवचन	अवदन्	अवदत	अवदाम

विधिलिङ्

एकवचन	वदेत्	वदेः	वदेयम्
द्विवचन	वदेताम्	वदेतम्	वदेव
बहुवचन	वदेयुः	वदेत	वदेम

सेव्–धातु (१) (आत्मनेपदी, सकर्मक) सेवा करना,

To nurse, to serve. Infin.—सेवितुम्।

लट्

एकवचन	सेवते	सेवसे	सेवे
द्विवचन	सेवेते	सेवेथे	सेवावहे
बहुवचन	सेवन्ते	सेवध्वे	सेवामहे

लोट्

एकवचन	सेवताम्	सेवस्व	सेवै
द्विवचन	सेवेताम्	सेवेथाम्	सेवावहै
बहुवचन	सेवन्ताम्	सेवध्वम्	सेवामहै

(१) मुग्धबोधकर्त्ता बोपदेव के मत से सेव् धातु उभयपदी है।

लङ्

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	असेवत	असेवथाः	असेवे
द्विवचन	असेवेताम्	असेवेथाम्	असेवावहि
बहुवचन	असेवन्त	असेवध्वम्	असेवामहि

विधिलिङ्

एकवचन	सेवेत	सेवेथाः	सेवेय
द्विवचन	सेवेयाताम्	सेवेयाथाम्	सेवेवहि
बहुवचन	सेवेरन्	सेवेध्वम्	सेवेमहि

धाव्–धातु (उभयपदी, अकर्मक) दौड़ना,* To run.

Infin.—धावितुम्।

लट्—परस्मैपद

एकवचन	धावति	धावसि	धावामि
द्विवचन	धावतः	धावथः	धावावः
बहुवचन	धावन्ति	धावथ	धावामः

आत्मनेपद

एकवचन	धावते	धावसे	धावे
द्विवचन	धावेते	धावेथे	धावावहे
बहुवचन	धावन्ते	धावध्वे	धावामहे

लोट् (प० पद) धावतु, धावताम्, धावन्तु; धाव, धावतम्, धावत, धावानि, धावाव, धावाम।

आ० पद—धावताम्, धावेताम्, धावन्ताम्; धावस्व, धावेथाम्, धावध्वम्; धावै, धावावहै, धावामहै।

लङ् (प० पद)—अधावत, अधावताम्, अधावन्; अधावः, अधावतम्, अधावत; अधावम्, अधावाव, अधावाम।

---

* (१) शुद्ध होना (to be purified) और (२) शुद्ध करना, धोना (to purify, to wash) अर्थ भी होते हैं। द्वितीय अर्थ में धाव्धातु सकर्मक होता है।

आ० पद—अधावत, अधावेताम्, अधावन्त ; अधावथाः, अधावेथाम्, अधावध्वम् ; अधावे, अधावावहि, अधावामहि ।

विधिलिङ् (प० पद)-धावेत, धावेताम्, धावेयुः; धावेः, धावेतम्, धावेत; धावेयम्, धावेव, धावेम ।

आ० पद—धावेत, धावेयाताम्, धावेरन् ; धावेथाः, धावेयाथाम्, धावेध्वम् ; धावेय, धावेवहि, धावेमहि ।

४७। "सार्वधातुकार्द्धधातुकयोः"। अनयोः परयोरिगन्ताङ्गस्य गुणः । लट् आदि चार विभक्तियों में भ्वादिगणीय धातु के अन्त्य स्वर (final vowel) का गुण होता है ।

जि—धातु(१) (परस्मैपदी, सकर्मक) जीतना, to conquer.

Infin.—जेतुम् ।

लट्

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	जयति	जयसि	जयामि
द्विवचन	जयतः	जयथः	जयावः
बहुवचन	जयन्ति	जयथ	जयामः

लोट्—जयतु(२), जयताम्, जयन्तु(२); जय, जयतम्, जयत; जयानि, जयाव, जयाम ।

लङ्—अजयत्, अजयताम्, अजयन्; अजयः, अजयतम्, अजयत ; अजयम्, अजयाव, अजयाम ।

---

(१) उत्कर्ष प्राप्ति अर्थ में जि धातु अकर्मक है । यथा, जयति देवः । जीतना अर्थमें सकर्मक है । यथा, स मां रणे जयति । (२) लोट् की तु और अन्तु विभक्तियों में अकर्मक जि-धातु का प्रयोग प्रायः नहीं मिलता । कई एक वैयाकरणों के मत से इन दोनों विभक्तियों में जि-धातु का प्रयोग नहीं होता । लोट् के अर्थ में इनके स्थान में क्रम से लट् की ति और अन्ति विभक्तियाँ लगायी जाती हैं । यथा, जयति देवः; "राधामाधवयोर्जयन्ति यमुनाकूले रहः केलयः" ।

विधिलिङ्—जयेत्, जयेताम्, जयेयुः ; जयेः, जयेतम्, जयेत ; जयेयम्, जयेव, जयेम।

भू-धातु (परस्मैपदी, अकर्मक) होना, to be.

Infin.—भवितुम्।

लट्

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	भवति	भवसि	भवामि
द्विवचन	भवतः	भवथः	भवावः
बहुवचन	भवन्ति	भवथ	भवामः

लोट्—भवतु, भवताम्, भवन्तु ; भव, भवतम्, भवत ; भवानि, भवाव, भवाम।

लङ्—अभवत्, अभवताम्, अभवन् ; अभवः, अभवतम्, अभवत ; अभवम्, अभवाव, अभवाम।

विधिलिङ्—भवेत्, भवेताम्, भवेयुः ; भवेः, भवेतम्, भवेत ; भवेयम्, भवेव, भवेम। ❀

स्मृ-धातु (पर० पदी, सक०) स्मरण करना, To remember.

Infin.—स्मर्त्तुम्।

लट्

एकवचन	स्मरति	स्मरसि	स्मरामि
द्विवचन	स्मरतः	स्मरथः	स्मरावः
बहुवचन	स्मरन्ति	स्मरथ	स्मरामः

लोट्—स्मरतु, स्मरताम्, स्मरन्तु ; स्मर, स्मरतम्, स्मरत; स्मराणि, स्मराव, स्मराम।

❀ प्राप्ति (पाना, to get) अर्थ में भूधातु विकल्प से आत्मनेपदी होता है। "भुवः प्राप्तौ वा मङ्"। लट्—भवते, भवेते, भवन्ते इत्यादि।

लङ्—अस्मरत, अस्मरताम्, अस्मरन्; अस्मरः, अस्मरतम् अस्मरत; अस्मरम्, अस्मराव, अस्मराम ।

विधिलिङ्—स्मरेत्, स्मरेताम्, स्मरेयुः; स्मरेः, स्मरेतम्, स्मरेत; स्मरेयम्, स्मरेव, स्मरेम ।

ऋ भिन्न भ्वादिगणीय समुदय ह्रस्व-ऋकारान्त तथा दीर्घ ॠकारान्त धातुओं के रूप स्मृ-धातुके ऐसे होते हैं। लट् आदि चार विभक्तियों में ऋ-धातु के स्थान में ऋच्छ आदेश होता है।

ऋधातु (परस्मैपदी, सकर्मक) जाना, To go.

Infin.—अर्त्तुम् ।

लट्—ऋच्छति, ऋच्छतः, ऋच्छन्ति; ऋच्छसि, ऋच्छथः, ऋच्छथ; ऋच्छामि, ऋच्छावः, ऋच्छामः ।

लोट्—ऋच्छतु, ऋच्छताम्, ऋच्छन्तु; ऋच्छ, ऋच्छतम्, ऋच्छत; ऋच्छानि, ऋच्छाव, ऋच्छाम ।

लङ्—आर्च्छत्, आर्च्छताम्, आर्च्छन्; आर्च्छः, आर्च्छतम्, आर्च्छत; आर्च्छम्, आर्च्छाव, आर्च्छाम ।

विधिलिङ्—ऋच्छेत्, ऋच्छेताम्, ऋच्छेयुः; ऋच्छेः, ऋच्छेतम्, ऋच्छेत; ऋच्छेयम्, ऋच्छेव, ऋच्छेम ।

४८। "पुगन्तलघूपधस्य च"। पुगन्तस्य लघूपधस्य चाङ्गस्य इको गुणः सार्व्वधातुकार्द्धधातुकयोः। लट् आदि चार विभक्तियों में भ्वादिगणीय धातुके उपधा (penultimate) लघु स्वर (short vowel) का गुण होता है।

सिध्-धातु (परस्मैपदी, सकर्मक) गमन करना, To go.

Infin.—सेधितुम् ।

लट

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	सेधति	सेधसि	सेधामि
द्विवचन	सेधतः	सेधथः	सेधावः
बहुवचन	सेधन्ति	सेधथ	सेधामः

लोट्—सेधतु, सेधताम्, सेधन्तु ; सेध, सेधतम्, सेधत ; सेधानि, सेधाव, सेधाम।

लङ्—असेधत्, असेधताम्, असेधन् ; असेधः, असेधतम्, असेधत ; असेधम्, असेधाव, असेधाम।

विधिलिङ्—सेधेत्, सेधेताम्, सेधेयुः ; सेधेः, सेधेतम्, सेधेत, सेधेयम्, सेधेव, सेधेम।

जिन भ्वादिगणीय धातुओं के उपधा (अन्त्य वर्ण के पूर्व) में इ रहता है उनके रूप ऐसे ही होते हैं।

शुच्-धातु (परस्मैपदी, सकर्मक) शोक करना, To mourn for.

Infin.—शोचितुम्।

लट्

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	शोचति	शोचसि	शोचामि
द्विवचन	शोचतः	शोचथः	शोचावः
बहुवचन	शोचन्ति	शोचथ	शोचामः

लोट्—शोचतु, शोचताम्, शोचन्तु ; शोच, शोचतम्, शोचत; शोचानि, शोचाव, शोचाम।

लङ्—अशोचत्, अशोचताम्, अशोचन् ; अशोचः, अशोचतम्, अशोचत; अशोचम्, अशोचाव, अशोचाम्।

विधिलिङ्—शोचेत्, शोचेताम्, शोचेयुः ; शोचेः, शोचेतम्, शोचेत ; शोचेयम्, शोचेव, शोचेम।

जिन भ्वादिगणीय धातुओं के उपधा में उ रहता है उनके रूप ऐसे ही होते हैं।

वृत्-धातु (आत्मनेपदी, अकर्मक) विद्यमान रहना, To exist.

Infin.—वर्त्तितुम्।

लट्

एकवचन	वर्त्तते	वर्त्तसे	वर्त्ते
द्विवचन	वर्त्तेते	वर्त्तेथे	वर्त्तावहे
बहुवचन	वर्त्तन्ते	वर्त्तध्वे	वर्त्तामहे

लोट्—वर्त्तताम्, वर्त्तेताम्, वर्त्तन्ताम्; वर्त्तस्व, वर्त्तेथाम्, वर्त्तध्वम्; वर्त्तै, वर्त्तावहै, वर्त्तामहै ।

लङ्—अवर्त्तत, अवर्त्तेताम्, अवर्त्तन्त; अवर्त्तथाः, अवर्त्तेथाम्, अवर्त्तध्वम्; अवर्त्ते, अवर्त्तावहि, अवर्त्तामहि ।

विधिलिङ्—वर्त्तेत, वर्त्तेयाताम् वर्त्तेरन्; वर्त्तेथाः, वर्त्तेयाथाम्, वर्त्तेध्वम्; वर्त्तेय, वर्त्तेवहि, वर्त्तेमहि ।

दृश्-धातुको छोड़कर उपधामें ह्रस्वऋकारयुक्त प्रायः सब भ्वादिगणीय धातुओं के रूप ऐसे ही होते हैं। कृष्-धातु (प० पदी, सक०) खिंचना (to pull, to draw), हल जोतना (to plough) लट्—कर्षति, कर्षतः, कर्षन्ति इत्यादि ।

सन्ज्, स्वन्ज्, दन्श् धातु ।

४९ । "दंशसञ्जस्वञ्जां शपि" । लट् आदि चार विभक्तियों में सन्ज्, स्वन्ज् और दन्श् धातुओं के न् का लोप होता है ।

सन्ज्-धातु (परस्मैपदी, सकर्मक) लपटाना, to embrace.
(अ० क०) सट् जाना, to stick, to adhere.
Infin.—संक्तुम् ।

लट्

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	सजति	सजसि	सजामि
द्विवचन	सजतः	सजथः	सजावः
बहुवचन	सजन्ति	सजथ	सजामः

लोट्—सजतु, सजताम्, सजन्तु; सज, सजतम्, सजत; सजानि, सजाव, सजाम ।

लङ्—असजत्, असजताम्, असजन्; असजः, असजतम्, असजत; असजम्, असजाव, असजाम ।

विधिलिङ्—सजेत्, सजेताम्, सजेयुः; सजेः, सजेतम्, सजेत; सजेयम्, सजेव, सजेम ।

स्वन्ज्-धातु (आत्मनेपदी, सकर्मक) लपटाना, To embrace.

Infin—स्वंक्तुम् ।

लट्

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	स्वजते	स्वजसे	स्वजे
द्विवचन	स्वजेते	स्वजेथे	स्वजावहे
बहुवचन	स्वजन्ते	स्वजध्वे	स्वजामहे

लोट्—स्वजताम्, स्वजेताम्, स्वजन्ताम्; स्वजस्व, स्वजेथाम्, स्वजध्वम्; स्वजै, स्वजावहै, स्वजामहै ।

लङ्—अस्वजत, अस्वजेताम्, अस्वजन्त; अस्वजथाः, अस्वजेथाम्, अस्वजध्वम्; अस्वजे, अस्वजावहि, अस्वजामहि ।

विधिलिङ्—स्वजेत, स्वजेयाताम्, स्वजेरन्; स्वजेथाः, स्वजेयाथाम्, स्वजेध्वम्; स्वजेय, स्वजेवहि, स्वजेमहि ।

दन्श्-धातु (परस्मैपदी, सकर्मक) दाँत से काटना, To bite.

Infin.—दष्टुम् ।

लट्

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	दशति	दशसि	दशामि
द्विवचन	दशतः	दशथः	दशावः
बहुवचन	दशन्ति	दशथ	दशामः

लोट्—दशतु, दशताम्, दशन्तु; दश, दशतम्, दशत; दशानि, दशाव, दशाम ।

लङ्—अदशत्, अदशताम्, अदशन्; अदशः, अदशतम्, अदशत; अदशम्, अदशाव, अदशाम ।

विधिलिङ्—दशेत्, दशेताम्, दशेयुः; दशेः, दशेतम्, दशेत; दशेयम्, दशेव, दशेम ।

गम्, दश्, क्रम्, सद्, ष्ठिव धातु ।

५० । लट् आदि चार विभक्तियों में गम्-धातुके स्थान में

गच्छ् (१), दृश्-धातुके स्थानमें पश्य् (२), क्रम् धातुके स्थानमें क्राम् (३), सद्-धातुके स्थानमें सीद् (३), और ष्ठिव्-धातुके स्थानमें ष्ठीव् (४) होता है।

गम्-धातु (परस्मैपदी, सकर्मक) जाना, To go.

Infin.—गन्तुम्।

लट्

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	गच्छति	गच्छसि	गच्छामि
द्विवचन	गच्छतः	गच्छथः	गच्छावः
बहुवचन	गच्छन्ति	गच्छथ	गच्छामः

लोट्—गच्छतु, गच्छताम्, गच्छन्तु ; गच्छ, गच्छतम्, गच्छत ; गच्छानि, गच्छाव, गच्छाम।

लङ्—अगच्छत्, अगच्छताम्, अगच्छन्; अगच्छः, अगच्छतम्, अगच्छत; अगच्छम्, अगच्छाव, अगच्छाम।

विधिलिङ्—गच्छेत्, गच्छेताम्, गच्छेयुः; गच्छेः, गच्छेतम्, गच्छेत; गच्छेयम्, गच्छेव, गच्छेम।

दृश्-धातु (परस्मैपदी, सकर्मक) देखना, To see.

Infin.—द्रष्टुम्।

लट्

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	पश्यति	पश्यसि	पश्यामि
द्विवचन	पश्यतः	पश्यथः	पश्यावः
बहुवचन	पश्यन्ति	पश्यथ	पश्यामः

---

(१) इषुगमियमां छः। (२) पाघ्राध्मास्थाम्नादाण्दृश्यर्त्तिसर्त्तिशदसदां पिबजिघ्रधमतिष्ठजनयच्छपश्यर्च्छधौशीयसीदः। (३) क्रमः परस्मैपदेषु। (४) ष्ठिवुक्लमुचमां शिति।

लोट्—पश्यतु, पश्यताम्, पश्यन्तु ; पश्य, पश्यतम्, पश्यत ; पश्यानि, पश्याव, पश्याम ।

लङ्—अपश्यत्, अपश्यताम्, अपश्यन् ; अपश्यः, अपश्यतम् ; अपश्यत; अपश्यम्, अपश्याव, अपश्याम ।

विधिलिङ्—पश्येत्, पश्येताम्, पश्येयुः ; पश्येः, पश्येतम्, पश्येत ; पश्येयम्, पश्येव, पश्येम ।

क्रम्-धातु (प० पदी, अक०) चलना, To walk, to step.
Infin.—क्रमितुम् ।

लट्

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	क्रामति	क्रामसि	क्रामामि
द्विवचन	क्रामतः	क्रामथः	क्रामावः
बहुवचन	क्रामन्ति	क्रामथ	क्रामामः

लोट्—क्रामतु, क्रामताम्, क्रामन्तु ; क्राम, क्रामतम्, क्रामत ; क्रामाणि, क्रामाव, क्रामाम ।

लङ्—अक्रामत्, अक्रामताम्, अक्रामन् ; अक्रामः, अक्रामतम्, अक्रामत ; अक्रामम्, अक्रामाव, अक्रामाम ।

विधिलिङ्—क्रामेत्, क्रामेताम्, क्रामेयुः ; क्रामेः, क्रामेतम्, क्रामेत ; क्रामेयम्, क्रामेव, क्रामेम । ❀

❀ लट् आदि चार विभक्तियों में क्राम्यति, क्राम्यतः क्राम्यन्ति इत्यादि तथा क्रम्यति, क्रम्यतः, क्रम्यन्ति इत्यादि पद भी होते हैं । उपसर्गहीन क्रम्-धातु विकल्प से आत्मनेपदी होता है । अप्रतिबन्ध, उत्साह और वृद्धि अर्थबोधक उपसर्गहीन क्रम्-धातुका प्रयोग आत्मनेपदमें ही होता है। उपसर्गयुक्त क्रम्-धातु परस्मैपदी होता है, किन्तु विशेष विशेष अर्थों में आ, वि, प्र, परा और उप पूर्वक क्रम्-धातु आत्मनेपदी होता है । आत्मनेपद में क्रम-धातुके रूप क्रमते, क्रमेते क्रमन्ते इत्यादि होते हैं ।

सद्-धातु (प० पदी, अक०) व्याकुल होना, To droop, to be sad. Infin.—सत्तुम्।

लट्

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	सीदति	सीदसि	सीदामि
द्विवचन	सीदतः	सीदथः	सीदावः
बहुवचन	सीदन्ति	सीदथ	सीदामः

लोट्—सीदतु, सीदताम्, सीदन्तु; सीद, सीदतम्, सीदत; सीदानि, सीदाव, सीदाम।

लङ्—असीदत्, असीदताम्, असीदन्; असीदः, असीदतम्, असीदत; असीदम्, असीदाव, असीदाम।

विधिलिङ्—सीदेत्, सीदेताम्, सीदेयुः; सीदेः, सीदेतम्, सीदेत; सीदेयम्, सीदेव, सीदेम। †

ष्ठिव्-धातु (परस्मैपदी, अकर्मक) थूकना, To spit. Infin.—ष्ठेवितुम्।

लट्

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	ष्ठीवति	ष्ठीवसि	ष्ठीवामि
द्विवचन	ष्ठीवतः	ष्ठीवथः	ष्ठीवावः
बहुवचन	ष्ठीवन्ति	ष्ठीवथ	ष्ठीवामः

---

† शद्-धातु परस्मैपदी है, परन्तु लट् आदि चार विभक्तियोंमें आत्मनेपदी होता है। शद्-धातु (अक.) गिरना, to fall; (सक.) गिराना, to cause to fall; यथा, शीयते नीड़ो वृक्षात्; शीयते नीड़ं वायुर्वृक्षात्। लट् आदि चार विभक्तियोंमें "शद्" के स्थानमें "शीय" आदेश होता है। लट्—शीयते, शीयेते, शीयन्ते इत्यादि, लोट्—शीयताम्, शीयेताम् शीयन्ताम् इत्यादि, लङ्—अशीयत, अशीयेताम्, अशीयन्त इत्यादि, विधिलिङ्—शीयेत, शीयेयाताम्, शीयेरन्, इत्यादि।

लोट्—ष्ठीवतु, ष्ठीवताम्, ष्ठीवन्तु; ष्ठीव, ष्ठीवतम्, ष्ठीवत; ष्ठीवानि, ष्ठीवाव, ष्ठीवाम ।

लङ्—अष्ठीवत्, अष्ठीवताम्, अष्ठीवन्; अष्ठीवः, अष्ठीवतम्, अष्ठीवत; अष्ठीवम्, अष्ठीवाव, अष्ठीवाम ।

विधिलिङ्—ष्ठीवेत्, ष्ठीवेताम्, ष्ठीवेयुः; ष्ठीवेः, ष्ठीवेतम्, ष्ठीवेत; ष्ठीवेयम्, ष्ठीवेव, ष्ठीवेम ।

स्था, दा (ण्), पा, घ्रा, ध्मा, म्ना धातु ।

५१ । लट् आदि चार विभक्तियोँमेँ स्था-धातुके स्थानमेँ तिष्ठ्, दा (ण्)-धातुके स्थानमेँ यच्छ्, पा-धातुके स्थानमेँ पिब्, घ्रा-धातुके स्थानमेँ जिघ्र, ध्मा-धातुके स्थानमेँ धम् और म्ना-धातुके स्थानमेँ मन् होता है । (१)

स्था-धातु (परस्मैपदी, अकर्मक) ठहरना, To stay.

Infin.—स्थातुम् ।

लट्

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	तिष्ठति	तिष्ठसि	तिष्ठामि
द्विवचन	तिष्ठतः	तिष्ठथः	तिष्ठावः
बहुवचन	तिष्ठन्ति	तिष्ठथ	तिष्ठामः

लोट्—तिष्ठतु, तिष्ठताम्, तिष्ठन्तु; तिष्ठ, तिष्ठतम्, तिष्ठत; तिष्ठानि, तिष्ठाव, तिष्ठाम ।

लङ्—अतिष्ठत्, अतिष्ठताम्, अतिष्ठन्; अतिष्ठः, अतिष्ठतम्, अतिष्ठत; अतिष्ठम्, अतिष्ठाव, अतिष्ठाम ।

विधिलिङ्—तिष्ठेत्, तिष्ठेताम्, तिष्ठेयुः; तिष्ठेः, तिष्ठेतम्, तिष्ठेत; तिष्ठेयम्, तिष्ठेव, तिष्ठेम ।

---

(१) पाघ्राध्मास्थाम्नादाण्दृश्यर्त्तिसर्त्तिशदसदां पिबजिघ्रधमतिष्ठमनयच्छपश्यर्च्छधौशीयसीदाः ।

दा (ण्) धातु (परस्मैपदी, सकर्मक) देना, To give.

Infin.—दातुम्।

लट्

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	यच्छति	यच्छसि	यच्छामि
द्विवचन	यच्छतः	यच्छथः	यच्छावः
बहुवचन	यच्छन्ति	यच्छथ	यच्छामः

लोट्—यच्छतु, यच्छताम्, यच्छन्तु; यच्छ, यच्छतम्, यच्छत; यच्छानि, यच्छाव, यच्छाम।

लङ्—अयच्छत्, अयच्छताम्, अयच्छन्; अयच्छः, अयच्छतम्, अयच्छत; अयच्छम्, अयच्छाव, अयच्छाम।

विधिलिङ्—यच्छेत्, यच्छेताम्, यच्छेयुः; यच्छेः, यच्छेतम्, यच्छेत; यच्छेयम्, यच्छेव, यच्छेम।

पा-धातु (परस्मैपदी, सकर्मक) पीना, To drink.

Infin.—पातुम्।

लट्

एकवचन	पिबति	पिबसि	पिबामि
द्विवचन	पिबतः	पिबथः	पिबावः
बहुवचन	पिबन्ति	पिबथ	पिबामः

लोट्—पिबतु, पिबताम्, पिबन्तु; पिब, पिबतम्, पिबत; पिबानि, पिबाव, पिबाम।

लङ्—अपिबत्, अपिबताम्, अपिबन्; अपिबः, अपिबतम्, अपिबत; अपिबम्, अपिबाव, अपिबाम।

विधिलिङ्—पिबेत्, पिबेताम्, पिबेयुः; पिबेः, पिबेतम्, पिबेत; पिबेयम्, पिबेव, पिबेम।

घ्रा-धातु (परस्मैपदी, सकर्मक) सूँघना, To smell.

Infin.—घ्रातुम्।

लट्

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	जिघ्रति	जिघ्रसि	जिघ्रामि
द्विवचन	जिघ्रतः	जिघ्रथः	जिघ्रावः
बहुवचन	जिघ्रन्ति	जिघ्रथ	जिघ्रामः

लोट्—जिघ्रतु, जिघ्रताम्, जिघ्रन्तु ; जिघ्र, जिघ्रतम्, जिघ्रत; जिघ्राणि, जिघ्राव, जिघ्राम।

लङ्—अजिघ्रत्, अजिघ्रताम्, अजिघ्रन् ; अजिघ्रः, अजिघ्रतम्, अजिघ्रत ; अजिघ्रम्, अजिघ्राव, अजिघ्राम।

विधिलिङ्—जिघ्रेत्, जिघ्रेताम्, जिघ्रेयुः ; जिघ्रेः, जिघ्रेतम्, जिघ्रेत ; जिघ्रेयम्, जिघ्रेव, जिघ्रेम।

ध्मा-धातु (परस्मैपदी, सकर्मक) धौंकना, To blow.

Infin.—ध्मातुम्।

लट्

एकवचन	धमति	धमसि	धमामि
द्विवचन	धमतः	धमथः	धमावः
बहुवचन	धमन्ति	धमथ	धमामः

लोट्—धमतु, धमताम्, धमन्तु ; धम, धमतम्, धमत; धमानि, धमाव, धमाम।

लङ्—अधमत्, अधमताम्, अधमन् ; अधमः, अधमतम्, अधमत ; अधमम्, अधमाव, अधमाम।

विधिलिङ्—धमेत्, धमेताम्, धमेयुः ; धमेः, धमेतम्, धमेत ; धमेयम्, धमेव, धमेम।

म्ना-धातु (प० पदी, सक०) अभ्यास करना, To learn by rote, to get by heart. Infin.—म्नातुम्।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	मनति	मनसि	मनामि
द्विवचन	मनतः	मनथः	मनावः
बहुवचन	मनन्ति	मनथ	मनामः

लोट्—मनतु, मनताम्, मनन्तु ; मन, मनतम्, मनत ; मनानि, मनाव, मनाम।

लङ्—अमनत्, अमनताम्, अमनन् ; अमनः, अमनतम्, अमनत ; अमनम्, अमनाव, अमनाम।

विधिलिङ्—मनेत्, मनेताम्, मनेयुः ; मनेः, मनेतम्, मनेत ; मनेयम्, मनेव, मनेम।

चम्-धातु* (परस्मैपदी, सक०) खाना, To eat; पीना, to drink.

५२। लट् आदि चार विभक्तियों में आ उपसर्ग के योग में चम्-धातु के स्थान में चाम् होता है।

आपूर्व्वक चम्-धातु, आचमन करना, To sip. Infin.—आचमितुम्।

लट्

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	आचामति	आचामसि	आचामामि
द्विवचन	आचामतः	आचामथः	आचामावः
बहुवचन	आचामन्ति	आचामथ	आचामामः

* उपसर्गहीन चम्-धातु तथा आ भिन्न अन्य उपसर्गयुक्त चम्-धातुके स्थानमें चाम् नहीं होता। यथा, चमति, विचमति, प्रचमति, परिचमति इत्यादि। ष्ठिवुक्लमुचमां शिति।

लोट्—आचामतु, आचामताम्, आचामन्तु ; आचाम, आचामतम्, आचामत , आचामानि, आचामाव, आचामाम ।

लङ्—आचामत्, आचामताम्, आचामन्; आचामः, आचामतम्; आचामत; आचामम्, आचामाव, आचामाम ।

विधिलिङ्—आचामेत्, आचामेताम्, आचामेयुः; आचामेः, आचामेतम्, आचामेत ; आचामेयम्, आचामेव, आचामेम ।

५२। "ऊदुपधाया गोहः"। लट् आदि चार विभक्तियों में गुह्-धातु के स्थान में गूह् होता है ।

गुह्-धातु (उभ० पदी, सक०) छिपाना, to hide, to conceal.

Infin.—गूहितुम्, गोढुम् ।

लट् (प० पद)

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	गूहति	गूहसि	गूहामि
द्विवचन	गूहतः	गूहथः	गूहावः
बहुवचन	गूहन्ति	गूहथ	गूहामः

लट् (आ० प०)—गूहते, गूहेते, गूहन्ते ; गूहसे, गूहेथे, गूहध्वे ; गूहे, गूहावहे, गूहामहे ।

लोट् (प० पद०)—गूहतु, गूहताम्, गूहन्तु ; गूह, गूहतम्, गूहत ; गूहानि, गूहाव, गूहाम ।

आ० पद—गूहताम्, गूहेताम्, गूहन्ताम् ; गूहस्व, गूहेथाम्, गूहध्वम् ; गूहै, गूहावहै, गूहामहै ।

लङ् (प० पद)—अगूहत्, अगूहताम्, अगूहन् ; अगूहः, अगूहतम्, अगूहत ; अगूहम्, अगूहाव, अगूहाम ।

आ० पद—अगूहत, अगूहेताम्, अगूहन्त ; अगूहथाः, अगूहेथाम्, अगूहध्वम् ; अगूहे, अगूहावहि, अगूहामहि ।

विधिलिङ् (प० पद)—गूहेत्, गूहेताम्, गूहेयुः; गूहेः, गूहेतम्, गूहेत; गूहेयम, गूहेव, गूहेम।

आ० पद—गूहेत, गूहेयाताम्, गूहेरन्; गूहेथाः, गूहेयाथाम्, गूहेध्वम्, गूहेय गूहेवहि, गूहेमहि।

प्रचलित भ्वादिगणीय धातु।

परस्मैपदी

अक्—to go. अकति। आकत्।
अग्—to go अगति आगत्।
अट्—to go, to wander. अटति। आटत्।
अत—to go on. अतति। आतत्।
अन्च्—to go, to worship. अञ्चति। आञ्चत्।
अर्च्—to worship. अर्चति। आर्चत्।
अर्ज्—to earn. अर्जति। आर्जत्।
अर्द्—to give pain to. अर्दति। आर्दत्।
अर्ह्—to deserve, to worship. अर्हति। आर्हत्।
अव्—to protect. अवति। आवत्।
इन्द्—to prosper. इन्दति ऐन्दत्।
ईर्ष्य्—to envy. ईर्ष्यति। ऐर्ष्यत्।
उक्ष्—to sprinkle. उक्षति। औक्षत्।
ऊख्—to go. ओखति। औखत्।
ऊष्—to burn. ओषति। औषत्।
ऋ—to go. ऋच्छति। आर्च्छत्।
कण्—to sound. कणति। अकणत्।
कान्क्ष्—to wish, to desire, to long for. काङ्क्षति। अकाङ्क्षत्।
कित्—to live, to desire. केतति अकेतत्।
कित्—to cure. चिकित्सति। अचिकित्सत्।
कुन्थ्—to hurt, to kill, to suffer pain कुन्थति। अकुन्थत्।
कूज्—to chirp. कूजति। अकूजत्।
कृष्—to plough, to draw. कर्षति अकर्षत्।
क्रन्द्—to cry, to weep. क्रन्दति। अक्रन्दत्।
क्रम्—to walk, to step over. क्रामति। अक्रामत् For other forms vide foot note p. 36.
क्रीड्—to play क्रीडति, अक्रीडत्।
क्रुश्—to cry, to lament. क्रोशति अक्रोशत।

क्षर्—to flow. क्षरति। अक्षरत्।
क्षि—to waste away, to decay. क्षयति। अक्षयत्।
खन्ज्—to limp. खञ्जति। अखञ्जत्।
खाद्—to eat. खादति। अखादत्।
गद्—to speak. गदति। अगदत्।
गम्—to go, to go to. गच्छति अगच्छत्। With अधि— to obtain; अनु— to follow. अव —to know; आ—to come निर्—to depart, to go out; प्रति+आ—to returu; सम्—(आ० प०) to join, to go together. सङ्गच्छते। समगच्छत।
गर्ज्—to roar. गर्जति। अगर्जत्।
गुन्ज्—to hum. गुञ्जति। अगुञ्जत्।
गुप्—to protect. गोपायति। अगोपायत्।
गै—to sing. गायति। अगायत्।
ग्लै—to despond, to sink in spirit. ग्लायति। अग्लायत्।
घस्—to eat. घसति। अघसत्।
घुष्—to declare, to sound. घोषति। अघोषत्।
घृष्—to rub. घर्षति। अघर्षत्।
घ्रा—to smell. जिघ्रति, अजिघ्रत्।
चम्—to suck, to sip, to eat. चमति। अचमत्। As, मधु चमन्ति मधुपाः, मांसं चमन्ति राक्षसाः (Bees suck honey and the Rakshas eat flesh). With आ—to sip. आचामति। आचामत्। चम् becomes चाम् in लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् with the prefix आ only. When used alone or with any prefix other than आ it does not become चाम्; as, चमति, विचमति इत्यादि।
चर्—to walk. चरति। अचरत्।
चर्च्—to discuss. चर्चति, अचर्चत।
चल्—to go, to move, to shake. चलति। अचलत्।
चित्—to understand. चेतति। अचेतत्।
चुम्ब्—to kiss. चुम्बति। अचुम्बत्।
चूष्—to suck, to sip. चूषति। अचूषत्।
च्युत्—to drop down. च्योतति। अच्योतत्।
जप्—to mutter. जपति। अजपत्।
जल्प्—to talk, to rumour. जल्पति। अजल्पत्।
जि—to conquer जयति। अजयत्।
जीव्—to live. जीवति। अजीवत्।
जु—to run with great speed. जवति। अजवत्।
ज्वर्—to be hot with fever. ज्वरति। अज्वरत्।
ज्वल्—to burn, to glow. ज्वलति। अज्वलत्।

टल्—to shake. to be confused. टलति । अटलत् ।

तक्ष्—to make thin as a log of wood by carving. to cut, to wound तक्षति अतक्षत् ।

तप्—to shine, to be hot. तपति । अतपत् ।

तर्ज्—to threaten. तर्जति । अतर्जत् ।

तॄ—to float, to cross, to surmount. तरति । अतरत् With अव—to descend.

त्यज्—to abandon. त्यजति। अत्यजत्।

त्रस्—to frighten, to trouble. त्रसति । अत्रसत् ।

दन्श्—to bite, to sting. दशति । अदशत् ।

दल्—to crush, to trample, to burst open. दलति। अदलत् ।

दह्—to burn, to pain. दहति । अदहत् ।

दा (दाण्)—to give. यच्छति । अयच्छत् ।

दु—to go. दवति । अदवत् ।

दृश्—to see. पश्यति । अपश्यत् ।

द्रु—to melt, to rush. द्रवति । अद्रवत् ।

धूप्—to heat. धूपायति । अधूपायत्।

धे—to suck. धयति अधयत् ।

ध्मा—to blow. धमति । अधमत् ।

ध्यै—to think. ध्यायति। अध्यायत्।

ध्वन्—to sound, to echo. ध्वनति। अध्वनत् ।

नट्—to dance, to act. नटति । अनटत् ।

नद्—to sound. नदति । अनदत् ।

नन्द्—to be pleased. नन्दति अनन्दत् । With अभि—to hail, to rejoice. अभिनन्दति । अभ्यनन्दत् ।

नम्—to salute. नमति । अनमत् ।

नर्द्—to sound, नर्दति । अनर्दत् ।

निन्द्—to blame, to censure. निन्दति । अनिन्दत् ।

पठ्—to read. पठति । अपठत् ।

पत्—to fall. पतति । अपतत् । With अभि—to jump towards. उत्—to rise up, to fly up.

पा—to drink. पिबति । अपिबत् ।

पुष्—to nourish. पोषति । अपोषत् ।

फल्—to yield fruits, to result. फलति । अफलत् ।

फुल्ल्—to bloom. फुल्लति । अफुल्लत् ।

भण्—to speak. भणति । अभणत् ।

भू—to be. भवति । अभवत् ।

भूष्—to adorn. भूषति । अभूषत् ।

भ्रम्—to roam, to revolve. भ्रमति, भ्राम्यति । अभ्रमत्, अभ्राम्यत् ।

मण्ड्—to decorate. मण्डति। अमण्डत्।
मथ्—to churn. मथति। अमथत्।
मन्थ्—to churn. मन्थति। अमन्थत्।
मिह्—to sprinkle. मेहति। अमेहत्।
मील्—to close. मीलति। अमीलत्।
मुण्ड्—to shave. मुण्डति। अमुण्डत्।
मूर्च्छ्—to faint. मूर्च्छति। अमूर्च्छत्।
मृष्—to bear. मर्षति। अमर्षत्।
म्ना—to learn. मनति। अमनत्।
म्लै—to be weary, to grow pale. म्लायति। अम्लायत्।
यम्—to restrain, to check. यच्छति। अयच्छत्।
रक्ष्—to protect. रक्षति। अरक्षत्।
रट्—to speak, to say. रटति। अरटत्।
रह्—to give up. रहति। अरहत्।
रुह्—to grow. रोहति। अरोहत्। With आ—to mount, to ascend; प्र—to grow, to rise.
लग्—to adhere. लगति। अलगत्।
लप्—to talk. लपति। अलपत्। With वि—to lament.
लस्—to shine. लसति। अलसत्।
लाञ्छ्—to shine. लाञ्छति। अलाञ्छत्।
लुण्ठ्—to rob, to plunder. लुण्ठति। अलुण्ठत्।
वण्ट्—to divide. वण्टति। अवण्टत्।
वद्—to say, to tell. वदति। अवदत्।
वम्—to vomit. वमति। अवमत्।
वस्—to dwell. वसति। अवसत्।
वाञ्छ्—to wish. वाञ्छति अवाञ्छत्।
वृष्—to rain, to pour forth. वर्षति। अवर्षत्।
व्रज्—to go. व्रजति। अव्रजत्।
शंस्—to relate शंसति। अशंसत्।
शश्—to go fast. शशति। अशशत्।
शस्—to kill. शसति। अशसत्।
शील्—to serve. शीलति। अशीलत् With अनु—to practise.
शुच्—to bewail, to mourn. शोचति। अशोचत्।
श्च्युत्—to scatter. श्च्योतति। अश्च्योतत्।
श्वि—to swell, to increase. श्वयति। अश्वयत्।
ष्ठिव्—to spit. ष्ठीवति। अष्ठीवत्।
सद्—to sink down. सीदति। असीदत्। With अव—to decline: नि—to sit, निषीदति। With प्र—to be pleased. प्रसीदति।
सञ्ज्—to stick, to adhere सजति। असजत्।

सिध्—to go. सेधति । असेधत् ।

सु—to give birth to, to go. सवति । असवत् । With प्र—to give birth to.

सृ—to go, to run. सरति असरत् । With अनु—to follow ; प्र—to spread.

सृप्—to go, to creep. सर्पति । असर्पत् ।

स्कन्द्—to go. स्कन्दति । अस्कन्दत् ।

स्खल्—to fall down, to tumble. स्खलति । अस्खलत् ।

स्थग्—to restrain. स्थगति । अस्थगत् ।

स्था—to stand, to stay, to be. तिष्ठति । अतिष्ठत् ।

स्मि—to smile, to bloom. स्मयति। अस्मयत्। With वि—to wonder, to be dismayed.

स्मृ—to remember. स्मरति । अस्मरत् ।

स्रु—to flow. स्रवति । अस्रवत् ।

स्वन्—to sound. स्वनति। अस्वनत्।

हस्—to laugh, to smile. हसति अहसत् । With वि—to ridicule, to laugh in contempt.

हृष्—to be delighted. हर्षति । अहर्षत् ।

आत्मनेपदी

अङ्क्—to draw. अङ्कते । आङ्कत ।

अय्—to go. अयते । आयत । With परा—to go away. पलायते । पलायत ।

ईक्ष्—to see, to care for. ईक्षते । ऐक्षत । With अप—to expect; उप—to neglect ; परि—to examine ; प्र—to see ; प्रति—to wait for.

ईह्—to aim at, to exert. ईहते । ऐहत ।

ऊह्—to discuss. ऊहते । औहत ।

ऋज्—to go, to acquire. अर्जते । आर्जत ।

एज्—to shake. एजते । ऐजत ।

एध्—to grow, to prosper. एधते । ऐधत

एष्—to go. एषते । ऐषत ।

कत्थ्—to praise, to flatter. कत्थते । अकत्थत ।

कम्—to desire. कामयते । अकामयत ।

कम्प्—to tremble. कम्पते । अकम्पत ।

काश्—to shine. काशते । अकाशत ।

कास्—to sound, to blame, to cough. कासते । अकासत ।

कृप्—to be able. कल्पते। अकल्पत।

क्षम्—to endure, to forgive. क्षमते । अक्षमत ।

क्षुभ्—to disturb क्षोभते। अक्षोभत।

गर्ह्—to blame. गर्हते । अगर्हत ।

गाह्—to dive into. गाहते । अगाहत । with अव—to bathe.

गुप्—to conceal, गोपते ; to blame. जुगुप्सते ।

ग्रन्थ्—to be crooked. ग्रन्थते । अग्रन्थत ।

ग्रस्—to swallow, to devour. ग्रसते । अग्रसत ।

घट्—to happen. घटते । अघटत ।

चेष्ट्—to try, to strive चेष्टते । अचेष्टत ।

च्यु—to go. च्यवते । अच्यवत ।

जृम्भ्—to yawn जृम्भते । अजृम्भत ।

डी—to rise. डयते । अडयत । With उत्—to fly. उड्डयते ।

ढौक्—to approach. ढौकते । अढौकत । With उप—to give as a present.

तिज्—to endure, to forgive. तितिक्षते । अतितिक्षत ।

त्रप्—to be ashamed. त्रपते । अत्रपत ।

त्वर्—to hurry. त्वरते । अत्वरत ।

दद्—to give. ददते । अददत ।

दध्—to hold. दधते । अदधत ।

दय्—to pity, to have compassion, to protect, to go. दयते । अदयत ।

दीक्ष्—to dedicate oneself to. दीक्षते । अदीक्षत ।

द्युत्—to shine. द्योतते । अद्योतत ।

ध्वंस्—to perish, to fall down. ध्वंसते । अध्वंसत ।

पू—to purify. पवते । अपवत ।

प्याय्—to grow, to swell. प्यायते । अप्यायत ।

प्रथ्—to become famous. प्रथते । अप्रथत ।

प्लु—to jump, to go. प्लवते । अप्लवत ।

बध्—to loathe, to calumniate. बिभत्स्यते । अबिभत्स्यत ।

बाध्—to trouble, to pain, to harass. बाधते । अबाधत ।

भाष्—to speak. भाषते । अभाषत । With प्रति—to answer ; अप—to slander.

भास्—to shine भासते । अभासत ।

भिक्ष्—to beg. भिक्षते । अभिक्षत ।

भृज्—to fry. भर्जते । अभर्जत ।

भ्रन्स्—to fall down. भ्रंसते । अभ्रंसत ।

भ्राज्—to shine. भ्राजते । अभ्राजत ।

भ्राश्—to shine. भ्राशते । अभ्राशत ।

भ्लाश्—to shine. भ्लाशते । अभ्लाशत ।

मान्—to decide. मीमांसते । अमीमांसत ।

मुद्—to rejoice. मोदते । अमोदत ।

यत्—to attempt, to strive यतते । अयतत ।

रभ्—to begin. रभते । अरभत ।

रम्—to sport, to rejoice at. रमते । अरमत ।

रुच्—to be liked, to be pleased with. रोचते। अरोचत।

लङ्घ्—to pass over, to transgress. लङ्घते। अलङ्घत। With उत्—to violate. उल्लङ्घते।

लक्ष्—to perceive. लक्षते। अलक्षत।

लभ्—to get लभते। अलभत।

लम्ब्—to hang down. लम्बते। अलम्बत। With अव—to resort to.

लस्ज्—to be ashamed, to blush. लज्जते। अलज्जत।

लोक्—to see. लोकते। अलोकत।

लोच्—to see. लोचते। अलोचत। With आ—to discuss, to consider.

वन्द्—to salute, to adore. वन्दते। अवन्दत।

वृत्—to exist. वर्त्तते। अवर्त्तत। With नि—to return; परा—to bend back; प्र—to set about.

वृध्—to grow, to increase. वर्द्धते। अवर्द्धत।

वेप्—to tremble. वेपते। अवेपत।

वेष्ट्—to surround. वेष्टते। अवेष्टत।

व्यथ्—to pain. व्यथते। अव्यथत।

शङ्क्—to suspect, to be afraid. शङ्कते। अशङ्कत।

शिक्ष्—to learn. शिक्षते। अशिक्षत।

शुभ्—to shine, to behove. शोभते। अशोभत।

श्लाघ्—to praise. श्लाघते। अश्लाघत।

सह्—to endure, to suffer. सहते। असहत।

सेव्—to serve. सेवते। असेवत।

स्तम्भ्—to support. स्तम्भते। अस्तम्भत।

स्पन्द्—to throb. स्पन्दते। अस्पन्दत।

स्पर्द्ध्—to dare. स्पर्द्धते। अस्पर्द्धत।

स्मि—to smile स्मयते। अस्मयत। With वि—to wonder, to be dismayed.

स्यन्द्—to flow out. स्यन्दते। अस्यन्दत।

स्रम्भ्—to trust. स्रम्भते। अस्रम्भत।

स्वद्—to be pleasant to the taste, to taste. स्वदते। अस्वदत।

स्वञ्ज्—to embrace. स्वजते। अस्वजत।

स्वाद्—to taste. स्वादते। अस्वादत।

ह्रेष्—to neigh. ह्रेषते। अह्रेषत।

ह्लाद्—to gladden, to rejoice. ह्लादते। अह्लादत।

उभयपदी।

अस्—to go, to take, to shine. असति-ते। आसत्-त।

खन्—to dig. खनति-ते। अखनत्-त।

गुह्—to keep secret. गूहति-ते। अगूहत्-त।

चत्—to beg. चतति-ते। अचतत्-त।

त्विष्—to shine. त्वेषति-ते। अत्वेषत्-त।

दान्—to cut. दानति-ते। अदानत्-त।

धाव्—to run. धावति-ते। अधावत्-त।

धृ—to hold, to bear. धरति-ते। अधरत्-त।

नाथ्—to ask, to bless. नाथति-ते। अनाथत्-त।

नी—to carry, to lead. नयति-ते। अनयत्-त। With अप—to take away; आ—to bring; परि—to marry; प्र—to prepare, to love; वि—to educate.

पच्—to cook. पचति-ते। अपचत्-त।

बुध्—to know, to understand. बोधति-ते। अबोधत्-त।

भज्—to worship, to resort to. भजति-ते। अभजत्-त।

With वि—to share, to divide.

भृ—to fill, to nourish. भरति-ते। अभरत्-त।

मेध्—to meet. मेधति-ते। अमेधत्-त।

यज्—to worship, to offer sacrifice. यजति-ते। अयजत्-त।

याच्—to beg. याचति-ते। अयाचत्-त।

रञ्ज्—to tinge, to be coloured. रजति-ते। अरजत्-त।

राज्—to shine, to glitter. राजति-ते। अराजत्-त।

लष्—to desire. लष्यति-ते। अलष्यत्-त।

वप्—to sow, to scatter. वपति-ते। अवपत्-त।

वह्—to carry. वहति-ते। अवहत्-त।

वृ—to welcome. वरति ते। अवरत्-त।

वे—to weave. वयति-ते। अवयत्-त।

शप्—to curse. शपति। अशपत्। to swear—शपते। अशपत।

श्रि—to serve, to go. श्रयति-ते। अश्रयत्-त।

हृ—to take away, to remove, to steal. हरति-ते। अहरत्-त। With आ—to gather, to bring; परि—to dispel, to give up; प्र—to strike; वि—to divert, to amuse oneself, to play; वि+आ—to speak.

ह्वे—to call, to invoke. ह्वयति-ते। अह्वयत्-त। With आ—to call, to invite.

Translation model.—Let us go home = Go (गच्छाम) we (वयम्) home (गृहं) = वयं गृहं गच्छाम। Do not speak (मा वद) the untruth (अनृतं, मृषा) = अनृतं (मृषा) मा वद। Let them see the books=See (पश्यन्तु) they (ते) the books (पुस्तकानि)=ते पुस्तकानि पश्यन्तु। I (अहं) should not stay (न तिष्ठेयम्) here (अत्र)= अहमत्र न तिष्ठेयम् or नात्र तिष्ठेयम्। Sons (पुत्राः) should serve (सेवेरन्) their (तेषां) father (पितरं)=पुत्राः पितरं सेवेरन्।

Exercise II.

1. *Translate into Sanskrit* :—Let them speak to him soon. Let us serve our parents. Do not run in the sun. They should conquer their anger. Do they remember us? The girl laughs loudly. He goes to see his friends *twice* (द्विः) *a year* (प्रतिवर्षं)। Do not tell a lie *at any time* (कदापि)। *Whosoever* (यः कोऽपि) *committeth* (आचरति) sin *deserveth* (अर्हति) punishment. How brightly shine the dew drops on the blades of grass! *Shake off* (त्यज्+क्त्वा) *paltry* (क्षुद्रं) *faintheartedness* (हृदयदौर्बल्यं) and *stand up* (उत्+स्था), O *conqueror of foes* (परन्तप). The wise *grieve* (अनु+शुच्) neither for the living nor for the dead. I do not long for wealth but for immortal glory. May he live long. We saw a huge tiger in the forest. The father embraced his beloved son. A mad dog bit the old lady. A farmer should plough his field carefully. Let me smell the sweet scent of the lotus in the tank. A sober man drinks only pure water. To *welcome* (अभि+नन्द्

+तुम्) the prince, the ladies blew their several conches on all sides.

2. *Translate into English* :—राजा रथमारुह्य नगरमगच्छत्। तन्तुवायो वस्त्रं वयति। धनिनः सततं सुखमिच्छन्ति। भूपतिः प्रजाः पालयति। धनानि जीवितञ्चैव परार्थे प्राज्ञ उत्सृजेत्। न हि ईश्वरस्तुभ्यमिदं प्रयच्छति। कदापीदं एतादृक् भवितुं न सम्भवति। भवान् सुखी भवतु। न हि सर्वमेव सुवर्णं यत् द्योतते। प्रत्येकमेव दिनमानयति नो बहुलान् नवावसरान् (fresh opportunities) समुन्नतेः (of improvement)।

3. *Correct* :—यूयमिदं वदतु। पुत्राः मातां सेवेत्। वयम् कुत्राधावन्। यूयं तं जयानि। भवान् विनयी भव। अहं तमस्मरत्। अत्रैव वर्त्तते वयं। एते मम हस्ते असज्जत्। युवां मा सीदेयुः। त्वमिह न ष्ठिवताम्। क्षणं तिष्ठ रे वाहकाः स्कन्धं ते यदि बाधति। दशरथो कैकेयीमशपत।

दिवादि (Fourth Conjugation).

४५। "दिवादिभ्यः श्यन्।" लट्, लोट्, लङ् और विधिलिङ्, इन चार विभक्तियों में दिवादिगणीय धातु के उत्तर "य" का आगम् होता है।

नृत्—धातु (प० पदी, अक०) नाचना, To dance.

Infin.—नर्त्तितुम्।

लट्

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	नृत्यति	नृत्यसि	नृत्यामि
द्विवचन	नृत्यतः	नृत्यथः	नृत्यावः
बहुवचन	नृत्यन्ति	नृत्यथ	नृत्यामः

लोट्

एकवचन	नृत्यतु, नृत्यतात्	नृत्य, नृत्यतात्	नृत्यानि
द्विवचन	नृत्यताम्	नृत्यतम्	नृत्यावः
बहुवचन	नृत्यन्तु	नृत्यत	नृत्यामः

लङ्

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	अनृत्यत्	अनृत्यः	अनृत्यम्
द्विवचन	अनृत्यताम्	अनृत्यतम्	अनृत्याव
बहुवचन	अनृत्यन्	अनृत्यत	अनृत्याम

विधिलिङ्

एकवचन	नृत्येत्	नृत्येः	नृत्येयम्
द्विवचन	नृत्येताम्	नृत्येतम्	नृत्येव
बहुवचन	नृत्येयुः	नृत्येत	नृत्येम

विद्–धातु (आ० पदी, सक०) रहना, To exist, to live.

Infin.—वेत्तुम् ।

लट्

एकवचन	विद्यते	विद्यसे	विद्ये
द्विवचन	विद्येते	विद्येथे	विद्यावहे
बहुवचन	विद्यन्ते	विद्यध्वे	विद्यामहे

लोट्

एकवचन	विद्यताम्	विद्यस्व	विद्यै
द्विवचन	विद्येताम्	विद्येथाम्	विद्यावहै
बहुवचन	विद्यन्ताम्	विद्यध्वम्	विद्यामहै

लङ्

एकवचन	अविद्यत	अविद्यथाः	अविद्ये
द्विवचन	अविद्येताम्	अविद्येथाम्	अविद्यावहि
बहुवचन	अविद्यन्त	अविद्यध्वम्	अविद्यामहि

विधिलिङ्

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	विद्येत	विद्येथाः	विद्येय
द्विवचन	विद्येयाताम्	विद्येयाथाम्	विद्येवहि
बहुवचन	विद्येरन्	विद्येध्वम्	विद्येमहि

दिव् और सिव् धातु।

५५। लट् आदि चार विभक्तियोँ मेँ दिव् के स्थान मेँ दीव् और सिव् के स्थान मेँ सीव् होता है। (१)

दिव्—धातु (प० पदी, सक०) क्रीड़ा करना, to play; (अक०) चमकना, to shine, to glitter.

Infin.—देवितुम्।

लट्—दीव्यति, दीव्यतः, दिव्यन्ति; दीव्यसि, दीव्यथः, दिव्यथ; दीव्यामि, दिव्यावः, दिव्यामः।

लोट्—दीव्यतु, दीव्यताम्, दीव्यन्तु; दीव्य, दीव्यतम्, दीव्यत; दीव्यानि, दीव्याव, दीव्याम।

लङ्—अदीव्यत्, अदीव्यताम्, अदीव्यन्; अदीव्यः, अदीव्यतम् अदीव्यत; अदीव्यम्, अदीव्याव, अदीव्याम।

विधिलिङ्—दीव्येत्, दीव्येताम्, दीव्येयुः; दीव्येः, दीव्येतम्, दीव्येत; दीव्येयम्, दीव्येव, दीव्येम।

सिव्—धातु (प० पदी, सक०) सीना, to sew.

Infin.—सेवितुम्।

लट्—सीव्यति, सीव्यतः, सीव्यन्ति; सीव्यसि, सीव्यथः, सीव्यथ; सीव्यामि, सीव्यावः, सीव्यामः।

लोट्—सीव्यतु, सीव्यताम्, सीव्यन्तु; सीव्य, सीव्यतम्, सीव्यत; सीव्यानि, सीव्याव, सीव्याम।

---

(१) हलि च। रेफवान्तस्य धातोरुपधाया इको दीर्घो हलि। हल् परे रहनेसे रेफान्त अथवा वकारान्त धातु की उपधा के इक् को दीर्घ होता है।

लङ्—असीव्यत, असीव्यताम्, असीव्यन्; असीव्यः, असीव्यतम्, असीव्यत; असीव्यम्, असीव्याव, असीव्याम।

विधिलिङ्—सीव्येत्, सीव्येताम्, सीव्येयुः; सीव्येः, सीव्येतम्, सीव्येत; सीव्येयम्, सीव्येव, सीव्येम।

जन् और व्यध् धातु।

५६। लट् आदि चार विभक्तियों में जन् के स्थान में जा (१) और व्यध् के स्थान में विध् (२) होता है।

जन्—धातु (आ० पदी, अक०) उत्पन्न होना, to grow, to be born. Infin.—जनितुम्।

लट्—जायते, जायेते, जायन्ते; जायसे, जायेथे, जायध्वे; जाये, जायावहे, जायामहे।

लोट्—जायताम्, जायेताम्, जायन्ताम्; जायस्व, जायेथाम्, जायध्वम्; जायै, जायावहै, जायामहै।

लङ्—अजायत, अजायेताम्, अजायन्त; अजायथाः, अजायेथाम्, अजायध्वम्; अजाये, अजायावहि, अजायामहि।

विधिलिङ्—जायेत, जायेयाताम्, जायेरन्; जायेथाः, जायेयाथाम्, जायेध्वम्; जायेय, जायेवहि, जायेमहि।

व्यध्—धातु (प० पदी, सक०) छेदना, to pierce. Infin.—व्यद्धुम्।

लट्—विध्यति, विध्यतः, विध्यन्ति; विध्यसि, विध्यथः, विध्यथ; विध्यामि, विध्यावः, विध्यामः।

लोट्—विध्यतु, विध्यताम्, विध्यन्तु; विध्य, विध्यतम्, विध्यत; विध्यानि, विध्याव, विध्याम।

लङ्—अविध्यत्, अविध्यताम्, अविध्यन्; अविध्यः, अविध्यतम्, अविध्यत; अविध्यम्, अविध्याव, अविध्याम।

---

(१) ज्ञाजनोर्जा। (२) ग्रहिज्यावयिव्यधिवष्टिविचतिवृश्चतिपृच्छतिभृज्जतीनां ङिति च।

विधिलिङ्—विध्येत्, विध्येताम्, विध्येयुः, विध्येः, विध्येतम्, विध्येत; विध्येयम्, विध्येव, विध्येम।

ॠकारान्त—धातु।

५७। लट् आदि चार विभक्तियों में दीर्घ ॠकारान्त धातु के ॠकार के स्थान में ईर् होता है। (१)

जॄ—धातु (प० पदी, अक०) बूढ़ा होना, to grow old; **जराजीर्ण होना,** to be seized with age, to be shattered; **पचना** to be digested.

Infin.—**जरीतुम्, जरितुम्।**

लट्—जीर्य्यति, जीर्य्यतः, जीर्य्यन्ति; जीर्य्यसि, जीर्य्यथः, जीर्य्यथ; जीर्य्यामि, जीर्य्यावः, जीर्य्यामः।

लोट्—जीर्य्यतु, जीर्य्यताम्, जीर्य्यन्तु; जीर्य्य, जीर्य्यतम्, जीर्य्यत; जीर्य्याणि, जीर्य्याव, जीर्य्याम।

लङ्—अजीर्य्यत्, अजीर्य्यताम्, अजीर्य्यन्; अजीर्य्यः, अजीर्य्यतम्, अजीर्य्यत; अजीर्य्यम्, अजीर्य्याव, अजीर्य्याम।

विधिलिङ्—जीर्य्येत्, जीर्य्येताम्, जीर्य्येयुः; जीर्य्येः, जीर्य्येतम्, जीर्य्येत; जीर्य्येयम्, जीर्य्येव, जीर्य्येम।

दॄ—धातु (प० पदी, सक०) फाड़ना, to split.

Infin.—**दरीतुम्, दरितुम्।**

लट्—दीर्य्यति, दीर्य्यतः, दीर्य्यन्ति; दीर्य्यसि, दीर्य्यथः, दीर्य्यथ; दीर्य्यामि, दीर्य्यावः, दीर्य्यामः।

लोट्—दीर्य्यतु, दीर्य्यताम्, दीर्य्यन्तु; दीर्य्य, दीर्य्यतम्, दीर्य्यत; दीर्य्याणि, दीर्य्याव, दीर्य्याम।

लङ्—अदीर्य्यत्, अदीर्य्यताम्, अदीर्य्यन्; अदीर्य्यः, अदीर्य्यतम्, अदीर्य्यत; अदीर्य्यम्, अदीर्य्याव, अदीर्य्याम।

विधिलिङ्—दीर्य्येत्, दीर्य्येताम्, दीर्य्येयुः; दीर्य्येः, दीर्य्येतम्, दीर्य्येत; दीर्य्येयम्, दीर्य्येव, दीर्य्येम।

---

(१) ॠत इद्धातोः। हलि च।

५८। लट् आदि चार विभक्तियों में शम् आदि (१) धातु के अकार के स्थान में आकार होता है।

शम्—धातु (प० पदी, अक०) शान्त होना, to grow calm; (सक०) शान्त करना, to pacify.

Infin.—शमितुम्।

लट्—शाम्यति, शाम्यतः, शाम्यन्ति; शाम्यसि, शाम्यथः, शाम्यथ; शाम्यामि, शाम्यावः, शाम्यामः।

लोट्—शाम्यतु, शाम्यताम्, शाम्यन्तु; शाम्य, शाम्यतम्, शाम्यत; शाम्यानि, शाम्याव, शाम्याम।

लङ्—अशाम्यत्, अशाम्यताम्, अशाम्यन्; अशाम्यः, अशाम्यतम्, अशाम्यत; अशाम्यम्, अशाम्याव, अशाम्याम।

विधिलिङ्—शाम्येत्, शाम्येताम्, शाम्येयुः; शाम्येः, शाम्येतम्, शाम्येत, शाम्येयम्, शाम्येव, शाम्येम।

५९। "ओतः श्यनि" लट् आदि चार विभक्तियों में ओकारान्त धातु के ओकार का लोप होता है।

सो—धातु (प० पदी, सक०) नाश करना, to destroy, to kill; (अक०) नष्ट होना, to be destroyed.

Infin.—सातुम्।

लट्—स्यति, स्यतः, स्यन्ति; स्यसि, स्यथः, स्यथ; स्यामि, स्यावः, स्यामः।

लोट्—स्यतु, स्यताम्, स्यन्तु; स्य, स्यतम्, स्यत; स्यानि, स्याव, स्याम।

लङ्—अस्यत्, अस्यताम्, अस्यन्; अस्यः, अस्यतम्, अस्यत; अस्यम्, अस्याव, अस्याम।

विधिलिङ्—स्येत्, स्येताम्, स्येयुः; स्येः, स्येतम्, स्येत; स्येयम्, स्येव, स्येम।

---

(१) शमामष्टानां दीर्घः श्यनि। शम्, श्रम्, भ्रम्, तम्, क्षम्, दम्, क्लम्, मद्।

Conjugate वि+अव+सो (चेष्टा या उद्योग करना, to attempt, to try).

प्रचलित दिवादिगणीय धातु।

परस्मपदी।

असू—to throw. अस्यति। आस्यत्। With अप—to cast off; अभि—to practise, to repeat; निर्—to scatter, to repeal, to abolish, to remove; प्र—to throw.

इष्—to go. इष्यति। ऐष्यत्। With अनु—to search for. अन्विष्यति। अन्वैष्यत्।

ऋधू—to prosper, to please. ऋध्यति। आर्ध्यत्।

कुप्—to be angry. कुप्यति। अकुप्यत्।

कृश्—to become lean or thin. कृश्यति। अकृश्यत्।

क्रुधू—to be angry, to be enraged. क्रुध्यति। अक्रुध्यत्।

क्लमू—to hate, to be tired. क्लाम्यति। अक्लाम्यत्।

क्लिद्—to be soiled. क्लिद्यति। अक्लिद्यत्।

क्षमू—to endure. क्षाम्यति। अक्षाम्यत्।

क्षिप्—to throw. क्षिप्यति। अक्षिप्यत्।

क्षुधू—to be hungry. क्षुध्यति। अक्षुध्यत्।

क्षुभ्—to be agitated. क्षुभ्यति। अक्षुभ्यत्।

छो—to cut. छ्यति। अछयत्। छ्येत्।

जसू—to draw out. जस्यति। अजस्यत्।

जॄ—to grow old, to be digested, to digest. जीर्य्यति। अजीर्य्यत्।

तमू—to be tired or fatigued. ताम्यति। अताम्यत्।

तुष्—to be pleased. तुष्यति। अतुष्यत्।

तृप्—to please, to be satisfied. तृप्यति। अतृप्यत्।

तृष्—to be thirsty. तृष्यति। अतृष्यत्।

त्रसू—to be afraid, to be frightened. त्रस्यति। अत्रस्यत्।

त्रुट्—to cut. त्रुट्यति। अत्रुट्यत्।

दमू—to conquer. दाम्यति। अदाम्यत्।

दिव्—to play, to shine. दीव्यति। अदीव्यत्।

दुष्— to be wrong or bad, to be stained or corrupted. दुष्यति। अदुष्यत्।

दृप्—to be proud. दृप्यति। अदृप्यत्।

दॄ—to tear, to break, to pierce. दीर्य्यति। अदीर्य्यत्।

दो—to cut, to tear. द्यति। अद्यत्।

द्रुह्—to bear malice or hatred. द्रुह्यति। अद्रुह्यत्।

नश्—to perish, to be lost. नश्यति। अनश्यत्।

नृत्—to dance. नृत्यति। अनृत्यत्।

पुथ्—to kill. पुथ्यति। अपुथ्यत्।

पुष्—to nourish, to develop. पुष्यति। अपुष्यत्।

पुष्प्—to open, to blossom. पुष्पति। अपुष्पत्।

भ्रृश्—to fall down. भ्रृश्यति। अभ्रृश्यत्।

भ्रंश्—to fall down, to decline. भ्रंश्यति। अभ्रंश्यत्।

भ्रंस्—to fall down. भ्रंस्यति। अभ्रंस्यत्।

भ्रम्—to roam, to wander, to walk. भ्राम्यति। अभ्राम्यत्।

मद्—to be glad. माद्यति। अमाद्यत्।

मिद्—to be oily, to perspire, to melt. मेद्यति। अमेद्यत्।

मुह्—to faint, to be silly, to lose sense. मुह्यति। अमुह्यत्।

यस्—to try. यस्यति। अयस्यत्।

रध्—to cook, to hurt. रध्यति। अरध्यत्।

राध्—to be favourable. राध्यति। अराध्यत्।

रिष्—to hurt, to kill. रिष्यति। अरिष्यत्।

रुष्—to be angry. रुष्यति। अरुष्यत्।

लुट्—to wallow. लुठ्यति। अलुठ्यत्।

लुप्—to vanish. लुप्यति। अलुप्यत्।

लुभ्—to covet, to be fascinated. लुभ्यति। अलुभ्यत्।

व्यध्—to pierce, to wound. विध्यति। अविध्यत्।

शम्—to grow calm, to pacify. शाम्यति। अशाम्यत्।

शुध्—to become pure. शुध्यति। अशुध्यत्।

शुष्—to become dry. शुष्यति। अशुष्यत्।

शो—to sharpen. श्यति। अश्यत्।

श्रम्—to take pains. श्राम्यति। अश्राम्यत्।

श्लिष्—to embrace. श्लिष्यति। अश्लिष्यत्।

सह—to endure. सह्यति। असह्यत।

साध्—to accomplish. साध्यति। असाध्यत्।

सिध्—to accomplish, to succeed. सिध्यति। असिध्यत्।

सिव्—to sew, to join. सीव्यति। असीव्यत्।

सो—to destroy. स्यति। अस्यत्।

स्निह्—to feel affection for. स्निह्यति। अस्निह्यत्।

स्नुह्—to vomit. स्नुह्यति। अस्नुह्यत्।

स्विद्—to perspire. स्विद्यति। अस्विद्यत्।

हृष्—to be delighted. हृष्यति। अहृष्यत्।

आत्मनेपदी।

अण्, अन्—to live, to breathe. अण्यते, अन्यते। आण्यत, आन्यत।

ई—to go. ईयते। ऐयत।

काश्—to shine. काश्यते। अकाश्यत।

क्लिश्—to be afflicted, to suffer. क्लिश्यते। अक्लिश्यत।

खिद्—to be distressed or offended, to suffer pain. खिद्यते। अखिद्यत।

जन्—to be born or produced, to result. जायते। अजायत।

डी—to fly. डीयते। अडीयत।

तप्—to be powerful, to trouble. तप्यते। अतप्यत।

तूर्—to make haste, to hurt. तूर्यते। अतूर्यत।

दी—to decline. दीयते। अदीयत।

दीप्—to shine, to burn. दीप्यते। अदीप्यत।

दू—to be pained, to suffer pain. दूयते। अदूयत।

धी—to contain. धीयते। अधीयत।

पद्—to go, to attain. पद्यते। अपद्यत। With उत्—to be produced; निर्—to result; निष्पद्यते; प्रति—to step towards, to do.

पी—to drink. पीयते। अपीयत।

पूर्—to satisfy, to fill. पूर्य्यते। अपूर्य्यत।

प्री—to feel affection for. प्रीयते। अप्रीयत।

बुध्—to know, to understand. बुध्यते। अबुध्यत।

मन्—to think, to regard. मन्यते। अमन्यत। With अनु—to consent to, to agree to; अव—to dis-regard.

मा—to measure. मायते। अमायत।

मी—to kill. मीयते। अमीयत।

युज्—to concentrate attention to, to be fit. युज्यते। अयुज्यत।

युध्—to fight. युध्यते। अयुध्यत।

रुध्—With अनु—to desire, to obey, to insist. अनुरुध्यते। अन्वरुध्यत। With नि—to check.

ली—to cling, to lie on, to be absorbed or dissolved. लीयते। अलीयत।

विद्—to be, to happen. विद्यते। अविद्यत।

सू—to give birth to, to produce. सूयते। असूयत।

सृज्—to create. सृज्यते। असृज्यत।

उभयपदी।

नह्—to tie, to bind. नह्यति-ते। अनह्यत्-त।

मृष्—to suffer, to pardon. मृष्यति-ते। अमृष्यत्-त।

रञ्ज्—to be coloured. रज्यति-ते। अरज्यत्-त।

लष्—to wish, to desire. लष्यति-ते अलष्यत्-त।

शक्—to be able. शक्यति-ते। अशक्यत्-त।

शप्—to curse. शप्यति-ते। अशप्यत्-त।

शुच्—to be afflicted. शुच्यति-ते। अशुच्यत् त।

Translation model:—Why (कथं) do the gods dance (देवाःनृत्यन्ति) in heaven (स्वर्गे)=कथं देवाः स्वर्गे नृत्यन्ति? Where (कुत्र) were you born (त्वम् अजायथाः or भवान् अजायत)? =कुत्र त्वमजायथाः or भवान् कुत्राजायत? Is he angry? = अपि स कुप्यति? Who (कः) can do (कर्त्तुम् शक्यते) this (इदं)?=कः इदं कर्त्तुम्

शक्यते ? Should I fight (अहं युध्येयं किम्) there (तत्र)=तत्राहं युध्येयं किम् ?

EXERCISE III.

1. *Translate into Sanskrit* :—Why do you the boys dance there ? All the gods danced with joy in heaven. Was Ram present at that time ? Do lotuses grow on land ? They are playing at dice. Do they sew cloth ? We pierced his eyes with arrows. The sun shines. You are pleased with me. Your words cut me to the quick. They two roam in the forest. Having heard his charming words, my anger grew calm. My tongue becomes dry on account of excessive thirst. He sharpened his dagger. The father has affection for his sons. We two embraced our friends with great joy. I am delighted over and over again to hear this conversation between Krishna and Arjun. The birds fly in the sky. The great victory of our popular Sovereign fills our heart with great delight.

2. *Correct* :—कथमपि युवामशाम्यत्। दुश्चिन्ता मे हृदयमदीर्य्यन्त। कथं ते दन्तानि जोर्य्यन्ति ? अहं निशित शायकैः मृगमेकं विध्यति। जायन्तु ते विद्वान् पुत्राः। ते जीर्णं वस्त्रानि असिव्यत्। युधिष्ठिरः शकुनिं सह अक्षानदीव्यन्। कुत्र विद्यसे भवान् ? नृत्यन्ते मयूरास्तत्र विद्यन्ति यत्रा-भ्रगर्जनः।

स्वादि (Fifth congugation).

६०। "स्वादिभ्यः श्नुः।" लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् इन चार विभक्तियों में स्वादिगणीय धातु के उत्तर नु का आगम होता है।

६१। "हुश्नुवोः सार्वधातुके।" ति, सि, मि, तु, आनि, आव, आम, ऐ, आवहै, आमहै, द्, स्, अम, ये सब विभक्तियाँ परे रहने से नु के स्थान में नो होता है।

सु—धातु (उभयपदी, अक०) स्नान करना, to bathe; (सक०) बाँधना, to bind; दुःख देना, to trouble; सोमरस निचोड़ना, to extract *soma* juice; मद्य चुआना, to distil wine.

Infin.—सोतुम्, सवितुम्।

लट्—परस्मैपद।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	सुनोति	सुनोषि	सुनोमि
द्विवचन	सुनुतः	सुनुथः	सुनुवः, सुन्वः (१)
बहुवचन	सुन्वन्ति	सुनुथ	सुनुमः, सुन्मः (१)

आत्मनेपद।

एकवचन	सुनुते	सुनुषे	सुन्वे
द्विवचन	सुन्वाते	सुन्वाथे	सुनुवहे, सुन्वहे (१)
बहुवचन	सुन्वते	सुनुध्वे	सुनुमहे, सुन्महे (१)

लोट्—परस्मैपद।

एकवचन	सुनोतु	सुनु	सुनवानि
द्विवचन	सुनुताम्	सुनुतम्	सुनवाव
बहुवचन	सुन्वन्तु	सुनुत	सुनवाम

आत्मनेपद।

एकवचन	सुनुताम्	सुनुष्व	सुनवै
द्विवचन	सुन्वाताम्	सुन्वाथाम्	सुनवावहै
बहुवचन	सुन्वताम्	सुनुध्वम्	सुनवामहै

(१) "लोपश्चास्यान्यतरस्यां म्वोः।" नु व्यञ्जनवर्ण में मिला न हो तो, वैयाकरण लोग विकल्प से उकार का लोप करते हैं।

लङ्—परस्मैपद।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	असुनोत्	असुनोः	असुनवम्
द्विवचन	असुनुताम्	असुनुतम्	असुनुव, असुन्व (१)
बहुवचन	असुन्वन्	असुनुत	असुनुम, असुन्म (१)

आत्मनेपद।

एकवचन	असुनुत	असुनुथाः	असुन्वि
द्विवचन	असुन्वाताम्	असुन्वाथाम्	असुनुवहि, असुन्वहि(१)
बहुवचन	असुन्वत	असुनुध्वम्	असुनुमहि असुन्महि(१)

विधिलिङ्—परस्मैपद।

एकवचन	सुनुयात्	सुनुयाः	सुनुयाम्
द्विवचन	सुनुयाताम्	सुनुयातम्	सुनुयाव
बहुवचन	सुनुयुः	सुनुयात	सुनुयाम

आत्मनेपद।

एकवचन	सुन्वीत	सुन्वीथाः	सुन्वीय
द्विवचन	सुन्वीयाताम्	सुन्वीयाथाम्	सुन्वीवहि
बहुवचन	सुन्वीरन्	सुन्वीध्वम्	सुन्वीमहि

६२। यदि नु हल् वर्ण में मिला हो तो आनि, आव, आम, ऐ, आवहै, आमहै, और अम् इनके सिवाय विभक्तियों के स्वरवर्ण परे रहने से नु के स्थान में नुव् होता है।

---

(१) यदि नु व्यञ्जन वर्ण में मिला न हो तो, वैयाकरण लोग विकल्प से उकार का लोप करते हैं।

आप्—धातु (प० पदी, सक०) प्राप्त करना, to get.

Infin.—आप्तुम्।

लट्।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	आप्नोति	आप्नोषि	आप्नोमि
द्विवचन	आप्नुतः	आप्नुथः	आप्नुवः
बहुवचन	आप्नुवन्ति	आप्नुथ	आप्नुमः

लोट्।

एकवचन	आप्नोतु	आप्नुहि	आप्नवानि
द्विवचन	आप्नुताम्	आप्नुतम्	आप्नवाव
बहुवचन	आप्नुवन्तु	आप्नुत	आप्नवाम

लङ्।

एकवचन	आप्नोत्	आप्नोः	आप्नवम्
द्विवचन	आप्नुताम्	आप्नुतम्	आप्नुव
बहुवचन	आप्नुवन्	आप्नुत	आप्नुम

विधिलिङ्।

एकवचन	आप्नुयात्	आप्नुयाः	आप्नुयाम्
द्विवचन	आप्नुयाताम्	आप्नुयातम्	आप्नुयाव
बहुवचन	आप्नुयुः	आप्नुयात	आप्नुयाम

अश्—धातु (आ० पदी, सक०) व्याप्त करना, to spread over, to pervade.

Infin.—अशितुम्, अष्टुम्।

लट्।

एकवचन	अश्नुते	अश्नुषे	अश्नुवे
द्विवचन	अश्नुवाते	अश्नुवाथे	अश्नुवहे
बहुवचन	अश्नुवते	अश्नुध्वे	अश्नुमहे

लोट्।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	अश्नुताम्	अश्नुष्व	अश्नवै
द्विवचन	अश्नुवाताम्	अश्नुवाथाम्	अश्नवावहै
बहुवचन	अश्नुवताम्	अश्नुध्वम्	अश्नवामहै

लङ्।

एकवचन	आश्नुत	आश्नुथाः	आश्नुवि
द्विवचन	आश्नुवाताम्	आश्नुवाथाम्	आश्नुवहि
बहुवचन	आश्नुवत	आश्नुध्वम्	आश्नुमहि

विधिलिङ्।

एकवचन	अश्नुवीत	अश्नुवीथाः	अश्नुवीय
द्विवचन	अश्नुवीयाताम्	अश्नुवीयाथाम्	अश्नुवीवहि
बहुवचन	अश्नुवीरन्	अश्नुवीध्वम्	अश्नुवीमहि

६३। "श्रुवः शृ च।" लट् आदि चार विभक्तियों में श्रु-धातु के स्थान में शृ होता है।

श्रु—धातु (प० पदी, सक०) सुनना, to hear.

Infin.—श्रोतुम्।

लट्।

एकवचन	शृणोति	शृणोषि	शृणोमि
द्विवचन	शृणुतः	शृणुथः	शृणुवः, शृण्वः (१)
बहुवचन	शृण्वन्ति	शृणुथ	शृणुमः, शृण्मः (१)

---

(१) "लोपश्चास्यान्यतरस्यां म्वोः।" यदि नु व्यञ्जनवर्ण में मिला न हो तो वैयाकरण लोग विकल्प से उकारका लोप करते हैं।

लोट्।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	शृणोतु	शृणु	शृणवानि
द्विवचन	शृणुताम्	शृणुतम्	शृणवाव
बहुवचन	शृण्वन्तु	शृणुत	शृणवाम

लङ्।

एकवचन	अशृणोत्	अशृणोः	अशृणवम्
द्विवचन	अशृणुताम्	अशृणुतम्	अशृणुव, अशृण्व (१)
बहुवचन	अशृण्वन्	अशृणुत	अशृणुम, अशृण्म (१)

विधिलिङ्।

एकवचन	शृणुयात्	शृणुयाः	शृणुयाम्
द्विवचन	शृणुयाताम्	शृणुयातम्	शृणुयाव
बहुवचन	शृणुयुः	शृणुयात	शृणुयाम

६४। लट् प्रभृति चार विभक्तियों में धिव् के स्थान में धि होता है।

धिव्—धातु (१) (परस्मैपदी सक०) तृप्त करना, to please, to satisfy.

Infin.—धिन्वितुम्।

लट्।

एकवचन	धिनोति	धिनोषि	धिनोमि
द्विवचन	धिनुतः	धिनुथः	धिनुवः, धिन्वः (२)
बहुवचन	धिन्वन्ति	धिनुथ	धिनुमः, धिन्मः (२)

लोट्—धिनोतु, धिनुताम्, धिन्वन्तु; धिनु, धिनुतम्, धिनुत; धिनवानि, धिनवाव, धिनवाम।

---

(१) विद्यासागरजीने इसका नाम धिव् धातु रखा है। पाणिनि के मत में इसका नाम धिन्व् धातु है और यह भ्वादिगणीय धातु है।

(२) "लोपश्चास्यान्यतरस्यां म्वोः" यदि नु व्यञ्जनवर्ण में मिला न हो तो वैयाकरण लोग विकल्पसे उकारका लोप करते हैं।

लङ्—अधिनोत्, अधिनुताम्, अधिन्वन्; अधिनोः, अधिनुतम्, अधिनुत; अधिनवम्, अधिनुव अधिन्व (२), अधिनुम, अधिन्म (२)।

विधिलिङ्—धिनुयात्, धिनुयाताम्, धिनुयुः; धिनुयाः, धिनुयातम्, धिनुयात; धिनुयाम्, धिनुयाव, धिनुयाम।

प्रचलित स्वादिगणीय धातु।

परस्मैपदी।

आप्—to get. आप्नोति। आप्नोत्।

ऋध्—to grow. ऋध्नोति। आर्ध्नोत्।

क्षि—to destroy. क्षिणोति। अक्षिणोत्।

तक्ष्—to cut, to wound. तक्ष्णोति। अतक्ष्णोत्।

तृप्—to please. तृप्नोति। अतृप्नोत्।

दन्भ्—to be proud. दभ्नोति। अदभ्नोत्।

दु—to give pain. दुनोति। अदुनोत्।

धिन्व् (धिव्)—to please, to satisfy. धिनोति। अधिनोत्।

धृष्—to dare, to brave. धृष्णोति। अधृष्णोत्।

पृ—to be satisfied. पृणोति। अपृणोत्।

शक्—to be able. शक्नोति। अशक्नोत्।

श्रु—to hear. शृणोति। अशृणोत्।

साध्—to finish, to accomplish. साध्नोति। असाध्नोत्।

हि—to increase, to go. हिनोति। अहिनोत्। With प्र—to send.

आत्मनेपदी।

अश्—to spread, to pervade, to be collected. अश्नुते। आश्नुत।

उभयपदी।

कृ—to kill, to do. कृणोति, कृणुते।

चि—to collect. चिनोति, चिनुते। With निर्—to determine; वि—to search; सम्—to hoard.

धु or धू—to shake. धुनोति, धुनुते। धूनोति, धूनुते।

क्षि—to throw, to scatter. क्षिणोति, क्षिणुते। अक्षिणोत्, अक्षिणुत।

वृ—to cover, to choose. वृणोति, वृणुते। With अप+आ—to open; आ—to restrain; वि—to expound, to express; सम्—to shut.

शि—to mark. शिनोति, शिनुते।

सि—to bind, to tie. सिनोति, सिनुते। असिनोत्, असिनुत।

सु—to bind, to extract *soma* juice, to distil wine, to bathe. सुनोति, सुनुते।

स्तृ—to spread. स्तृणोति। स्तृणुते।

Exercise IV.

Translate into Sanskrit:—The clouds spread over the sky. Let us get everlasting fame by our noble deeds. You should hear the advice of the preceptor. Pious men always get happiness. We gather flowers from the trees every day. Cover the courtyard with carpets.

Correct:—वयं तस्य वचनं न अशृणोत्। अहमेतत् अश्नोमि। युवां सम्पदं आप्नुवन्ति। वयमग्निं चिनुथ। यूयमिदं कार्य्यं साध्नोति।

तनादि (Eighth conjugation).

६५। "तनादिकृञ्भ्य उः।" लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् इन चार विभक्तियोँ मेँ तनादिगणीय धातुके उत्तर 'उ' का आगम् होता है; और वह 'उ' अन्त्य वर्ण मेँ मिल जाता है।

६६। ति, सि, मि, तु, आनि, आव, आम, ऐ, आवहै, आमहै, द्, स् और अम् ये सब विभक्तियाँ परे रहने से 'उ' के स्थान मेँ ओ होता है।

तनु—धातु (उभयपदी, सक०) फैलाना, to spread.
Infin.—तनितुम्।

लट्—परस्मैपद।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	तनोति	तनोषि	तनोमि
द्विवचन	तनुतः	तनुथः	तनुवः, तन्वः (१)
बहुवचन	तन्वन्ति	तनुथ	तनुमः, तन्मः (१)

आत्मनेपद।

एकवचन	तनुते	तनुषे	तन्वे
द्विवचन	तन्वाते	तन्वाथे	तनुवहे, तन्वहे (१)
बहुवचन	तन्वते	तनुध्वे	तनुमहे, तन्महे (१)

लोट्—परस्मैपद।

एकवचन	तनोतु	तनु	तनवानि
द्विवचन	तनुताम्	तनुतम्	तनवाव
बहुवचन	तन्वन्तु	तनुत	तनवाम

आत्मनेपद।

एकवचन	तनुताम्	तनुष्व	तनवै
द्विवचन	तन्वाताम्	तन्वाथाम्	तनवावहै
बहुवचन	तन्वताम्	तनुध्वम्	तनवामहै

लङ्—परस्मैपद।

एकवचन	अतनोत्	अतनोः	अतनवम्
द्विवचन	अतनुताम्	अतनुतम्	अतनुव, अतन्व (१)
बहुवचन	अतन्वन्	अतनुत	अतनुम, अतन्म (१)

---

(१) यदि 'उ' संयुक्तवर्ण में मिला न हो तो वैयाकरण लोग विकल्प से उकारका लोप करते हैं।

आत्मनेपद।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	अतनुत	अतनुथाः	अतन्वि
द्विवचन	अतन्वाताम्	अतन्वाथाम्	अतनुवहि, अतन्वहि (१)
बहुवचन	अतन्वत	अतनुध्वम्	अतनुमहि, अतन्महि(१)

विधिलिङ्—परस्मैपद।

एकवचन	तनुयात्	तनुयाः	तनुयाम्
द्विवचन	तनुयाताम्	तनुयातम्	तनुयाव
बहुवचन	तनुयुः	तनुयात	तनुयाम

आत्मनेपद।

एकवचन	तन्वीत	तन्वीथाः	तन्वीय
द्विवचन	तन्वीयाताम्	तन्वीयाथाम्	तन्वीवहि
बहुवचन	तन्वीरन्	तन्वीध्वम्	तन्वीमहि

६७। ति, सि, मि, तु, आनि, आव, आम, ऐ, आवहै, आमहै, द्, स्, अम् ये विभक्तियाँ परे रहने से कृ धातु के स्थान मैं कर् और तद्भिन्न विभक्तियोँ मैं कुर् होता है।

६८। विभक्ति के म (२) य, व परे रहने से कृ धातु के परस्थित उकार का लोप होता है।

कृ—धातु (उभयपदी, सक०) करना, To do.

Infin.—कर्त्तुम्।

लट्—परस्मैपद।

एकवचन	करोति	करोषि	करोमि
द्विवचन	कुरुतः	कुरुथः	कुर्व्वः
बहुवचन	कुर्व्वन्ति	कुरुथ	कुर्म्मः

(१) यदि 'उ' संयुक्तवर्ण मैं मिला न हो तो वैयाकरण लोग विकल्प से उकारका लोप करते हैं।

(२) मि भिन्न।

आत्मनेपद।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	कुरुते	कुरुषे	कुर्व्वे
द्विवचन	कुर्व्वाते	कुर्व्वाथे	कुर्व्वहे
बहुवचन	कुर्व्वते	कुरुध्वे	कुर्म्महे

लोट्—परस्मैपद।

एकवचन	करोतु	कुरु	करवाणि
द्विवचन	कुरुताम्	कुरुतम्	करवाव
बहुवचन	कुर्व्वन्तु	कुरुत	करवाम

आत्मनेपद।

एकवचन	कुरुताम्	कुरुष्व	करवै
द्विवचन	कुर्व्वाताम्	कुर्व्वाथाम्	करवावहै
बहुवचन	कुर्व्वताम्	कुरुध्वम्	करवामहै

लङ्—परस्मैपद।

एकवचन	अकरोत्	अकरोः	अकरवम्
द्विवचन	अकुरुताम्	अकुरुतम्	अकुर्व्व
बहुवचन	अकुर्व्वन्	अकुरुत	अकुर्म्म

आत्मनेपद।

एकवचन	अकुरुत	अकुरुथाः	अकुर्व्वि
द्विवचन	अकुर्व्वाताम्	अकुर्व्वाथाम्	अकुर्व्वहि
बहुवचन	अकुर्व्वत	अकुरुध्वम्	अकुर्म्महि

विधिलिङ्—परस्मैपद।

एकवचन	कुर्य्यात्	कुर्य्याः	कुर्य्याम्
द्विवचन	कुर्य्याताम्	कुर्य्यातम्	कुर्य्याव
बहुवचन	कुर्य्युः	कुर्य्यात	कुर्य्याम

आत्मनेपद ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	कुर्वीत	कुर्वीथाः	कुर्वीय
द्विवचन	कुर्वीयाताम्	कुर्वीयाथाम्	कुर्वीवहि
बहुवचन	कुर्वीरन्	कुर्वीध्वम्	कुर्वीमहि

प्रचलित तनादिगणीय धातु ।

आत्मनेपदी (१) ।

मन्—to consider. मनुते। अमनुत। वन्—to beg. वनुते। अवनुत।

उभयपदी ।

ऋण्—to go. ऋणोति, अर्णोति; ऋणुते, अर्णुते। आर्णोत्, आर्णुत।

कृ—to do. करोति, कुरुते। अकरोत्, अकुरुत। With अधि—to authorise; अलम्—to adorn, to beautify; आविस्—to show, to manifest, to expose, to open, to lay bare, to invent, to discover. आविष्करोति।

क्षण्—to injure, to wound, to kill. क्षणोति, क्षणुते। अक्षणोत्, अक्षणुत।

क्षिण्—to injure, to wound, to kill. क्षिणोति, क्षिणुते। अक्षिणोत्, अक्षिणुत।

घृण्—to shine. घृणोति, घर्णोति; घृणुते, घर्णुते, अघृणोत्, अघर्णोत्; अघृणुत, अघर्णुत।

तन्—to extend, to stretch, to increase, to spread. तनोति, तनुते। अतनोत्, अतनुत।

तृण्—to eat. तृणोति, तर्णोति; तृणुते, तर्णुते। अतृणोत्, अतर्णोत्; अतृणुत, अतर्णुत।

Exercise V.

1. *Translate into Sanskrit* :—The son increased his father's delight by his uncommon success. The sun extends his rays even into the house of a *chandal* (a very low caste people). Spread your good name throughout the world by your good deeds. We must spread education among

(१) तनादिगणीय प्रचलित परस्मैपदी धातु बहुत ही कम मिलते हैं।

ignorant people. Let him adorn his body with valuable ornaments. They do their work with great labour. We must always do our duty. Is there any one here who does not do his duty?

2. *Correct*:—किं पापं न कुर्व्वते लोभोपहतचेतसो जनः। युयमिदं असत् कर्म्म न कर्व्वीत। भवान सदा सत् कार्य्यं कुरु। तनोन्तु पुण्य हि साधवः। तनुहि त्वं यशं कृत्वा परोपकारम्। कूजानि सरोजलक्ष्मीमतनोत्।

क्र्यादि (Ninth conjugation).

६९। "क्र्यादिभ्यः श्ना।" लट्, लोट्, लङ् और विधिलिङ् इन चार विभक्तियों में क्र्यादिगणीय धातुके उत्तर "ना" का आगम् होता है।

७०। अम् भिन्न स्वरवर्ण परे रहनेसे "ना" के आकार का लोप होता है (१)।

७१। ति, सि, मि, तु, द्, स्, भिन्न व्यञ्जनवर्ण परे रहने से "ना" के स्थान में "नी" होता है (२)।

की—धातु (उ० पदी, सक०) ख़रीदना, मोल लेना, To buy.

Infin.—क्रेतुम्।

लट्—परस्मैपद।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	क्रीणाति	क्रीणासि	क्रीणामि
द्विवचन	क्रीणीतः	क्रीणीथः	क्रीणीवः
बहुवचन	क्रीणन्ति	क्रीणीथ	क्रीणीमः

आत्मनेपद।

एकवचन	क्रीणीते	क्रीणीषे	क्रीणे
द्विवचन	क्रीणाते	क्रीणाथे	क्रीणीवहे
बहुवचन	क्रीणते	क्रीणीध्वे	क्रीणीमहे

(१) श्नाभ्यस्तयोरातः। (२) ई हल्यघोः।

लोट्—परस्मैपद।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	क्रीणातु	क्रीणीहि	क्रीणानि
द्विवचन	क्रीणीताम्	क्रीणीतम्	क्रीणाव
बहुवचन	क्रीणन्तु	क्रीणीत	क्रीणाम

आत्मनेपद।

एकवचन	क्रीणीताम्	क्रीणीष्व	क्रीणै
द्विवचन	क्रीणाताम्	क्रीणाथाम्	क्रीणावहै
बहुवचन	क्रीणताम्	क्रीणीध्वम्	क्रीणामहै

लङ्—परस्मैपद।

एकवचन	अक्रीणीत्	अक्रीणाः	अक्रीणाम्
द्विवचन	अक्रीणीताम्	अक्रीणीतम्	अक्रीणीव
बहुवचन	अक्रीणन्	अक्रीणीत	अक्रीणीम

आत्मनेपद।

एकवचन	अक्रीणीत	अक्रीणीथाः	अक्रीणि
द्विवचन	अक्रीणाताम्	अक्रीणाथाम्	अक्रीणीवहि
बहुवचन	अक्रीणत	अक्रीणीध्वम्	अक्रीणीमहि

विधिलिङ्—परस्मैपद।

एकवचन	क्रीणीयात्	क्रीणीयाः	क्रीणीयाम्
द्विवचन	क्रीणीयाताम्	क्रीणीयातम्	क्रीणीयाव
बहुवचन	क्रीणीयुः	क्रीणीयात	क्रीणीयाम

आत्मनेपद।

एकवचन	क्रीणीत	क्रीणीथाः	क्रीणीय
द्विवचन	क्रीणीयाताम्	क्रीणीयाथाम्	क्रीणीवहि
बहुवचन	क्रीणीरन्	क्रीणीध्वम्	क्रीणीमहि

अश्—धातु (प० पदी, सक०) भोजन करना, To eat.
Infin.—अशितुम्।

लट्।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	अश्नाति	अश्नासि	अश्नामि
द्विवचन	अश्नीतः	अश्नीथः	अश्नीवः
बहुवचन	अश्नन्ति	अश्नीथ	अश्नीमः

७२। "हलः श्नः शानज्झौ।" लोट को हि विभक्ति में व्यञ्जनवर्ण के परस्थित "ना" के स्थान में आन होता है।

लोट्।

एकवचन	अश्नातु	अशान	अश्नानि
द्विवचन	अश्नीताम्	अश्नीतम्	अश्नाव
बहुवचन	अश्नन्तु	अश्नीत	अश्नाम

लङ्—आश्नात्, आश्नीताम्, आश्नन्; आश्नाः, आश्नीतम्, आश्नीत; आश्नाम्, आश्नीव, आश्नीम।

विधिलिङ्—अश्नीयात्, अश्नीयाताम्, अश्नीयुः; अश्नीयाः, अश्नीयातम्, अश्नीयात; अश्नीयाम्, अश्नीयाव, अश्नीयाम।

ग्रह् और ज्ञा धातु।

७३। लट् आदि चार विभक्तियों में ग्रह-धातु के स्थान में गृह् और ज्ञा धातु के स्थान में जा होता है (१)।

ग्रह्—धातु (उ० पदी, सकर्मक) ग्रहण करना, To take.
Infin.—ग्रहीतुम्।

लट्—परस्मैपद।

एकवचन	गृह्णाति	गृह्णासि	गृह्णामि
द्विवचन	गृह्णीतः	गृह्णीथः	गृह्णीवः
बहुवचन	गृह्णन्ति	गृह्णीथ	गृह्णीमः

(१) ग्रहिज्यावयिव्यधिवष्टिविचतिवृश्चतिपृच्छति भृज्जतीनां ङिति च। ज्ञाजनोर्जा।

आ० पद—गृह्णीते, गृह्णाते, गृह्णते; गृह्णीसे, गृह्णाथे, गृह्णीध्वे; गृह्णे, गृह्णीवहे, गृह्णीमहे।

लोट् (प० पद)—गृह्णातु, गृह्णीताम्, गृह्णन्तु; गृहाण, गृह्णीतम्, गृह्णीत; गृह्णाणि, गृह्णाव, गृह्णाम।

आ० पद—गृह्णीताम्, गृह्णाताम्, गृह्णताम्; गृह्णीष्व, गृह्णाथाम्, गृह्णीध्वम्; गृह्णै, गृह्णावहै, गृह्णामहै।

लङ् (प० पद)—अगृह्णात्, अगृह्णीताम्, अगृह्णन्; अगृह्णाः, अगृह्णीतम्, अगृह्णीत; अगृह्णाम्, अगृह्णीव, अगृह्णीम।

आ० पद—अगृह्णीत, अगृह्णाताम्, अगृह्णत; अगृह्णीथाः, अगृह्णाथाम्, अगृह्णीध्वम्; अगृह्णि, अगृह्णीवहि, अगृह्णीमहि।

विधिलिङ् (प० पद)—गृह्णीयात्, गृह्णीयाताम्, गृह्णीयुः; गृह्णीयाः, गृह्णीयातम्, गृह्णीयात; गृह्णीयाम्, गृह्णीयाव, गृह्णीयाम।

आ० पद—गृह्णीत, गृह्णीयाताम्, गृह्णीरन्; गृह्णीथाः, गृह्णीयाथाम्, गृह्णीध्वम्; गृह्णीय, गृह्णीवहि, गृह्णीमहि।

ज्ञा—धातु (उभयपदी, सक०) जानना, To know.

Infin.—ज्ञातुम्।

लट्

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	जानाति	जानासि	जानामि
द्विवचन	जानीतः	जानीथः	जानीवः
वहुवचन	जानन्ति	जानीथ	जानीमः

आ० पद—जानीते, जानाते, जानते; जानीषे, जानाथे, जानीध्वे; जाने, जानीवहे, जानीमहे।

लोट् (प० पद)—जानातु, जानीताम्, जानन्तु; जानीहि, जानीतम्, जानीत; जानानि, जानाव, जानाम।

आ० पद—जानीताम्, जानाताम्, जानताम्; जानीष्व, जानाथाम्, जानीध्वम्; जानै, जानावहै, जानामहै।

लङ् (प० पद)—अजानात्, अजानीताम्, अजानन्; अजानाः, अजानीतम्, अजानीत; अजानाम्, अजानीव, अजानीम।

आ० पद—अजानीत, अजानाताम्, अजानत; अजानीथाः, अजानाथाम्, अजानीध्वम्; अजानि, अजानीवहि, अजानीमहि।

विधिलिङ् (प० पदी)—जानीयात्, जानीयाताम्, जानीयुः; जानीयाः, जानीयातम्, जानीयात; जानीयाम्, जानीयाव, जानीयाम।

आ० पद—जानीत जानीयाताम्, जानीरन्; जानीथाः, जानीयाथाम्, जानीध्वम्; जानीय, जानीवहि, जानीमहि (१)।

ऊकारान्त धातु।

७४। लट् आदि चार विभक्तियोंमें क्र्यादिगणीय धातुका अन्तस्थित दीर्घ ऊकार ह्रस्व होता है (२)।

पू-धातु (उभयपदी, सक०) पवित्र करना, To purify.

Infin.—पवितुम्।

लट्—परस्मैपद।

एकवचन	पुनाति	पुनासि	पुनामि
द्विवचन	पुनीतः	पुनीथः	पुनीवः
बहुवचन	पुनन्ति	पुनीथ	पुनीमः

आ० पद—पुनीते, पुनाते, पुनते; पुनीषे, पुनाथे, पुनीध्वे; पुने, पुनीवहे, पुनीमहे।

लोट (प० पद)—पुनातु, पुनीताम्, पुनन्तु; पुनीहि, पुनीतम्, पुनीत; पुनानि, पुनाव, पुनाम।

आ० पद—पुनीता पुनाताम्, पुनताम्; पुनीष्व, पुनाथाम्, पुनीध्वम्; पुनै, पुनावहै, पुनामहै।

लङ् (प० पद)—अपुनात्, अपुनीताम्, अपुनन्; अपुनाः, अपुनीतम्, अपुनीत; अपुनाम्, अपुनीव, अपुनीम।

---

(१) ज्ञा धातु धातुपाठ के अनुसार परस्मैपदी है, परन्तु स्थल विशेष में यह आत्मनेपदी भी होती है, इसलिये इसको उभयपदी कहा गया।

(२) प्वादीनां ह्रस्वः। पू, धू, लू, स्तॄ प्रभृति चौबीस धातुओं का अन्तस्थित दीर्घस्वर ह्रस्व होता है।

आ० पद—अपुनीत, अपुनाताम्, अपुनत; अपुनीथाः, अपुनाथाम्, अपुनीध्वम्; अपुनि, अपुनीवहि, अपुनीमहि।

विधिलिङ् (प० पद)—पुनीयात्, पुनीयाताम्, पुनीयुः; पुनीयाः, पुनीयातम्, पुनीयात; पुनीयाम्, पुनीयाव, पुनीयाम।

आ० पद—पुनीत, पुनीयाताम्, पुनीरन्; पुनीथाः, पुनीयाथाम्, पुनीध्वम्; पुनीय, पुनीवहि, पुनीमहि।

उपधा में नयुक्त धातु।

७५। लट् आदि चार विभक्तियों में क्र्यादिगणीय धातु के उपधा नकार का लोप होता है।

बन्ध्—धातु (प० पदी, सक०) बाँधना, To tie, to bind up.

Infin.—बन्द्धुम्।

लट्।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	बध्नाति	बध्नासि	बध्नामि
द्विवचन	बध्नीतः	बध्नीथः	बध्नीवः
बहुवचन	बध्नन्ति	बध्नीथ	बध्नीमः

लोट्—बध्नातु, बध्नीताम्, बध्नन्तु; बधान, बध्नीतम्, बध्नीत; बध्नानि, बध्नाव, बध्नाम।

लङ्—अबध्नात्, अबध्नीताम्, अबध्नन् अबध्नाः, अबध्नीतम्, अबध्नीत; अबध्नाम्, अबध्नीव, अबध्नीम।

विधिलिङ्—बध्नीयात्, बध्नीयाताम्, बध्नीयुः; बध्नीयाः, बध्नीयातम्; बध्नीयात; बध्नीयाम्, बध्नीयाव, बध्नीयाम।

प्रचलित क्र्यादिगणीय धातु।

परस्मैपदी।

अश्—to eat. अश्नाति। आश्नात्।

इष्—to do over and over again. इष्णाति। ऐष्णात।

ॠ—to go, to move. ॠणाति। आर्णात।

क्लिश्—to torment, to give pain to. क्लिश्नाति। अक्लिश्नात्।

कुन्थ्—to suffer pain. कुथ्नाति। अकुथ्नात्।

कुष्—to limit. कुष्णाति। अकुष्णात्।

क्षुभ्—to disturb. क्षुभ्नाति। अक्षुभ्नात्।

गॄ—to call out. गृणाति। अगृणात्।

ग्रन्थ्—to tie, to fasten. ग्रथ्नाति। अग्रथ्नात्।

जॄ—to grow old. जृणाति। अजृणात्।

ज्या—to grow old. जिनाति। अजिनात्।

दॄ—to tear. दृणाति। अदृणात्।

पुष्—to nourish. पुष्णाति। अपुष्णात्।

पॄ—to protect, to fill up. पृष्णाति, अपृष्णात्।

बन्ध्—to bind, to attract. बध्नाति। अबध्नात्।

भॄ—to scold. भृणाति। अभृणात्।

मन्थ्—to churn. मथ्नाति। अमथ्नात्।

मुष्—to steal. मुष्णाति। अमुष्णात्।

मृद्—to press, to kill. मृद्नाति। अमृद्नात्।

मॄ—to kill, to wound. मृणाति। अमृणात्।

री—to sound, to go. रिणाति। अरिणात्।

व्री—to choose. व्रिणाति, व्रीणाति। अव्रिणात, अव्रीणात्।

व्ली—to choose. व्लिनाति। अव्लिनात्।

शॄ—to kill, to injure. शृणाति। अशृणात्।

स्तन्भ्—to fix firmly. स्तभ्नाति। अस्तभ्नात्।

आत्मनेपदी।

वॄ—to serve, to cherish. वृणीते। वृणीताम्। अवृणीत। वृणीत।

उभयपदी।

कॄ—to kill, to injure. कृणाति, कृणीते। अकृणात्, अकृणीत।

क्री—to buy. क्रीणाति, क्रीणीते। अक्रीणात्, अक्रीणीत। With निर्—to buy off, to redeem, to ransom. निष्क्रीणाति निष्क्रीणाते।

ग्रह्—to take. गृह्णाति, गृह्णीते। अगृह्णात्, अगृह्णीत। With अनु—to favour; नि—to

curb ; वि—to be at war with; सम्—to gather, to store, to hoard.

ज्ञा—to know. जानाति, जानीते। अजानात्, अजानीत। With अनु—to permit; अभि—to recognise; अव—to slight.

धू—to shake. धुनाति, धुनीते। अधुनात्, अधुनीत।

पू—to purify, to sanctify. पुनाति, पुनीते। अपुनात्, अपुनीत।

प्री—to please, to take delight in, to love. प्रीणाति, प्रीणीते। अप्रीणात्, अप्रीणीत।

मी—to kill, to injure. मीनाति, मीनीते। अमीनात्, अमीनीत।

यु—to tie, to bind. युनाति, युनीते। अयुनात्, अयुनीत।

लू—to cut off. लुनाति, लुनीते। अलुनात्, अलुनीत।

वृ—to choose. वृणाति, वृणीते। अवृणात्, अवृणीत।

स्तॄ—to cover, to spread. स्तृणाति, स्तृणीते। अस्तृणात्, अस्तृणीत।

Exercise VI.

1. *Translate into Sanskrit* :—We bought three milch cows. Eat thou only pure things. Let him *enjoy* (उप+अश्) the fruits of his labour. We gathered many good books from different places. We should know that virtue brings eternal bliss and sin, eternal misery. Let us purify our souls by visiting the sacred places. Let them cut off the branches of the trees in the garden. The wind shakes the leaves of the trees. The king knew me before but he does not recognise me now.

2. *Correct*:—वयं त्वं बध्नामः। मातर्गङ्गा! पुनीत माम्। ते कौटिल्यं सर्वे वयं जानन्ति। त्वमिमान् पुस्तकानि गृह्णाहि। तौ कदन्नमश्नाताम्। अपहृतानि द्रव्याणि यूयं मा क्रीनीयुः। बध्नन्ति किं सुकोमलं तृनानि प्रमत्तो वारनम्। अक्षुभ्नीतार्णवं प्रशान्तं प्रभञ्जनः। मथ्नाति समुद्रममृताय देवासुराः।

रुधादि (Seventh Conjugation).

७६। "रुधादिभ्यः श्नम्।" लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ्, इन चार विभक्तियोंमें रुधादिगणीय धातुके अन्त्य स्वरके परे "न्" का आगम होता है।

७७। ति, सि, मि, तु, आनि, आव, आम, ऐ, आवहै, आमहै, द्, स् और अम्, इन विभक्तियोंमें नकारके परे अकार होता है।

रुध्-धातु (उ० पदी, सक०) घेरना, to shut up; to obstruct; to hold up; to shut out.

Infin.—रोद्धुम्।

लट्—परस्मैपद।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	रुणद्धि	रुणत्सि	रुणध्मि
द्विवचन	रुन्धः	रुन्धः	रुन्ध्वः
बहुवचन	रुन्धन्ति	रुन्ध	रुन्ध्मः

आत्मनेपद।

एकवचन	रुन्धे	रुन्त्से	रुन्धे
द्विवचन	रुन्धाते	रुन्धाथे	रुन्ध्वहे
बहुवचन	रुन्धते	रुन्ध्वे	रुन्ध्महे

लोट्—परस्मैपद।

एकवचन	रुणद्धु-रुंधात्	रुन्धि-रुंधात्	रुणधानि
द्विवचन	रुन्धाम्	रुन्धम्	रुणधाव
बहुवचन	रुन्धन्तु	रुन्ध	रुणधाम

आत्मनेपद।

एकवचन	रुन्धाम्	रुन्त्स्व	रुणधै
द्विवचन	रुन्धाताम्	रुन्धाथाम्	रुणधावहै
बहुवचन	रुन्धताम्	रुन्ध्वम्	रुणधामहै

लङ्—परस्मैपद।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	अरुणत्-द्	अरुणत्, अरुणः(१)	अरुणधम्
द्विवचन	अरुन्धाम्	अरुन्धम्	अरुन्ध्व
बहुवचन	अरुन्धन्	अरुन्ध	अरुन्ध्म

आत्मनेपद।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	अरुन्ध	अरुन्धाः	अरुन्धि
द्विवचन	अरुन्धाताम्	अरुन्धाथाम्	अरुन्ध्वहि
बहुवचन	अरुन्धत	अरुन्ध्वम्	अरुन्ध्महि

विधिलिङ्—परस्मैपद।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	रुन्ध्यात्	रुन्ध्याः	रुन्ध्याम्
द्विवचन	रुन्ध्याताम्	रुन्ध्यातम्	रुन्ध्याव
बहुवचन	रुन्ध्युः	रुन्ध्यात	रुन्ध्याम

आत्मनेपद।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	रुन्धीत	रुन्धीथाः	रुन्धीय
द्विवचन	रुन्धीयाताम्	रुन्धीयाथाम्	रुन्धीवहि
बहुवचन	रुन्धीरन्	रुन्धीध्वम्	रुन्धीमहि

भुज्–धातु (प० पदी, सक०) रक्षा करना, to protect;
(आ० पदी, सक०) भोजन करना, to eat.

Infin.—भोक्तुम्।

लट्—परस्मैपद।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	भुनक्ति	भुनक्षि	भुनज्मि
द्विवचन	भुङ्क्तः	भुङ्क्थः	भुञ्ज्वः
बहुवचन	भुञ्जन्ति	भुङ्क्थ	भुञ्ज्मः

---

(१) वैयाकरण लोग लङ् को स् विभक्तिमें धातुके अन्तस्थित ध् के स्थानमें विकल्पसे विसर्ग करके दो पद सिद्ध करते हैं। यथा, अरुणत्, अरुणः,

आत्मनेपद।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	भुङ्क्ते	भुङ्क्षे	भुञ्जे
द्विवचन	भुञ्जाते	भुञ्जाथे	भुञ्ज्वहे
बहुवचन	भुञ्जते	भुङ्ग्ध्वे	भुञ्ज्महे

लोट् (प० पद)—भुनक्तु-भुङ्क्तात्, भुङ्क्ताम्, भुञ्जन्तु; भुङ्ग्धि-भुङ्क्तात्, भुङ्क्तम्, भुङ्क्त; भुनजानि, भुनजाव, भुनजाम।

आ० पद—भुङ्क्ताम्, भुञ्जाताम्, भुञ्जताम्; भुङ्क्ष्व, भुञ्जाथाम्, भुङ्ग्ध्वम्; भुनजै, भुनजावहै, भुनजामहै।

लङ् (प० पद)—अभुनक्-अभुनग्, अभुङ्क्ताम्, अभुञ्जन्; अभुनक्-अभुनग्, अभुङ्क्तम्, अभुङ्क्त; अभुनजम्, अभुञ्ज्व, अभुञ्ज्म।

आ० पद—अभुङ्क्त, अभुञ्जाताम्, अभुञ्जत; अभुङ्क्थाः, अभुञ्जाथाम्, अभुङ्ग्ध्वम्; अभुञ्जि, अभुञ्ज्वहि, अभुञ्ज्महि।

विधिलिङ् (प० पद)—भुञ्ज्यात्, भुञ्ज्याताम्, भुञ्ज्युः; भुञ्ज्याः, भुञ्ज्यातम्, भुञ्ज्यात; भुञ्ज्याम्, भुञ्ज्याव, भुञ्ज्याम।

आ० पद—भुञ्जीत, भुञ्जीयाताम्, भुञ्जीरन्; भुञ्जीथाः, भुञ्जीयाथाम्, भुञ्जीध्वम्; भुञ्जीय, भुञ्जीवहि, भुञ्जीमहि (१)।

७८। लट् आदि चार विभक्तियोंमें हिन्स् धातुके स्थानमें हिस् होता है (२)।

---

(१) रक्षा करना अर्थात पालन करना (to protect) केवल इसी अर्थमें भुज्—धातुका प्रयोग परस्मैपदमें होता है। भोजन करना अर्थात खाना (to eat), उपभोग करना (to enjoy), प्रभृति पालनार्थसे भिन्न और सब अर्थोंमें इसका प्रयोग आत्मनेपदमें ही होता है।

(२) लट् आदि चार विभक्तियोंमें रुधादिगणीय धातुके उपधा "न्" का लोप होता है। यथा, हिन्स्, हिस्; इन्ध्, इध्; तन्च्, तच्; भन्ज्, भज्। [illegible]

हिन्स्–धातु (प० पदी, सक०) हिंसा करना, to kill.

Infin.—हिंसितुम्।

लट्

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	हिनस्ति	हिनस्सि	हिनस्मि
द्विवचन	हिंस्तः	हिंस्थः	हिंस्वः
बहुवचन	हिंसन्ति	हिंस्थ	हिंस्मः

लोट्—हिनस्तु-हिंस्तात्, हिंस्ताम्, हिंसन्तु; हिन्धि-हिंस्तात्, हिंस्तम्, हिंस्त; हिनसानि, हिनसाव, हिनसाम।

लङ्—अहिनत्-अहिनद्, अहिंस्ताम्, अहिंसन्; अहिनत्-अहिनः, अहिंस्तम्, अहिंस्त; अहिनसम्, अहिंस्व, अहिंस्म।

विधिलिङ्—हिंस्यात्, हिंस्याताम्, हिंस्युः; हिंस्याः, हिंस्यातम्, हिंस्यात; हिंस्याम्, हिंस्याव, हिंस्याम।

७९। "तृणह इम्"। ति, सि, मि, तु, द् और स्, इन विभक्तियों में तृह् धातुके न् के स्थानमें ने होता है।

तृह्–धातु (प० पदी, सक०) हिंसा करना, to kill.

Infin.—तर्हितुम्।

लट्

एकवचन	तृणेढि	तृणेक्षि	तृणेह्मि
द्विवचन	तृण्ढः	तृण्ढः	तृंह्वः
बहुवचन	तृंहन्ति	तृण्ढ	तृंह्मः

लोट्—तृणेढु-तृण्ढात्, तृण्ढाम्, तृंहन्तु; तृण्ढि-तृण्ढात्, तृण्ढम्, तृण्ढ; तृणहानि, तृणहाव, तृणहाम।

लङ्—अतृणेट्-अतृणेड्, अतृण्ढाम्, अतृंहन्; अतृणेट्-अतृणेड्, अतृण्ढम्, अतृण्ढ; अतृणहम्, अतृंह्व, अतृंह्म।

विधिलिङ्:—तृंह्यात्, तृंह्याताम्, तृंह्युः; तृंह्याः, तृंह्यातम्, तृंह्यात; तृंह्याम्, तृंह्याव, तृंह्याम।

प्रचलित रुधादिगणीय धातु।

परस्मैपदी।

अन्ज्—to anoint, to beautify, to go, to manifest. अनक्ति। आनक्-आनग्।

उन्द्—to moisten, to wet. उनत्ति। औनत्-औनद्।

तन्च्—to hesitate तनक्ति। अतनक्-अतनग्।

भन्ज्—to break, to disappoint. भनक्ति। अभनक्-अभनग्।

वृज्—to avoid, to shun. वृनक्ति। अवृणक्-अवृणग्।

तृह्—to kill, to injure. तृणेढि।

पिष्—to grind, to hurt. पिनष्टि।

पृच्—to stand in relation to. पृणक्ति। अपृणक्-अपृणग्।

कृत्—to surround. कृणत्ति। अकृणत्-अकृणद्।

विज्—to shake, to fear. विनक्ति।

शिष्—to distinguish. शिनष्टि।

हिन्स्—to kill. हिनस्ति। अहिनत्-अहिनद्।

आत्मनेपदी।

इन्ध्—to shine, to blaze. इन्धे। ऐन्ध।

विद्—to discuss. विन्ते। अविन्त।

उभयपदी।

क्षुद्—to pound, to strike against. क्षुणत्ति, क्षुन्ते। अक्षुणत्-अक्षुणद्, अक्षुन्त।

छिद्—to cut, to divide. छिनत्ति, छिन्ते। अच्छिनत्-अच्छिनद्, अच्छिन्त।

छृद्—to shine, to play. छृणत्ति, छृन्ते। अच्छृणत्-अच्छृणद्, अच्छृन्त।

तृद्—to injure, to kill, to dislike, to hate. तृणत्ति, तृन्ते। अतृणत्-अतृणद्, अतृन्त।

भिद्—to split, to separate. भिनत्ति, भिन्ते। अभिनत्-अभिनद्, अभिन्त।

भुज्—to protect. भुनक्ति। अभुनक्-अभुनग्। to eat. भुङ्क्ते, अभुङ्क्त।

युज्—to unite. युनक्ति, युङ्क्ते। अयुनक्-अयुनग्, अयुङ्क्त।

रिच्—to empty. रिणक्ति, रिङ्क्ते। अरिणक्-अरिणग्, अरिङ्क्त।

रुध्—to obstruct, to prevent, to oppose, to besiege. रुणद्धि, रुन्धे। अरुणत्-अरुणद् अरुन्ध।

विच्—to separate. विनक्ति, विङ्क्ते। अविनक्-अविनग्, अविङ्क्त।

Exercise VII.

Translate into Sanskrit:—Ram *besieged* (अव + रुध्) Lanka, the capital of Ravan. Eat thou pure food. Let the king govern his subjects well. The Jains and the Buddhists do not kill animals. Ram killed Marich, Subahu, and many other Rakshases. Why did you kill him? Do not cut the branches of these trees. He is thirsty, you should moisten his lips and tongue with cold water.

2. *Correct* :—वयं राक्षसान् तृंहाम। यूयं प्रानिणमहिंस्तम्। त्वमिदमन्नं भुङ्ग्धि। सः महिपतिः ससागरां धरां भुङ्क्ते। रामेदं न रुन्धेत्। पृथ्वीं भुञ्जीत भवान्। कदन्नं कदापि त्वं मा भुञ्ज्याः।

अदादि (Second Conjugation).

अद्–धातु (प० पदी, सक०) भोजन करना, to eat.

Infin.—अत्तुम्।

लट्।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	अत्ति	अत्सि	अद्मि
द्विवचन	अत्तः	अत्थः	अद्वः
बहुवचन	अदन्ति	अत्थ	अद्मः

लोट्।

एकवचन	अत्तु अत्तात्	अद्धि, अत्तात्	अदानि
द्विवचन	अत्ताम्	अत्तम्	अदाव
बहुवचन	अदन्तु	अत्त	अदाम

८०। अद्–धातुके परस्थित लङ्के द्के स्थानमें अत् और स्के स्थानमें अस् होता है।

लङ्।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	आदत्-द्	आदः	आदम्
द्विवचन	आत्ताम्	आत्तम्	आद्व
बहुवचन	आदन्	आत्त	आद्म

विधिलिङ्।

एकवचन	अद्यात्	अद्याः	अद्याम्
द्विवचन	अद्याताम्	अद्यातम्	अद्याव
बहुवचन	अद्युः	अद्यात	अद्याम

आस्-धातु (आ० पदी, अक०) बैठना, to sit.

Infin.—आसितुम्।

लट्।

एकवचन	आस्ते	आस्से	आसे
द्विवचन	आसाते	आसाथे	आस्वहे
बहुवचन	आसते	आध्वे	आस्महे

लोट्।

एकवचन	आस्ताम्	आस्स्व	आसै
द्विवचन	आसाताम्	आसाथाम्	आसावहै
बहुवचन	आसताम्	आध्वम्	आसामहै

लङ्।

एकवचन	आस्त	आस्थाः	आसि
द्विवचन	आसाताम्	आसाथाम्	आस्वहि
बहुवचन	आसत	आध्वम	आस्महि

विधिलिङ्।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	आसीत	आसीथाः	आसीय
द्विवचन	आसीयाताम्	आसीयाथाम्	आसीवहि
बहुवचन	आसीरन्	आसीध्वम्	आसीमहि

आकारान्त धातु।

८१। आकारान्त धातुके परस्थित लङ्के अन् के स्थानमें विकल्पसे उस् होता है और वही उस् परे रहनेसे आकार-का लोप होता है।

या—धातु (प० पदी, सक०) जाना, to go.

Infin.—यातुम्।

लट्।

एकवचन	याति	यासि	यामि
द्विवचन	यातः	याथः	यावः
बहुवचन	यान्ति	याथ	यामः

लोट्।

एकवचन	यातु, यातात्	याहि यातात्	यानि
द्विवचन	याताम्	यातम्	याव
बहुवचन	यान्तु	यात	याम

लङ्।

एकवचन	अयात्-अयाद्	अयाः	अयाम्
द्विवचन	अयाताम्	अयातम्	अयाव
बहुवचन	अयुः, अयान्	अयात	अयाम

विधिलिङ्।

एकवचन	यायात्	यायाः	यायाम्
द्विवचन	यायाताम्	यायातम्	यायाव
बहुवचन	यायुः	यायात	यायाम

८२। ति, सि, मि, तु, आनि, आव, आम, ऐ, आवहै, आमहै, द, स्, अम, इन विभक्तियों में अदादिगणीय धातु के अन्त्यस्वर और उपधा लघुस्वर को गुण होता है।

द्विष्–धातु (उभयपदी, सक०) द्वेष करना, to have enmity or to be hostile towards or to envy.

Infin.—द्वेष्टुम्।

लट्—परस्मैपद।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	द्वेष्टि	द्वेक्षि	द्वेष्मि
द्विवचन	द्विष्टः	द्विष्ठः	द्विष्वः
बहुवचन	द्विषन्ति	द्विष्ठ	द्विष्मः

लट्—आत्मनेपद।

एकवचन	द्विष्टे	द्विक्षे	द्विषे
द्विवचन	द्विषाते	द्विषाथे	द्विष्वहे
बहुवचन	द्विषते	द्विड्ढ्वे	द्विष्महे

लोट्—परस्मैपद।

एकवचन	द्वेष्टु, द्विष्टात्	द्विड्ढि, द्विष्टात्	द्वेषाणि
द्विवचन	द्विष्टाम्	द्विष्टम्	द्वेषाव
बहुवचन	द्विषन्तु	द्विष्ट	द्वेषाम

लोट्—आत्मनेपद।

एकवचन	द्विष्टाम्	द्विक्ष्व	द्वेषै
द्विवचन	द्विषाताम्	द्विषाथाम्	द्वेषावहै
बहुवचन	द्विषताम्	द्विड्ढ्वम्	द्वेषामहै

८३। द्विष्-धातुके लङ्के अन्के स्थानमें विकल्पसे उस् होता है।

लङ्—परस्मैपद।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	अद्वेट्, अद्वेड्	अद्वेट् अद्वेड्	अद्वेषम्
द्विवचन	अद्विष्टाम्	अद्विष्टम्	अद्विष्व
बहुवचन	अद्विषुः, अद्विषन्	अद्विष्ट	अद्विष्म

लङ्—आत्मनेपद।

एकवचन	अद्विष्ट	अद्विष्ठाः	अद्विषि
द्विवचन	अद्विषाताम्	अद्विषाथाम्	अद्विष्वहि
बहुवचन	अद्विषत	अद्विड्ढ्वम्	अद्विष्महि

विधिलिङ्—परस्मैपद।

एकवचन	द्विष्यात्	द्विष्याः	द्विष्याम्
द्विवचन	द्विष्याताम्	द्विष्यातम्	द्विष्याव
बहुवचन	द्विष्युः	द्विष्यात	द्विष्याम

विधिलिङ्—आत्मनेपद।

एकवचन	द्विषीत	द्विषीथाः	द्विषीय
द्विवचन	द्विषीयाताम्	द्विषीयाथाम्	षीवहि
बहुवचन	द्विषीरन्	द्विषीध्वम्	द्विषीमहि

रुदादि।

८४। लट्, लोट् और लङ्, इन तीनोंकी व्यञ्जनादि विभक्तियाँ (१) परे रहनेसे रुद्, स्वप्, श्वस्, अन् और जक्ष् धातुओं के उत्तर इ होता है।

८५। रुद् आदि धातुओंके लङ् के द्के स्थानमें ईत् और अत्, तथा स् के स्थानमें ईस् और अस् होते हैं।

---

(१) [illegible] और स विभक्तियों के सिवाय।

रुद्-धातु (प० पदी, अक०) रोना, to weep.

Infin.—रोदितुम्।

लट्।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	रोदिति	रोदिषि	रोदिमि
द्विवचन	रुदितः	रुदिथः	रुदिवः
बहुवचन	रुदन्ति	रुदिथ	रुदिमः

लोट्।

एकवचन	रोदितु, रुदितात्	रुदिहि, रुदितात्	रोदानि
द्विवचन	रुदिताम्	रुदितम्	रोदाव
बहुवचन	रुदन्तु	रुदित	रोदाम

लङ्।

एकवचन	अरोदीत्, अरोदत्	अरोदीः, अरोदः	अरोदम्
द्विवचन	अरुदिताम्	अरुदितम्	अरुदिव
बहुवचन	अरुदन्	अरुदित	अरुदिम

विधिलिङ्।

एकवचन	रुद्यात्	रुद्याः	रुद्याम्
द्विवचन	रुद्याताम्	रुद्यातम्	रुद्याव
बहुवचन	रुद्युः	रुद्यात	रुद्याम

जक्षादि।

८६। लट् आदि चार विभक्तियोँ मैं, जक्ष्, जागृ, दरिद्रा, चकास् और शास्, इन पाँच धातुओँकी अभ्यस्त संज्ञा होती है।

जक्ष—धातु (प० पदी, सक०) भोजन करना, to eat; (अक०) हँसना, to smile; to laugh.

Infin.—जक्षितुम्।

लट्।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	जक्षिति	जक्षिषि	जक्षिमि
द्विवचन	जक्षितः	जक्षिथः	जक्षिवः
बहुवचन	जक्षति	जक्षिथ	जक्षिमः

लोट्।

एकवचन	जक्षितु, जक्षितात्	जक्षिहि, जक्षितात्	जक्षाणि
द्विवचन	जक्षिताम्	जक्षितम्	जक्षाव
बहुवचन	जक्षतु	जक्षित	जक्षाम

लङ्।

एकवचन	अजक्षीत्, अजक्षत.	अजक्षीः, अजक्षः	अजक्षम्
द्विवचन	अजक्षिताम्	अजक्षितम्	अजक्षिव
बहुवचन	अजक्षुः	अजक्षित	अजक्षिम

विधिलिङ्।

एकवचन	जक्ष्यात्	जक्ष्याः	जक्ष्याम्
द्विवचन	जक्ष्याताम्	जक्ष्यातम्	जक्ष्याव
बहुवचन	जक्ष्युः	जक्ष्यात	जक्ष्याम

जागृ—धातु (प० पदी, अक०) जागना, to be awake; to keep up night; to wake.

Infin.—जागरितुम्।

लट्।

एकवचन	जागर्त्ति	जागर्षि	जागर्मि
द्विवचन	जागृतः	जागृथः	जागृवः
बहुवचन	जाग्रति	जागृथ	जागृमः

लोट्।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	जागर्तु, जागृतात्	जागृहि, जागृतात्	जागराणि
द्विवचन	जागृताम्	जागृतम्	जागराव
बहुवचन	जाग्रतु	जागृत	जागराम

लङ्।

एकवचन	अजागः	अजागः	अजागरम्
द्विवचन	अजागृताम्	अजागृतम्	अजागृव
बहुवचन	अजागरुः	अजागृत	अजागृम

विधिलिङ्।

एकवचन	जागृयात्	जागृयाः	जागृयाम्
द्विवचन	जागृयाताम्	जागृयातम्	जागृयाव
बहुवचन	जागृयुः	जागृयात	जागृयाम

८७। ति, सि, मि, तु, द्, स् भिन्न व्यञ्जनादि विभक्तियाँ परे रहनेसे दरिद्रा-धातुके "आ" के स्थानमें इ होता है।

८८। अन्ति अन्तु, अन् विभक्तियोंमें दरिद्रा—धातुके आकार का लोप होता है।

दरिद्रा-धातु (प० पदी, अक०) दरिद्र होना, to be poor; to be in distress; to be miserable.

Infin.—दरिद्रितुम्।

लट्।

एकवचन	दरिद्राति	दरिद्रासि	दरिद्रामि
द्विवचन	दरिद्रितः	दरिद्रिथः	दरिद्रिवः
बहुवचन	दरिद्रति	दरिद्रिथ	दरिद्रिमः

लोट्—दरिद्रातु, दरिद्रितात्, दरिद्रिताम्, दरिद्रतु; दरिद्रिहि-दरिद्रितात्, दरिद्रितम्, दरिद्रित; दरिद्राणि, दरिद्राव, दरिद्राम।

लङ्—अदरिद्रात्, अदरिद्रिताम्, अदरिद्रुः; अदरिद्राः, अदरिद्रितम्, अदरिद्रित; अदरिद्राम्, अदरिद्रिव, अदरिद्रिम।

विधिलिङ्—दरिद्रियात्, दरिद्रियाताम्, दरिद्रियुः; दरिद्रियाः, दरिद्रियातम्, दरिद्रियात; दरिद्रियाम्, दरिद्रियाव, दरिद्रियाम।

चकास्-धातु (प० पदी, अक०) चमकना, to shine.

Infin.—चकासितुम्।

लट्।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	चकास्ति	चकास्सि	चकास्मि
द्विवचन	चकास्तः	चकास्थः	चकास्वः
बहुवचन	चकासति	चकास्थ	चकास्मः

लोट्।

एकवचन	चकास्तु, चकास्तात्	चकाधि, चकास्तात्	चकासानि
द्विवचन	चकास्ताम्	चकास्तम्	चकासाव
बहुवचन	चकासतु	चकास्त	चकासाम

८६। लङ् के प्रथम और मध्यमपुरुषके एक वचनमें धातुके अन्तस्थित स्के स्थानमें त् होता है (१)।

लङ्।

एकवचन	अचकात्, अचकाद्	अचकात्-द्, अचकाः	अचकासम्
द्विवचन	अचकास्ताम्	अचकास्तम्	अचकास्व
बहुवचन	अचकासुः	अचकास्त	अचकास्म

विधिलिङ्।

एकवचन	चकास्यात्	चकास्याः	चकास्याम्
द्विवचन	चकास्याताम्	चकास्यातम्	चकास्याव
बहुवचन	चकास्युः	चकास्यात	चकास्याम

(१) वैयाकरण लोग मध्यमपुरुषके एकवचन में विकल्पसे त् करते हैं।

९०। ति, सि, मि, तु, स् भिन्न व्यञ्जनादि विभक्तियाँ परे रहनेसे शास्-धातुके स्थानमें शिस् होता है।

९१। हि विभक्तिसे युक्त शास्-धातुके स्थानमें शाधि होता है।

शास्-धातु (प० पदी, सक०) शासन करना, to govern; to rule.

Infin.— शासितुम्।

लट्।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	शास्ति	शास्सि	शास्मि
द्विवचन	शिष्टः	शिष्ठः	शिष्वः
बहुवचन	शासति	शिष्ठ	शिष्मः

लोट्।

एकवचन	शास्तु, शिष्टात्	शाधि, शिष्टात्	शासानि
द्विवचन	शिष्टाम्	शिष्टम्	शासाव
बहुवचन	शासतु	शिष्ट	शासाम

लङ्।

एकवचन	अशात्-द्	आशात्, अशाः	अशासम्
द्विवचन	अशिष्टाम्	अशिष्टम्	अशिष्व
बहुवचन	अशासुः	अशिष्ट	अशिष्म

विधिलिङ्।

एकवचन	शिष्यात्	शिष्याः	शिष्याम्
द्विवचन	शिष्याताम्	शिष्यातम्	शिष्याव
बहुवचन	शिष्युः	शिष्यात	शिष्याम

९२। लट्, लोट्, लङ् और विधिलिङ्, इन चार विभक्तियोंमें शी-धातुके स्थानमें शे होता है।

९३। अन्ते, अन्ताम् और अन्त विभक्तियोंमें शी-धातु के स्थानमें शेर् होता है।

शी-धातु (आ० पदी, अक०) सोना, to lie down; to sleep.
Infin.—शयितुम्।

लट्।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	शेते	शेषे	शये
द्विवचन	शयाते	शयाथे	शेवहे
बहुवचन	शेरते	शेध्वे	शेमहे

लोट्।

एकवचन	शेताम्	शेष्व	शयै
द्विवचन	शयाताम्	शयाथाम्	शयावहै
बहुवचन	शेरताम्	शेध्वम्	शयामहै

लङ्।

एकवचन	अशेत	अशेथाः	अशयि
द्विवचन	अशयाताम्	अशयाथाम्	अशेवहि
बहुवचन	अशेरत	अशेध्वम्	अशेमहि

विधिलिङ्।

एकवचन	शयीत	शयीथाः	शयीय
द्विवचन	शयीयाताम्	शयीयाथाम्	शयीवहि
बहुवचन	शयीरन्	शयीध्वम्	शयीमहि

९४। लोट् की ऐ आवहै और आमहै विभक्तियों में सूधातु को गुण नहीं होता।

सू-धातु (आ० पदी, सक०) पैदा करना, to bring forth; to beget or to give birth to a child.

Infin.—सोतुम्, सवितुम्।

लट्।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	सूते	सूषे	सुवे
द्विवचन	सुवाते	सुवाथे	सूवहे
बहुवचन	सुवते	सूध्वे	सूमहे

लोट्।

एकवचन	सूताम्	सूष्व	सुवै
द्विवचन	सुवाताम्	सुवाथाम्	सुवावहै
बहुवचन	सुवताम्	सूध्वम्	सुवामहै

लङ्।

एकवचन	असूत	असूथाः	असुवि
द्विवचन	असुवाताम्	असुवाथाम्	असूवहि
बहुवचन	असुवत	असूध्वम्	असूमहि

विधिलिङ्।

एकवचन	सुवीत	सुवीथाः	सुवीय
द्विवचन	सुवीयाताम्	सुवीयाथाम्	सुवीवहि
बहुवचन	सुवीरन्	सुवीध्वम्	सुवीमहि

९५। अन्ति और अन्तु विभक्तियों में इ—धातु के स्थान में य् (१) होता है।

---

(१) मा और मास्म शब्द पूर्ववर्त्ती होने से अन् विभक्तिमें भी य् होता है। यथा, मा यन्, मास्म यन्।

इ—धातु (प० पदी, सक०) जाना, to go ; पाना, to get.

Infin.—एतुम्।

लट्।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	एति	एषि	एमि
द्विवचन	इतः	इथः	इवः
बहुवचन	यन्ति	इथ	इमः

लोट्।

एकवचन	एतु, इतात्	इहि, इतात्	अयानि
द्विवचन	इताम्	इतम्	अयाव
बहुवचन	यन्तु	इत	अयाम

लङ्।

एकवचन	ऐत्	ऐः	आयम्
द्विवचन	ऐताम्	ऐतम्	ऐव
बहुवचन	आयन्	ऐत	ऐम

विधिलिङ्।

एकवचन	इयात्	इयाः	इयाम्
द्विवचन	इयाताम्	इयातम्	इयाव
बहुवचन	इयुः	इयात	इयाम

लट् आदि चार विभक्तिओं में अस् और हन् धातुओं के जो रूप होते हैं, क्रमसे लिखे जाते हैं।

अस् – धातु (प० पदी, अ०) होना, to be.

Infin.—भवितुम्।

लट्।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	अस्ति	असि	अस्मि
द्विवचन	स्तः	स्थः	स्वः
बहुवचन	सन्ति	स्थ	स्मः

लोट्।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	अस्तु, स्तात्	एधि, स्तात्	असानि
द्विवचन	स्ताम्	स्तम्	असाव
बहुवचन	सन्तु	स्त	असाम

लङ्।

एकवचन	आसीत्	आसीः	आसम्
द्विवचन	आस्ताम्	आस्तम्	आस्व
बहुवचन	आसन्	आस्त	आस्म

विधिलिङ्।

एकवचन	स्यात्	स्याः	स्याम्
द्विवचन	स्याताम्	स्यातम्	स्याव
बहुवचन	स्युः	स्यात	स्याम

हन्—धातु (प० पदी, सक०) मारना, to kill.

Infin.—हन्तुम्।

लट्।

एकवचन	हन्ति	हंसि	हन्मि
द्विवचन	हतः	हथः	हन्वः
बहुवचन	घ्नन्ति	हथ	हन्मः

लोट्।

एकवचन	हन्तु, हतात्	जहि, हतात्	हनानि
द्विवचन	हताम्	हतम्	हनाव
बहुवचन	घ्नन्तु	हत	हनाम

लङ्।

एकवचन	अहन्	अहन्	अहनम्
द्विवचन	अहताम्	अहतम्	अहन्व
बहुवचन	अघ्नन्	अहत	अहन्म

विधिलिङ्।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	हन्यात्	हन्याः	हन्याम्
द्विवचन	हन्याताम्	हन्यातम्	हन्याव
बहुवचन	हन्युः	हन्यात	हन्याम

विद्-धातु (प० पदी, सक०) जानना, to know.

Infin.—वेदितुम्।

लट्।

एकवचन	वेत्ति, वेद	वेत्सि, वेत्थ	वेद्मि, वेद
द्विवचन	वित्तः, विदतुः	वित्थः, विदथुः	विद्वः, विद्व
बहुवचन	विदन्ति, विदुः	वित्थ, विद	विद्मः, विद्म

लोट्।

एकवचन	वेत्तु, वित्तात्	विद्धि, वित्तात्	वेदानि
द्विवचन	वित्ताम्	वित्तम्	वेदाव
बहुवचन	विदन्तु	वित्त	वेदाम (१)

९६। विद्-धातुके लङ्के, "अन्" के स्थानमें विकल्पसे उस् होता है।

लङ्।

एकवचन	अवेत्, अवेद्	अवेत्-द्, अवेः (२)	अवेदम्
द्विवचन	अविताम्	अवित्तम्	अविद्व
बहुवचन	अविदुः, अविदन्	अवित्त	अविद्म

(१) पक्षान्तर में लोट् विभक्ति में विद् धातुके स्थानमें विदाङ्कृ होता है और कृ—धातुके समान रूप होते हैं, यथा—

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	विदाङ्करोतु, विदाङ्कुरुतात्	विदाङ्कुरु, विदाङ्कुरुतात्	विदाङ्करवाणि
द्विवचन	विदाङ्कुरुताम्	विदाङ्कुरुतम्	विदाङ्करवाव
बहुवचन	विदाङ्कुर्वन्तु	विदाङ्कुरुत	विदाङ्करवाम

(२) वैयाकरण लोग लङ् की स् विभक्तिमें धातुके अन्तस्थित द् के स्थानमें विकल्पसे विसर्ग करके दो पद सिद्ध करते हैं। यथा, अवेत्, अवेः।

विधिलिङ्।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	विद्यात्	विद्याः	विद्याम्
द्विवचन	विद्याताम्	विद्यातम्	विद्याव
बहुवचन	विद्युः	विद्यात	विद्याम

उकारान्त।

९७। ति, सि, मि, तु, द्, स्, इन छः विभक्तियोँ मेँ धातुके अन्तस्थित उकारकी वृद्धि होती है।

नु—धातु (प० पदी, सक०) स्तुति करना, to pray.

Infin.—नवितुम्।

लट्।

एकवचन	नौति	नौषि	नौमि
द्विवचन	नुतः	नुथः	नुवः
बहुवचन	नुवन्ति	नुथ	नुमः

लोट्—नौतु-नुतात्, नुताम्, नुवन्तु; नुहि-नुतात्, नुतम्, नुत; नवानि, नवाव, नवाम।

लङ्—अनौत्-द्, अनुताम्, अनुवन्; अनौः, अनुतम्, अनुत; अनवम्, अनुव, अनुम।

विधिलिङ्—नुयात्, नुयाताम्, नुयुः; नुयाः, नुयातम्, नुयात; नुयाम्, नुयाव, नुयाम।

स्तु, रु और तु धातु।

९८। ति, सि, मि, तु, द्, स्, इन छः विभक्तियोँ मेँ स्तु, रु, तु, इन तीनोँ धातुओँके उत्तर विकल्पसे ई होती है और इसी ईकारके परे, उकारको गुण होता है।

स्तु—धातु (उ० पदी, सक०) स्तुति करना, to pray.

Infin.—स्तोतुम्।

लट्—परस्मैपद

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	स्तौति, स्तवीति	स्तौषि, स्तवीषि	स्तौमि, स्तवीमि
द्विवचन	स्तुतः (१)	स्तुथः	स्तुवः
बहुवचन	स्तुवन्ति	स्तुथ	स्तुमः

आत्मनेपद।

एकवचन	स्तुते	स्तुषे	स्तुवे
द्विवचन	स्तुवाते	स्तुवाथे	स्तुवहे
बहुवचन	स्तुवते	स्तुध्वे	स्तुमहे

---

(१) स्तु—धातुका यह रूप मुग्धबोधके अनुसार है। पाणिनिके मतमें लट्, लोट्, लङ् और विधिलिङ् की व्यञ्जनादि विभक्तियाँ परे रहनेसे स्तु, रु, तु, इन तीनों धातुओं के उत्तर विकल्पसे ई होती है। ति, सि, मि, तु, द्, स्, इन छः विभक्तियोंमें इन धातुओंके रूप मुग्धबोध और पाणिनि दोनोंके मतमें एक ही प्रकारके होते हैं। पाणिनिके अनुसार स्तु—धातुके रूप लिखे जाते हैं। रु (to cry; to yell) और तु (to go, to grow; to kill) धातुओंके रूप स्तु—धातुके ऐसे होते हैं।

लट् (प० पद)—स्तौति स्तवीति, स्तुतः-स्तुवीतः, स्तुवन्ति; स्तौषि-स्तवीषि, स्तुथः-स्तुवीथः, स्तुथ-स्तुवीथ; स्तौमि-स्तवीमि, स्तुवः-स्तुवीवः, स्तुमः स्तुवीमः।

आ० पद—स्तुते स्तुवीते, स्तुवाते, स्तुवते; स्तुषे-स्तुवीषे, स्तुवाथे, स्तुध्वे-स्तुवीध्वे; स्तुवे, स्तुवहे-स्तुवीवहे, स्तुमहे स्तुवीमहे।

लोट् (प०पद)—स्तौतु-स्तवीतु, स्तुतात्-स्तुवीतात्, स्तुताम्-स्तुवीताम्, स्तुवन्तु; स्तुहि स्तुवीहि, स्तुतात्-स्तुवीतात्, स्तुतम्-स्तुवीतम्, स्तुत-स्तुवीत; स्तवानि, स्तवाव, स्तवाम।

आ० पद—स्तुताम्-स्तुवीताम्, स्तुवाताम्-स्तुवताम्; स्तुष्व-स्तुवीष्व, स्तुवाथाम्, स्तुध्वम्-स्तुवीध्वम्; स्तवै, स्तवावहै, स्तवामहै।

लोट् (प० पद)—स्तौतु-स्तवीतु - स्तुतात् - स्तुवीतात्, स्तुताम्, स्तुवन्तु; स्तुहि - स्तुतात् - स्तुवीतात्, स्तुतम्, स्तुत; स्तवानि, स्तवाव, स्तवाम।

आ० पद—स्तुताम्, स्तुवाताम्, स्तुवताम्; स्तुष्व, स्तुवाथाम्, स्तुध्वम्; स्तवै, स्तवावहै, स्तवामहै।

लङ् (प० पद)—अस्तौत्-अस्तवीत्, अस्तुताम्, अस्तुवन्; अस्तौः-अस्तवीः, अस्तुतम्, अस्तुत; अस्तवम्, अस्तुव, अस्तुम।

आ० पद—अस्तुत, अस्तुवाताम्, अस्तुवत; अस्तुथाः, अस्तुवाथाम्, अस्तुध्वम्; अस्तुवि, अस्तुवहि, अस्तुमहि।

विधिलिङ् (प० पद)—स्तुयात्, स्तुयाताम्, स्तुयुः; स्तुयाः, स्तुयातम्, स्तुयात; स्तुयाम्, स्तुयाव, स्तुयाम।

आ० पद—स्तुवीत, स्तुवीयाताम्, स्तुवीरन्; स्तुवीथाः, स्तुवीयाथाम्, स्तुवीध्वम्; स्तुवीय, स्तुवीवहि, स्तुवीमहि।

६६। ति, सि, मि, तु, द्, स्, इन छः विभक्तियों में ब्रू-धातु के उत्तर ई होती है और इसी ई के परे, ऊ को गुण होता है।

लङ् (प० पद)—अस्तौत्-अस्तवीत्, अस्तुताम्-अस्तुवीताम्, अस्तुवन्; अस्तौः-अस्तवीः, अस्तुतम्-अस्तुवीतम्, अस्तुत-अस्तुवीत; अस्तवम्, अस्तुव-अस्तुवीव, अस्तुम-अस्तुवीम।

आ० पद—अस्तुत-अस्तुवीत, अस्तुवाताम्, अस्तुवत; अस्तुथाः-अस्तुवीथाः, अस्तुवाथाम्, अस्तुध्वम्-अस्तुवीध्वम्; अस्तुवि, अस्तुवहि-अस्तुवीवहि, अस्तुमहि-अस्तुवीमहि।

विधिलिङ् (प० पद)—स्तुयात्-स्तुवीयात्, स्तुयाताम्-स्तुवीयाताम्, स्तुयुः-स्तुवीयुः; स्तुयाः-स्तुवीयाः, स्तुयातम्-स्तुवीयातम्, स्तुयात-स्तुवीयात; स्तुयाम्-स्तुवीयाम्, स्तुयाव-स्तुवीयाव, स्तुयाम-स्तुवीयाम।

आ० पद—स्तुवीत, स्तुवीयाताम्, स्तुवीरन्; स्तुवीथाः, स्तुवीयाथाम्, स्तुवीध्वम्; स्तुवीय, स्तुवीवहि, स्तुवीमहि।

ब्रू–धातु (उ० पदी, सक०) बोलना, to speak; to tell.

Infin.—वक्तुम्।

लट्—परस्मैपद।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	ब्रवीति, आह (१)	ब्रवीषि, आत्थ	ब्रवीमि
द्विवचन	ब्रूतः, आहतुः	ब्रूथः, आहथुः	ब्रूवः
बहुवचन	ब्रुवन्ति, आहुः	ब्रूथ	ब्रूमः

आत्मनेपद।

एकवचन	ब्रूते	ब्रूषे	ब्रुवे
द्विवचन	ब्रुवाते	ब्रुवाथे	ब्रूवहे
बहुवचन	ब्रुवते	ब्रूध्वे	ब्रूमहे

लोट् (प० पद)—ब्रवीतु-ब्रूतात्, ब्रूताम्, ब्रुवन्तु; ब्रूहि-ब्रूतात्, ब्रूतम्, ब्रूत; ब्रवाणि, ब्रवाव, ब्रवाम।

आ० पद—ब्रूताम्, ब्रुवाताम्, ब्रुवताम्; ब्रूष्व, ब्रुवाथाम्, ब्रूध्वम्; ब्रवै, ब्रवावहै, ब्रवामहै।

लङ् (प० पद)—अब्रवीत्, अब्रूताम्, अब्रुवन्; अब्रवीः, अब्रूतम्, अब्रूत; अब्रवम्, अब्रूव, अब्रूम।

आ० पद—अब्रूत, अब्रुवाताम्, अब्रुवत; अब्रूथाः, अब्रुवाथाम्, अब्रूध्वम्; अब्रुवि, अब्रूवहि, अब्रूमहि।

---

(१) ति, तस्, अन्ति, सि, थस्, इन पाँच विभक्तियोँ के साथ ब्रू—धातुके स्थानमेँ विकल्पसे यथाक्रम आह, आहतुः आहुः, आत्थ, आहथुः, ये पांच पद होते हैँ। संस्कृतमेँ अह् (बोलना, to speak; to say.) एक अपूर्ण (defective) धातु है, जिसके उत्तर केवल णलादि (अर्थात् लिट्की अ, अतुस्, उस्, थ और अथुस् ये) पाँच विभक्तियां होती हैँ। इन पाँच विभक्तियोँमेँ आह, आहतुः प्रभृति जो पाँच पद निष्पन्न होते हैँ उनका प्रयोग वर्त्तमानकाल मेँ ही होता है। "अहः पञ्च णलादयो वर्त्तमाने।"

विधिलिङ् (प० पद)—ब्रूयात्, ब्रूयाताम्, ब्रूयुः; ब्रूयाः, ब्रूयातम्, ब्रूयात; ब्रूयाम्, ब्रूयाव, ब्रूयाम।

आ० पद—ब्रुवीत, ब्रुवीयाताम्, ब्रुवीरन्; ब्रुवीथाः, ब्रुवीयाथाम्, ब्रुवीध्वम्; ब्रुवीय, ब्रुवीवहि, ब्रुवीमहि (१)।

दुह्-धातु (उ० पदी, सक०) दुहना, to milk.

Infin.—दोग्धुम्।

लट्—परस्मैपद।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	दोग्धि	धोक्षि	दोह्मि
द्विवचन	दुग्धः	दुग्धः	दुह्वः
बहुवचन	दुहन्ति	दुग्ध	दुह्मः

आत्मनेपद।

एकवचन	दुग्धे	धुक्षे	दुहे
द्विवचन	दुहाते	दुहाथे	दुह्वहे
बहुवचन	दुहते	धुग्ध्वे	दुह्महे

लोट्—परस्मैपद।

एकवचन	दोग्धु, दुग्धात्	दुग्धि, दुग्धात्	दोहानि
द्विवचन	दुग्धाम्	दुग्धम्	दोहाव
बहुवचन	दुहन्तु	दुग्ध	दोहाम

आत्मनेपद

एकवचन	दुग्धाम्	धुक्ष्व	दोहै
द्विवचन	दुहाताम्	दुहाथाम्	दोहावहै
बहुवचन	दुहताम्	धुग्ध्वम्	दोहामहै

---

(१) लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् के सिवाय अन्य विभक्तियोंमें ब्रू—धातुके स्थानमें वच् आदेश होता है।

लङ्—परस्मैपद।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	अधोक्, अधोग्	अधोक् अधोग्	अदोहम्
द्विवचन	अदुग्धाम्	अदुग्धम्	अदुह्व
बहुवचन	अदुहन्	अदुग्ध	अदुह्म

आत्मनेपद।

एकवचन	अदुग्ध	अदुग्धाः	अदुहि
द्विवचन	अदुहाताम्	अदुहाथाम्	अदुह्वहि
बहुवचन	अदुहत	अधुग्ध्वम्	अदुह्महि

विधिलिङ् (प० पद)—दुह्यात्, दुह्याताम्, दुह्युः; दुह्याः, दुह्यातम्, दुह्यात; दुह्याम्, दुह्याव, दुह्याम।

आ० पद—दुहीत, दुहीयाताम्, दुहीरन्; दुहीथाः, दुहीयाथाम्, दुहीध्वम्; दुहीय, दुहीवहि, दुहीमहि।

लिह्—धातु (उ० पदी, सक०) चाटना, to lick.

Infin.—लेढुम्।

लट्—परस्मैपद।

एकवचन	लेढि	लेक्षि	लेह्मि
द्विवचन	लीढः	लीढः	लिह्वः
बहुवचन	लिहन्ति	लीढ	लिह्मः

आत्मनेपद।

एकवचन	लीढे	लिक्षे	लिहे
द्विवचन	लिहाते	लिहाथे	लिह्वहे
बहुवचन	लिहते	लीढ्वे	लिह्महे

लोट् (प० पद) लेढु—लीढात्, लीढाम्, लिहन्तु; लीढि लीढात्, लीढम्, लीढ; लेहानि, लेहाव, लेहाम।

आ० पद—लीढाम्, लिहाताम्, लिहताम्; लिक्ष्व, लिहाथाम्, लीढ्वम्; लेहै, लेहावहै, लेहामहै।

लङ् (प० पद)—अलेट्-अलेड्, अलीढाम्, अलिहन्; अलेट् अलेड्, अलीढम्, अलीढ; अलेहम्, अलिह्व, अलीह्म।

आ० पद—अलीढ, अलिह्वाताम्, अलिहत; अलीढाः, अलिह्वाथाम्, अलीढ्वम्; अलिहि, अलिह्वहि, अलिह्महि।

विधिलिङ् (प० पद)—लिह्यात्, लिह्याताम्, लिह्युः; लिह्याः, लिह्यातम्, लिह्यात; लिह्याम्, लिह्याव, लिह्याम।

आ० पद—लिहीत, लिहीयाताम्, लिहीरन्; लिहीथाः, लिहीयाथाम् लिहीध्वम्; लिहीय, लिहीवही, लिहीमही।

१००। अध्ययन (पढ़ना) अर्थमें इ—धातुका प्रयोग अधि उपसर्ग लगाकर किया जाता है।

इ—धातु (आ० पदी) अध्ययन करना, पढ़ना, to read. (१)

अधि+इ—धातु (आ० पदी, सक०) पढ़ना, to read; to study. (इङ् अध्ययने नित्यमधिपूर्वः)।

Infin.—अध्येतुम्।

लट्।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	अधीते	अधीषे	अधीये
द्विवचन	अधीयाते	अधीयाथे	अधीवहे
बहुवचन	अधीयते	अधीध्वे	अधीमहे

लोट्।

एकवचन	अधीताम्	अधीष्व	अध्ययै
द्विवचन	अधीयाताम्	अधीयाथाम्	अध्ययावहै
बहुवचन	अधीयताम्	अधीध्वम्	अध्ययामहै

१०१। विभक्तिका स्वर परे रहने से लङ् विभक्तिमें ऐकार के परे य् होता है।

---

(१) स्मरणार्थक इ-धातुका प्रयोग भी अधि उपसर्गके साथ होता है, किन्तु उसका रूप परस्मैपदी इ—धातुके सदृश होता है। इङिकोर्नित्य-अधियोगः।

लङ्।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	अध्यैत	अध्यैथाः	अध्यैयि
द्विवचन	अध्यैयाताम्	अध्यैयाथाम्	अध्यैवहि
बहुवचन	अध्यैयत	अध्यैध्वम्	अध्यैमहि

विधिलिङ्।

एकवचन	अधीयीत	अधीयीथाः	अधीयीय
द्विवचन	अधीयीयाताम्	अधीयीयाथाम्	अधीयीवहि
बहुवचन	अधीयीरन्	अधीयीध्वम्	अधीयीमहि

१०२। लट्, लोट् और लङ्के स् और ध् परे रहनेसे ईश्-धातुके उत्तर इ होता है।

ईश्-धातु (आ० पदी, सक०) प्रभुत्व करना, to rule.

Infin.—ईशितुम्।

लट्।

एकवचन	ईष्टे	ईशिषे	ईशे
द्विवचन	ईशाते	ईशाथे	ईश्वहे
बहुवचन	ईशते	ईशिध्वे	ईश्महे

लोट्।

एकवचन	ईष्टाम्	ईशिष्व	ईशै
द्विवचन	ईशाताम्	ईशाथाम्	ईशावहै
बहुवचन	ईशताम्	ईशिध्वम्	ईशामहै

लङ्।

एकवचन	ऐष्ट	ऐष्ठाः	ऐशि
द्विवचन	ऐशाताम्	ऐशाथाम्	ऐश्वहि
बहुवचन	ऐशत	ऐशिध्वम्	ऐश्महि

विधिलिङ्।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	ईशीत	ईशीथाः	ईशीय
द्विवचन	ईशीयाताम्	ईशीयाथाम्	ईशीवहि
बहुवचन	ईशीरन्	ईशीध्वम्	ईशीमहि

१०३। ति, सि, मि, तु, आनि, आव, आम, ऐ, आवहै, आमहै, द्, स्, अम् भिन्न अन्य विभक्तियोँ मैं वश् धातुके स्थान मैं उश् होता है।

वश्–धातु (प० पदी, सक०) इच्छा करना, to wish.
Infin.—वशितुम्।

लट्।

एकवचन	वष्टि	वक्षि	वश्मि
द्विवचन	उष्टः	उष्ठः	उश्वः
बहुवचन	उशन्ति	उष्ठ	उश्मः

लोट्।

एकवचन	वष्टु, उष्टात्	उड्ढि, उष्टात्	वशानि
द्विवचन	उष्टाम्	उष्टम्	वशाव
बहुवचन	उशन्तु	उष्ट	वशाम

लङ्।

एकवचन	अवट्, अवड्	अवट्, अवड्	अवशम्
द्विवचन	औष्टाम्	औष्टम्	औश्व
बहुवचन	औशन्	औष्ट	औश्म

विधिलिङ्।

एकवचन	उश्यात्	उश्याः	उश्याम्
द्विवचन	उश्याताम्	उश्यातम्	उश्याव
बहुवचन	उश्युः	उश्यात	उश्याम

१०४। त, थ, ध, और स परे रहने से चक्ष् धातुके स्थानमें चष् होता है।

चक्ष्-धातु (आ० पदी, सक०) बोलना, to say; to speak; देखना, to see.

Infin.—ख्यातुम्, क्शातुम् (१)।

लट्।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	चष्टे	चक्षे	चक्षे
द्विवचन	चक्षाते	चक्षाथे	चक्ष्वहे
बहुवचन	चक्षते	चड्ढ्वे	चक्ष्महे

लोट्।

एकवचन	चष्टाम्	चक्ष्व	चक्षै
द्विवचन	चक्षाताम्	चक्षाथाम्	चक्षावहै
बहुवचन	चक्षताम्	चड्ढ्वम्	चक्षामहै

लङ्।

एकवचन	अचष्ट	अचष्ठाः	अचक्षि
द्विवचन	अचक्षाताम्	अचक्षाथाम्	अचक्ष्वहि
बहुवचन	अचक्षत	अचड्ढ्वम्	अचक्ष्महि

विधिलिङ्।

एकवचन	चक्षीत	चक्षीथाः	चक्षीय
द्विवचन	चक्षीयाताम्	चक्षीयाथाम्	चक्षीवहि
बहुवचन	चक्षीरन्	चक्षीध्वम्	चक्षीमहि

(१) लट्, लोट्, लङ् और विधिलिङ् के सिवाय अन्य विभक्तियोंमें चक्ष्

प्रचलित अदादिगणीय धातु।

परस्मैपदी।

अद्*—to eat. अत्ति। आदत्-आदद्।

अन्—to live, to breathe. अनिति। आनीत्-आनत्-आनद्।
With प्र—to live, to breathe. प्राणिति। प्राणीत्-प्राणत्-प्राणद्।

अस्†—to be. अस्ति। आसीत्-आसीद्।

इ (क्) With अधि—to remember. अध्येति। अध्यैत्-अध्यैद्।

इ (ण)—to go. एति। ऐत्-ऐद्।

कु—to sound. कौति। अकौत्-अकौद्।

क्षु—to sound. क्षौति। अक्षौत्-अक्षौद्।

क्ष्णु—to sharpen. क्ष्णौति। अक्ष्णौत्-अक्ष्णौद्।

ख्या—to tell, to relate. ख्याति। अख्यात्-अख्याद्। With वि+आ—to explain. व्याख्याति। व्याख्यात्-व्याख्याद्।

चकास्—to shine. चकास्ति। अचकात्-अचकाद्।

जक्ष्—to eat, to smile. जक्षिति। अजक्षीत्-अजक्षीद्-अजक्षत्-अजक्षद्।

जागृ—to be awake, to wake. जागर्त्ति। अजागः।

दरिद्रा—to be poor, to be in distress. दरिद्राति। अदरिद्रात्-अदरिद्राद्।

दा (प्)—to cut. दाति। अदात्-अदाद्।

द्रा—to flee. द्राति। अद्रात्-अद्राद्। With नि—to sleep.

द्यु—to go or to move towards. द्यौति। अद्यौत्-अद्यौद्।

नु—to pray. नौति। अनौत्-अनौद्।

पा—to protect. पाति। अपात्-अपाद्।

प्रा—to fill up. प्राति। अप्रात्-अप्राद्।

प्सा—to eat. प्साति-अप्सात्-अप्साद्।

धातुके स्थानमें ख्या और क्शा (मुग्धबोधके मतसे क्सा) आदेश होता है। लिट् विभक्तिमें विकल्पसे होता है। अन्य अर्थमें नहीं होता।

*अद्—धातुके स्थानमें लुङ् विभक्तिमें नित्य और लिट् विभक्तिमें विकल्पसे घस् आदेश होता है।

† लुट्, लृट्, लृङ्, आशीर्लिङ् और लुङ्, इन छः विभक्तियोंमें अस्—धातुके स्थानमें भू आदेश होता है, अर्थात् इन विभक्तियोंमें अस्—धातुके रूप भू—धातुके रूपके समान होते हैं।

भा—to appear, to shine. भाति। अभात्-अभाद्।

मा—to measure. माति। अमात्-अमाद्। With निर्—to create, to build, to produce.

मृज्—to cleanse, to purify, to wipe off. मार्ष्टि। अमार्ट्-अमार्ड्।

या—to go. याति। अयात्-अयाद्। With आ or सम्+आ—to come; वि+निर्—to go or pass away.

यु—to mix, to separate, to join, to disjoin. यौति। अयौत्-अयौद्।

रा—to give. राति। अरात्-अराद्।

रु—to cry, to shout. रौति-रवीति। अरौत्-अरौद्-अरवीत्-अरवीद्।

रुद्—to cry, to lament, to bewail, to weep. रोदिति। अरोदीत्-अरोदीद्, अरोदत्-अरोदद्।

ला—to take or give. लाति। अलात्-अलाद्।

वच्※—to speak. वक्ति। अवक्-अवग्।

वश्—to wish. वष्टि। अवट्-अवड्।

वा—to blow. वाति। अवात्-अवाद्।

विद्—to know. †वेत्ति, वेद। अवेत्-अवेद्।

वी—to go, to throw. वेति। अवेत्-अवेद्।

शास्—to govern, to punish, to instruct. शास्ति। अशात्-अशाद्।

श्रा—to cook. श्राति। अश्रात्-अश्राद्।

श्वस्—to breathe. श्वसिति। अश्वसीत्-अश्वसीद्, अश्वसत्-अश्वसद्। With नि—to breathe or respire; वि—to confide, to believe; सम्+आ—to gain courage, to calm oneself, to console.

सु—to beget. सौति। असौत्-असौद्।

स्ना—to bathe. स्नाति। अस्नात्-अस्नाद्।

स्नु—to flow, to distil. स्नौति। अस्नौत्-द्।

※ It is a defective verb for it is not used in अन्ति of लट्, अन्तु of लोट् and according to some, not at all, in the plural number of लट्।

† वेत्ति वेद विदःज्ञाने विन्ते ब्रिदः विचारणे।
विद्यते विदः सत्तायां लाभे विन्दति विन्दते॥

स्वप्—to sleep. स्वपिति। अस्वपीत्-अस्वपीद्, अस्वपत्-अस्वपद्।

हन्※—to kill. हन्ति। अहन्।

आत्मनेपदी।

आस्—to sit. आस्ते। आस्त।

इ (ङ्)—with अधि—to read, to study. अधीते। अध्यैत।

ईड्—to praise. ईट्टे। ऐट्ट।

ईर्—to go. ईर्त्ते। ऐर्त्त।

ईश्—to rule. ईष्टे। ऐष्ट।

चक्ष—to speak. चष्टे। अचष्ट।

निंस्—to kiss. निंस्ते। अनिंस्त।

वस्—to put on, to wear. वस्ते। अवस्त।

वृज्—to shun, to avoid. वृक्ते। अवृक्त।

शास् (with आ)—to desire, to bless. आशास्ते। आशास्त।

शी—to lie down, to sleep. शेते। अशेत।

सू—to bring forth, to beget. सूते। असूत।

ह्नु—to take away. ह्नुते। अह्नुत।

उभयपदी।

ऊर्णु—to cover. ऊर्णोति-ऊर्णौति, ऊर्णुते। और्णोत्-और्णोद्-और्णुत।

दिह्—to anoint. देग्धि, दिग्धे, अधेक्, अधेग्, अदिग्ध।

दुह्—to milk. दोग्धि, दुग्धे, अधोक्, अधोग्, अदुग्ध।

द्विष्—to envy, to hate, to be inimical to. द्वेष्टि, द्विष्टे, अद्वेट्, अद्वेड्, अद्विष्ट।

ब्रू†—to tell, to speak. ब्रवीति, आह; ब्रूते। अब्रवीत्, अब्रवीद्, अब्रूत।

लिह्—to lick. लेढि, लीढे, अलेट्, अलेड्, अलीढ।

स्तु—to pray, to praise. स्तौति-स्तवीति, स्तुते-स्तुवीते, अस्तौत्-अस्तौद्, अस्तवीत्-अस्तवीद्, अस्तौत-अस्तवीत।

※ लुङ्के परस्मैपदमें और आशीर्लिङ्में हन्-धातुके स्थानमें वध आदेश होता है।

† लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् के सिवाय और सब विभक्तियों में ब्रू-धातुके स्थानमें वच् आदेश होता है।

Exercise.

1. *Translate into Sanskrit* :—*Having done* (कृत्वा) such great offence, you should tell me yourself. What did we say in this matter ? Covetous men always wish to get more and more wealth. *In my presence* (मयि स्थिते), you should not govern. Let them read the Vedas now. Why did he lick my hand in this way ? Let us first milk these cows. They should always tell the truth. Every day I pray to God in the morning. They do not know the true meaning of the Shastras. We killed all our enemies. The dogs are barking at the gate. The poor lie down on the bareground. No sensible man believes in his words. They wept bitterly for the death of their friends. The sun rises in the east. The king's four wives each brought forth a son at the same time.

2. *Translate into English* :—जयाय सेनान्यमुशन्ति देवाः। प्राणिनामुपकाराय प्राणिति प्रियदर्शनः। द्विषन्ति मन्दाश्चरितं महात्मनाम्। उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीः। वाति गन्धः सुमनसां प्रतिवातं कथञ्चन। उपर्युपरि पश्यन्तः सर्व एव दरिद्रति। अप्सु प्लवन्ति पाषाणाः मानुषा घ्नन्ति राक्षसान्। अथ तु वेत्सि शुचिव्रतमात्मनः, पतिगृहे तव दास्यमपि क्षमम्। वनं गते धर्म्मरते रामे रमयतां वरे, कौशल्या रुदती चार्त्ता भर्त्तारमिदमब्रवीत्। कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः, पृच्छामि त्वां धर्मसंमूढचेताः। यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे, शिष्यस्तेहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम्॥

इ (१)—विधान (Insertion of इ)।

१०५। लुट्, लृट् और लृङ् विभक्तियों में धातु के उत्तर इ होता है।

(१) पाणिनि, कलाप और सुपद्मके मतसे इट्, मुग्धबोधके मतसे इम्, संक्षिप्तसारके मतसे इङ्। इन सब व्याकरणों के मतसे कार्य्यकालमें ट्, म्, ङ् नहीं रहते। जिन धातुओं के उत्तर इ होता है, उन्हें "सेट्" कहते हैं; जिनके उत्तर इ नहीं होता, उन्हें "अनिट्" कहते हैं; और जिनके उत्तर विकल्प से इ होता है उन्हें "वेट्" या "विकल्पितेट्" कहते हैं।

१०६। आशीर्लिङ्के आत्मनेपदमें धातुके उत्तर इ होता है।

१०७। लिट् की थ, व, म, से, ध्वे, वहे, महे इन विभक्तियों में धातुके उत्तर इ होता है।

१०८। लुङ् विभक्तिमें विहित स प्रत्यय परे रहनेसे धातु के उत्तर इ होता है। अनिट् धातुके उत्तर इ नहीं होता।

विकल्प (Alternative form)।

१०९। रध् प्रभृति (१) धातुओं के उत्तर विकल्प से इ होता है (२)।

११०। इष्, रिष्, रुष्, लुभ्, सह् धातुओं के उत्तर लुट् (३) विभक्ति में विकल्प से इ होता है।

१११। कृत्, चृत्, छृद्, तृद्, नृत् धातुओं के उत्तर लृट् और लृङ् विभक्तियों में तथा आशीर्लिङ् के आत्मनेपद में विकल्पसे इ होता है।

११२। वृ-धातुके और दीर्घ ॠकारान्त धातुओं के उत्तर लुङ् और आशीर्लिङ् के आत्मनेपद में विकल्प से इ होता है।

निषेध (Exception)।

११३। बहुतसे धातु हैं जिनके उत्तर इ नहीं होता; इसलिए उन्हें अनिट् धातु कहते हैं। आकारान्त आदि के क्रम से सब अनिट् धातु नीचे लिखे जाते हैं।

आकारान्त—दरिद्रा भिन्न सब आकारान्त धातु अनिट् हैं। आकारान्ता अदरिद्रा अनिटः परिकीर्त्तिताः।

---

(१) रध्, तृप्, दृप्, मुह्, द्रुह्, स्नुह्, स्निह्, नश् ये आठ रधादि धातु हैं। इनके सिवाय और भी बहुत वेट् धातु हैं।

(२) वृ-धातु के लुङ् के परस्मैपद में नित्य इ होता है।

(३) मुग्धबोधके अनुसार अश्, तु, भृ, वस्, शुच्, और स्तु धातुओं के उत्तर भी लुट् विभक्तिमें विकल्पसे इ होता है।

इकारान्त—श्रि और श्वि भिन्न सब इकारान्त धातु अनिट् हैं। श्रिश्विभिन्ना इकारान्ता अनिटः परिकीर्त्तिताः।

ईकारान्त—डी, शी, वेवी और दीधी भिन्न सब ईकारान्त धातु अनिट् हैं। डीशीवेवीदीधीभिन्ना ईकारान्तास्तथानिटः।

उकारान्त—यु, रु, नु, स्नु, क्षु, क्ष्णु और ऊर्णु भिन्न सब ह्रस्व उकारान्त धातु अनिट् हैं। वर्जयित्वा युरू नुस्नू क्षुक्ष्णू ऊर्णुञ्च सप्तमम्। अनिटः स्युरुकारान्ताः॥

ऋकारान्त—जागृ और वृ भिन्न सब ऋकारान्त धातु अनिट् हैं। अनिटस्तु ऋकारान्ताः ज्ञेया जागृवृवर्जिताः (१)।

कान्त—केवल शक्-धातु अनिट् है (२)। और सब ककारान्त धातु सेट् हैं। कान्तेषु शक् एवानिट्।

चान्त—पच्, मुच्, रिच्, वच्, विच् और सिच् ये छः धातु अनिट् हैं। और सब चकारान्त धातु सेट् हैं।

चान्तेषु पच् मुच् रिचो वच्विचौ सिच् एव च।

अनिटः षट् परिज्ञेयाः॥

छान्त—केवल प्रच्छ्-धातु अनिट् है। और सब छकारान्त धातु सेट् हैं। प्रच्छश्छान्तेष्वनिट् स्मृतः।

जान्त—त्यज्, निज्, भज्, भञ्ज्, भुज्, भ्रस्ज्, मस्ज्, मृज् (३), यज्, युज्, रञ्ज्, रुज्, विज्, सञ्ज्, सृज् और स्वञ्ज् ये सोलह धातु अनिट् हैं। और सब जकारान्त धातु सेट् हैं।

---

(१) वृ-धातुके उत्तर केवल लिट् की थ विभक्तिमें इ होता है। लिट् की और किसी विभक्तियों में इ नहीं होता।

(२) मुग्धबोधके मतसे शक्-धातु वेट् है, पाणिनि और संक्षिप्तसारके मतसे अनिट् है।

(३) पाणिनि और मुग्धबोधके अनुसार मृज्-धातु वेट् है।

त्यजो निजो भजो भञ्जो भुज् भ्रस्जौ मस्ज् मृज् यजः।
युजो रञ्जो रुज् विजौ सृज् सञ्जौ स्वञ्ज् एव च।
षोडशैतान् जकारान्तान् जानीयादिड्विवर्जितान् ॥

दान्त—अद्, क्षुद्, खिद्, छिद्, तुद्, नुद्, पद्, भिद्, विद् (१), विन्द्, शद्, सद्, स्कन्द्, स्विद् और हद् ये पन्द्रह धातु अनिट् हैं। और सब दकारान्त धातु सेट् हैं।

अदः क्षुदः खिदश्चैव छिद्तुदौ नुद्पदौ भिदः।
विदो विन्दः शद्सदौ, स्कन्द्स्विद्हदास्तथा।
दकारान्तेषु विज्ञेया इमे पञ्चदशानिटः ॥

धान्त—क्रुध्, क्षुध्, बुध्, बन्ध्, युध्, राध्, रुध्, व्यध्, शुध्, साध्, सिध् (२), ये ही ग्यारह अनिट् हैं। और सब धकारान्त धातु सेट् हैं।

क्रुधः क्षुधो बुधो बन्धो युधो राधो रुधो व्यधः।
शुधः साधः सिधश्चेति धान्तेष्वेकादशानिटः ॥

नान्त—मन् (३) और हन् धातु अनिट् हैं। और सब नकारान्त धातु सेट् हैं। अनिटौ मन् हनौ नान्तौ।

पान्त—आप्, क्षिप्, छुप्, तप्, तिप्, तृप् (४) त्रप्, दृप् (४), लिप्, लुप्, वप्, शप्, सृप्, स्वप्, पकारान्त केवल ये चौदह धातु अनिट् हैं; अन्य सब सेट् हैं।

---

(१) तुदादि, दिवादि और रुधादिगणीय विद्-धातु अनिट् है। अदादि और चुरादिगणीय विद्-धातु सेट् है।

(२) दिवादिगणीय सिध्-धातु अनिट् है। भ्वादिगणीय गत्यर्थक सिध्-धातु सेट् है। गति भिन्न अन्य अर्थबोधक भ्वादिगणीय सिध्-धातु वेट् है।

(३) दिवादिगणीय मन्-धातु अनिट् है।

(४) पाणिनि और बोपदेवके अनुसार तृप् तथा दृप् धातु वेट् हैं। "अनुदात्ता हलन्तेषु धातवो द्व्यधिकं शतम्" हलन्त अनिट् धातुओंकी इसी गणनामें तृप् और दृप् धातु भी हैं; इसलिए ही विद्यासागरजी ने भी इन दोनोंको अनिट् धातुओं में गणना की है।

आपः क्षिपश्छुपश्चैव तप् तिप् तृप् त्रप् दृपो लिपः।
लुप् वप् शप् सृप् स्वपः पान्तेष्वनिटः स्युश्चतुर्दश॥

भान्त—यभ्, रभ्, लभ्, भकारान्त केवल ये तीन धातु अनिट् हैं; बाकी सब सेट् हैं।

यभ् रभ् लभो भकारान्तेष्वनिटः कथितास्त्रयः।

मान्त—गम्, नम्, यम्, रम्, मकारान्त केवल ये चार ही धातु अनिट् हैं; और सब सेट् हैं।

गम्नमौ यम्रमौ चेति मकारान्तेष्विमेऽनिटः।

शान्त—क्रुश्, दंश्, दिश्, दृश्, मृश्, रिश्, रुश्, लिश्, विश्, स्पृश्, शकारान्त केवल ये दश धातु अनिट् हैं।

क्रुश्दंश्दिश्दृशश्चैव मृश्रिश्रुश्लिश्विशस्तथा।
स्पृशश्चेति शकारान्तेष्वनिटः कीर्त्तिता दश॥

षान्त—कृष्, तुष्, त्विष्, दुष्, द्विष्, पिष्, पुष् (१), मृष् (२), विष्, शिष्, शुष्, श्लिष्, षकारान्त केवल ये बारह धातु अनिट् हैं; बाकी सब सेट् हैं।

कृष् तुष् त्विष् दुष् द्विषश्चैव पिष् पुष् मृष् विष् शिषस्तथा।
शुष्श्लिषौ चेति कथ्यन्ते षान्तेषु द्वादशानिटः॥

सान्त—घस्, वस्, सकारान्त केवल ये दो धातु अनिट् हैं; और सब सेट् हैं। अनिटौ घस्वसौ सान्तौ।

हान्त—दह्, दिह्, दुह्, नह्, मिह्, रुह्, लिह्, वह्, हकारान्त केवल ये आठ धातु अनिट् हैं; और सब सेट् हैं।

---

(१) दिवादिगणीय पुष्-धातु अनिट् है। भ्वादि, क्र्यादि और चुरादिगणीय पुष्-धातु सेट् है।

(२) पाणिनि और बोपदेव दोनों के ही मत से मृष्-धातु सेट् है। इस हेतु मृष्धातु अनिट् नहीं है।

दहो दिहो दुहश्चैव नहो मिह् रुहौ लिहः।
वहश्चेति हकारान्तेष्व निटोऽष्टौ प्रकीर्त्तिताः॥

प्रतिप्रसव (Counter-exception)।

११४। लिट् विभक्ति में द्रु, श्रु, स्रु, स्तु, कृ, भृ, वृ, सृ, भिन्न अनिट् धातुओं के उत्तर इ होता है (१)।

११५। लिट् की थ विभक्तिमें दृश्, सृज्, स्वरान्त (२) और अकारयुक्त (२) धातुओंके उत्तर विकल्पसे इ होता है (३)।

११६। लट् और लङ्के परस्मैपदमें गम्-धातुके उत्तर इ होता है।

११७। लुङ्के परस्मैपदमें विहित स परे रहने से स्तु, सु और धु (धू) धातुओं के उत्तर इ होता है (४)।

११८। लुङ् और आशीर्लिङ्के आत्मनेपदमें संयोगादि ह्रस्व ऋकारान्त धातुओं के उत्तर विकल्पसे इ होता है।

११६। लट् और लङ् विभक्तियों में हन् धातु और ऋका-रान्त धातुओंके उत्तर इ होता है।

---

(१) लिट् की थ विभक्ति में ह्रस्व ऋकारान्त धातुओं के उत्तर इ नहीं होता। वृ, ऋ और स्वृ धातुओं के उत्तर नित्य इ होता है।

(२) ऋ और व्ये-धातुओं के उत्तर नित्य इ होता है। अद्-धातु के उत्तर नित्य इ होता है। "इडत्यर्त्तिव्ययतीनाम्।"

(३) स्वरान्त और अकारयुक्त धातु अनिट् नहीं होने से नहीं होता। जिन धातुओं में पहले अ नहीं था पश्चात् "अ" का आगम होता है, उनके उत्तर भी इ नहीं होता।

(४) स्तुसुधूञ्भ्यः परस्मैपदेषु। पाणिनि के मतसे धू; मुग्धबोध और संक्षिप्तसार के मत से धु।

धातुरूप—लुट्, लृट् और लृङ्।

१२० । लुट्, लृट् और लृङ् विभक्तियों में धातु के अन्त्य-स्वर और उपधा लघुस्वर को गुण होता है।

भू-धातु (भ्वा०, प० पदी) होना, to be.

लुट् (First future tense).

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	भविता	भवितासि	भवितास्मि
द्विवचन	भवितारौ	भवितास्थः	भवितास्वः
बहुवचन	भवितारः	भवितास्थ	भवितास्मः

लृट् (Second future tense).

एकवचन	भविष्यति	भविष्यसि	भविष्यामि
द्विवचन	भविष्यतः	भविष्यथः	भविष्यावः
बहुवचन	भविष्यन्ति	भविष्यथ	भविष्यामः

लृङ् (Conditional mood).

एकवचन	अभविष्यत्	अभविष्यः	अभविष्यम्
द्विवचन	अभविष्यताम्	अभविष्यतम्	अभविष्याव
बहुवचन	अभविष्यन्	अभविष्यत	अभविष्याम

चल्-धातु (भ्वा०, प० पदी) चलना, to walk; to move.

Infin.—चलितुम्।

लुट्—चलिता, चलितारौ, चलितारः; चलितासि, चलितास्थः, चलितास्थ; चलितास्मि, चलितास्वः, चलितास्मः।

लृट्—चलिष्यति, चलिष्यतः चलिष्यन्ति, चलिष्यसि, चलिष्यथः, चलिष्यथ; चलिष्यामि, चलिष्यावः, चलिष्यामः।

लृङ्—अचलिष्यत्, अचलिष्यताम्, अचलिष्यन्; अचलिष्यः, अचलिष्यतम्, अचलिष्यत; अचलिष्यम्, अचलिष्याव, अचलिष्याम।

शी-धातु (अदा०, आ० पदी) लेटना, सोना, to lie down.

लुट्—शयिता, शयितारौ, शयितारः; शयितासे, शयितासाथे, शयिताध्वे; शयिताहे, शयितास्वहे शयितास्महे।

लृट्—शयिष्यते, शयिष्येते, शयिष्यन्ते; शयिष्यसे, शयिष्येथे, शयिष्यध्वे; शयिष्ये, शयिष्यावहे, शयिष्यामहे।

लृङ्—अशयिष्यत, अशयिष्येताम्, अशयिष्यन्त; अशयिष्यथाः, अशयिष्येथाम्, अशयिष्यध्वम्; अशयिष्ये, अशयिष्यावहि, अशयिष्यामहि।

१२१। लुट्, लृट् और लृङ् विभक्तियों में ग्रह्-धातुके उत्तर विहित इ दीर्घ होता है।

ग्रह्-धातु (क्र्या०, उ० पदी) लेना, to take.

लुट् (प० पद)—ग्रहीता, ग्रहीतारौ, ग्रहीतारः; ग्रहीतासि, ग्रहीतास्थः, ग्रहीतास्थ; ग्रहीतास्मि, ग्रहीतास्वः, ग्रहीतास्मः।

आ० पद—ग्रहीता, ग्रहीतारौ, ग्रहीतारः; ग्रहीतासे, ग्रहीतासाथे, ग्रहीताध्वे; ग्रहीताहे, ग्रहीतास्वहे, ग्रहीतास्महे।

लृट् (प० पद)—ग्रहीष्यति, ग्रहीष्यतः, ग्रहीष्यन्ति; ग्रहीष्यसि, ग्रहीष्यथः, ग्रहीष्यथ; ग्रहीष्यामि, ग्रहीष्यावः, ग्रहीष्यामः।

आ० पद—ग्रहीष्यते, ग्रहीष्येते, ग्रहीष्यन्ते; ग्रहीष्यसे, ग्रहीष्येथे, ग्रहीष्यध्वे; ग्रहीष्ये, ग्रहीष्यावहे, ग्रहीष्यामहे।

लृङ् (प० पद)—अग्रहीष्यत्, अग्रहीष्यताम्, अग्रहीष्यन्; अग्रहीष्यः, अग्रहीष्यतम्, अग्रहीष्यत; अग्रहीष्यम्, अग्रहीष्याव, अग्रहीष्याम।

आ० पद—अग्रहीष्यत, अग्रहीष्येताम्, अग्रहीष्यन्त; अग्रहीष्यथाः, अग्रहीष्येथाम्, अग्रहीष्यध्वम्; अग्रहीष्ये, अग्रहीष्यावहि, अग्रहीष्यामहि।

दीर्घ ॠकारान्त धातु।

१२२। लुट्, लृट् और लृङ् विभक्तियों में दीर्घ ॠकारान्त धातुओं के उत्तर विहित इ विकल्प से दीर्घ होता है।

तॄ-धातु (भ्वा०, प० पदी) तैरना, to float; पार उतारना, to cross.

Infin.—तरितुम्, तरीतुम्।

लुट्—तरि-री-ता, तरि-री-तारौ, तरि-री-तारः; तरि-री-तासि, तरि-री-तास्थः, तरि-री-तास्थ; तरि-री-तास्मि, तरि-री-तास्वः, तरि-री-तास्मः।

लृट्—तरि-री-ष्यति, तरि-री-ष्यतः, तरि-री-ष्यन्ति; तरि-री-ष्यसि, तरि-री-ष्यथः, तरि-री-ष्यथ; तरि-री-ष्यामि, तरि-री-ष्यावः, तरि-री-ष्यामः।

लृङ्—अतरि-री-ष्यत्, अतरि-री-ष्यताम्, अतरि-री-ष्यन्; अतरि-री-ष्यः, अतरि-री-ष्यतम्, अतरि-री-ष्यत; अतरि-री-ष्यम्, अतरि-री-ष्याव, अतरि-री-ष्याम।

१२३। लुट्, लृट् और लृङ् विभक्तियोँ में विहित इ परे दरिद्रा-धातु के आकारका लोप होता है।

दरिद्रा-धातु (अदा०, प० पदी) दरिद्र होना, to be poor.

लुट्—दरिद्रिता, दरिद्रितारौ, दरिद्रितारः; दरिद्रितासि, दरिद्रितास्थः, दरिद्रितास्थ; दरिद्रितास्मि, दरिद्रितास्वः, दरिद्रितास्मः।

लृट्—दरिद्रिष्यति, दरिद्रिष्यतः, दरिद्रिष्यन्ति; दरिद्रिष्यसि, दरिद्रिष्यथः, दरिद्रिष्यथ; दरिद्रिष्यामि, दरिद्रिष्यावः, दरिद्रिष्यामः।

लृङ्—अदरिद्रिष्यत्, अदरिद्रिष्यताम्, अदरिद्रिष्यन्; अदरिद्रिष्यः, अदरिद्रिष्यतम्, अदरिद्रिष्यत; अदरिद्रिष्यम्, अदरिद्रिष्याव, अदरिद्रिष्याम।

अनिट् धातु।

या-धातु (अदा० प० पदी) जाना, to go.

लुट्—याता, यातारौ, यातारः; यातासि, यातास्थः, यातास्थ; यातास्मि, यातास्वः, यातास्मः।

लृट्—यास्यति, यास्यतः, यास्यन्ति; यास्यसि, यास्यथः, यास्यथ; यास्यामि, यास्यावः, यास्यामः।

लृङ्—अयास्यत्, अयास्यताम्, अयास्यन्; अयास्यः, अयास्यतम्, अयास्यत; अयास्यम्, अयास्याव, अयास्याम।

जि-धातु (भ्वा० प० पदी) जीतना, to conquer.

लुट्—जेता, जेतारौ, जेतारः; जेतासि, जेतास्थः, जेतास्थ; जेतास्मि, जेतास्वः, जेतास्मः।

लृट्—जेष्यति, जेष्यतः, जेष्यन्ति; जेष्यसि, जेष्यथः, जेष्यथ; जेष्यामि, जेष्यावः, जेष्यामः।

लृङ्—अजेष्यत्, अजेष्यताम्, अजेष्यन्; अजेष्यः, अजेष्यतम्, अजेष्यत; अजेष्यम्, अजेष्याव, अजेष्याम।

श्रु-धातु (स्वा०, प० पदी) सुनना, to hear; to listen to.

लुट्—श्रोता, श्रोतारौ, श्रोतारः; श्रोतासि, श्रोतास्थः, श्रोतास्थ; श्रोतास्मि, श्रोतास्वः, श्रोतास्मः।

लृट्—श्रोष्यति, श्रोष्यतः, श्रोष्यन्ति; श्रोष्यसि, श्रोष्यथः, श्रोष्यथ; श्रोष्यामि, श्रोष्यावः, श्रोष्यामः।

लृङ्—अश्रोष्यत्, अश्रोष्यताम्, अश्रोष्यन्; अश्रोष्यः, अश्रोष्यतम्, अश्रोष्यत; अश्रोष्यम्, अश्रोष्याव, अश्रोष्याम।

वच्-धातु (अदा० प० पदी) बोलना, to say; to tell.

लुट्—वक्ता, वक्तारौ, वक्तारः; वक्तासि, वक्तास्थः, वक्तास्थ; वक्तास्मि, वक्तास्वः, वक्तास्मः।

लृट्—वक्ष्यति, वक्ष्यतः, वक्ष्यन्ति; वक्ष्यसि, वक्ष्यथः, वक्ष्यथ; वक्ष्यामि, वक्ष्यावः, वक्ष्यामः।

लृङ्—अवक्ष्यत्, अवक्ष्यताम्, अवक्ष्यन्; अवक्ष्यः, अवक्ष्यतम्, अवक्ष्यत; अवक्ष्यम्, अवक्ष्याव, अवक्ष्याम (१)।

---

(१) लुट्, लृट्, लृङ् विभक्तियोँमें ब्रू-धातुके भी ये ही रूप होते हैं; कारण

प्रच्छ्-धातु (तुदा० प० पदी) पूछना, to ask.

लुट्—प्रष्टा, प्रष्टारौ, प्रष्टारः ; प्रष्टासि, प्रष्टास्थः, प्रष्टास्थ ; प्रष्टास्मि, प्रष्टास्वः, प्रष्टास्मः।

लृट्—प्रक्ष्यति, प्रक्ष्यतः, प्रक्ष्यन्ति ; प्रक्ष्यसि, प्रक्ष्यथः, प्रक्ष्यथ ; प्रक्ष्यामि, प्रक्ष्यावः, प्रक्ष्यामः।

लृङ्—अप्रक्ष्यत्, अप्रक्ष्यताम्, अप्रक्ष्यन् ; अप्रक्ष्यः, अप्रक्ष्यतम्, अप्रक्ष्यत ; अप्रक्ष्यम्, अप्रक्ष्याव, अप्रक्ष्याम।

मन्-धातु* (दिवा० आ० पदी) सोचना, to think; to know.

Infin.—मन्तुम्।

लुट्—मन्ता, मन्तारौ, मन्तारः ; मन्तासे, मन्तासाथे, मन्ताध्वे ; मन्ताहे, मन्तास्वहे, मन्तास्महे।

लृट्—मंस्यते, मंस्येते, मंस्यन्ते ; मंस्यसे, मंस्येथे, मंस्यध्वे ; मंस्ये, मंस्यावहे, मंस्यामहे।

लृङ्—अमंस्यत, अमंस्येताम्, अमंस्यन्त ; अमंस्यथाः, अमंस्येथाम्, अमंस्यध्वम् ; अमंस्ये, अमंस्यावहि, अमंस्यामहि।

लभ्-धातु (भ्वा० आ० पदी) पाना, to get.

Infin.—लब्धुम्

लुट्—लब्धा, लब्धारौ, लब्धारः ; लब्धासे, लब्धासाथे, लब्धाध्वे ; लब्धाहे, लब्धास्वहे, लब्धास्महे।

लृट्—लप्स्यते, लप्स्येते, लप्स्यन्ते ; लप्स्यसे, लप्स्येथे, लप्स्यध्वे ; लप्स्ये, लप्स्यावहे, लप्स्यामहे।

लृङ्—अलप्स्यत, अलप्स्येताम्, अलप्स्यन्त ; अलप्स्यथाः, अलप्स्येथाम्, अलप्स्यध्वम् ; अलप्स्ये, अलप्स्यावहि, अलप्स्यामहि।

लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् भिन्न और सब विभक्तियोंमें ब्रू-धातुके स्थानमें वच् आदेश होता है।

* दिवादि भिन्न अन्य गणीय मन्-धातु अनिट् नहीं होता।

वस्-धातु (भ्वा० प० पदी) बसना, to dwell.

Infin. वस्तुम्।

लुट्—वस्ता, वस्तारौ, वस्तारः; वस्तासि, वस्तास्थः, वस्तास्थ; वस्तास्मि, वस्तास्वः, वस्तास्मः।

लृट्—वत्स्यति, वत्स्यतः, वत्स्यन्ति; वत्स्यसि, वत्स्यथः, वत्स्यथ; वत्स्यामि, वत्स्यावः, वत्स्यामः।

लृङ्—अवत्स्यत्, अवत्स्यताम्, अवत्स्यन्; अवत्स्यः, अवत्स्यतम्, अवत्स्यत; अवत्स्यम्, अवत्स्याव, अवत्स्याम।

वह्-धातु (भ्वा० उ० पदी) ढोना; ले जाना, to carry.

Infin.—वोढुम्।

लुट् (प० पद)—वोढा, वोढारौ, वोढारः; वोढासि, वोढास्थः, वोढास्थ; वोढास्मि, वोढास्वः, वोढास्मः।

आ० पद—वोढा, वोढारौ, वोढारः; वोढासे, वोढासाथे, वोढाध्वे; वोढाहे, वोढास्वहे, वोढास्महे।

लृट् (प० पद)—वक्ष्यति, वक्ष्यतः, वक्ष्यन्ति; वक्ष्यसि, वक्ष्यथः, वक्ष्यथ; वक्ष्यामि, वक्ष्यावः, वक्ष्यामः।

आ० पद—वक्ष्यते, वक्ष्येते, वक्ष्यन्ते; वक्ष्यसे, वक्ष्येथे, वक्ष्यध्वे; वक्ष्ये, वक्ष्यावहे, वक्ष्यामहे।

लृङ् (प० पद)—अवक्ष्यत्, अवक्ष्यताम्, अवक्ष्यन्; अवक्ष्यः, अवक्ष्यतम्, अवक्ष्यत; अवक्ष्यम्, अवक्ष्याव, अवक्ष्याम।

आ० पद—अवक्ष्यत, अवक्ष्येताम्, अवक्ष्यन्त; अवक्ष्यथाः, अवक्ष्येथाम्, अवक्ष्यध्वम्; अवक्ष्ये, अवक्ष्यावहि, अवक्ष्यामहि।

दह्-धातु (भ्वा० प० पदी) दहना, to burn.

Infin.—दग्धुम्।

लुट्—दग्धा, दग्धारौ, दग्धारः; दग्धासि, दग्धास्थः, दग्धास्थ; दग्धास्मि, दग्धास्वः, दग्धास्मः।

लृट्—धक्ष्यति, धक्ष्यतः, धक्ष्यन्ति; धक्ष्यसि, धक्ष्यथः, धक्ष्यथ; धक्ष्यामि, धक्ष्यावः, धक्ष्यामः।

लृङ्—अधक्ष्यत्, अधक्ष्यताम्, अधक्ष्यन्; अधक्ष्यः, अधक्ष्यतम्, अधक्ष्यत; अधक्ष्यम्, अधक्ष्याव, अधक्ष्याम।

दृश् और सृज् धातु।

१२४। लुट्, लृट्, और लृङ् विभक्तियोँ मेँ दृश् और सृज् धातुओँ के "ऋ" के स्थानमेँ र होता है (१)।

दृश्—धातु (भ्वा० प० पदी) देखना, to see.

लुट्—द्रष्टा, द्रष्टारौ, द्रष्टारः; द्रष्टासि, द्रष्टास्थः, द्रष्टास्थ; द्रष्टास्मि, द्रष्टास्वः, द्रष्टास्मः।

लृट्—द्रक्ष्यति, द्रक्ष्यतः, द्रक्ष्यन्ति; द्रक्ष्यसि, द्रक्ष्यथः, द्रक्ष्यथ; द्रक्ष्यामि, द्रक्ष्यावः, द्रक्ष्यामः।

लृङ्—अद्रक्ष्यत्, अद्रक्ष्यताम्, अद्रक्ष्यन्; अद्रक्ष्यः, अद्रक्ष्यतम्, अद्रक्ष्यत; अद्रक्ष्यम्, अद्रक्ष्याव, अद्रक्ष्याम।

सृज्-धातु (तुदा० प० पदी) सृजना, to create.

Infin.—स्रष्टुम्।

लुट्—स्रष्टा, स्रष्टारौ, स्रष्टारः; स्रष्टासि, स्रष्टास्थः, स्रष्टास्थ; स्रष्टास्मि, स्रष्टास्वः, स्रष्टास्मः।

लृट्—स्रक्ष्यति, स्रक्ष्यतः, स्रक्ष्यन्ति; स्रक्ष्यसि, स्रक्ष्यथः, स्रक्ष्यथ; स्रक्ष्यामि, स्रक्ष्यावः, स्रक्ष्यामः।

लृङ्—अस्रक्ष्यत्, अस्रक्ष्यताम्, अस्रक्ष्यन्; अस्रक्ष्यः, अस्रक्ष्यतम्, अस्रक्ष्यत; अस्रक्ष्यम्, अस्रक्ष्याव, अस्रक्ष्याम (२)।

---

(१) कृष्, तृप्, दृप्, मृश्, सृप्,—स्पृश् इन कई एक धातुओँ के ऋ के स्थानमेँ विकल्प से र होता है। यथा, कृष्-धातु लुट्—क्रष्टा, कर्ष्टा; लृट्-क्रक्ष्यति, कर्क्ष्यति; लृङ्—अक्रक्ष्यत्, अकर्क्ष्यत्।

(२) सृज्-धातु का अर्थ त्यागना (to leave, to shun) भी होता है। दिवादिगणीय सृज्-धातु आत्मनेपदी है। लट् सृज्यते। लुट्-स्रष्टा; लृट्—स्रक्ष्यते; लृङ्—अस्रक्ष्यत।

गम्-धातु (भ्वा० प० पदी) जाना, to go.

लुट्—गन्ता, गन्तारौ, गन्तारः; गन्तासि, गन्तास्थः, गन्तास्थ; गन्तास्मि, गन्तास्वः, गन्तास्मः।

लृट्—गमिष्यति, गमिष्यतः, गमिष्यन्ति; गमिष्यसि, गमिष्यथः, गमिष्यथ; गमिष्यामि, गमिष्यावः, गमिष्यामः।

लृङ्—अगमिष्यत्, अगमिष्यताम्, अगमिष्यन्; अगमिष्यः, अगमिष्यतम्, अगमिष्यत; अगमिष्यम्, अगमिष्याव, अगमिष्याम।

हन्-धातु (अदा० प० पदी) मारना, to kill; to hurt.

लुट्—हन्ता, हन्तारौ, हन्तारः; हन्तासि, हन्तास्थः, हन्तास्थ; हन्तास्मि, हन्तास्वः, हन्तास्मः।

लृट्—हनिष्यति, हनिष्यतः, हनिष्यन्ति; हनिष्यसि, हनिष्यथः, हनिष्यथ; हनिष्यामि, हनिष्यावः, हनिष्यामः।

लृङ्—अहनिष्यत्, अहनिष्यताम्, अहनिष्यन्; अहनिष्यः, अहनिष्यतम्, अहनिष्यत; अहनिष्यम्, अहनिष्याव, अहनिष्याम।

ह्रस्व ऋकारान्त धातु।

कृ-धातु (तना० उ० पदी) करना, to do.

लुट् (प० पद)—कर्त्ता, कर्त्तारौ, कर्त्तारः; कर्त्तासि, कर्त्तास्थः, कर्त्तास्थ; कर्त्तास्मि, कर्त्तास्वः, कर्त्तास्मः।

आ० पद—कर्त्ता, कर्त्तारौ, कर्त्तारः; कर्त्तासे, कर्त्तासाथे, कर्त्ताध्वे; कर्त्ताहे, कर्त्तास्वहे, कर्त्तास्महे।

लृट् (प० पद)—करिष्यति, करिष्यतः, करिष्यन्ति; करिष्यसि, करिष्यथः, करिष्यथ; करिष्यामि, करिष्यावः, करिष्यामः।

आ० पद—करिष्यते, करिष्येते, करिष्यन्ते; करिष्यसे, करिष्येथे, करिष्यध्वे; करिष्ये, करिष्यावहे, करिष्यामहे।

लृङ् (प० पद)—अकरिष्यत्, अकरिष्यताम्, अकरिष्यन्; अकरिष्यः, अकरिष्यतम्, अकरिष्यत; अकरिष्यम्, अकरिष्याव, अकरिष्याम (१)।

आ० पद—अकरिष्यत, अकरिष्येताम्, अकरिष्यन्त; अकरिष्यथाः, अकरिष्येथाम्, अकरिष्यध्वम्; अकरिष्ये, अकरिष्यावहि, अकरिष्यामहि।

१२५। लृङ् विभक्तिमें अध्ययनार्थबोधक अधिपूर्वक इ-धातु के स्थानमें विकल्पसे गी होता है। "गी" के ईकार को गुण नहीं होता।

अधि+इ-धातु (अदा०, आ० पदी) पढ़ना,
to read; to study.

लुट्—अध्येता, अध्येतारौ, अध्येतारः; अध्येतासे, अध्येतासाथे, अध्येताध्वे; अध्येताहे, अध्येतास्वहे, अध्येतास्महे।

लृट्—अध्येष्यते, अध्येष्येते, अध्येष्यन्ते; अध्येष्यसे, अध्येष्येथे, अध्येष्यध्वे; अध्येष्ये, अध्येष्यावहे, अध्येष्यामहे।

लृङ्—अध्यगीष्यत-अध्यैष्यत, अध्यगीष्येताम्-अध्यैष्येताम्, अध्यगीष्यन्त-अध्यैष्यन्त; अध्यगीष्यथाः-अध्यैष्यथाः, अध्यगीष्येथाम्-अध्यैष्येथाम्, अध्यगीष्यध्वम्-अध्यैष्यध्वम्; अध्यगीष्ये-अध्यैष्ये, अध्यगीष्यावहि-अध्यैष्यावहि, अध्यगीष्यामहि-अध्यैष्यामहि।

---

(१) लुट्, लृट्, लृङ् विभक्तियों में मृ-धातुके रूप कृ-धातुके परस्मैपदके सदृश होते हैं। यथा, मर्त्ता; मरिष्यति; अमरिष्यत्। कारण "म्रियतेर्लुङ्लिङोश्च" इस सूत्र के अनुसार मृ-धातु लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ्, आशीर्लिङ् तथा लुङ्, केवल इन छः विभक्तियों में आत्मनेपदी होता है, और लुट्, लृट्, लृङ् तथा लिट्, इन चार विभक्तियों में परस्मैपदी होता है।

विकल्पितेट् (वेट्) धातु।

रध्-धातु (दिवा०,प० पदी) राँधना, to cook; मारना, to kill.

Infin.—रधितुम्, रद्धुम्।

लुट्—रधिता-रद्धा, रधितारौ-रद्धारौ, रधितारः-रद्धारः; रधितासि-रद्धासि, रधितास्थः-रद्धास्थः, रधितास्थ-रद्धास्थ; रधितास्मि-रद्धास्मि, रधितास्वः-रद्धास्वः, रधितास्मः-रद्धास्मः।

लृट्—रधिष्यति-रत्स्यति, रधिष्यतः-रत्स्यतः, रधिष्यन्ति-रत्स्यन्ति; रधिष्यसि-रत्स्यसि, रधिष्यथः-रत्स्यथः, रधिष्यथ-रत्स्यथ; रधिष्यामि-रत्स्यामि, रधिष्यावः-रत्स्यावः, रधिष्यामः-रत्स्यामः।

लृङ्—अरधिष्यत्-अरत्स्यत्, अरधिष्यताम्-अरत्स्यताम्, अरधिष्यन्-अरत्स्यन्; अरधिष्यः-अरत्स्यः, अरधिष्यतम्-अरत्स्यतम्, अरधिष्यत-अरत्स्यत; अरधिष्यम्-अरत्स्यम्, अरधिष्याव-अरत्स्याव, अरधिष्याम-अरत्स्याम।

सू-धातु (अदा० दिवा०, आ० पदी) जनना, to give birth to; to bear; to bring forth; to produce.

लुट्—सविता-सोता, सवितारौ-सोतारौ, सवितारः-सोतारः; सवितासे-सोतासे, सवितासाथे-सोतासाथे, सविताध्वे-सोताध्वे; सविताहे-सोताहे, सवितास्वहे-सोतास्वहे, सवितास्महे-सोतास्महे।

लृट्—सविष्यते-सोष्यते, सविष्येते-सोष्येते, सविष्यन्ते-सोष्यन्ते; सविष्यसे-सोष्यसे, सविष्येथे-सोष्येथे, सविष्यध्वे-सोष्यध्वे; सविष्ये-सोष्ये, सविष्यावहे-सोष्यावहे, सविष्यामहे-सोष्यामहे।

लृङ्—असविष्यत-असोष्यत, असविष्येताम्-असोष्येताम्, असविष्यन्त-असोष्यन्त; असविष्यथाः-असोष्यथाः, असविष्येथाम्-असोष्येथाम्, असविष्यध्वम्-असोष्यध्वम्; असविष्ये-असोष्ये, असविष्यावहि-असोष्यावहि, असविष्यामहि-असोष्यामहि।

Note.—The First or Periphrastic future (लुट्) is used to denote a future action not of the current day, *i. e.*, a remote future action (अनद्यतने लुट्); as, "I shall go home tomorrow" =अहं श्वः गृहं गन्तास्मि। "(He) will take (you) to the house of Pluto on the seventh day herefrom" = सप्तरात्रादितो नेता यमस्य सदनं प्रति। The Second or Simple future (लृट्) is used to denote an indefinite future action as well as today's future action ; as, "we shall eat fruits today" =वयमद्य फलान्यत्स्यामः ; "I shall go to Calcutta"=अहं कलिकातां गमिष्यामि। A verb in the future tense in English may be translated into Sanskrit by using only the simple future (लृट्).

Conditional mood (लृङ्) is used in both the clauses of a conditional sentence when the *non performance* of an action is indicated (क्रियाऽनिष्पत्तौ लृङ्) ; as, "Had he come here, I would have gone there"=यदि सोऽत्र आगमिष्यत् तदाहं तत्र अगमिष्यम्।

EXERCISE.

1. *Translate into Sanskrit*:—Had there been knowledge, there would have been happiness. I do not know what will take place in the morning. If there had been good rain, famine would not certainly have happened. I will either accomplish my object or let my body fall. I shall bring many good things for you from Benares. I shall not say whether my friend will now go home or not. The boy will give alms to the poor. My youngest brother will go to Benares to-day. We shall defend (रक्ष्) our dear country even at the sacrifice of our lives. To-morrow there will be a holiday. To-day you will go (चल्) to Hari's garden and lie down on the green grass there. Will they take the money from you? We (two) shall cross the river to-morrow. The king's general will soon conquer his enemies. What will my friends think when they

will hear of my cowardice ? He shall surely get the boon when he will ask it from Ram who is so generous and noble-minded. They will not dwell even in heaven with these foolish and ignorant men. The king will burn the houses of the traitors and will kill them for their ungratefulness. I shall make friendship with you.

2. *Translate into English* :—स नूनं तान् द्राक् (quickly) प्रबुद्धान् (clever) करिष्यति । यास्यत्यद्य शकुन्तला पतिगृहम् । अद्यैव वृष्टिर्भविष्यति । राजा दरिद्रेभ्यः धनं दास्यति । यदि त्वं मामद्रक्ष्यः तर्हि सुखी अभविष्यः । तृणानि नोन्मूलयिता प्रभञ्जनः । त्वया सह निवत्स्यामि वनेषु सद्गन्धिषु । यदि कदाचित् स दुरात्मा तीक्ष्णशृङ्गाभ्यां स्वामिनं प्रहरिष्यति तन्महाननर्थः संपत्स्यते । भयाद्रणादुपरतं मंस्यन्ते त्वां महारथाः, येषां च त्वं बहुमतो भूत्वा यास्यसि लाघवम् । मया सह सुभाषितगोष्ठीसुखमनुभवन् सुखेन कालं नेष्यति । यदि सोऽस्माकं गृहमागमिष्यत् तर्हि अहं तद्गृहमगमिष्यम् । आशा बलवती राजन् शल्यो जेष्यति पाण्डवान् । स्वल्पैरहोभिर्नृपते स्वं राज्यं प्राप्स्यते भवान् ।

3. *Correct*:—अहं तव वचनं करिष्यति । ते शत्रुं जयिष्यन्ति । त्वं राज्ञं दर्शिष्यसि । अद्यैव मे भ्राता अस्मिन् स्थानात् गृहं गन्ता । सर्वे नराः मरिष्यन्ते । तव विरहेनाहं प्राणान् त्यजिष्यामि । यदि रामः सलिलं नापाष्यत् तर्हि तृष्णया प्राणान् अत्यजिष्यत् । त्वं मम पाशान् पश्चात् छेदिस्यसि ।

आशीर्लिङ् (Benedictive Mood) ।

भू-धातु (भ्वा०, प० पदी) होना, to be.

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	भूयात्	भूयाः	भूयासम्
द्विवचन	भूयास्ताम्	भूयास्तम्	भूयास्व
बहुवचन	भूयासुः	भूयास्त	भूयास्म

भिद्-धातु (रुधा०, उ० पदी) काटना ; भेदना, to separate ; to break down.

Infin.—भेत्तुम् ।

प० पद—भिद्यात्, भिद्यास्ताम्, भिद्यासुः ; भिद्याः, भिद्यास्तम्, भिद्यास्त ; भिद्यासम्, भिद्यास्व, भिद्यास्म ।

आ० पद—भित्सीष्ट, भित्सीयास्ताम्, भित्सीरन्; भित्सीष्ठाः, भित्सीयास्थाम्, भित्सीध्वम् ; भित्सीय, भित्सीवहि, भित्सीमहि ।

गम्-धातु (भ्वा० प०)—गम्यात्, गम्यास्ताम्, गम्यासुः; गम्याः, गम्यास्तम्, गम्यास्त ; गम्यासम्, गम्यास्व, गम्यास्म ।

१२६ । आशीर्लिङ् के परस्मैपदमें दा (१), पा (२), मा, गा (गै), सा (सो), हा, इन सब धातुओं के आकार के स्थान में एकार होता है (३) ।

दा-धातु (भ्वा० प०, ह्वा० उ०) देना, to give.

प० पद—देयात्, देयास्ताम्, देयासुः ; देयाः, देयास्तम्, देयास्त ; देयासम्, देयास्व, देयास्म ।

आ० पद—दासीष्ट, दासीयास्ताम्, दासीरन् ; दासीष्ठाः, दासीयास्थाम्, दासीध्वम् ; दासीय, दासीवहि, दासीमहि ।

---

(१) "दा" से दा, दो, धा, धे, इन चार धातुओंका बोध होता है। आशीर्लिङ् के परस्मैपद में इन सबों के ही अन्त्य स्वर के स्थान में एकार होता है। अदादिगणीय छेदनार्थक दा-धातु के "आ" के स्थानमें ए नहीं होता। दै-धातु से दायात् इत्यादि होते हैं।

(२) अदादिगणीय पालनार्थक पा-धातुके आके स्थानमें ए नहीं होता।

(३) संयुक्तवर्णादि धातुओंके "आ" के स्थानमें विकल्प से ए होता है। यथा, स्ना-धातु—स्नेयात्, स्नायात्; घ्रा-धातु—घ्रेयात्, घ्रायात्; म्ना-धातु—म्नेयात्, म्नायात्; ग्लै-धातु—ग्लेयात्, ग्लायात्। किन्तु स्था-धातु के "आ" के स्थानमें नित्य ए होता है ; यथा, स्थेयात् ।

पा-धातु (भ्वा० प०) to drink.—पेयात्, पेयास्ताम्, पेयासुः ; पेयाः, पेयास्तम्, पेयास्त ; पेयासम्, पेयास्व, पेयास्म।

१२७। आशीर्लिङ् के परस्मैपद में धातु के अन्तस्थित ह्रस्व इकार और ह्रस्व उकार दीर्घ होता है।

जि-धातु (भ्वा० प०) जीतना, to conquer.—जीयात्, जीयास्ताम्, जीयासुः इत्यादि।

श्रु-धातु (स्वा० प०) सुनना, to hear.—श्रूयात्, श्रूयास्ताम्, श्रूयासुः इत्यादि (१)।

१२८। आशीर्लिङ् के परस्मैपदमें ह्रस्व ऋके स्थानमें रि होता है।

कृ–धातु (तना०उ०) करना, to do.—क्रियात्, क्रियास्ताम्, क्रियासुः इत्यादि (२)।

भृ–धातु (भ्वा० ह्वा०, उ०) पालना, पोसना, to nourish; थामना, to carry.—भ्रियात्, भ्रियास्ताम्, भ्रियासुः (३)।

१२६। जिन सब ह्रस्व ऋकारान्त धातुओं के आदिमें संयुक्त वर्ण रहता है, आशीर्लिङ्के परस्मैपदमें उनके और ऋ-धातुके "ऋ" के स्थानमें अर् होता है।

स्मृ–धातु (भ्वा० प०) स्मरण करना, to remember.—स्मर्य्यात्, स्मर्य्यास्ताम्, स्मर्य्यासुः इत्यादि।

ऋ–धातु (भ्वा० प०) to go.—अर्य्यात्, अर्य्यास्ताम्, अर्य्यासुः इत्यादि।

---

(१) ऐसे, क्षि—क्षीयात्; श्रि—श्रीयात्; सु—सूयात्; नु—नूयात्; श्वि—शूयात्, शूयास्ताम्, शूयासुः; शूयाः, शूयास्तम्, शूयास्त; शूयासम्, शूयास्व, शूयास्म।

(२) कृ-धातु (आ० पद)—कृषीष्ट, कृषीयास्ताम्, कृषीरन् इत्यादि।

(३) भृ-धातु (आ० पद)—भृषीष्ट, भृषीयास्ताम्, भृषीरन् इत्यादि।

१३०। आशीर्लिङ्के परस्मैपदमैं धातुके अन्तस्थित दीर्घ ॠके स्थानमैं ईर् होता है; परन्तु ॠ पवर्ग के परस्थित होनेसे ऊर् होता है।

तॄ–धातु (भ्वा० प०) तैरना, to swim; to float; पार होना, to cross.—तीर्य्यात्, तीर्य्यास्ताम्, तीर्य्यासुः इत्यादि।

पॄ–धातु (क्या० ह्वा०, प० पदी) भरना, to fill.—पूर्य्यात्, पूर्य्यास्ताम्, पूर्य्यासुः इत्यादि।

१३१। आशीर्लिङ्के परस्मैपदमैं ग्रह्–धातुके स्थानमैं गृह्, प्रच्छ्–धातुके स्थानमैं पृच्छ्, व्यध्–धातुके स्थानमैं विध् और यज्–धातुके स्थान मैं इज् होता है।

ग्रह्–धातु (क्या० उ०) लेना, ग्रहण करना, to take. (प० पद)—गृह्यात्, गृह्यास्ताम्, गृह्यासुः इत्यादि (१)।

प्रच्छ्–धातु (तुदा० प०) पूछना, to ask.—पृच्छ्यात्, पृच्छ्यास्ताम्, पृच्छ्यासुः इत्यादि।

व्यध्–धातु (दिवा० प०) छेदना, to pierce.—विध्यात्, विध्यास्ताम्, विध्यासुः इत्यादि।

यज्–धातु (भ्वा० उ०) पूजा करना; यज्ञ करना, to offer sacrifice.—इज्यात्, इज्यास्ताम्, इज्यासुः इत्यादि (१)।

१३२। आशीर्लिङ्के परस्मैपदमैं वच्, वद्, वप्, वस्, वह्, स्वप् इन सब धातुओंके अकार-सहित "व" के स्थानमैं उ होता है।

वच्–धातु (अदा० प०) बोलना, to speak.—उच्यात्, उच्यास्ताम्, उच्यासुः इत्यादि।

---

(१) ग्रह् (आ० पद) ग्रहीषीष्ट। यज्-धातु (आ० पद)—यक्षीष्ट, यक्षीयास्ताम्, यक्षीरन्; यक्षीष्ठाः, यक्षीयास्थाम्, यक्षीध्वम्; यक्षीय, यक्षीवहि, यक्षीमहि।

वस्-धातु (भ्वा० प०) वसना, to dwell.—उष्यात्, उष्यास्ताम्, उष्यासुः इत्यादि (१)।

१३३। आशीर्लिङ्के परस्मैपदमें ह्वे-धातुके स्थानमें हू होता है (२)।

ह्वे-धातु (भ्वा० उ०) बुलाना; पुकारना, to call.—हूयात, हूयास्ताम्, हूयासुः इत्यादि।

१३४। आशीर्लिङ्के परस्मैपदमें धातुके (३) उपधा नकारका लोप होता है।

मन्थ्-धातु (भ्वा० प०) मथना, to churn.—मथ्यात्, मथ्यास्ताम्, मथ्यासुः इत्यादि (४)।

१३५। आशीर्लिङ्के परस्मैपदमें शास्-धातुके स्थानमें शिष् होता है।

शास्-धातु (अदा० प०) सिखलाना, to teach; शासन करना, to govern.—शिष्यात्, शिष्यास्ताम्, शिष्यासुः इत्यादि।

सेव्-धातु (भ्वा०, आ० पदी) सेवा करना, to serve.

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	सेविषीष्ट	सेविषीष्ठाः	सेविषीय
द्विवचन	सेविषीयास्ताम्	सेविषीयास्थाम्	सेविषीवहि
बहुवचन	सेविषीरन्	सेविषीध्वम्,	सेविषीमहि

(१) वद्—उद्यात्। वप्—उप्यात्; वप्सीष्ट। वह्—उह्यात्; वक्षीष्ट। स्वप्-सुप्यात्।

(२) आशीर्लिङ् के परस्मैपदमें वे-धातुके स्थानमें ऊ और व्ये धातुके स्थानमें वी होता है। यथा, वे—ऊयात्; व्ये—वीयात्।

(३) कुन्थ् प्रभृति इदित् धातु भिन्न। गणपाठमें (अर्थात् धातुपाठमें) जिन धातुओंके "इ" अनुबन्ध इत् है, उन्हें इदित् धातु कहते हैं। यथा, कुथि-कुन्थ्, नदि-नन्द्, निदि-निन्द्, स्पदि-स्पन्द्, वदि-वन्द् इत्यादि।

(४) क्र्यादिगणीय परस्मैपदी मन्थ-धातुके आशीर्लिङ् में मन्थ्यात्, मन्थ्यास्ताम्, मन्थ्यासुः इत्यादि होते हैं।

१३६। आशीर्लिङ्के आत्मनेपदमें धातुके अन्त्यस्वर और उपधा लघु स्वरको गुण होता है।

शी-धातु (अदा, आ० पदी) सोना, to lie down.—शयिषीष्ट, शयिषीयास्ताम्, शयिषीरन् इत्यादि।

द्युत्-धातु (भ्वा०, आ० पदी) चमकना, to shine.—द्योतिषीष्ट, द्योतिषीयास्ताम्, द्योतिषीरन् इत्यादि।

१३७। आशीर्लिङ्के आत्मनेपदमें ग्रह्-धातुके उत्तर विहित ह्रस्व इ दीर्घ होता है।

ग्रह्-धातु (क्र्या० उ० पदी) लेना, to take.—ग्रहीषीष्ट, ग्रहीषीयास्ताम्, ग्रहीषीरन् इत्यादि।

अनिट्-धातु।

दा-धातु (ह्वा०, उ० पदी) देना, to give. (आ० पद)—दासीष्ट, दासीयास्ताम्, दासीरन् इत्यादि (१)।

वह्-धातु (भ्वा०, उ० पदी) ढोना, to carry. (आ० पद)—वक्षीष्ट, वक्षीयास्ताम्, वक्षीरन् इत्यादि (२)।

१३८। आशीर्लिङ्के आत्मनेपदमें अनिट्-धातुके अन्तस्थित ऋकारको गुण नहीं होता।

कृ-धातु (तना०, उ० पदी) करना, to do. (आ० पद)—कृषीष्ट, कृषीयास्ताम्, कृषीरन् इत्यादि।

मृ-धातु (तुदा०, आ० पदी) मरना, to die.—मृषीष्ट, मृषीयास्ताम्, मृषीरन् इत्यादि।

१३९। आशीर्लिङ्के आत्मनेपदमें अनिट्-धातुके उपधा लघु स्वरको गुण नहीं होता।

---

(१) प० पद—देयात्, देयास्ताम्, देयासुः इत्यादि।

(२) प० पद— उह्यात्, उह्यास्ताम्, उह्यासुः इत्यादि।

भुज्-धातु (रुधा० उ०)—आ० पद (to eat).—भुक्षीष्ट, भुक्षीयास्ताम्, भुक्षीरन् इत्यादि (१)।

विकल्पितेट् धातु।

सू-धातु (अदा० दिवा०, आ०) to bring forth.—सविषीष्ट-सोषीष्ट, सविषीयास्ताम्-सोषीयास्ताम्, सविषीरन्-सोषीरन् इत्यादि।

वृ-धातु (स्वा०, भ्वा०, क्र्या० उ०) पसन्द करना, to choose. (आ० पद)—वरिषीष्ट-वृषीष्ट, वरिषीयास्ताम्-वृषीयास्ताम्, वरिषीरन्-वृषीरन् इत्यादि (२)।

लिट् (First preterite or Perfect tense)।

१४०। लिट् विभक्तिमें धातु अभ्यस्त होता है अर्थात् धातु को द्वित्व होता है (३)।

१४१। अभ्यस्त करनेसे पूर्वभागके आदि स्वरके परे जो अंश रहता है उसका लोप होता है (४)।

---

(१) प्र० पद (to protect)—भुज्यात्, भुज्यास्ताम्, भुज्यासुः इत्यादि।

(२) ऐसे ही—स्तृ—स्तरिषीष्ट, स्तृषीष्ट; कॄ—करिषीष्ट, कीर्षीष्ट; अप्—अपिषीष्ट, अप्सीष्ट। धू—धविषीष्ट, धोषीष्ट। आशीर्लिङ् में विशि रूपः— हन्—वध्यात्; अस्—भूयात्; अज्—वीयात्; खन्—खायात्-खन्यात्; ज्या—जीयात्; ब्रू—उच्यात्, वक्षीष्ट।

(३) लिटि धातोरनभ्यासस्य। एकाचो द्वे प्रथमस्य। अजादेर्द्वितीयस्य।

(४) पूर्वोऽभ्यासः। हलादिः शेषः।

दद्-धातु (भ्वा०, आ० पदी (देना, to give.

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	ददде (१)	ददिषे	ददде
द्विवचन	ददाते	ददाथे	ददिवहे
बहुवचन	ददिरे	ददिध्वे	ददिमहे (२)

१४२। परस्मैपदके प्रथमपुरुषके एकवचनमें धातुके उपधा अकारको और अन्त्यस्वर को वृद्धि होती है; उत्तमपुरुषके एकवचनमें विकल्पसे होती है (३)।

शश्-धातु (भ्वा०, प० पदी) उछलना, to leap; to jump.

एकवचन	शशाश	शशशिथ	शशाश, शशश
द्विवचन	शशशतुः	शशशथुः	शशशिव
बहुवचन	शशशुः	शशश	शशशिम (४)

१४३। परस्मैपदमें प्रथम और उत्तमपुरुषके एकवचनमें धातुके उपधा लघुस्वरको गुण होता है।

१४४। परस्मैपद मध्यमपुरुषके एकवचनमें धातुके अन्त्यस्वरको और उपधा लघुस्वरको गुण होता है।

विद्-धातु (अदा०, प० पदी) जानना, to know.

एकवचन	विवेद	विवेदिथ	विवेद
द्विवचन	विविदतुः	विविदथुः	विविदिव
बहुवचन	विविदुः	विविद	विविदिम (५)

(१) न शश्ददवादिगुणानाम्।

(२) उत्तमपुरुषमें लिट् का प्रयोग प्रायः नहीं होता। मत्सम्पादित उपक्रमणिका पृ० १०३ पाद टिप्पणी देखो।

(३) अत उपधायाः। णलुत्तमो वा।

(४) यह रूप मुग्धबोधके अनुसार है। संक्षिप्तसार तथा पाणिनिके अनुसार शश्-धातुके लिट् विभक्तिमें शशाश, शेशतुः, शेशुः इत्यादि रूप होते हैं। उनके मतमें शस्-धातुके रूप शशास, शशसतुः, शशसुः इत्यादि होते हैं।

(५) लिट् विभक्तिमें विद्-धातुके उत्तर विकल्पसे आम् होता है और इस "आम्" के परे भू, अस् और कृ धातुका प्रयोग होता है। यथा विदाम्बभूव, विदामास, विदाञ्चकार इत्यादि।

१४५। अभ्यस्त धातुके पूर्वभागका दीर्घस्वर ह्रस्व होता है। नी-धातु (भ्वा०, उ० पदी) ले जाना, to carry; to lead.

प० पद—निनाय, निन्यतुः, निन्युः, निनयिथ-निनेथ, निन्यथुः, निन्य ; निनाय-निनय, निन्यिव, निन्यिम।

आ० पद—निन्ये, निन्याते, निन्यिरे ; निन्यिषे, निन्याथे, निन्यिध्वे ; निन्ये, निन्यिवहे, निन्यिमहे।

नू-धातु (तुदा०, प० पदी) स्तुति करना, to pray; to praise.—नुनाव, नुनुवतुः, नुनुवुः ; नुनुविथ, नुनुवथुः, नुनुव ; नुनाव-नुनव, नुनुविव, नुनुविम (१)।

सेव्-धातु (भ्वा०, आ० पदी) सेवा करना, to serve.—सिषेवे, सिषेवाते, सिषेविरे ; सिषेविषे, सिषेवाथे, सिषेविध्वे ; सिषेवे, सिषेविवहे, सिषेविमहे।

१४६। अभ्यस्त धातुके पूर्वभागमें वर्गके द्वितीय वर्ण रहनेसे प्रथम वर्ण होता है और चतुर्थ वर्ण रहनेसे तृतीय वर्ण होता है (२)।

छिद्-धातु (रुधा०, उ० पदी) काटना, to cut.

प० पद—चिच्छेद, चिच्छिदतुः, चिच्छिदुः ; चिच्छेदिथ, चिच्छिदथुः, चिच्छिद ; चिच्छेद, चिच्छिदिव, चिच्छिदिम।

---

(१) दीर्घ ऊकारान्त यह नू-धातु कुटादिके अन्तर्गत तुदादि-गणीय परस्मैपदी धातु है। लट् विभक्तिमें इसके रूप नुवति, नुवतः, नुवन्ति इत्यादि होते हैं। लुट्, लृट्, लङ्, आशीर्लिङ्, लुङ्, इन पाँच लकारोंमें और लिट् की थ विभक्तिमें कुटादि धातुओंको गुण नहीं होता। कुटादिके अन्तर्गत प्रचलित धातु यथा, (प० पदी) कुट्, कुच्, त्रुट्, धू, नू, स्फुट्, स्फुर् ; (आ० पदी) कु, कू। कुटादि धातु सब तुदादिगणीय हैं। ह्रस्व उकारान्त नु-धातुका भी यही अर्थ है किन्तु वह अदादिगणीय परस्मैपदी धातु है। लिट् विभक्तिमें उसका रूप नू-धातुके सदृश होता है केवल थ विभक्तिमें नुनुविथ नहीं होकर नुनविथ होता है।

(२) अभ्यासे चर्च्च।

आ० पद—चिच्छिदे, चिच्छिदाते, चिच्छिदिरे; चिच्छिदिषे, चिच्छिदाथे, चिच्छिदिध्वे; चिच्छिदे, चिच्छिदिवहे, चिच्छिदिमहे।

भिद्-धातु (रुधा०, उ० पदी) भेदना, to pierce into.

प० पद—बिभेद, बिभिदतुः, बिभिदुः; बिभेदिथ, बिभिदथुः, बिभिद; बिभेद, बिभिदिव, बिभिदिम।

आ० पद—बिभिदे, बिभिदाते, बिभिदिरे; बिभिदिषे, बिभिदाथे, बिभिदिध्वे; बिभिदे, बिभिदिवहे, बिभिदिमहे।

१४७। अभ्यस्त धातुके पूर्वभागस्थित क और खके स्थानमें च तथा ग और घके स्थानमें ज होता है (१)।

खद्-धातु (भ्वा०, प० पदी) खाना, to eat; मारना, to kill; स्थिर होना, to be steady.—चखाद, चखदतुः, चखदुः; चखदिथ, चखदथुः, चखद; चखाद-चखद, चखदिव, चखदिम (२)।

गद्-धातु (भ्वा०, प० पदी) बोलना, to speak.—जगाद, जगदतुः, जगदुः; जगदिथ, जगदथुः, जगद; जगाद-जगद, जगदिव, जगदिम।

१४८। अभ्यस्त धातु के पूर्वभागस्थित ऋ और ॠके स्थानमें अ होता है (३)।

सृ—धातु (भ्वा०, प० पदी) जाना, चलना, to go; to move.—ससार, सस्रतुः, सस्रुः; ससर्थ, सस्रथुः, सस्र; ससार-ससर, सस्रिव सस्रिम।

नृत्-धातु (दिवा०, प० पदी) नाचना, to dance.—ननर्त्त, ननृततुः; ननृतुः; ननर्त्तिथ, ननृतथुः, ननृत; ननर्त्त, ननृतिव, ननृतिम।

---

(१) कुहोश्चुः।

(२) खादः-धातु (भ्वा०, प० पदी) खाना, to eat.—चखाद, चखादतुः, चखादुः; चखादिथ, चखादथुः, चखाद; चखाद, चखादिव, चखादिम।

(३) उरत्।

१४९। अभ्यस्त धातु के पूर्वभागमें ह रहे तो उसके स्थानमें ज होता है (१)।

हस्-धातु (भ्वा०, प० पदी) हँसना, to laugh.—जहास, जहसतुः, जहसुः; जहसिथ, जहसथुः, जहस; जहास-जहस, जहसिव, जहसिम।

१५०। अभ्यस्त धातुके पूर्वभागमें संयुक्तवर्ण रहनेसे अन्त्य व्यञ्जन वर्णका लोप होता है।

श्रु-धातु (स्वा०, प० पदी) सुनना, to hear.—शुश्राव, शुश्रुवतुः, शुश्रुवुः; शुश्रोथ, शुश्रुवथुः, शुश्रुव; शुश्राव-शुश्रव, शुश्रुव, शुश्रुम।

श्लिष्-धातु (दिवा०, प० पदी) आलिङ्गन करना, to embrace.—शिश्लेष, शिश्लिषतुः, शिश्लिषुः; शिश्लेषिथ, शिश्लिषथुः, शिश्लिष; शिश्लेष, शिश्लिषिव, शिश्लिषिम।

१५१। अभ्यस्त धातुके पूर्वभागमें, श्च, ष्ट, ष्ठ, स्क, स्ख, स्त, स्थ, स्प और स्फ रहनेसे आदिवर्णका लोप होता है (२)।

स्खल्-धातु (भ्वा०, प० पदी) गिरना, to fall down, to slip.—चस्खाल, चस्खलतुः, चस्खलुः; चस्खलिथ, चस्खलथुः, चस्खल; चस्खाल-चस्खल, चस्खलिव, चस्खलिम।

श्च्युत्-धातु (भ्वा०, प० पदी) चूना, to ooze.—चुश्च्योत, चुश्च्युततुः, चुश्च्युतुः; चुश्च्योतिथ, चुश्च्युतथुः, चुश्च्युत; चुश्च्योत, चुश्च्युतिव, चुश्च्युतिम।

स्तु-धातु (अदा०, उ० पदी) स्तुति करना, to praise. (प० पद)—तुष्टाव, तुष्टुवतुः, तुष्टुवुः; तुष्टोथ, तुष्टुवथुः, तुष्टुव; तुष्टाव-तुष्टव, तुष्टुव, तुष्टुम। (आ० पद)—तुष्टुवे, तुष्टुवाते, तुष्टुविरे; तुष्टुषे, तुष्टुवाथे, तुष्टुढ्वे; तुष्टुवे तुष्टुवहे, तुष्टुमहे।

---

(१) कुहोश्चुः। (२) शर्पूर्वाः खयः।

स्फुर्-धातु (भ्वा०, प० पदी) चमकना, to shine; फड़कना, to throb.—पुस्फोर, पुस्फुरतुः, पुस्फुरुः ; पुस्फोरिथ, पुस्फुरथुः, पुस्फुर ; पुस्फोर, पुस्फुरिव, पुस्फुरिम।

१५२। आकारान्त धातुके परवर्त्ती लिट्के परस्मैपदके प्रथम और उत्तमपुरुषके एक वचनके स्थानमैं औ होता है (१)।

१५३। लिट् विभक्तिमैं आकारान्त धातुके आकारका लोप होता है (२); किन्तु थ विभक्तिमैं इ नहीँ होने से आकारका लोप नहीँ होता (३)।

या-धातु (अदा०, प० पदी) जाना, to go.—ययौ, ययतुः, ययुः ; ययिथ-ययाथ, ययथुः, ययु ; ययौ, ययिव, ययिम।

दा-धातु (ह्वा०, उ० पदी) देना, to give (प० पद)—ददौ, ददतुः, ददुः; ददिथ-ददाथ, ददथुः, दद ; ददौ, ददिव, ददिम। (आ० पद)—ददे, ददाते, ददिरे ; ददिषे, ददाथे, ददिध्वे ; ददे, ददिवहे, ददिमहे।

स्था-धातु (भ्वा०, प० पदी) रहना, to stay. तस्थौ, तस्थतुः, तस्थुः ; तस्थिथ-तस्थाथ, तस्थथुः, तस्थ ; तस्थौ, तस्थिव, तस्थिम।

१५४। लिट् विभक्ति परे रहनेसे भू-धातु के स्थान मैं बभूव् होता है (४)।

भू-धातु (भ्वा०, प० पदी) होना, to be.—बभूव, बभूवतुः, बभूवुः ; बभूविथ, बभूवथुः, बभूव ; बभूव, बभूविव, बभूविम (५)।

---

(१) आत औ णलः।

(२) हस्वः। (३) आतो लोप इटि च।

(४) भुवो वुग् लुङ्लिटोः। भवतेरः। अभ्यासे चर्च।

(५) लिट् विभक्तिमैं अस्-धातुका भी यही रूप होता है। लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् को छोड़कर और सब विभक्तियोँ मैं अस्-धातुका रूप भू-धातुके तुल्य होता है।

१५५। लिट् विभक्तिमैं चि-धातुके परभागके स्थानमैं कि (१), जि-धातुके परम भागके स्थानमैं गि और हि-धातुके परभागके स्थानमैं घि होता है।

चि-धातु (स्वा०, उ० पदी) बटोरना, चुनना, to collect, to cull. (प० पद)—चिकाय-चिचाय, चिक्यतुः-चिच्यतुः, चिक्युः-चिच्युः; चिकयिथ-चिकेथ-चिचयिथ-चिचेथ, चिक्यथुः-चिच्यथुः, चिक्य-चिच्य; चिकाय-चिकय-चिचाय-चिचय, चिकियव-चिचियव, चिकियम-चिचियम। (आ०पद) चिक्ये-चिच्ये, चिक्याते-चिच्याते, चिकियरे-चिचियरे; चिकियषे-चिचियषे, चिक्याथे-चिच्याथे, चिकियध्वे-चिचियध्वे; चिक्ये-चिच्ये, चिकियवहे-चिचियवहे, चिकियमहे-चिचियमहे।

जि-धातु (भ्वा०, प० पदी) जीतना, to conquer—जिगाय, जिग्यतुः, जिग्युः; जिगयिथ-जिगेथ, जिग्यथुः; जिग्य; जिगाय-जिगय, जिग्यिव, जिग्यिम।

हि-धातु (स्वा०, प० पदी) भेजना, to send; जाना, to go:—जिघाय, जिघ्यतुः, जिघ्युः; जिघयिथ जिघेथ, जिघ्यथुः, जिघ्य; जिघाय-जिघय, जिघ्यिव-जिघ्यिम।

१५६। परस्मैपदके प्रथमपुरुष और उत्तमपुरुषके एकवचन भिन्न लिट् विभक्तिमैं धातुके अन्तस्थित दीर्घ ॠके स्थानमैं अर् होता है (२)।

कॄ-धातु (तुदा०, प० पदी) फैलाना, to scatter.—चकार, चकरतुः, चकरुः; चकरिथ, चकरथुः, चकर; चकार-चकर, चकरिव, चकरिम।

---

(१) विभाषा चेः। वैयाकरण लोग चि-धातु के स्थान में विकल्पसे कि करते हैं। यथा, चिकाय-चिचाय इत्यादि।

(२) ऋच्छत्यॄताम्।

१५७। जिन ह्रस्व ऋकारान्त धातुओं के आदि में संयुक्तवर्ण रहता है, परस्मैपदके प्रथम और उत्तम पुरुषके एकवचन भिन्न लिट् विभक्तिमें, उनके ऋके स्थानमें अर् होता है (१)।

स्मृ-धातु (भ्वा०, प० पदी) स्मरण करना, to remember, to recollect.—सस्मार, सस्मरतुः, सस्मरुः; सस्मर्थ, सस्मरथुः, सस्मर; सस्मार-सस्मर, सस्मरिव, सस्मरिम।

१५८। परस्मैपदके एकवचन भिन्न लिट् विभक्तिमें धातुके (२) उपधा नकारका विकल्पसे लोप होता है (३)।

दन्श्-धातु (भ्वा०, प० पदी) दाँतसे काटना, to bite.—ददंश, ददंशतुः, ददंशुः; ददंशिथ-ददंष्ठ, ददंशथु, ददंश; ददंश, ददंशिव, ददंशिम।

सन्ज्—धातु (भ्वा०, प० पदी) to embrace, to adhere.—ससञ्ज, ससञ्जतुः, ससञ्जुः; ससञ्जिथ-ससङ्क्थ, ससञ्जथुः, ससञ्ज; ससञ्ज, ससञ्जिव, ससञ्जिम।

१५९। स्वादिगणीय अश्-धातु, ह्रस्व ऋकारादि धातु और जिन अकारादि धातुओंके अन्तमें संयुक्तवर्ण रहता है, उनके पूर्वभागके स्थानमें "आन्" होता है।

अश्-धातु (स्वा०, आ० पदी) व्याप्त करना, to pervade.—आनशे, आनशाते, आनशिरे; आनशिषे-आनक्षे, आनशाथे,

---

(१) ऋतश्च संयोगादेर्गुणः।

(२) निन्द् प्रभृति इदित् धातु भिन्न।

(३) मुग्धबोधका मत यही है। पाणिनिके मतमें केवल स्वन्ज् धातुके "न्" का विकल्पसे लोप होता है, औरोंके नहीं। इसलिए उनके मतमें ददशतुः, ससजतुः इत्यादि पद नहीं होते। किसी किसी वैयाकरणके मतमें श्रन्थ्, ग्रन्थ्, दन्भ् और स्वन्ज्, इन चारों धातुओंके "न्" का विकल्पसे लोप होता है; और किसी किसीके मतमें इन चारों धातुओंके "न्" का नित्य लोप होता है।

आनशिढ्वे-आनढ्वे ; आनशे, आनशिवहे-आनश्वहे, आनशिमहे-आनश्महे।

ऋत्-धातु (भ्वा०, प० पदी) स्पर्द्धा करना, to challenge.—आनर्त्त, आनृततुः, आनृतुः ; आनर्त्तिथ, आनृतथुः, आनृत ; आनर्त्त, आनृतिव, आनृतिम (१)।

अर्च्च्—धातु (भ्वा०, प० पदी) पूजा करना, to worship.—आनर्च्च, आनर्च्चतुः, आनर्च्चुः ; आनर्च्चिथ, आनर्च्चथुः, आनर्च्च ; आनर्च्च, आनर्च्चिव, आनर्च्चिम।

१६०। लिट् विभक्तिमें द्युत्-धातुके पूर्वभागके स्थानमें दि होता है (२)।

द्युत्-धातु (भ्वा०, आ० पदी) चमकना, to shine—दिद्युते, दिद्युताते, दिद्युतिरे ; दिद्युतिषे, दिद्युताथे, दिद्युतिध्वे ; दिद्युते, दिद्युतिवहे, दिद्युतिमहे।

१६१। लिट् विभक्तिमें अध्ययनार्थक इ-धातुके (३) स्थानमें "गा" होता है (४)।

अधि+इ-धातु (अदा०, आ० पदी) पढ़ना, to read.—अधिजगे, अधिजगाते, अधिजगिरे ; अधिजगिषे, अधिजगाथे, अधिजगिध्वे ; अधिजगे, अधिजगिवहे, अधिजगिमहे।

१६२। जिन धातुओंके आदिमें और अन्तमें असंयुक्त

---

(१) ऋतीयाम्बभूव ऋतीयामास ऋतीयाञ्चक्रे इत्यादि रूप भी होते हैं।

(२) द्युतिस्वाप्योः सम्प्रसारणम्।

(३) इ-धातु (अदा०, प० पदी) जाना, to go.—इयाय, ईयतुः, ईयुः ; इययिथ-इयेथ, ईयथुः, ईय ; इयाय-इयय, ईयिव, ईयिम।

(४) गाङ् लिटि।

व्यञ्जनवर्ण रहता है और मध्यमें अकार रहता है लिट् विभक्तिमें (१) उन सब (२) धातुओंके पूर्वभागका लोप होता है और परभागके अकारके स्थानमें एकार होता है। परस्मैपद्के प्रथम और उत्तमपुरुषके एकवचनमें नहीं होता (३)।

चल्-धातु (भ्वा०, प० पदी) काँपना, to shake; जाना, to go.—चचाल, चेलतुः, चेलुः; चेलिथ, चेलथुः, चेल; चचाल-चचल, चेलिव, चेलिम।

१६३। लिट् विभक्तिमें अभ्यस्त तॄ, फल्, भज् और त्रप् धातुओंके स्थानमें क्रमसे तेर्, फेल्, भेज्, और त्रेप् होता है। परस्मैपद्के प्रथम और उत्तमपुरुषके एकवचनमें नहीं होता (४)।

तॄ-धातु (भ्वा०, प० पदी) तरना, to float; to cross.—ततार, तेरतुः, तेरुः; तेरिथ, तेरथुः, तेर; ततार-ततर, तेरिव, तेरिम।

फल्-धातु (भ्वा०, प० पदी) फलना, to yield fruits; to result.—पफाल, फेलतुः, फेलुः; फेलिथ, फेलथुः, फेल; पफाल-पफल, फेलिव, फेलिम।

भज्–धातु (भ्वा०, उ० पदी) भाग करना, to share; भजना, to worship. (प० पद)—बभाज, भेजतुः, भेजुः; भेजिथ-बभक्थ, भेजथुः, भेज; बभाज-बभज, भेजिव, भेजिम। (आ० पद)—भेजे, भेजाते, भेजिरे; भेजिषे, भेजाथे, भेजिध्वे; भेजे, भेजिवहे, भेजिमहे।

---

(१) थ विभक्तिमें धातुके उत्तर इ नहीं होनेसे नहीं होता।

(२) शश्, दद्, वकारादि धातु, और जिन धातुओंके पूर्वभागका रूपान्तर होता है उनको छोड़कर।

(३) अत एकहल् मध्येऽनादेशादेर्लिटि। थलि च सेटि। श्रन्थ्, ग्रन्थ् और दन्भ् धातुओंके नकारका लोप होता है और ऐसा कार्य्य होता है।

(४) तॄफलभजत्रपश्च।

त्रप्-धातु (भ्वा०, आ० पदी) लज्जित होना, to be ashamed.—त्रेपे, त्रेपाते, त्रेपिरे; त्रेपिषे-त्रेप्से, त्रेपाथे, त्रेपिध्वे-त्रेब्ध्वे; त्रेपे, त्रेपिवहे-त्रेप्वहे, त्रेपिमहे-त्रेप्महे।

१६४। लिट् विभक्तिमें अभ्यस्त भ्रम्, राज् और त्रस् धातुओं के स्थानमें यथाक्रम विकल्पसे भ्रेम्, रेज् और त्रेस् होता है और वम् को नित्य होता है (१)। परस्मैपदके प्रथम और उत्तमपुरुषके एकवचनमें नहीं होता।

भ्रम्-धातु (भ्वा०, प० पदी) घूमना, to roam about.—बभ्राम, भ्रेमतुः-बभ्रमतुः, भ्रेमुः-बभ्रमुः; भ्रेमिथ-बभ्रमिथ, भ्रेमथुः-बभ्रमथुः, भ्रेम-बभ्रम; बभ्राम-बभ्रम, भ्रेमिव-बभ्रमिव, भ्रेमिम-बभ्रमिम।

राज्-धातु (भ्वा०, उ० पदी) चमकना, to shine.—(प० पद)—रराज, रेजतुः-रराजतुः, रेजुः-रराजुः; रेजिथ-रराजिथ, रेजथुः-रराजथुः, रेज-रराज; रराज, रेजिव-रराजिव, रेजिम-रराजिम। (आ० पद)—रेजे-रराजे, रेजाते-रराजाते, रेजिरे-रराजिरे; रेजिषे-रराजिषे, रेजाथे-रराजाथे, रेजिध्वे-रराजिध्वे; रेजे-रराजे, रेजिवहे-रराजिवहे, रेजिमहे-रराजिमहे।

वम्-धातु (भ्वा०, प० पदी) वमन करना, to vomit.—ववाम, ववमतुः, ववमुः; ववमिथ, ववमथुः, ववम; ववाम-ववम, ववमिव, ववमिम।

---

(१) वा जॄभ्रमुत्रसाम्; फणाञ्च सप्तानाम्। जॄ, त्रस्, फण्, भ्राज्, भ्राश्, भ्लाश्, स्यम्, स्वन्, इन धातुओंके भी लिट् विभक्तिमें विकल्पसे पूर्वभाग-का लोप और परभागके "अ" के स्थानमें ए होता है। परस्मैपदके प्रथम और उत्तमपुरुषके एकवचनमें नहीं होता। यथा, जेरतुः-जजरतुः; त्रेसतुः-तत्रसतुः फेणतुः-पफणतुः इत्यादि। हिंसार्थक राध् (to kill) धातुका केवल रेधतुः। अहिंसा अर्थमें रराधतुः होता है। यथा, आरराधतुः=they (two) worshipped.

१६५। लिट् विभक्तिमैं गम्, खन्, जन्, घस् और हन् धातुओंके परभागके अकारका लोप होता है (१); किन्तु परस्मैपदके एकवचनमैं नहीं होता।

गम्–धातु (भ्वा०, प० पदी) to go.—जगाम, जग्मतुः, जग्मुः; जगमिथ-जगन्थ, जग्मथुः, जग्म; जगाम-जगम, जग्मिव, जग्मिम।

खन्–धातु (भ्वा०, उ० पदी) खनना, to dig. (प० पद)—चखान, चख्नतुः, चख्नुः; चखनिथ, चख्नथुः, चख्न; चखान-चखन, चख्निव, चख्निम। (आ० पद)—चख्ने, चख्नाते, चख्निरे; चख्निषे, चख्नाथे, चख्निध्वे; चख्ने, चख्निवहे, चख्निमहे।

जन्–धातु (दिवा०, आ० पदी) जनना, to be born.—जज्ञे, जज्ञाते, जज्ञिरे; जज्ञिषे, जज्ञाथे, जज्ञिध्वे; जज्ञे, जज्ञिवहे, जज्ञिमहे।

घस्—धातु (भ्वा०, प० पदी) खाना, to eat.—जघास, जक्षतुः, जक्षुः; जघसिथ-जघस्थ, जक्षथुः, जक्ष; जघास-जघस, जक्षिव, जक्षिम।

१६६। लिट् विभक्तिमैं हन्–धातुके परभागके "ह्" के स्थानमैं "घ्" होता है (२)।

हन्–धातु (अदा०, प० पदी) मारना, to hurt; to kill.—जघान, जघ्नतुः, जघ्नुः; जघनिथ-जघन्थ, जघ्नथुः, जघ्न; जघान-जघन, जघ्निव, जघ्निम।

---

(१) गमहनजनखनघसां लोपः क्ङित्यनङि।
(२) अभ्यासाच्च।

१६७। लिट्की थ विभक्ति परे रहनेसे दृश् और सृज् धातुओंके परभागके ऋके स्थानमें र होता है। इ होनेसे नहीं होता (१)।

दृश्–धातु (भ्वा०, प० पदी) देखना, to see.—ददर्श, ददृशतुः, ददृशुः; ददर्शिथ-दद्रष्ठ, ददृशथुः, ददृश; ददर्श, ददृशिव, ददृशिम।

सृज्–धातु (तुदा० प० पदी) सृजना, to create.— ससर्ज, ससृजतुः, ससृजुः ; ससर्जिथ-सस्रष्ठ, ससृजथुः, ससृज ; ससर्ज, ससृजिव, ससृजिम (२)।

१६८। लिट् विभक्तिमें व्यथ्–धातुके पूर्वभागके स्थानमें वि होता है।

व्यथ्–धातु (भ्वा०, आ० पदी) दुःखी होना, to be sorry; कष्ट पाना, to suffer pain.—विव्यथे, विव्यथाते, विव्यथिरे; विव्यथिषे, विव्यथाथे, विव्यथिध्वे ; विव्यथे, विव्यथिवहे, विव्यथिमहे।

१६९। लिट् विभक्तिमें ग्रह्–धातुके स्थानमें गृह् होता है; किन्तु परस्मैपदके एकवचनमें नहीं होता।

ग्रह्–धातु (क्र्या०, उ० पदी) लेना, to take. (प० पद)— जग्राह, जगृहतुः, जगृहुः ; जग्रहिथ, जगृहथुः, जगृह ; जग्राह-जग्रह, जगृहिव, जगृहिम। (आ० पद)—जगृहे, जगृहाते, जगृहिरे ; जगृहिषे, जगृहाथे, जगृहिध्वे-जगृहिढ्वे ; जगृहे, जगृहिवहे, जगृहिमहे।

---

(१) सृजिदृशोर्झल्यमकिति। विभाषा सृजिदृशोः।

(२) तृप् और दृप् धातुओंके ऋके स्थानमें विकल्पसे र् होता है। यथा, ततर्पिथ, तत्रप्थ, ततर्प्थ ; ददर्पिथ, दद्रप्थ, ददर्प्थ। कृष्, मृश् और सृप् धातु लिट् विभक्तिमें सेट् होते हैं इसलिए इनके ऋके स्थानमें र नहीं होकर केवल ऋको गुण होता है। यथा चकर्षिथ, ममर्शिथ, ससर्पिथ।

१७०। लिट् विभक्तिमें ह्वे-धातुके स्थानमें हु होता है।

ह्वे-धातु (भ्वा०, उ० पदी) पुकारना, to call. (प० पद)—जुहाव, जुहुवतुः, जुहुवुः; जुहविथ-जुहोथ, जुहुवथुः, जुहुव; जुहाव-जुहव, जुहुविव, जुहुविम। (आ० पद)—जुहुवे जुहुवाते, जुहुविरे; जुहुविषे, जुहुवाथे, जुहुविध्वे; जुहुवे, जुहुविवहे, जुहुविमहे।

१७१। लिट् विभक्तिमें वच्, वद्, वप्, वस्, वह् और स्वप् धातुओंके पूर्वभागके व् और अके स्थानमें उ होता है और परस्मैपदके एकवचन भिन्न अन्य विभक्तियोंमें परभागके व् और अके स्थानमें भी उ होता है (१)।

वच्-धातु (अदा०, प० पदी) बोलना, to speak.—उवाच, ऊचतुः, ऊचुः; उवचिथ-उवक्थ, ऊचथुः, ऊच; उवाच-उवच, ऊचिव, ऊचिम।

वस्-धातु (भ्वा०, प० पदी) वसना, to dwell.—उवास, ऊषतुः, ऊषुः; उवसिथ-उवस्थ, ऊषथुः, ऊष; उवास-उवस, ऊषिव, ऊषिम (२)।

---

(१) वचिस्वपियजादीनां किति।

(२) वस्-धातु (अदा०, आ० पदी) to wear; to put on.—ववसे, ववसाते, ववसिरे; ववसिषे, ववसाथे, ववसिध्वे; ववसे, ववसिवहे, ववसिमहे।

वश्-धातु (अदा०, प० पदी) to wish. लिट् विभक्तिमें इसके रूप भ्वादिगणीय वस् (to dwell) धातुके ऐसे ही हैं; "थ" में केवल उवशिथ होता है।

वद्-धातु (भ्वा०, प० पदी) to say; to tell.—उवाद, ऊदतुः, ऊदुः; उवदिथ, ऊदथुः, ऊद; उवाद-उवद, ऊदिव, ऊदिम।

वप्-धातु (भ्वा०, उ० पदी) to sow. (प० पद)—उवाप, ऊपतुः, ऊपुः; उवपिथ-उवप्थ, ऊपथुः, ऊप; उवाप-उवप, ऊपिव, ऊपिम। (आ० पद)—ऊपे, ऊपाते, ऊपिरे; ऊपिषे, ऊपाथे, ऊपिध्वे; ऊपे, ऊपिवहे, ऊपिमहे।

वह्-धातु (भ्वा०, उ० पदी) to carry. (प० पद)—उवाह, ऊहतुः, ऊहुः; उवहिथ उवोढ, ऊहथुः, ऊह; उवाह-उवह, ऊहिव, ऊहिम। (आ० पद)—ऊहे, ऊहाते, ऊहिरे; ऊहिषे, ऊहाथे, ऊहिध्वे; ऊहे, ऊहिवहे, ऊहिमहे।

वह्-धातु (भ्वा०, प० पदी) to flow.—ववाह, ववहतुः ववहुः, इत्यादि।

स्वप्-धातु (अदा०, प० पदी) नींदसे सोना, to sleep. सुष्वाप—सुषुपतुः, सुषुपुः; सुष्वपिथ-सुष्वप्थ, सुषुपथुः, सुषुप; सुष्वाप-सुष्वप, सुषुपिव, सुषुपिम।

१७२। लिट् विभक्तिमें यज्-धातुके पूर्वभागके य् और अके स्थानमें इ होता है। और परस्मैपदके एकवचन भिन्न अन्य विभक्तियोंमें परभागके य् और अके स्थानमें भी इ होता है (१)।

यज्-धातु (भ्वा०, उ० पदी) पूजना, to worship. (प० पद)—इयाज, ईजतुः, ईजुः; इयजिथ-इयष्ठ, ईजथुः, ईज; इयाज-इयज, ईजिव, ईजिम। (आ० पद)—ईजे, ईजाते, ईजिरे; ईजिषे, ईजाथे, ईजिध्वे; ईजे, ईजिवहे, ईजिमहे (२)।

---

(१) वचिस्वपियजादीनां किति।

(२) अज्-धातु (भ्वा०, प० पदी) to go.—विवाय, विव्यतुः, विव्युः; विवयिथ-विवेथ-आजिथ, विव्यथुः, विव्य; विवाय-विवय, विव्यिव-आजिव, विव्यिम-आजिम। ज्या-धातु (क्र्या०, प० पदी) to grow old.—जिज्यौ, जिज्यतुः, जिज्युः; जिज्यिथ-जिज्याथ, जिज्यथुः, जिज्य; जिज्यौ, जिज्यिव, जिज्यिम। व्यध्-धातु (दिवा०, प० पदी) to pierce.—विव्याध, विविधतुः, विविधुः, विव्यधिथ-विव्यद्ध, विविधथुः, विविध; विव्याध-विव्यध, विविधिव, विविधिम। व्यच्-धातु (तुदा०, प० पदी) to cheat.—विव्याच, विविचतुः इत्यादि। प्रच्छ्-धातु (तुदा०, प० पदी) to ask.—पप्रच्छ, पप्रच्छतुः, पप्रच्छुः; पप्रच्छिथ-पप्रष्ठ; पप्रच्छिव इत्यादि। व्रश्च्-धातु (तुदा०, प० पदी) to cut.—वव्रश्च, वव्रश्चतुः; वव्रश्चिथ-वव्रष्ठ इत्यादि। भ्रस्ज्—धातु (तुदा०, उ० पदी) to fry. (प० पद)—बभर्ज-बभ्रज्ज, बभर्जतुः-बभ्रज्जतुः; बभर्जिथ-बभ्रज्जिथ-बभर्ष्ठ-बभ्रष्ठ इत्यादि। (आ० पद) बभर्जे-बभ्रज्जे इत्यादि। इष्-धातु (तुदा०, प० पदी) to wish.—इयेष, ईषतुः, ईषुः; इयेषिथ, ईषथुः, ईष; इयेष, ईषिव, ईषिम। उख्-धातु (भ्वा०, प० पदी) to go.—उवोख, ऊखतुः, ऊखुः; उवोखिथ, ऊखथुः, ऊख; उवोख, ऊखिव, ऊखिम। लिट् विभक्तिमें प्याय्-धातुके स्थानमें पी और द्विरुक्त दे (ङ्)-धातुके स्थानमें दिगि होता है। प्याय्-धातु (भ्वा०, आ० पदी)

१७३। लिट् विभक्तिमें अय्, दय्, आस् धातुओंके उत्तर आम् होता है। (दयायासश्च)।

---

to grow.—पिप्ये, पिप्याते, पिप्यिरे; पिप्यिषे इत्यादि। दे (ङ्)-धातु (भ्वा०, आ० पदी) to protect.—दिग्ये, दिग्याते, दिग्यिरे; दिग्यिषे इत्यादि। बद्-धातु (भ्वा०, प० पदी) to be calm or steady.—बबाद, बेदतुः बेदुः; बेदिथ इत्यादि। लिट् विभक्तिमें वे (ञ्)—धातुके स्थानमें विकल्पसे वय् होता है; और परस्मैपदके एकवचन भिन्न विभक्तियोंमें "वय्" के "य्" के स्थानमें विकल्प से व होता है। पक्षान्तरमें आकारान्त धातुके ऐसा भी रूप होता है। वे (ञ्)-धातु (भ्वा०, उ० पदी) to weave. (प०पद)—ववौ-उवाय, ववतुः-ऊयतुः-ऊवतुः, ववुः-ऊयुः-ऊवुः; वविथ-ववाथ-उवयिथ, ववथुः-ऊयथुः-ऊवथुः, वव-ऊय-ऊव; ववौ-उवाय-उवय, वविव-ऊयिव ऊविव, वविम-ऊयिम-ऊविम। (आ० पद)—ववे-ऊये-ऊवे, ववाते-ऊयाते-ऊवाते, वविरे-ऊयिरे-ऊविरे; वविषे-ऊयिषे-ऊविषे, ववाथे-ऊयाथे-ऊवाथे, वविध्वे-ऊयिध्वे-ऊयिढ्वे-ऊविध्वे-ऊविढ्वे; ववे-ऊये-ऊवे, वविवहे-ऊयिवहे-ऊविवहे, वविमहे-ऊयिमहे-ऊविमहे। लिट् विभक्तिमें व्ये-धातुके एकारके स्थानमें आकार नहीं होता। व्ये-धातु (भ्वा०, उ० पदी) to cover. (प० पद)—विव्याय, विव्यतुः, विव्युः; विव्ययिथ, विव्यथुः, विव्य; विव्याय-विव्यय, विव्यिव, विव्यिम। (आ० पद)—विव्ये, विव्याते, विव्यिरे; विव्यिषे, विव्याथे, विव्यिध्वे-विव्यिढ्वे; विव्ये, विव्यिवहे, विव्यिमहे। मुग्धबोधके मतसे लिट्के एकवचनकी अ (णप्) और थ (थप्) भिन्न विभक्तियोंमें अभ्यस्त व्ये धातुके परभागस्थित "व्ये" के स्थानमें व्यय् होता है। इसलिए उस मतसे विव्ययतुः, विव्ययुः इत्यादि और भी एक एक पद होते हैं। लिट् विभक्तिमें श्वि धातु के स्थानमें विकल्पसे शु होता है। श्वि-धातु (भ्वा०, प० पदी) to increase.—शिश्वाय-शुशाव, शिश्वियतुः-शुशुवतुः, शिश्वियुः-शुशुवुः; शिश्वयिथ-शुशविथ, शिश्वियथुः-शुशुवथुः, शिश्विय-शुशुव; शिश्वाय-शिश्वय-शुशाव-शुशव, शिश्वियिव-शुशुविव, शिश्वियिम-शुशुविम। ब्रू-धातु (प० पद)—उवाच इत्यादि। (आ० पद) ऊचे इत्यादि। चक्ष्-धातु प्र० पु० एकव०—चख्यौ, चख्ये, चक्शौ, चक्शे, चचक्षे।

१७४। आम्‌के उत्तर भू, अस्, कृ, इन तीनों धातुओं‌का प्रयोग होता है और लिट्‌का कार्य्य होता है (१)।

अय्-धातु (भ्वा०, आ० पदी) जाना, to go.

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	अयाम्बभूव	अयाम्बभूवतुः	अयाम्बभूवुः
	अयामास	अयामासतुः	अयामासुः
	अयाञ्चक्रे	अयाञ्चक्राते	अयाञ्चक्रिरे
मध्यमपुरुष	अयाम्बभूविथ	अयाम्बभूवथुः	अयाम्बभूव
	अयामासिथ	अयामासथुः	अयामास
	अयाञ्चकृषे	अयाञ्चक्राथे	अयाञ्चकृढ्वे
उत्तमपुरुष	अयाम्बभूव	अयाम्बभूविव	अयाम्बभूविम
	अयामास	अयामासिव	अयामासिम
	अयाञ्चक्रे	अयाञ्चकृवहे	अयाञ्चकृमहे

(१) कर्तृवाच्यमें आम्‌के उत्तर प्रयुज्यमान भू, और अस्-धातु सदा परस्मैपदी ही रहते हैं। किन्तु अनु-प्रयुज्यमान (auxiliary) कृ-धातु परस्मैपदी धातुमें परस्मैपदी, आत्मनेपदी धातुमें आत्मनेपदी, और उभयपदी धातुमें उभयपदी होता है। लिट् विभक्तिमें अस्-धातुके स्थानमें भू आदेश होता है; इस हेतु मूल (Principle) अस्-धातुके लिट्‌का रूप भू-धातुके लिट् के रूप के समान है। पर अनु-प्रयोग स्थलमें अस्-धातुके रूप स्वतन्त्र होते हैं। यथाः—आस, आसतुः, आसुः; आसिथ, आसथुः, आस; आस, आसिव, आसिम। मूल तथा अनुप्रयुज्यमान कृ-धातुके रूप एक ही प्रकारके हैं। यथा, (प० पद)—चकार, चक्रतुः, चक्रुः; चकर्थ, चक्रथुः, चक्र; चकार-चकर, चकृव, चकृम। (आ०पद)—चक्रे, चक्राते, चक्रिरे; चकृषे, चक्राथे, चकृढ्वे; चक्रे, चकृवहे-चकृमहे। हृ (भ्वा०, उ०पदी) to steal; to carry.—इसके रूप कृ-धातुके रूपके तुल्य होते हैं केवल व, म, से, ध्वे, वहे और महे विभक्तियोंमें प्रभेद है। यथा, जह्रिव, जह्रिम, जह्रिषे, जह्रिढ्वे (ध्वे), जह्रिवहे, जह्रिमहे। मृ-धातु लिट्‌में प० पदी होता है। इसका रूप हृ-धातुके प० पदके ऐसा होता है।

दय्-धातु (भ्वा०, आ० पदी) *to give*; to go; to protect; to kill; to take; *to pity*. प्र० पु० एकव०—दयाम्बभूव, दयामास, दयाञ्चक्रे।

आस्-धातु (अदा०, आ० पदी) to sit; to stay or remain.—प्रः पु०, एकव०—आसाम्बभूव, आसामास, आसाञ्चक्रे।

१७५। जिन धातुओंके आदिमें आकार भिन्न गुरु स्वर (१) रहता है (२), लिट् विभक्तिमें उनके उत्तर आम् होता है और भू आदि का प्रयोग होता है (३)।

ईह्-धातु (भ्वा०, आ० पदी) to try; to aim at. प्र० पु०, एकव०—ईहाम्बभूव, ईहामास, ईहाञ्चक्रे।

इन्द्-धातु (भ्वा०, प० पदी) अत्यन्त धनी होना, to be exceedingly rich (in wealth or power). प्र० पु०, एकव०—इन्दाम्बभूव, इन्दामास, इन्दाञ्चकार।

१७६। लिट् विभक्तिमें हु, भी, ह्री और भृ धातुओंके उत्तर विकल्पमें आम् और भू प्रभृतिका प्रयोग होता है। आम् परे रहनेसे धातुको अभ्यास तथा गुण होता है।

हु-धातु (ह्वा०, प० पदी) हवन करना, to put *ghee* in sacrificial fire; to offer sacrifice.

प्रथमपुरुष

एकवचन	जुहवाम्बभूव	जुहवामास	जुहवाञ्चकार	जुहाव
द्विवचन	जुहवाम्बभूवतुः	जुहवामासतुः	जुहवाञ्चक्रतुः	जुहुवतुः
बहुवचन	जुहवाम्बभूवुः	जुहवामासुः	जुहवाञ्चक्रुः	जुहुवुः।

(१) संयोगे गुरु। संयुक्त वर्णके पूर्वस्थित ह्रस्व स्वर भी गुरु समझा जाता है। दीर्घं च दीर्घ स्वरको गुरु कहते हैं।

(२) भ्वादि ऋच्छ भिन्न। ऋच्छ्-धातु (तुदा०, प० पदी) to go.—आनर्च्छ, आनर्च्छतुः, आनर्च्छुः इत्यादि।

(३) इजादेश्च गुरुमतोऽनृच्छः। कृञ्चानुप्रयुज्यते लिटि।

भी-धातु (ह्वा०, प० पदी) डरना, to fear. प्र० पु० एकव०—बिभयाम्बभूव, बिभयामास, बिभयाञ्चकार; बिभाय।

ह्री-धातु (ह्वा०, प० पदी) लज्जित होना, to be ashamed, to blush. प्र० पु०, एकव०—जिह्रयाम्बभूव, जिह्रयामास, जिह्रयाञ्चकार, जिह्राय।

भृ-धातु (ह्वा० उ० पदी) ढोना, to carry; पालना, to nourish; प्र० पु०, एकव०—बिभराम्बभूव; बिभरामास; (प० पद) बिभराञ्चकार, (आ० पद) बिभराञ्चक्रे; (प० पद) बभार, (आ० पद) बभ्रे।

१७७। लिट् विभक्तिमें जागृ, दरिद्रा, काश्, कास् और उष्, इन कई एक धातुओंके उत्तर विकल्पसे आम् और भू प्रभृति धातुओंका प्रयोग होता है। आम् परे रहनेसे धातुके अन्त्य और उपधा लघुस्वरको गुण होता है (१)।

---

(१) और भी बहुतसे धातु हैं जिनके उत्तर लिट् विभक्तिमें आम् और भू, अस्, कृ, होते हैं। गुप्, धूप्, कम्, ऋत्, पण, पन् प्रभृति धातुओंके उत्तर आम् और भू प्रभृति विकल्पसे होते हैं। यथा—गुप् (भ्वा०, प० पदी) to save, to protect.—गोपायाम्बभूव, गोपायामास, गोपायाञ्चकार, इत्यादि; जुगोप, जुगुपतुः, जुगुपुः; जुगोपिथ-जुगोप्थ, जुगुपथुः, जुगुप; जुगोप, जुगुपिव-जुगुप्व, जुगुपिम-जुगुप्म। धूप्-धातु (भ्वा०, प० पदी) to heat.—धूपायाम्बभूव, धूपायामास, धूपायाञ्चकार इत्यादि; (पक्षे) दुधूप इत्यादि। कम्-धातु (भ्वा०, आ० पदी) to desire, to love.—कामयाम्बभूव, कामयामास, कामयाञ्चक्रे इत्यादि; (पक्षे) चकमे इत्यादि। ऋत्-धातु (भ्वा०, प० पदी, स्वार्थे इयङ् होनेसे आ० पदी) to challenge; to prosper; to pity; to go; to blame.—ऋतीयाम्बभूव, ऋतीयामास, ऋतीयाञ्चक्रे इत्यादि; (इयङ् नहीं होने से प० पदी) आनर्त्त, आनृततुः इत्यादि। पण-धातु (भ्वा०, आ० पदी आय होनेपर विकल्पसे परस्मैपदी) to praise (पणेः स्तुतावेव आयप्रत्ययः व्यवहारेऽप्यायप्रत्ययो दृश्यते) पणायाम्बभूव, पणायामास, पणायाञ्चकार; (पक्षे) पेणे इत्यादि। पन्-धातु (भ्वा०, आ० पदी) to praise. रूप पण-धातुके

१७८। प्रथम और उत्तम पुरुषके एकवचन भिन्न लिट् विभक्ति में जागृ-धातुके ऋके स्थानमें अर् होता है।

जागृ-धातु (अदा०, प० पदी) जागना, to wake.

प्रथमपुरुष।

एकव०	जागराम्बभूव	जागरामास	जागराञ्चकार	जजागार
द्विव०	जागराम्बभूवतुः	जागरामासतुः	जागराञ्चक्रतुः	जजागरतुः
बहुव०	जागराम्बभूवुः	जागरामासुः	जागराञ्चक्रुः	जजागरुः

EXERCISE.

1. *Translate into Sanskrit* :—*While yet in his infancy* (तरुणे एव वयसि) Satyavan lost his father, so his mother educated him. The king hearing *a pitiful wail* (करुणं विलापं) not far away from the palace, ordered his servants to ascertain the cause of the cry. Wishing to see me on important business, he came one hot day with a friend. There was a fierce fight between the two armies. There *in the vicinity of a hermitage* (आश्रमाभ्यासे), the king saw a dead snake. King Dushyanta entered the hermitage of the sage Kanva and saw Shakuntala watering the trees in a garden of the hermitage with her two (female) friends. Having seen Vishuamitra coming, Vashishtha *addressed him a welcome* (स्वागतं व्याजहार). Govinda went to Mathura, killed Kansa and released his father and mother from the prison. Then the king mounted an elephant and accompanied by his queens set out with his ministers.

2. *Translate into English* :—अथ स उच्चैः रोदितुमुपचक्रमे। स क्षेत्रेषु गत्वा यानि सत्वानि अवलोकयामास तेषां भयोत्पादनेन प्रभूतमानन्दं लेभे। तन्तु सुन्दरं चूतपादपं विनष्टप्रायमवलोक्यासौ अतिमात्र

ऐसे हैं। चुरादि, णिजन्त, सन्नन्त, यङन्त और नामधातुओं के उत्तर नित्य आम् और भू प्रभृतिका प्रयोग होता है। यथा—चोरयाम्बभूव, चोरयामास, चोरयाञ्चकार इत्यादि।

दुःखितो बभूव। स बहूनि विचित्राणि वस्त्राणि उत्पादयामास; परं तादृश—श्रमेणापि स नाधिकं धनं लेभे। निशम्य देवानुचरस्य वाचं मनुष्य देवः (the lord of men) पुनरप्युवाच।

लुङ् (Aorist or Third Preterite tense)।

१७९। लुङ् विभक्तिमें धातुके उत्तर "स्" होता है (१)।

१८०। द्, स्, इन दोनों विभक्तियों में "स्" के परे ई होता है।

१८१। इ और ई इन दोनों के मध्यवर्त्ती "स्" का लोप होता है (२)।

१८२। "स्" के परस्थित "अन्" के स्थानमें उस् होता है (३)।

क्रम्-धातु (भ्वा०, प० पदी) चलना, to walk; पैर रखना, to step over.

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	अक्रमीत्	अक्रमीः	अक्रमिषम्
द्विवचन	अक्रमिष्टाम्	अक्रमिष्टम्	अक्रमिष्व
बहुवचन	अक्रमिषुः	अक्रमिष्ट	अक्रमिष्म

१८३। स् परे रहनेसे परस्मैपदमें धातुके (४) उपधा अकारके स्थानमें विकल्पसे आकार होता है (५)।

---

(१) च्लि लुङि। च्लेः सिच्। लुङ् विभक्तिमें धातुके उत्तर च्लि होता है और "च्लि" के स्थानमें सिच् होता है। सिच्में इ और च् इत् हैं। (२) इट-ईटि। (३) सिजभ्यस्तविदिभ्यश्च। (४, "ह्म्यन्तक्षणश्वसजागृणिश्व्येदिताम्"। हान्त, मान्त, यान्त, क्षण् (to kill), श्वस् to breathe), जागृ to wake), णयन्त, श्वि (to move; to increase) और एकारेत भिन्न (५) अतो हलादेर्लघोः।

गद्-धातु (भ्वा०, प० पदी) बोलना, to speak; to say.—अगादीत्-अगदीत्, अगादिष्टाम्-अगदिष्टाम्, अगादिषुः-अगदिषुः; अगादीः-अगदीः, अगादिष्टम्-अगदिष्टम्, अगादिष्ट-अगदिष्ट; अगादिषम्-अगदिषम्, अगादिष्व-अगदिष्व, अगादिष्म-अगदिष्म।

१८४। स् परे रहनेसे परस्मैपदमें वद् प्रभृति धातुओंके अकारके स्थानमें नित्य आकार होता है (१)।

वद्-धातु (भ्वा०, प० पदी) बोलना, to say; to tell.—

अवादीत्, अवादिष्टाम, अवादिषुः; अवादीः, अवादिष्टम्, अवादिष्ट; अवादिषम्, अवादिष्व, अवादिष्म।

चर्-धातु (भ्वा०, प० पदी) चलना, to walk.—अचारीत्, अचारिष्टाम्, अचारिषुः; अचारीः, अचारिष्टम्, अचारिष्ट; अचारिषम्, अचारिष्व, अचारिष्म।

चल्-धातु (भ्वा०, प० पदी) काँपना, to shake; चलना, to walk.—अचालीत्, अचालिष्टाम्, अचालिषुः; अचालीः, अचालिष्टम्, अचालिष्ट; अचालिषम्, अचालिष्व, अचालिष्म।

१८५। स् परे रहनेसे परस्मैपदमें धातुके अन्तस्थित स्वरको वृद्धि होती है।

---

(१) वदव्रजहलन्तस्याचः। धातुसे विहित स् परे रहनेसे लुङ्के परस्मैपदमें व्रज्, वद्, अर्-भागान्त, अल्-भागान्त, अकारान्तभिन्न, स्वरान्त धातु और अनिट् धातुके अन्त्यस्वर और उपधा स्वरको नित्य वृद्धि होती है। यथा—व्रज् (to go) अव्राजीत्, वद् (to speak) अवादीत्; अर्—भागान्त, चर् (to go) अचारीत्; अल्-भागान्त, फल् (to break) अफालीत्; स्वरान्त पू (to purify) अपावीत्; अनिट्, तप् (to shine, to heat) अताप्सीत् इत्यादि। णिजन्त धातु और श्वि और जागृ धातुओंको वृद्धि नहीं होती।

स्नु-धातु (अदा०, प० पदी) बहना, to flow, चुआना, to distil.—अस्नावीत्, अस्नाविष्टाम्, अस्नाविषुः ; अस्नावीः, अस्नाविष्टम्, अस्नाविष्ट ; अस्नाविषम्, अस्नाविष्व, अस्नाविष्म।

नु-धातु (अदा०, प० पदी) स्तुति करना, to pray, to praise.—अनावीत्, अनाविष्टाम्, अनाविषुः ; अनावीः, अनाविष्टम्, अनाविष्ट ; अनाविषम्, अनाविष्व, अनाविष्म।

वृ-धातु (स्वा० क्र्या०, उ० पदी) पसन्द करना, to choose. (प० पद)—अवारीत्, अवारिष्टाम्, अवारिषुः ; अवारीः, अवारिष्टम्, अवारिष्ट ; अवारिषम्, अवारिष्व, अवारिष्म (१)।

तृ-धातु (भ्वा०, प० पदी) तैरना, to cross, to float. —अतारीत्, अतारिष्टाम्, अतारिषुः ; अतारीः, अतारिष्टम्, अतारिष्ट ; अतारिषम्, अतारिष्व, अतारिष्म।

१८६। लुङ्के परस्मैपदमें धातुके उपधा लघु स्वरको गुण होता है।

रुद्-धातु (अदा, प० पदी) रोना, to weep, to cry.

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	अरोदीत्,	अरोदीः	अरोदिषम्,
	अरुदत् (२)	अरुदः	अरुदम्
द्विवचन	अरोदिष्टाम्,	अरोदिष्टम्	अरोदिष्व,
	अरुदताम्	अरुदतम्	अरुदाव
बहुवचन	अरोदिषुः,	अरोदिष्ट,	अरोदिष्म,
	अरुदन्	अरुदत	अरुदाम

(१) आ० पद—अवार (री) ष्ट-अवृत, अवरिषाताम्, अवरिषत इत्यादि।

(२) लुङ्में स् न होकर अ होनेसे गुण नहीं होता और ऐसे एक-एक पद होते हैं।

१८७। लुङ्के आत्मनेपदमैं धातुके अन्त्यस्वर और उपधा लघु स्वरको गुण होता है।

शी-धातु (अदा०, आ० पदी) सोना, to lie down; to sleep.

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	अशयिष्ट	अशयिष्ठाः	अशयिषि
द्विवचन	अशयिशाताम्	अशयिषाथाम्	अशयिष्वहि
बहुवचन	अशयिषत	अशयिढ्वम् (ध्व-ढ्ध्व)म्	अशयिष्महि

द्युत्-धातु (भ्वा०, आ० पदी) चमकना, to shine. (१)

एकवचन	अद्योतिष्ट	अद्योतिष्ठाः	अद्योतिषि
द्विवचन	अद्योतिषाताम्	अद्योतिषाथाम्	अद्योतिष्वहि
बहुवचन	अद्योतिषत	अद्योतिध्वम्	अद्योतिष्महि

१८८। लुङ्के परस्मैपदमैं भू-धातुके उत्तर स् आदिको कार्य नहीँ होता (२); केवल "अन्" के स्थानमैं वन् और "अम्" के स्थानमैं वम् होता है (३)।

भू-धातु (भ्वा०, प० पदी) to be.

एकवचन	अभूत्	अभूः	अभूवम्
द्विवचन	अभूताम्	अभूतम्	अभूव
बहुवचन	अभूवन्	अभूत	अभूम

अनिट् धातु।

१८९। स् परे रहनेसे परस्मैपदमैं अनिट् धातुके अन्त्य और उपधा लघुस्वर को वृद्धि होती है (४)।

---

(१) द्युद्भ्यो लुङि। द्युत्-धातु आ० पदी किन्तु लुङ्मैं प० पदी भी होता है। यथा, अद्युतत्, अद्युतताम्, अद्युतन् इत्यादि।

(२) भूसुवोस्तिङि।

(३) भुवोवुग् लुङ्लिटोः।

(४) सिचि वृद्धिः परस्मैपदेषु।

१६० । स् परे रहनेसे आत्मनेपदमें अनिट् धातुके अन्त-स्थित ऋ और उपधा लघुस्वर को गुण नहीं होता ।

१६१ । त्, थ्, ध् परे रहनेसे वर्गके प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ वर्ण, श्, ष्, स्, ह् और ह्रस्व स्वरके परस्थित "स्" का लोप होता है (१) ।

कृ-धातु (तना०, उ० पदी) करना, to do.

परस्मैपद ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	अकार्षीत्	अकार्षीः	अकार्षम्
द्विवचन	अकार्ष्टाम्	अकार्ष्टम्	अकार्ष्व
बहुवचन	अकार्षुः	अकार्ष्ट	अकार्ष्म

आत्मनेपद ।

एकवचन	अकृत	अकृथाः	अकृषि
द्विवचन	अकृषाताम्	अकृषाथाम्	अकृष्वहि
बहुवचन	अकृषत	अकृढ्व (ढ्ढ्व) म्	अकृष्महि

शप्-धातु (भ्वा०, दिवा०, उ० पदी) शाप देना, to curse.

परस्मैपद ।

एकवचन	अशाप्सीत्	अशाप्सीः	अशाप्सम्
द्विवचन	अशाप्ताम्	अशाप्तम्	अशाप्स्व
बहुवचन	अशाप्सुः	अशाप्त	अशाप्स्म

आत्मनेपद ।

एकवचन	अशप्त	अशप्थाः	अशप्सि
द्विवचन	अशप्साताम्	अशप्साथाम्	अशप्स्वहि
बहुवचन	अशप्सत	अशब्ध्वम्	अशप्स्महि

(१) "ह्रस्वादङ्गात्" सिचो लोपो झलि ।

वस्-धातु (भ्वा०, प० पदी) बसना, to dwell.

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	अवात्सीत्	अवात्सीः	अवात्सम्
द्विवचन	अवात्ताम्	अवात्तम्	अवात्स्व
बहुवचन	अवात्सुः	अवात्त	अवात्स्म

१६२। परस्मैपदमैं नम्, यम्, रम् और आकारान्त धातुओं-की द्, स्, भिन्न विभक्तियोंमैं "स्" के पूर्वमैं स् और इ होते हैं (१)।

नम्-धातु (भ्वा०, प० पदी) नमस्कार करना, to salute; झुकना, to bend.

एकवचन	अनंसीत्	अनंसीः	अनंसिषम्
द्विवचन	अनंसिष्टाम्	अनंसिष्टम्	अनंसिष्व
बहुवचन	अनंसिषुः	अनंसिष्ट	अनंसिष्म

ज्ञा-धातु (क्र्या०, उ० पदी) जानना, to know.

परस्मैपद।

एकवचन	अज्ञासीत्	अज्ञासीः	अज्ञासिषम्
द्विवचन	अज्ञासिष्टाम्	अज्ञासिष्टम्	अज्ञासिष्व
बहुवचन	अज्ञासिषुः	अज्ञासिष्ट	अज्ञासिष्म (२)

१६३। लुङ्के परस्मैपदमैं दा, धा, स्था धातुओंके उत्तर स्का लोप होता है (३); आत्मनेपदमैं आके स्थानमैं इ होता है (४)।

१६४। लुङ्के अनुस्थानजात उ परे होनेसे, आकारान्त धातुके आकारका लोप होता है।

---

(१) यमरमनमातां सक् च।

(२) आ० पद—अज्ञास्त, अज्ञासाताम्, अज्ञासत इत्यादि।

(३) गातिस्थाघुपाभूभ्यः सिचः परस्मैपदेषु।

(४) स्थाघ्वोरिच्च। इत् "इ" को गुण नहीँ होता।

दा-धातु (ह्वा०, उ० पदी) देना, to give.

परस्मैपद।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	अदात्	अदाः	अदाम्
द्विवचन	अदाताम्	अदातम्	अदाव
बहुवचन	अदुः	अदात	अदाम

आत्मनेपद।

एकवचन	अदित	अदिथाः	अदिषि
द्विवचन	अदिषाताम्	अदिषाथाम्	अदिष्वहि
बहुवचन	अदिषत	अदिढ्वम्	अदिष्महि

१६५। लुङ् विभक्तिमें इ (इण्)-धातुके स्थानमें गा होता है (१)।

१६६। परस्मैपदमें इ स्थानीय गा और पा (भ्वादि, to drink) धातुके "स्" का लोप होता है।

(इण्)-धातु (अदा०, प० पदी) जाना, to go.—अगात्, अगाताम्, अगुः; अगाः, अगातम्, अगात; अगाम्, अगाव, अगाम।

पा-धातु (भ्वा०, प० पदी) पीना, to drink.—अपात्, अपाताम्, अपुः; अपाः, अपातम्, अपात; अपाम्, अपाव, अपाम (२)।

१६७। घ्रा, धे, छो, शो, सो, धातुओंके परस्मैपदमें विकल्पसे "स्" का लोप होता है। "स्" का लोप होनेसे दा-धातुके सदृश लोप नहीं होनेसे ज्ञा-धातुके सदृश रूप होते हैं।

---

(१) इणोगा लुङि।

(२) अदादिगणीय रक्षणार्थक पा-धातुका रूप ज्ञा-धातुके तुल्य होता है।

घ्रा-धातु (भ्वा०, प० पदी) सूँघना, to smell.—अघ्रात्-अघ्रासीत्, अघ्राताम्-अघ्रासिष्टाम्, अघ्रुः-अघ्रासिषुः; अघ्राः-अघ्रासीः, अघ्रातम्-अघ्रासिष्टम्, अघ्रात-अघ्रासिष्ट; अघ्राम्-अघ्रासिषम्, अघ्राव-अघ्रासिष्व, अघ्राम-अघ्रासिष्म (१)।

१६८। लुङ् विभक्तिमें अध्ययनार्थ इ (इङ्)-धातुके स्थानमें विकल्पसे गी होता है (२)। "गी" की ईको गुण नहीं होता। अधि+इ (इङ्)-धातु (अदा०, आ० पदी) to read.—अध्यगीष्ट-अध्यैष्ट, अध्यगीषाताम्-अध्यैषाताम्, अध्यगीषत-अध्यैषत; अध्यगीष्ठाः-अध्यैष्ठाः, अध्यगीषाथाम्-अध्यैषाथाम्, अध्यगीढ्वम्-अध्यैढ्वम्; अध्यगीषि-अध्यैषि, अध्यगीष्वहि-अध्यैष्वहि, अध्यगीष्महि-अध्यैष्महि।

पुषादि (३)।

१६९। लुङ् विभक्तिमें पुषादि धातुके उत्तर अ (४) होता है (५)।

पुष्-धातु (दिवा०, प० पदी) पुष्ट करना, to nourish; to develop.—अपुषत्, अपुषताम्, अपुषन्; अपुषः, अपुषतम्, अपुषत; अपुषम्, अपुषाव, अपुषाम।

---

(१) धे (भ्वा०, प० to suck), छो (दिवा० प० to cut), शो (दिवा० प० to sharpen), और सो (दिवा० प० to destroy; to kill), साधारण नियम (४०) के अनुसार आकारान्त हो जाते हैं और इनके रूप घ्रा-धातुके तुल्य होते हैं। यथा, धे (धा)—अधात्-अधासीत् इत्यादि अदधत् इत्यादि रूप भी होते हैं। छो (छा)—अछात् अछासीत् इत्यादि; शो (शा)—अशात्-अशासीत् इत्यादि। सो (सा)—असात्-असासीत् इत्यादि।

(२) विभाषा लुङ् लृङोः।

(३) पुष, शुष्, तुष्, दुष्, श्लिष्, शक्, क्रुध्, क्षुध्, हृष्, रुष्, रिष्, क्षम्, गम्, शम्, श्रम्, पत्, मुच् इत्यादि।

(४) आत्मनेपदमें लिप्, सिच्, ह्वे धातुओंके उत्तर विकल्पसे होता है।

(५) पुषादिद्युताद्य्लृदितः परस्मैपदेषु।

गम्-धातु (भ्वा०, प० पदी) जाना, to go.—अगमत्, अगमताम्, अगमन्; अगमः, अगमतम्, अगमत; अगमम्, अगमाव, अगमाम।

२००। लुङ् विभक्तिमेँ वच् धातुके स्थानमेँ वोच्, पत्-धातुके स्थानमेँ पप्त् और दिवादिगणीय अस्-धातुके स्थानमेँ अस्थ् होता है।

वच्-धातु (अदा०, प० पदी) बोलना, to speak.—अवोचत्, अवोचताम्, अवोचन्; अवोचः, अवोचतम्, अवोचत; अवोचम्, अवोचाव, अवोचाम (१)।

पत्-धातु (भ्वा०, प० पदी) गिरना, to fall.—अपप्तत्, अपप्तताम्, अपप्तन्; अपप्तः, अपप्ततम्, अपप्तत; अपप्तम्, अपप्ताव, अपप्ताम।

अस्-धातु (दिवा०, प० पदी) फेँकना, to throw.—आस्थत्, आस्थताम्, आस्थन्; आस्थः, आस्थतम्, आस्थत; आस्थम्, आस्थाव, आस्थाम (२)।

२०१। लुङ् विभक्तिमेँ नश्-धातुके स्थानमेँ विकल्पसे नेश् होता है (३)।

नश्-धातु (दिवा०, प० पदी) नष्ट होना, to perish.—अनशत्, अनशताम्, अनशन्; अनशः, अनशतम्, अनशत; अनशम्, अनशाव, अनशाम।

---

(१) ब्रू-धातुके स्थानमेँ वच् आदेश होता है, इसलिए लुङ्के परस्मैपदमेँ ब्रू-धातुका रूप ऐसा ही है। ब्रू उभयपदी; आत्मनेपदमेँ अवोचत अवोचेताम्, अवोचन्त; अवोचथाः, अवोचेथाम्, अवोचध्वम्; अवोचे, अवोचावहि, अवोचामहि।

(२) अदादिगणीय अस्-धातुका रूप भू-धातुके समान होता है।

(३) कलाप और मुग्धबोधके अनुसार नश् के स्थानमेँ विकल्पसे नेश् होता है अनेशत् इत्यादि रूप भी इस मतानुसार होते हैँ। पाणिनिके मतसे नेश् नहीँ होता।

२०२। लुङ् विभक्तिमें द्रु, श्रि और स्रु धातु अभ्यस्त होते हैं और अभ्यस्तका सब कार्य होता है (१)।

द्रु–धातु (भ्वा०, प० पदी) दौड़ना, to run; गलना, to melt.—अदुद्रुवत्, अदुद्रुवताम्, अदुद्रुवन्; अदुद्रुवः, अदुद्रुवतम्, अदुद्रुवत; अदुद्रुवम्, अदुद्रुवाव, अदुद्रुवाम।

श्रि–धातु (भ्वा०, उ० पदी) सेवा करना, to serve; आश्रय लेना, to take shelter; to resort to (प० पद)—अशिश्रियत्, अशिश्रियताम्, अशिश्रियन्; अशिश्रियः; अशिश्रियतम्, अशिश्रियत; अशिश्रियम्, अशिश्रियाव, अशिश्रियाम। (आ० पद)—अशिश्रियत, अशिश्रियेताम्, अशिश्रियन्त; अशिश्रियथाः, अशिश्रियेथाम्, अशिश्रियध्वम्; अशिश्रिये, अशिश्रियावहि, अशिश्रियामहि।

स्रु–धातु (भ्वा०, प० पदी) वहना, to flow; जाना, to go. असुस्रुवत्, असुस्रुवताम्, असुस्रुवन्; असुस्रुवः असुस्रुवतम्, असुस्रुवत; असुस्रुवम्, असुस्रुवाव, असुस्रुवाम।

भिदादि।

२०३। लुङ् विभक्तिमें भिदादि धातुओं के उत्तर विकल्प से अ होता है।

भिद्-धातु (रुधा०, उ० पदी) चीरना, to split; अलग करना, to separate; तोड़ना, to break. (प० पद)—अभिदत्-अभैत्सीत्, अभिदताम्-अभैत्ताम्, अभिदन्-अभैत्सुः; अभिदः-अभैत्सीः, अभिदतम्-अभैत्तम्, अभिदत-अभैत्त; अभिदम्-अभैत्सम्, अभिदाव-अभैत्स्व, अभिदाम-अभैत्स्म। (आ० पद)—अभित्त, अभित्साताम्, अभित्सत; अभित्थाः, अभित्साथाम्, अभिद्ध्वम्; अभित्सि, अभित्स्वहि, अभित्स्महि।

---

(१) णिश्रिद्रुस्रुभ्यः कर्त्तरि चङ्।

रुध्-धातु (रुधा०, उ० पदी) घेरना, to shut up; to shut out; रोकना to obstruct; to hold up. (प० पद)—अरुधत्-अरौत्सीत्, अरुधताम्-अरौद्धाम्, अरुधन्-अरौत्सुः; अरुधः-अरौत्सीः, अरुधतम्-अरौद्धम्, अरुधत-अरौद्ध; अरुधम्-अरौत्सम्, अरुधाव-अरौत्स्व, अरुधाम-अरौत्स्म। (आ० पद)—अरुद्ध, अरुत्साताम्, अरुत्सत; अरुद्धाः, अरुत्साथाम्, अरुद्ध्वम्; अरुत्सि, अरुत्स्वहि, अरुत्स्महि।

२०४। अ परे रहने से सृ-धातुके स्थानमेँ सर् और ऋ धातुके स्थानमेँ अर् होता है।

सृ-धातु (भ्वा०, प० पदी) चलना, to move; जाना, to go. निकट पहुँचना, to approach.—असार्षीत्, असार्ष्टाम्, असार्षुः; असार्षीः, असार्ष्टम्, असार्ष्ट; असार्षम्, असार्ष्व, असार्ष्म।

ऋ-धातु (भ्वा० ह्वा०, प० पदी) जाना, to go.—आरत्-आर्षीत (१), आरताम्-आर्ष्टाम्, आरन्-आर्षुः; आरः-आर्षीः, आरतम्-आर्ष्टम्, आरत-आर्ष्ट; आरम्-आर्षम्, आराव-आर्ष्व, आराम-आर्ष्म।

२०५। अ परे रहनेसे दृश्-धातुके स्थानमेँ दर्श् होता है। अ-भिन्न पक्षमेँ द्राश् होता है।

दृश् (भ्वा०, प० पदी) देखना, to see.—अदर्शत्-अद्राक्षीत्, अदर्शताम्-अद्राष्टाम्, अदर्शन्-अद्राक्षुः; अदर्शः-अद्राक्षीः, अदर्शतम्-अद्राष्टम्, अदर्शत-अद्राष्ट; अदर्शम्-अद्राक्षम्, अदर्शाव-अद्राक्ष्व, अदर्शाम-अद्राक्ष्म।

---

(१) भ्वादि ऋके लुङ्के रूप आर्षीत् इत्यादि होते हैँ ह्वादि ऋके रूप आरत् इत्यादि होते हैँ।

दिशादि (१)।

२०६। लुङ विभक्तिमें दिशादि धातुओं के उत्तर स होता है; किन्तु स-निमित्तक (अर्थात् स होनेके कारण) गुण और इ प्रभृति कार्य नहीं होते (२)।

दिश्-धातु (तुदा०, उ० पदी) आज्ञा देना, to allow, permit or order; स्वीकार करना, to grant; उपस्थापित करना, to produce. (प० पद)—अदिक्षत्, अदिक्षताम्, अदिक्षन्; अदिक्षः, अदिक्षतम्, अदिक्षत; अदिक्षम्, अदिक्षाव, अदिक्षाम। (आ० पद)—अदिक्षत, अदिक्षाताम्, अदिक्षन्त; अदिक्षथाः, अदिक्षाथाम्, अदिक्षध्वम्; अदिक्षि, अदिक्षावहि, अदिक्षामहि।

द्विष्-धातु (अदा०, उ० पदी) द्वेष करना, to hate; to have enmity. (प० पद)—अद्विक्षत्, अद्विक्षताम्, अद्विक्षन्; अद्विक्षः, अद्विक्षतम्, अद्विक्षत; अद्विक्षम्, अद्विक्षाव, अद्विक्षाम। (आ० पद)—अद्विक्षत, अद्विक्षाताम्, अद्विक्षन्त; अद्विक्षथाः, अद्विक्षाथाम्, अद्विक्षध्वम्; अद्विक्षि, अद्विक्षावहि, अद्विक्षामहि।

दुह्-धातु (अदा०, उ० पदी) दुहना, to milk. (प० पद)—अधुक्षत्, अधुक्षताम्, अधुक्षन्; अधुक्षः, अधुक्षतम्, अधुक्षत; अधुक्षम्, अधुक्षाव, अधुक्षाम। (आ० पद)—अधुक्षत-अदुग्ध, अधुक्षाताम्, अधुक्षन्त; अधुक्षथाः-अदुग्धाः, अधुक्षाथाम्, अधुक्षध्वम्-अधुग्ध्वम्; अधुक्षि, अधुक्षावहि-अदुह्वहि, अधुक्षामहि।

---

(१) दृश्-धातुके सिवाय जिन अनिट् धातुओं के अन्तमें श्, ष् अथवा ह् रहता है और उपधामें अ आ भिन्न स्वरवर्ण रहता है वे सब धातु दिशादिके अन्तर्गत हैं। श्लिष्-धातु केवल आलिङ्गन (to embrace) अर्थमें दिशादि के अन्तर्गत है अन्य अर्थ में नहीं।

(२) शल इगुपधादनिटः क्सः। क्सस्याचि।

२०७। जन्, बुध्, पूर् और दीप् धातुओं के उत्तर लुङ्के आत्मनेपदके "त" के स्थानमें विकल्पसे इ होता है और उस "इ" के परे, "बुध्" के स्थानमें बोध् होता है (१)।

जन्-धातु (दिवा०, आ०पदी) पैदा होना, to be born.—अजनि-अजनिष्ट, अजनिषाताम्, अजनिषत; अजनिष्ठाः, अजनिषाथाम्, अजनिड्वम्; अजनिषि, अजनिष्वहि, अजनिष्महि।

बुध्-धातु (दिवा०, आ० पदी) बोध करना, to understand.—अबोधि-अबुद्ध, अभुत्साताम्, अभुत्सत; अबुद्धाः, अभुत्साथाम्, अभुद्ध्वम्; अभुत्सि, अभुत्स्वहि, अभुत्स्महि।

पूर्-धातु (दिवा०, आ० पदी) भरना, to fill up; to satisfy.—अपूरि-अपूरिष्ट, अपूरिषाताम्, अपूरिषत; अपूरिष्ठाः, अपूरिषाथाम्, अपूरि (ढ्व, ध्व) म्; अपूरिषि, अपूरिष्वहि, अपूरिष्महि।

दीप्-धातु (दिवा०, आ० पदी) चमकना, to shine.—अदीपि-अदीपिष्ट, अदीपिषाताम्, अदीपिषत; अदीपिष्ठाः, अदीपिषाथाम्, अदीपिध्व (ढ्व) म्; अदीपिषि, अदीपिष्वहि, अदीपिष्महि।

EXERCISE.

1. *Translate into Sanskrit*:—Hari *lost his father* (पितृहीनो ऽभूत्) when only *fifteen years of age* (पञ्चदशवर्षवयस्कः) and went to Benares with his mother to earn his livelihood. God *made* (सृज्) the sun, the moon and the bright stars. Soon he *saw* (दृश्) the bones of a dead lion. The gods and the Asuras *churned* (मन्थ्) the ocean. He *has read* (अधि+इ) the Vedas. Formerly a king *lived* (वस्) here. For the exile of his most beloved son, Dasharath wept bitterly and cursed Kaikayee

(१) दीपजनबुधपूरितायिप्यायिभ्योऽन्यतरस्याम्। चिणो लुक्।

for her cruelty. Have you heard what happened there? Hari had inherited immense wealth from his father-in-law. He has done his duty. God has *made* सृज्) this universe. The hunter killed a deer with an arrow. We drank water from the pond. Arjun conquered all the kings of the earth. The sun has set.

2. *Translate into English*:—अभूत्नलो नाम पुण्यश्लोको राजा। राजा दशरथः पुत्रशोकेन प्राणान् अत्याक्षीत्। पुरा अत्र कश्चित् धार्म्मिको नरः अवात्सीत्। नैवं साहसमकार्षीः। सोऽध्यैष्ट वेदान्। सोऽरीन् समूलघातम् (*root and branch*) अवधीत्। प्रेतेषु सर्वेषु नन्दात्मजेषु चन्द्रगुप्तः सिंहासनमारुक्षत्।

ह्वादि (Third conjugation)।

२०८। लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ्, इन चार विभक्तियोंमें ह्वादिगणीय धातु अभ्यस्त होते हैं और लिट् प्रकरणमें अभ्यस्त धातुके पूर्व भागके जो सब कार्य निर्दिष्ट हुए हैं वे सब होते हैं (१)।

२०९। ति, सि, मि, तु, आनि, आव, आम, ऐ, आवहै, आमहै, द्, स्, अम्, इन कई एक विभक्तियोंमें ह्वादिगणीय धातुके अन्त्यस्वर और उपधा लघुस्वरको गुण होता है।

२१०। अन्ति और अन्तु विभक्ति परे रहनेसे हु-धातुके "उ" के स्थानमें व् होता है।

---

(१) जुहोत्यादिभ्यः श्लुः। श्लौ (धातोर्द्वित्वः)।

हु-धातु (प० पदी, सक०) होम करना, to offer oblation to ; खाना, to eat.

Infin.—होतुम्।

लट्।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	जुहोति	जुहोषि	जुहोमि
द्विवचन	जुहुतः	जुहुथः	जुहुवः
बहुवचन	जुह्वति	जुहुथ	जुहुमः

२११। हु-धातुके लोट्के "हि" के स्थानमें धि होता है (१)।

लोट्।

एकवचन	जुहोतु, जुहुतात्	जुहुधि, जुहुतात्	जुहवानि
द्विवचन	जुहुताम्	जुहुतम्	जुहवाव
बहुवचन	जुह्वतु	जुहुत	जुहवाम

लङ्।

एकवचन	अजुहोत्	अजुहोः	अजुहवम्
द्विवचन	अजुहुताम्	अजुहुतम्	अजुहुव
बहुवचन	अजुहवुः	अजुहुत	अजुहुम

विधिलिङ्।

एकवचन	जुहुयात्	जुहुयाः	जुहुयाम्
द्विवचन	जुहुयाताम्	जुहुयातम्	जुहुयाव
बहुवचन	जुहुयुः	जुहुयात	जुहुयाम (२)

---

(१) हुझल्भ्यो हेर्धिः।

(२) लुट्—होता, होतारौ, होतारः इत्यादि। लृट्—होष्यति, होष्यतः इत्यादि। लृङ्—अहोष्यत्, अहोष्यताम् इत्यादि। आशीर्लिङ्—हूयात्, हूयास्ताम् इत्यादि। लिट्—जुहाव, जुहुवतुः, जुहुवुः ; जुहविथ-जुहोथ, जुहुवथुः, जुहुव ; जुहाव-जुहव, जुहुविव, जुहुविम। or जुहवाम्बभूव जुहवामास-जुहवाञ्चकार इत्यादि। लुङ्—अहौषीत्, अहौष्टाम्, अहौषुः; अहौषीः, अहौष्टम्, अहौष्ट ; अहौषम्, अहौष्व, अहौष्म।

ह्री–धातु (प० पदी, अक०) लज्जित होना, to blush; to be ashamed.

Infin.—ह्रेतुम।

लट्—जिह्रेति, जिह्रीतः, जिह्रियति; जिह्रेषि, जिह्रीथः, जिह्रीथ; जिह्रेमि, जिह्रीवः, जिह्रीमः।

लोट्—जिह्रेतु-जिह्रीतात्, जिह्रीताम्, जिह्रियतु; जिह्रीहि-जिह्रीतात्, जिह्रीतम्, जिह्रीत; जिह्रयाणि, जिह्रयाव, जिह्रयाम।

लङ्—अजिह्रेत्, अजिह्रीताम्, अजिह्रयुः; अजिह्रेः, अजिह्रीतम्, अजिह्रीत; अजिह्रयम्, अजिह्रीव, अजिह्रीम।

विधिलिङ्—जिह्रीयात्, जिह्रीयाताम्, जिह्रीयुः; जिह्रीयाः, जिह्रीयातम्, जिह्रीयात; जिह्रीयाम्, जिह्रीयाव, जिह्रीयाम (१)।

भी-धातु (प० पदी, अक०) डरना; भीत होना, to be afraid; to fear.

Infin.—भेतुम्।

लट्—बिभेति, बिभितः-बिभीतः, बिभ्यति; बिभेषि, बिभिथः-बिभीथः, बिभिथ-बिभीथ; बिभेमि, बिभिवः-बिभीवः, बिभिमः-बिभीमः (२)।

लोट्—बिभेतु, बिभितात्-बिभीतात्, बिभिताम्-बिभीताम्, बिभ्यतु; बिभिहि-बिभीहि, बिभितात्-बिभीतात्, बिभितम्-बिभीतम्, बिभित-बिभीत; बिभयानि, बिभयाव, बिभयाम।

---

(१) लुट्—ह्रेता, ह्रेतारौ इत्यादि। लृट्—ह्रेष्यति, ह्रेष्यतः इत्यादि। लृङ्—अह्रेष्यत्, अह्रेष्यताम् इत्यादि। आशीर्लिङ्—ह्रीयात्, ह्रीयास्ताम् इत्यादि। लिट्—जिह्रयाम्बभूव-जिह्रयामास-जिह्रयाञ्चकार इत्यादि or जिह्राय, जिह्रियतुः, जिह्रियुः, जिह्रयिथ-जिह्रेथ, जिह्रियथुः, जिह्रिय; जिह्राय-जिह्रय, जिह्रियिव, जिह्रियिम। लुङ्—अह्रैषीत्, अह्रैष्टाम्, अह्रैषुः इत्यादि।

(२) "भियोऽन्यतरस्याम्" वैयाकरण लोग अगुण व्यञ्जनवर्ण (हलादि कित् या ङित् सार्वधातुक प्रत्यय) परे रहनेपर विकल्पसे ईकारको ह्रस्व करते हैं; अर्थात् लट् आदि चार विभक्तियों में भी-धातुके रूपमें जहाँ जहाँ दीर्घ ई है वहाँ ह्रस्व इ भी करते हैं। यथा, बिभीतः-बिभितः, बिभीमः-बिभिमः इत्यादि।

लङ्—अबिभेत्, अबिभिताम्-अबिभीताम्, अबिभयुः; अबिभेः, अबिभितम्-अबिभीतम्, अबिभीत-अबिभित; अबिभयम्, अबिभीव-अबिभिव, अबिभीम-अबिभिम।

विधिलिङ् (१)—बिभीयात्, बिभीयाताम्, बिभीयुः; बिभीयाः, बिभीयातम्, बिभीयात; बिभीयाम्, बिभीयाव, बिभीयाम (२)।

२१२। अभ्यस्त भृ-धातुके पूर्वभागके स्थानमें बि होता है (३)।

भृ-धातु (उ० पदी, सक०) धारण करना, to hold; to support; पालना, to nourish.

Infin.—भर्त्तुम्।

लट् (प० पद)—बिभर्त्ति, बिभृतः, बिभ्रति; बिभर्षि, बिभृथः, बिभृथ; बिभर्मि, बिभृवः, बिभृमः। (आ० पद)—बिभृते, बिभ्राते, बिभ्रते; बिभृषे, बिभ्राथे, बिभृध्वे; बिभ्रे, बिभृवहे, बिभृमहे।

लोट् (प० पद)—बिभर्त्तु-बिभृतात्, बिभृताम्, बिभ्रतु; बिभृहि, बिभृतात् बिभृतम्, बिभृत; बिभराणि, बिभराव, बिभराम। (आ० पद)—बिभृताम्, बिभ्राताम्, बिभ्रताम्; बिभृष्व, बिभ्राथाम्, बिभृध्वम्; बिभरै, बिभरावहै, बिभरामहै।

---

(१) बिभियात् इत्यादि क्रमसे प्रत्येक वचनमें ह्रस्व, दीर्घ के दो २ रूप होते हैं।

(२) लुट्—भेता। लृट्—भेष्यति। लृङ्—अभेष्यत्। आशीर्लिङ्—भीयात्। लिट्—बिभयाम्बभूव-बिभयामास-बिभयाञ्चकार इत्यादि or बिभाय, बिभ्यतुः, बिभ्युः; बिभयिथ-बिभेथ, बिभ्यथुः, बिभ्य; बिभाय-बिभय, बिभ्यिव, बिभ्यिम। लुङ्—अभैषीत्, अभैष्टाम्, अभैषुः; अभैषीः, अभैष्टम्, अभैष्ट; अभैषम्, अभैष्व, अभैष्म।

(३) "भृञामित्।" भृ (उ० प०) मा (आ० पदी और हा (आ० प० to go) इन तीन धातुओं के अभ्यस्तके पूर्वभागस्थित "अ" के स्थानमें इ होता है। यथा, भृ+ति=भृ+भृ+ति=भ+भृ+ति=ब+भृ+ति=बि+भ्+अर्+ति=बिभर्त्ति।

लङ् (प० पद)—अबिभः, अबिभृताम्, अबिभरुः; अबिभः, अबिभृतम्, अबिभृत; अबिभरम्, अबिभृव, अबिभृम। (आ० पद)—अबिभृत, अबिभ्राताम्, अबिभ्रत; अबिभृथाः, अबिभ्राथाम्, अबिभृध्वम्; अबिभ्रि, अबिभृवहि, अबिभृमहि।

विधिलिङ् (प० पद)—बिभृयात्, बिभृयाताम्, बिभृयुः; बिभृयाः, बिभृयातम्, बिभृयात; बिभृयाम्, बिभृयाव, बिभृयाम। (आ० पद)—बिभ्रीत, बिभ्रीयाताम्, बिभ्रीरन्; बिभ्रीथाः, बिभ्रीयाथाम्, बिभ्रीध्वम्; बिभ्रीय, बिभ्रीवहि, बिभ्रीमहि (१)।

२१३। ति, सि, मि, तु द्, स् भिन्न विभक्ति परे रहने से दा और धा धातुओं के आकारका लोप होता है।

२१४। लोट् की हि विभक्ति परे रहनेसे अभ्यस्त दा और धा धातुओं के पूर्वभागका लोप होता है और परभाग के आकारके स्थानमें एकार होता है (२)।

---

(१) लुट्—भर्ता। लृट्—भरिष्यति-ते। लृङ्—अभरिष्यत् त। आशीर्लिङ्—भृयात्-भृषीष्ट। लिट्—बिभराम्बभूव, बिभरामास, बिभराञ्चकार-बिभराञ्चक्रे इत्यादि; (पक्षे) बभार—बभ्रे इत्यादि। लुङ् (प० पद)—अभार्षीत्, अभार्ष्टाम्, अभार्षुः इत्यादि। (आ० पद)—अभृत, अभृषाताम्, अभृषत इत्यादि। लिट् और लुङ् विभक्तियों में भृ-धातु के रूप-कृ-धातुके तुल्य होते हैं।

(२) "दाधा घ्वदाप्"। दारूपा धारूपाश्च धातवो घुसंज्ञाः स्युर्दाप्दैपौ विना अर्थात् दा (दाप्, to cut) और दै (दैप्, to purify), इन दोनों को छोड़कर शेष दारूप (दा, to give; दो, to cut; दे, to protect) तथा धारूप (धा, to support; to bear; to protect. धे, to suck) धातु घुसंज्ञक होते हैं; और हि विभक्तिमें इन धातुओं के अभ्यासका लोप होता है और "आ"के स्थानमें ए होता है।

दा-धातु (उ० पदी, सक०) देना, to give.

Infin.—दातुम्।

लट् (प० पद)—ददाति, दत्तः, ददति; ददासि, दत्थः, दत्थ; ददामि, दद्वः, दद्मः। (आ० पद)—दत्ते, ददाते, ददते; दत्से, ददाथे, दद्ध्वे; ददे, दद्वहे, दद्महे।

लोट् (प० पद)—ददातु-दत्तात्, दत्ताम्, ददतु; देहि-दत्तात्, दत्तम्-दत्त; ददानि, ददाव, ददाम। (आ०पद)—दत्ताम्, ददाताम्, ददताम्; दत्स्व, ददाथाम्, दद्ध्वम्; ददै, ददावहै, ददामहै।

लङ् (प० पद)—अददात्, अदत्ताम्, अददुः; अददाः, अदत्तम्, अदत्त; अददाम्, अदद्व, अदद्म। (आ० पद)—अदत्त, अददाताम्, अददत; अदत्थाः, अददाथाम्, अदद्ध्वम्; अददि अदद्वहि, अदद्महि।

विधिलिङ् (प० पद)—दद्यात्, दद्याताम्, दद्युः; दद्याः, दद्यातम्, दद्यात; दद्याम्, दद्याव, दद्याम। (आ० पद)—ददीत, ददीयाताम्, ददीरन्; ददीथाः, ददीयाथाम्, ददीध्वम्; ददीय, ददीवहि, ददीमहि (१)।

२१५। परभागके आकारका लोप होनेसे और त्, थ्, स्, और ध्व परे रहनेसे अभ्यस्त धा-धातुके पूर्वभागस्थित "ध्" के स्थानमें द् नहीं होता; किन्तु त्, थ्, स्, परे रहनेसे परभागके "ध्" के स्थानमें त् होता है (२)।

---

(१) लुट्—दाता। लृट्—दास्यति-ते। लृङ्—अदास्यत्-त। आशीर्लिङ्—देयात्—दासीष्ट। लिट्—ददौ, ददे (पृः १६१) लुङ्—अदात्-अदित (पृः १८५)।

(२) दधस्तथोश्च।

धा–धातु (उ० पदी, सक०) धारण करना, to hold, to support, to bear; पालन करना, to protect.

Infin.—धातुम्।

लट् (प० पद)—दधाति, धत्तः, दधति; दधासि, धत्थः, धत्थ; दधामि, दध्वः, दध्मः। (आ० पद)—धत्ते, दधाते, दधते; धत्से, दधाथे, धद्ध्वे; दधे, दध्वहे, दध्महे।

लोट् (प० पद)—दधातु-धत्तात्, धत्ताम्, दधतु; धेहि-धत्तात्, धत्तम्, धत्त; दधानि, दधाव, दधाम। (आ० पद)—धत्ताम्, दधाताम्, दधताम्; धत्स्व, दधाथाम्, धद्ध्वम्; दधै, दधावहै, दधामहै।

लङ् (प० पद)—अदधात्, अधत्ताम्, अदधुः; अदधाः, अधत्तम्, अधत्त; अदधाम्, अदध्व, अदध्म। (आ० पद)—अधत्त, अदधाताम्, अदधत; अधत्थाः, अदधाथाम्, अधद्ध्वम्; अदधि, अदध्वहि, अदध्महि।

विधिलिङ् (प० पद)—दध्यात्, दध्याताम्, दध्युः; दध्याः, दध्यातम्, दध्यात; दध्याम्, दध्याव, दध्याम। (आ० पद)—दधीत, दधीयाताम्, दधीरन्; दधीथाः, दधीयाथाम्, दधीध्वम्; दधीय, दधीवहि, दधीमहि (१)।

२१६। अगुण स्वरवर्ण तथा विधिलिङ्के य परे रहनेसे हा-धातुके आकारका लोप होता है (२)।

२१७। अगुण व्यञ्जनवर्ण परे रहे तो हा-धातुके आकारके स्थानमें इ और ई होता है (३)।

---

(१) लुट्—धाता। लृट्—धास्यति-ते। लृङ्—अधास्यत्, अधास्यत। आशी०-धेयात्, धासीष्ट। लिट्—दधौ, दधे (like दा)। लुङ्—अधात्, अधित (like दा)।

(२) श्नाभ्यस्तयोरातः। लोपो यि।

(३) जहातेश्च।

हा-धातु (ओहाक् त्यागे, प० पदी) त्याग करना, to give up; to abandon; to shun; to avoid.

Infin.—हातुम्।

लट्—जहाति, जहितः-जहीतः, जहति; जहासि, जहिथः-जहीथः, जहिथ-जहीथ; जहामि, जहिवः-जहीवः, जहिमः-जहीमः।

लोट्—जहातु-जहितात्-जहीतात्, जहिताम्-जहीताम्, जहतु; जहिहि-जहीहि-जहाहि-जहितात्-जहीतात् (१), जहितम्-जहीतम्, जहित-जहीत; जहानि, जहाव, जहाम।

लङ्—अजहात्, अजहिताम्-अजहीताम्, अजहुः; अजहाः, अजहितम्-अजहीतम, अजहित-अजहीत; अजहाम्, अजहिव-अजहीव, अजहिम-अजहीम।

विधिलिङ्—जह्यात्, जह्याताम्, जह्युः; जह्याः, जह्यातम्, जह्यात; जह्याम्, जह्याव, जह्याम (२)।

हा और मा-धातु (आत्मनेपदी)।

२१८। हा और मा धातुओं के पूर्वभागस्थित आकारके स्थानमें इकार होता है (३)

२१९। अगुण स्वरवर्ण परे रहनेसे उत्तरभागके आकारका लोप होता है (४)।

२२०। अगुण व्यञ्जनवर्ण परे रहनेसे उत्तरभागके आकारके स्थानमें ईकार होता है (५)।

---

(१) 'आ च हौ'। वैयाकरण लोग ये तीन पद करते हैं। (२) लुट्—हाता। लृट्—हास्यति। लृङ्—अहास्यत्। आशी०—हेयात्। लिट्—जहौ, जहतुः, जहुः; जहिथ-जहाथ, जहथुः, जह; जहौ, जहिव, जहिम। लुङ्—अहासीत्, अहासिष्टाम्, अहासिषुः; अहासीः, अहासिष्टम्, अहासिष्ट; अहासिषम्, अहासिष्व, अहासिष्म।

(३) भृञामित्। अभ्यस्त भृ (पालना, to maintain), मा (नापना, to measure) और हा (जाना, to go) धातुओंके पूर्वभागस्थित "आ" के स्थानमें इ होता है। (४) श्नाभ्यस्तयोरातः। (५) ई हल्यघोः।

हा-धातु (ओहाङ्गतौ, आ० पदी) जाना, to go.

Infin.—हातुम् ।

लट्—जिहीते, जिहाते, जिहते ; जिहीषे, जिहाथे, जिहीध्वे ; जिहे, जिहीवहे, जिहीमहे ।

लोट्—जिहीताम्, जिहाताम्, जिहताम् ; जिहीष्व, जिहाथाम्, जिहीध्वम् ; जिहै, जिहावहै, जिहामहै ।

लङ्—अजिहीत, अजिहाताम्, अजिहत ; अजिहीथाः, अजिहाथाम्, अजिहीध्वम् ; अजिहि, अजिहीवहि, अजिहीमहि ।

विधिलिङ्—जिहीत, जिहीयाताम्, जिहीरन् ; जिहीथाः, जिहीयाथाम्, जिहीध्वम् ; जिहीय, जिहीवहि, जिहीमहि (१) ।

मा-धातु (माङ् माने शब्दे च, आ० पदी) नापना, to measure ; शब्द करना, to sound.

Infin.—मातुम् ।

मा-धातुका रूप हा-धातुके रूपके सदृश होता है ।

निज्, विज्, विष् धातु ।

२२१। लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ्, इन चार विभक्तियोंमें निज्, विज् और विष् धातुओंके पूर्वभागस्थित "इ" के स्थानमें ए होता है (२)।

२२२। आनि, आव, आम, ऐ, आवहै, आमहै, अम्, इन कई एक विभक्तियों में निज्, विज् और विष् धातुओं के पर-भागको गुण नहीं होता (३) ।

---

(१) लुट्—हाता । लृट्—हास्यते । लृङ्—अहास्यत । आशी०—हासीष्ट । लिट्—जहे । लुङ्—अहास्त । Note हा (प० पदी)+क्त्वा= हित्वा but हा (आ० पदी) + क्त्वा = हात्वा । (२) निजां त्रयाणां गुणः श्लौ.।

(३) नाभ्यस्तस्याचि पिति सार्वधातुके ।

निज्-धातु (णिजिर् शौचपोषणयोः ; उ० पदी, सक०) शुद्ध करना, to cleanse; धोना, to wash; पालना या पोसना, to maintain; to nourish.

Infin.—नेक्तुम्।

लट् (प० पद)—नेनेक्ति, नेनिक्तः, नेनिजति ; नेनेक्षि, नेनिक्थः, नेनिक्थ ; नेनेज्मि, नेनिज्वः, नेनिज्मः। (आ० पद)—नेनिक्ते, नेनिजाते, नेनिजते ; नेनिक्षे, नेनिजाथे, नेनिग्ध्वे ; नेनिजे, नेनिज्वहे, नेनिज्महे।

लोट् (प० पद)—नेनेक्तु-नेनिक्तात्, नेनिक्ताम्, नेनिजतु; नेनिग्धि-नेनिक्तात्, नेनिक्तम्, नेनिक्त ; नेनिजानि, नेनिजाव, नेनिजाम। (आ० पद०)—नेनिक्ताम्, नेनिजाताम्, नेनिजताम् ; नेनिक्ष्व, नेनिजाथाम्, नेनिग्ध्वम्; नेनिजै, नेनिजावहै, नेनिजामहै।

लङ् (प० पद)—अनेनेक्-ग्, अनेनिक्ताम्, अनेनिजुः ; अनेनेक्-ग्, अनेनिक्तम्, अनेनिक्त; अनेनिजम्, अनेनिज्व, अनेनिज्म। (आ० पद)—अनेनिक्त, अनेनिजाताम्, अनेनिजत; अनेनिक्थाः, अनेनिजाथाम्, अनेनिग्ध्वम् ; अनेनिजि, अनेनिज्वहि, अनेनिज्महि।

विधिलिङ् (प० पद)—नेनिज्यात्, नेनिज्याताम्, नेनिज्युः ; नेनिज्याः, नेनिज्यातम्, नेनिज्यात; नेनिज्याम्, नेनिज्याव, नेनिज्याम। आ० पद)—नेनिजीत, नेनिजीयाताम्,

नेनिजीरन्; नेनिजीयाः, नेनिजीयाथाम, नेनिजीध्वम; नेनिजीय, नेनिजीवहि, नेनिजीमहि (१)।

विज्-धातु (विजिर् पृथग्भावे, उ० पदी, सक०)

अलग करना, to separate; to distinguish.

Infin.—वेक्तुम।

लट् (प० पद) वेवेक्ति, वेविक्तः, वेविजति इत्यादि। सभी विभक्तियों में विज्-धातुके रूप निज्-धातुके तुल्य होते हैं।

विष्-धातु (उ० पदी, अक०) व्याप्त होना, to pervade.

Infin.—वेष्टुम।

लट् (प० पद)—वेवेष्टि, वेविष्टः, वेविषति; वेवेक्षि, वेविष्ठः, वेविष्ठ; वेवेष्मि, वेविष्वः, वेविष्मः। (आ० पद)—वेविष्टे, वेविषाते, वेविषते; वेविक्षे, वेविषाथे, वेविड्ढ्वे; वेविषे, वेविष्वहे, वेविष्महे।

---

(१) लुट्—नेक्ता। लृट्—नेक्ष्यति-ते लृङ्-अनेक्ष्यत्-त। आशी०—निज्यात्, निक्षीष्ट। लिट् (प० पद)—निनेज, निनिजतुः, निनिजुः; निनेजिथ, निनिजथुः, निनिज; निनेज, निनिजिव, निनिजिम। (आ० पद) निनिजे, निनिजाते, निनिजिरे; निनिजिषे, निनिजाथे, निनिजिध्वे; निनिजे, निनिजिवहे, निनिजिमहे। लुङ् (प० पद)—अनिजत्, अनिजताम्, अनिजन्; अनिजः, अनिजतम्, अनिजत; अनिजम्, अनिजाव, अनिजाम। or अनैक्षीत्, अनैक्ताम्, अनैक्षुः; अनैक्षीः, अनैक्तम्, अनैक्त; अनैक्षम्, अनैक्ष्व, अनैक्ष्म। (आ० पद)—अनिक्त, अनिक्षाताम्, अनिक्षत; अनिक्थाः, अनिक्षाथाम्, अनिग्ध्वम्; अनिक्षि, अनिक्ष्वहि, अनिक्ष्महि।

लोट् (प० पद)—वेवेष्टु-वेविष्टात्, वेविष्टाम्, वेविषतु; वेविड्ढि-वेविष्टात्, वेविष्टम्, वेविष्ट; वेविषाणि, वेविषाव, वेविषाम। (आ० पद)—वेविष्टाम्, वेविषाताम्, वेविषताम्; वेविक्ष्व, वेविषाथाम्, वेविड्ढ्वम्; वेविषै, वेविषावहै, वेविषामहै।

लङ् (प० पद)—अवेवेट्-ड्, अवेविष्टाम्, अवेविषुः; अवेवेट्-ड्, अवेविष्टम्, अवेविष्ट; अवेविषम्, अवेविष्व, अवेविष्म। (आ० पद)—अवेविष्ट, अवेविषाताम्, अवेविषत; अवेविष्ठाः, अवेविषाथाम्, अवेविड्ढ्वम्; अवेविषि, अवेविष्वहि, अवेविष्महि।

विधिलिङ् (प० पद)—वेविष्यात्, वेविष्याताम्, वेविष्युः; वेविष्याः, वेविष्यातम्, वेविष्यात; वेविष्याम्, वेविष्याव, वेविष्याम। (आ० पद)—वेविषीत, वेविषीयाताम्, वेविषीरन्; वेविषीथाः, वेविषीयाथाम्, वेविषीध्वम्; वेविषीय, वेविषीवहि, वेविषीमहि (१)।

---

(१) लुट्—वेष्टा। लृट्—वेक्ष्यति-ते। लृङ्—अवेक्ष्यत्-त। आशी०—विष्यात्, विक्षीष्ट। लिट् (प० पद)—विवेष, विविषतुः, विविषुः; विवेषिथ, विविषथुः, विविष; विवेष, विविषिव, विविषिम। (आ० पद)—विविषे, विविषाते, विविषिरे; विविषिषे, विविषाथे, विविषिध्वे; विविषे, विविषिवहे, विविषिमहे। लुङ् (प० पद)—अविषत्, अविषताम्, अविषन्; अविषः, अविषतम्, अविषत; अविषम्, अविषाव, अविषाम। (आ० पद)—अविक्षत, अविक्षाताम्, अविक्षन्त; अविक्षथाः, अविक्षाथाम्, अविक्षध्वम्; अविक्षि, अविक्षावहि, अविक्षामहि।

प्रचलित ह्लादिगणीय धातु।

परस्मैपदी।

ऋ (गतौ) to go. इयर्त्ति, इयृतः, इय्रति। ऐयः, ऐयृताम्, ऐयरुः।

पॄ, पृ (पालनपूरणयोः) to maintain, to fill. पिपर्त्ति, पिपूर्त्तः, पिपुरति। अपिपः, अपिपूर्त्ताम्, अपिपरुः।

भी (भये) to fear. बिभेति।

हा (ओहाक् त्यागे) to abandon, to avoid. जहाति। अजहात्-द्।

हु (दानादानयोः) to offer, to sacrifice, to pour *ghee* into the sacrificial fire. जुहोति। अजुहोत्-द्।

ह्री (लज्जायाम्) to be ashamed. जिह्रेति। अजिह्रेत्-द्।

आत्मनेपदी।

मा (माने) to measure. मिमीते। अमिमीत।

हा (ओहाङ्गतौ) to go. जिहीते। अजिहीत।

उभयपदी।

दा (दाने) to give. ददाति-दत्ते। अददात्-अदत्त।

धा (धारणपोषणयोः) to bear, to support. दधाति-धत्ते। अदधात्-अधत्त।

निज् (शौचपोषणयोः) to cleanse, to nourish. नेनेक्ति-नेनिक्ते। अनेनेक् (ग्)-अनेनिक्त।

भृ (धारणपोषणयोः) to bear, to support, to maintain. बिभर्त्ति-बिभृते। अबिभः-अबिभृत।

विज् (पृथक् भावे) to separate, to distinguish. वेवेक्ति-वेविक्ते। अवेवेक् (ग्)—अवेविक्त।

विष् (व्याप्तौ) to pervade, वेवेष्टि-वेविष्टे। अवेवेट् (ड्) अवेविष्ट।

Exercise.

1. Give the alternative forms of each of the following:—जहिहि, जहिथ, बिभीमः।

2. Distinguish between हा (प० पदी) and हा (आ० पदी) and illustrate the distinction as clearly as you can.

3. Make a sentence with each of the following:—हु, भी, भृ, दा, धा and मा।

णिजन्त प्रकरण (Causative Verbs) ।

२२३। प्रेरण (१) अर्थमें धातुके उत्तर णिच् प्रत्यय होता है (२)। णिच्का इ रहता है। णिजन्त धातु सेट् और प्रायः उभयपदी होते हैं (३)।

२२४। णिच् होनेसे धातुके अन्त्यस्वरको और उपधा अकारको वृद्धि होती है। यथा-श्रु-णिच्, श्रावि; प्लु-णिच् प्लावि; कृ-णिच्, कारि; हृ-णिच्, हारि; चल्-णिच्, चालि; दह्-णिच्, दाहि; पच्-णिच्, पाचि; वह-णिच्, वाहि इत्यादि।

२२५। णिच् होने से धातुके उपधा लघुस्वरको गुण होता है। यथा—लिप्-णिच्, लेपि; सिच्-णिच्, सेचि; मुच्-णिच्, मोचि; दुह्-णिच्, दोहि; दृश्-णिच्, दर्शि; मृष्-णिच्, मर्षि।

२२६। धातुके उत्तर णिच् होनेसे वह धातु णिजन्त धातुओंमें गिना जाता है। यथाश्रु-धातुके उत्तर णिच् होनेसे श्रावि होता है। यह श्रावि श्रु-धातुमें नहीं गिना जाता। यह "श्रावि" के नामसे एक स्वतन्त्र धातु होजाता है और धातुके सब कार्य प्राप्त होते हैं।

---

(१) प्रेरण शब्द का अर्थ है किसीसे कुछ काम कराना। प्रेरण तीन प्रकारके होते हैं; यथा, प्रेरणा या प्रेषण (सेवक आदिको प्रेरणा command); अध्येषणा या प्रार्थना (अपने बराबर तथा गुरु आदि को प्रेरणा request) और विज्ञापना या अनुमति (राजा स्वामी आदिको प्रेरणा entreaty)।

(२) तत्प्रयोजको हेतुश्च। हेतुमति च।

(३) पाणिनिके मतमें कर्त्ता फलभागी होने से णिजन्त धातु आत्मनेपदी होते हैं।

२२७। लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ्, इन चार विभक्तियोँ मेँ णिजन्त धातु भ्वादिगणीय धातुके तुल्य होते हैँ।

श्रावि-धातु (सक०) सुनवाना, to cause to hear.

Infin.—श्रावयितुम्।

लट् (प० पद)।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	श्रावयति	श्रावयसि	श्रावयामि
द्विवचन	श्रावयतः	श्रावयथः	श्रावयावः
बहुवचन	श्रावयन्ति	श्रावयथ	श्रावयामः

लोट् (प० पद)।

एकवचन	श्रावयतु-श्रावयतात्	श्रावय-श्रावयतात्	श्रावयाणि
द्विवचन	श्रावयताम्	श्रावयतम्	श्रावयाव
बहुवचन	श्रावयन्तु	श्रावयत	श्रावयाम

लङ् (प० पद)।

एकवचन	अश्रावयत्	अश्रावयः	अश्रावयम्
द्विवचन	अश्रावयताम्	अश्रावयतम्	अश्रावयाव
बहुवचन	अश्रावयन्	अश्रावयत	अश्रावयाम

विधिलिङ् (प० पद)।

एकवचन	श्रावयेत्	श्रावयेः	श्रावयेयम्
द्विवचन	श्रावयेताम्	श्रावयेतम्	श्रावयेव
बहुवचन	श्रावयेयुः	श्रावयेत	श्रावयेम

२२८। णिच् प्रत्यय होनेसे अमन्त तथा घटादि धातुओँ के

अन्त्यस्वर और उपधा अकारको वृद्धि नहीं होती (१)। अमन्त यथा—गम्-णिच् गमि, गमयति; ऐसे—दम्, दमयति; नम्, नमयति; रम्, रमयति; शम्, शमयति। घटादि यथा—घट् (to exert; to happen) णिच् घटि, घटयति; ऐसे—व्यथ्, व्यथयति; जन्, जनयति; त्वर्, त्वरयति; ज्ञप्, ज्ञपयति; ज्वल्, ज्वलयति (२)।

२२९। णिच् प्रत्यय होने से जॄ (३) और जागृ धातुओं के अन्त्यस्वरको गुण होता है। यथा, जॄ जरयति; जागृ, जागरयति।

२३०। णिच् प्रत्यय होनेसे हन्-धातुके स्थानमें घात, दुष्-धातुके स्थानमें दूष् और अध्ययनार्थक इ (इङ्) धातुके स्थानमें आप् होता है। यथा—हन्, घातयति; दुष्, दूषयति (४); अधि-इ, अध्यापयति।

---

(१) मितां ह्रस्वः। (२) किन्तु अम् (to go) आमयति; कम् (to wish) कामयति; चम् (to eat) चामयति। उपसर्ग रहित ज्वल् (to glow), ह्वल् (to go) रम्, नम्, वन्, धातुओंको विकल्पसे वृद्धि होती है। यथा, ज्वालयति-ज्वलयति, रमयति-रामयति, नमयति-नामयति इत्यादि। उपसर्गयुक्त यथा, प्रज्वलयति (प्रज्वालयति रूप भी मिलता है) प्रह्वलयति, प्रणमयति इत्यादि। शम्, यम्, फण और उपसर्गयुक्त स्खद् धातुओंको भी विकल्पसे वृद्धि होती है। यथा, शमयति शामयति, परिस्खदयति-परिस्खादयति इत्यादि। घट् (चुरादि, to injure, to kill, to collect together, to shine.) घाटयति।

(३) जॄ (दिवादि) जरयति; (क्र्यादि जारयति)।

(४) चित्तविराग अर्थात् चित्तकी अप्रसन्नता बोध होनेसे विकल्पसे होता है (वा चित्तविरागे) यथा, क्रोधः चित्तं दूषयति दोषयति वा (क्रोध चित्तको अप्रसन्न करता है)।

२३१। णिच् प्रत्यय होनेसे शद्-धातु के "द्" के स्थानमें त् होता है (१)। यथा—शद्, शातयति।

२३२। णिच् प्रत्यय होनेसे रुह्-धातुके "ह्" के स्थानमें विकल्पसे प् होता है। यथा, रोपयति, रोहयति।

२३३। णिच् प्रत्यय होनेसे स्फुर् धातुके उकारके स्थानमें विकल्पसे आकार होता है। यथा, स्फारयति, स्फोरयति।

२३४। णिच् प्रत्यय होनेसे प्री और धू धातुओंके उत्तर न् होता है। यथा, प्री—प्रीणयति, धू—धूनयति।

२३५। णिच् प्रत्यय होनेसे ऋ, ह्री (२) और आकारान्त (३) धातुओंके उत्तर प् होता है और इस "प्" के परे अन्त्य-स्वरको गुण होता है। यथा, ऋ—अर्पयति; ह्री—ह्रेपयति; स्था—स्थापयति; ख्या—ख्यापयति; ज्ञा—ज्ञापयति।

---

(१) शदेरगतौ तः (अगति अर्थमें त् होता है)। गति अर्थ बोध होनेसे त् नहीं होता। यथा, गाः शादयति गोपः।

(२) णिच् प्रत्यय होने से (क) क्री धातुके स्थानमें क्राप्, जि धातुके स्थानमें जाप् होता है। यथा, क्रापयति; जापयति (ख) चि-धातुके स्थानमें विकल्पसे चाप् होता है। यथा, चापयति-चाययति (किसी किसीके मतमें चपयति चययति)। (ग) गर्भग्रहण (to conceive) अर्थमें वी-धातुके स्थानमें विकल्पसे वाप् होता है। यथा, वापयति-वाययति। गर्भ ग्रहण भिन्न अर्थमें वापयति। (घ) ब्ली (to go) ब्लेपयति; री (क्र्यादि to go, दिवादि to hear) रेपयति; क्नूय् (to sound) क्नोपयति; क्ष्माय् (to shake) क्ष्मापयति। (अर्तिह्रीब्लीरीक्नूयीक्ष्माय्यातां पुङ् णौ)।

(३) णिच् प्रत्यय होनेसे उपसर्ग रहित ग्ला और स्ना धातुओंके आकार-के स्थानमें विकल्पसे अ होता है। यथा, ग्लपयति-ग्लापयति; स्नपयति-स्नापयति। उपसर्गयुक्त होनेसे अ नहीं होता। यथा, प्रग्लापयति, प्रस्नापयति।

२३६। णिच् प्रत्यय होनेसे पानार्थ पा-धातुके उत्तर प् (१) और रक्षार्थ पा-धातुके उत्तर ल् होता है। यथा, पानार्थ—पाययति; रक्षार्थ-पालयति।

२३७। यदि कर्त्ता अन्यनिरपेक्ष होकर भय और विस्मय उत्पन्न करे तो णिच् प्रत्ययसे परे भी-धातुके स्थानमें भीष् (२) और स्मि-धातुके स्थानमें स्माप् होता है और आत्मनेपद होता है। यथा, सर्पः शिशुं भीषयते। यहाँ सर्प अन्यकी अपेक्षा न कर स्वयं भय उत्पन्न करता है। पुरुषः सर्पेण शिशुं भाय-यति। यहाँ पुरुष सर्पके द्वारा शिशुको भय उत्पन्न करता है। सुतरां, अन्य निरपेक्ष होकर भय उत्पन्न नहीं करता है, इसलिए भीष् और आत्मनेपद नहीं हुआ। स्मि-धातुको भी ऐसा ही होता है। यथा, विस्मापयते मुण्डस्तम्। यहाँ अन्यकी अपेक्षा न कर स्वयं विस्मय उत्पन्न करता है। सर्पो मनुष्यवाचा तं विस्माययति। यहाँ सर्प स्वयं विस्मय उत्पन्न नहीं कर मनुष्य वाक्यके द्वारा विस्मय उत्पन्न करता है, इसलिए स्माप् और आत्मनेपद नहीं हुआ।

२३८। णिच् प्रत्यय होनेसे मृगया-अर्थमें रन्ज्-धातुके "न्" का लोप होता है। यथा, रजयति मृगान् व्याधः (३)। मृगया भिन्न अर्थमें "न्" का लोप नहीं होता। यथा, रञ्जयति मृगान् तृणदानेन।

---

(१) णिच् प्रत्यय होनेसे छो, शो, सो, वे, व्ये, और ह्वे धातु आकारान्त होते हैं और उनके उत्तर य् होता है। यथा, छाययति, शाययति, साययति, वाययति, व्याययति, ह्वाययति।

(२) इस अर्थमें भी-धातुके स्थानमें भाप् भी होता है और आत्मनेपद होता है। यथा, सर्पः शिशुं भापयते (भीषयते वा)।

(३) मृगया शब्दका अर्थ पशुबध है, इसलिए पशु भिन्न अन्य जन्तुका बध बोध होनेसे "न्" का लोप नहीं होता। यथा, रञ्जयति पक्षिणो व्याधः। "रञ्जेर्णौ मृगरमणे नलोपो वक्तव्यः।"

२३९। णिच् प्रत्यय होनेसे इ-धातुके स्थानमें गम् होता है। (१) यथा, गमयति। ज्ञानार्थमें नहीं होता। यथा, प्रति इ, प्रत्याययति।

श्रावि धातु।

लुट् (प० पद)।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	श्रावयिता	श्रावयितासि	श्रावयितास्मि
द्विवचन	श्रावयितारौ	श्रावयितास्थः	श्रावयितास्वः
बहुवचन	श्रावयितारः	श्रावयितास्थ	श्रावयितास्मः

लृट् (प० पद)।

एकवचन	श्रावयिष्यति	श्रावयिष्यसि	श्रावयिष्यामि
द्विवचन	श्रावयिष्यतः	श्रावयिष्यथः	श्रावयिष्यावः
बहुवचन	श्रावयिष्यन्ति	श्रावयिष्यथ	श्रावयिष्यामः

लृङ् (प० पद)।

एकवचन	अश्रावयिष्यत्	अश्रावयिष्यः	अश्रावयिष्यम्
द्विवचन	अश्रावयिष्यताम्	अश्रावयिष्यतम्	अश्रावयिष्याव
बहुवचन	अश्रावयिष्यन्	अश्रावयिष्यत	अश्रावयिष्याम

२४०। आशीर्लिङ् के परस्मैपदमें णिजन्त धातुके "इ" का लोप होता है।

---

(१) णिच् प्रत्यय होनेसे रभ्-धातुके स्थानमें रम्भ्, लभ्-धातुके स्थानमें लम्भ् आदेश होता है और कम्पन (to shake) अर्थबोधक वा-धातुके उत्तर "ज्" का आगम होता है। यथा—रभ्, रम्भयति ; लभ्, लम्भयति ; वा (to shake) वाजयति (कम्पयति)। कम्पन भिन्न अन्य अर्थमें वा-धातुके उत्तर "प्" का आगम होता है। यथा, केशान् वापयति (Causes to be cut or makes fragrant)।

आशीर्लिङ् (प० पद)।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	आव्यात्	आव्याः	आव्यासम्
द्विवचन	आव्यास्ताम्	आव्यास्तम्	आव्यास्व
बहुवचन	आव्यासुः	आव्यास्त	आव्यास्म

लिट्।

२४१। लिट् विभक्तिमें णिजन्त धातुके उत्तर आम् होता है और आम्के उत्तर भू, अस्, कृ, इन तीन धातुओंका प्रयोग होता है। यथा, लिट् (प० पद)—आवयाम्बभूव-आवयामास-आवयाञ्चकार इत्यादि।

लुङ्।

२४२। लुङ् विभक्तिमें णिजन्त धातुके उत्तर अ (चङ्) होता है।

२४३। अ होनेसे णिजन्त धातु अभ्यस्त होता है और लिट् प्रकरणोक्त सभी अभ्यस्त कार्यों को प्राप्त होता है।

२४४। अ परे रहनेसे णिजन्त धातुके परभागके अन्तस्थित इकारका लोप होता है।

२४५। अ परे रहनेसे णिजन्त धातुके परभागका उपधा गुरुस्वर लघु होता है।

२४६। लुङ् विभक्तिमें णिजन्त धातुके पूर्वभागका लघु-स्वर गुरु होता है।

सिच्-णिच्, सेचि—असीषिचत्, असीषिचताम्, असीषिचन्। भिद्-णिच्, भेदि—अबीभिदत्, अबीभिदताम्, अबीभिदन्। मुच्-णिच्, मोचि—अमूमुचत्, अमूमुचताम्, अमूमुचन्।

परवर्ण गुरुस्वरयुक्त होनेसे पूर्वभागका लघुस्वर गुरु नहीं होता। यथा—निन्द्-णिच्, निन्दि—अनिनिन्दत्, अनिनिन्दताम्, अनिनिन्दन्। शिक्ष्-णिच्, शिक्षि—अशिशिक्षत्, अशिशिक्षताम्, अशिशिक्षन् (१)।

२४७। लुङ् विभक्तिमें णिजन्त धातुके पूर्वभागस्थित अकारके स्थानमें ई होती है। यथा—चल्-णिच्, चालि—अचीचलत्; पत्—णिच्, पाति—अपीपतत्; भज्-णिच्, भाजि—अबीभजत्; हस्-णिच्, हासि—अजीहसत्; कृ-णिच् कारि—अचीकरत् (२)।

परवर्ण गुरुस्वरयुक्त होनेसे ई नहीं होता। यथा—शास्-णिच्, शासि—अशशासत्; रक्ष्-णिच्, रक्षि—अररक्षत्; भक्ष्-णिच्, भक्षि—अबभक्षत्; लङ्घ्—णिच्, लङ्घि—अललङ्घत्। संयुक्त वर्ण परे रहनेसे ह्रस्व इ होता है। यथा—व्यथ् णिच्, व्यथि—अविव्यथत्; ज्ञप्-णिच् ज्ञपि—अजिज्ञपत्।

स्मृ, स्तृ और त्वर् धातुओंमें इ नहीं होता (३)। यथा, स्मृ-णिच्, स्मारि-असस्मरत्, असस्मरताम्, असस्मरन्। स्तृ-णिच्, स्तारि—अतस्तरत्, अतस्तरताम्, अतस्तरन्। त्वर्-णिच् त्वारि—अतत्वरत्, अतत्वरताम्, अतत्वरन्।

---

(१) ढौकि, शासि प्रभृति कई एक णिजन्त धातुओंका उपधा गुरुस्वर लघु नहीं होता। यथा, अडुढौकत्। लुङ् विभक्तिमें णिजन्त अर्च्-धातुसे आर्चिचत्, अर्द् धातुसे आर्दिदत्-होता है।

(२) दृ-धातु को नहीं होता। यथा—दृ-णिच्, दारि—अददरत्। अनेकस्वरविशिष्ट धातुको विकल्पसे होता है। यथा—चकास्-णिच्, चकासि—अचीचकासत्, अचचकासत्।

(३) "अत् स्मृदृत्वरप्रथम्रदस्तृस्पशाम्।" लुङ् विभक्तिमें णिजन्त स्मृदृ (दृ), त्वर्, प्रथ्, म्रद् स्तृ (स्तृ) स्पश् धातुओंके पूर्वभागमें अ होता है। यथा—असस्मरत्, अददरत्, अतत्वरत्, अपप्रथत्, अमम्रदत्, अतस्तरत्। चेष्ट् और वेष्ट् धातुओंके पूर्वभागमें अ होता है इ भी होता है। यथा, अचचेष्टत्-अचिचेष्टत्; अववेष्टत्-अविवेष्टत्।

२४८। णिजन्त भ्राज्, दीप् प्रभृति (१) धातुओं के परभाग का उपधा गुरुस्वर विकल्पसे लघु होता है। यथा—भ्राज्-णिच्, भ्राजि—अबिभ्रजत्, अबिभ्राजत्; दीप्-णिच्, दीपि—अदीदिपत् अदिदीपत्।

२४९। ऋकारोपध धातु णिजन्त होने से लुङ् विभक्तिमें विकल्पसे धातुकी आकृतिको प्राप्त होता है। यथा—वृत्-णिच्, वर्त्ति—अवीवृतत्, अववर्त्तत्; दृश्-णिच्, दर्शि—अदीदृशत्, अददर्शत्।

२५०। लुङ् विभक्तिमें णिजन्त स्वप् धातुके स्थान में सुपि होता है। यथा, स्वप्-णिच्, स्वापि—असूषुपत्।

२५१। लुङ् विभक्तिमें णिजन्त स्था-धातुके आकारके स्थानमें इकार होता है। यथा, स्था-णिच्, स्थापि—अतिष्ठिपत् (२)।

२५२। लुङ् विभक्तिमें अभ्यस्त पायि-धातुके स्थानमें पीप्य् होता है (३)। यथा, अपीप्यत्।

२५३। लुङ् विभक्तिमें णिजन्त श्रु, स्रु, द्रु, प्रु, प्लु, और च्यु धातुओंके पूर्वभागके अकारके स्थानमें इ और उ होता है। यथा—अशिश्रवत्-अशुश्रवत्; अदिद्रवत्-अदुद्रवत्। (४)

---

(१) भ्राज्, (भ्रास्), भास्, भाष्, दीप्, जीव्, मील्, पीड्, कण्, वण्, भण् (रण्), श्रण्, लुप्, लुट्, और हेठ्। पाणिनि व्याकरणमें भ्रास्-धातुका उल्लेख नहीं है। भाष्यमें रण् धातुका उल्लेख है।

(२) घ्रा-धातु को विकल्पसे होता है। यथा, अजिघ्रिपत्-अजिघ्रपत्।

(३) पा (भ्वा० to drink)-णिच्, पायि (लुङ् द्), अपीप्यत्: पा (अदा- to protect)-णिच्, पालि (लुङ् द्), अपीपलत्; पै (भ्वा० to dry up) णिच्, पायि (लुङ् द्), अपीपयत्।

(४) लुङ् विभक्तिमें णिजन्त श्वि धातुसे अशूशवत्, अशिश्वयत्; रभ् धातुसे अररम्भत्; लभ्-धातु से अललम्भत् होते हैं।

EXERCISE.

1. *Give the alternative forms of each of the following:—* अदिदीपत्, अवीवृतत्, अजिज्ञपत्, अशिश्रवत्, अचकासत्, अचिचेष्टत्, श्रीणयति, स्फोरयति, रोहयति।

2. *Correct giving reasons* :—गाः शातयति गोपः। सर्पः शिशुं भापयति। रामः सर्पेण तं भीषयते। जटिलस्तं विस्मापयति। सिंहो मनुष्यवाचा दिलीपं विस्मापयते। रञ्जयति पक्षिणो व्याधः।

3. *Translate into Sanskrit* :—Rama made Govinda steal his uncle's money. He makes me sit by him. My elder brother causes me to bring his books from his father-in-law's house. He will cause the bulls bring barley from the market. The master causes the servant to do his work. The preceptor made his desciples know their duty. He has made me eat so many fruits and so much sweets. I made them stand round the king and salute him.

चुरादि (Tenth-conjugation).

२५४। चुरादि (१) गणीय धातुके उत्तर स्वार्थमें (अर्थात् मूल धातुका जो अर्थ है उसी अर्थमें) णिच् होता है (२)।

---

(१) चिन्त्, यन्त्र्, पीड्, भक्ष्, लुण्ठ्, छन्द्, श्रण्, तड्, खण्ड्, क्षल्, तुल्, घट्ट्, टङ्क्, चूर्ण्, पूज्, पक्ष्, समार्ज्, तिज्, कीर्त्, मन्त्र्, तर्ज्, नम्र्, लक्ष्, शम्, कुत्स्, वञ्च्, विद्, चर्च्, शब्द्, सूद्, जस्, तनूस्, दूष्, अर्ह्, भू, पट्ट; लोक्, लोच्, तर्क्, पूर्, युज्, अर्च्, वृज्, वृ, रिच्, शिष्, तप्, वच्, घुष् इत्यादि।

(२) "सत्यापपाशरूपवीणातूलश्लोकसेनालोमत्वचवर्मवर्णचूर्णचुरादिभ्यो णिच्।" सत्याप आदि बारह प्रातिपदिकोंके तथा चुरादि धातुओंके उत्तर स्वार्थमें णिच् होता है। णिच् होनेसे कृत् (to glorify) धातुके स्थानमें कीर्त् आदेश होता है। यथा, कीर्त्तयति।

चुर्-धातु (प० पदी) चुराना, to steal (१)।

लट्—चोरयति। लोट्—चोरयतु। लङ्—अचोरयत्। विधि-लिङ्—चोरयेत्। लुट्—चोरयिता। लृट्—चोरयिष्यति। लृङ्—अचोरयिष्यत्। लिट्—चोरयाम्बभूव-चोरयामास-चोरयाञ्चकार। लुङ्—अचूचुरत्।

अकारान्त धातु (२)।

२५५। णिच् होनेसे धातुके अन्तस्थित अकारका लोप होता है और लोप होने पर गुण या वृद्धि नहीं होती। यथा, रच्-धातु, लट्—रचयति; लोट्—रचयतु; लिट्—रचयामास इत्यादि।

२५६। लुङ् विभक्तिमें अकारान्त धातुके पूर्वभागका लघु-स्वर गुरु नहीं होता और अकारके स्थानमें इ या ई नहीं होता। यथा, अररचत्।

२५७। लुङ् विभक्तिमें गण्-धातुके पूर्वभागस्थित अकार के स्थानमें विकल्पसे ई होता है। यथा, गण—अजीगणत्, अजगणत्।

---

(१) किसी किसीके मतमें चुरादिगणीय सभी धातु उभयपदी होते हैं किन्तु पाणिनि बोपदेव प्रभृति प्रधान प्रधान वैयाकरणोंके मतमें ऐसे नहीं होते।

(२) अङ्क, अंश, अर्थ, अन्ध, अवधीर, आन्दोल, कथ, कल, कर्त्त, कर्ण, केत, पक्ष, खच, गण, गवेष, छिद्र, छेद, दुःख, दण्ड, ध्वन, पार, भाज, मृग, मह, सूत्र, मिश्र, रह, रस, रूप, रच, रूक्ष, रूष, वर्ण, वण्ट, वीज, श्लथ, सान्त्व, पृथ, संभाज, स्थूल, मूत्र, सूच, स्तन, साम, सुख स्फुट, स्वन, हिल्लोल इत्यादि।

सनन्तप्रकरण (Desiderative Verbs)।

२५८। इच्छा अर्थमें (१) धातुके उत्तर सन् प्रत्यय होता है (२) सन्का स रहता है (३)।

२५६। सन् प्रत्यय परे रहनेसे धातुके उत्तर इ होता है। अनिट्-धातुके उत्तर नहीं होता।

२६०। सन् प्रत्ययान्त धातु अभ्यस्त होता है और सब अभ्यस्त कार्य प्राप्त होता है।

२६१। सन् प्रत्ययान्त धातुके पूर्वभागस्थित "अ" के स्थानमें इ होता है।

लट्—पठ्—पिपठिषति; वद्—विवदिषति; जीव्—जिजीविषति। (अनिट् धातु) नम्—निनंसति; दह्—दिधक्षति;

---

(१) कई एक धातुओंके उत्तर स्वार्थमें सन् होता है (२७३ नियम)। स्थलविशेषमें आशङ्का अर्थमें भी सन् होता है। यथा, पिपतिषति कूलम् (It is feared that the river bank will fall down); श्वा मुमूर्षति (It is feared that the dog will die)। (२) धातोः कर्मणः समानकर्तृकादिच्छायां वा।

(३) धातु जिस पदका होता है सन् प्रत्यय होनेसे भी उसी पदका होता है। (अर्थात् परस्मैपदी धातुके उत्तर सन् कर जो सनन्त धातु होता है वह परस्मैपदी, आत्मनेपदी धातुके उत्तर सन् कर जो सनन्त धातु होता है वह आत्मनेपदी और उभयपदी धातुके उत्तर सन् कर जो सनन्त धातु होता है वह उभयपदी होता है)। णिजन्तके ऐसा सनन्त भी स्वतन्त्र धातुओंमें गिना जाता है और समस्त धातुकार्य्य प्राप्त होता है और लट्, लोट्, लङ् विधिलिङ् विभक्तियोंमें भ्वादिगणीय धातुके सदृश होता है।

पा—पिपासति ; स्था—तिष्ठासति ; भिद्—बिभित्सति (१) ; बुध्—बुभुत्सते (१)।

२६२। सन् प्रत्यय परे इ होनेसे धातुके उपधा लघु स्वरको गुण होता है। यथा, लिख्—लिलेखिषति (२); शुभ्—शुशोभिषते (२) ; नृत्—निनर्त्तिषति (३) ; वृत्—विवर्त्तिषते (४)।

२६३। रुद्, विद् और मुष् धातुओंके उपधा लघुस्वरको गुण नहीं होता। यथा, रुद्—रुरुदिषति ; विद्—विविदिषति ; मुष्—मुमुषिषति।

२६४। सन् प्रत्यय परे ग्रह्-धातुके उत्तर इट् नहीं होता।

२६५। सन् प्रत्यय परे ग्रह्-धातुके स्थानमें गृह्, स्वप् धातुके स्थानमें सुप् और प्रच्छ्-धातुके स्थानमें पृच्छ् होता है। यथा, ग्रह्—जिघृक्षति ; स्वप्—सुषुप्सति।

२६६। सन् प्रत्यय परे रहनेसे प्रच्छ् और गम् धातुओंके उत्तर इट् होता है। यथा, प्रच्छ्—पिपृच्छिषति ; गम्—जिगमिषति।

---

(१) सन् परे अनिट् धातुको गुण नहीं होता। (२) लिख् तथा शुभ् धातुओंको विकल्पसे गुण होता है, इसलिए लिलिखिषति और शुशुभिषते भी होते हैं। रुच्—रुरोचिषते, रुरुचिषते ; दिव्—दिदेविषति। (३) विकल्पसे इट् होता है इसलिए निनृत्सति भी होता है। (४) "वृद्भ्यः स्यसनोः" सनन्त वृत् अनिट् होनेसे परस्मैपदी होता है इसलिए विवृत्सति भी होता है।

२६७। सन् प्रत्यय परे धातुके अन्त्यस्वरको दीर्घ होता है। यथा, श्रि—शिश्रीषति (१); द्रु—दुद्रूषति; हु—जुहूषति।

२६८। सन् प्रत्यय परे रहनेसे जि-धातुके स्थानमें गि होता है। यथा, जि—जिगीषति।

२६९। सन् प्रत्यय परे रहनेसे हन्-धातुके परभागस्थित अकारके स्थानमें आकार और "ह्" के स्थानमें घ् होता है। यथा, हन्—जिघांसति।

२७०। सन् प्रत्यय परे रहनेसे धातुके अन्तस्थित ऋ-वर्णके स्थानमें ईर् होता है। यथा, कृ—चिकीर्षति; धृ (भ्वादि)—दिधीर्षति (२); हृ—जिहीर्षति; तॄ—तितीर्षति (३)। ऋ—वर्ण ओष्ठ्य् वर्णके परे रहनेसे ऊर् होता है। यथा, मृ—मुमूर्षति (४)।

२७१। सन् प्रत्ययान्त अभ्यस्त दा-धातुके स्थानमें दित्स् (५); धा-धातुके स्थानमें धित्स् (६); आप्-धातुके स्थानमें ईप्स् मा-धातुके स्थानमें मित्स् (७); लभ्-धातुके स्थानमें लिप्स् और

(१) विकल्पसे इट् होनेपर शिश्रयिषति। (२) धृ (तुदा० आ०)—दिधरिषते (इट् हुआ है)। (३) विकल्पसे इट् होता है। यथा, तितरिषति तितरीषति। (४) सनन्त मृ-धातु नित्य परस्मैपदी होता है। सनन्त ज्ञा, श्रु स्मृ और दृश् नित्य आत्मनेपदी होते हैं। यथा, ज्ञा—जिज्ञासते; श्रु—शुश्रूषते; स्मृ—सुस्मूर्षते; दृश्—दिदृक्षते। (५) सन् प्रत्ययान्त दे तथा दा धातुओँ के स्थानमेँ भी दित्स् होता है। (६) धे-धातु के स्थानमेँ भी धित्स होता है। (७) मि, मी और मे धातुओँ के स्थानमेँ भी मित्स् होता है। यथा, मि, मी—मित्सति-ते; मे—मित्सते।

रभ्-धातुके स्थानमैं रिप्स होता है (१)। यथा, दा (ह्वा) दित्सति-ते (२); धा (ह्वा)—धित्सति-ते; आप्—ईप्सति; मा (अदा०)—मित्सति, (ह्वा०)—मित्सते; लभ्—लिप्सते; रभ्—रिप्सते।

२७२। लिट् विभक्तिमैं सनन्त धातुके उत्तर आम् और भू, अस्, कृ होता है। यथा, चिकीर्ष—चिकीर्षाम्बभूव, चिकीर्षामास, चिकीर्षाञ्चकार।

लुट्—चिकीर्षिता; लृट्—चिकीर्षिष्यति; लृङ्—अचिकीर्षिष्यत्; आशीर्लिङ्—चिकीर्ष्यात्; लुङ्—अचिकीर्षीत्।

२७३। कित्, तिज्, गुप्, बध् और मान्-धातुओँ के उत्तर स्वार्थमैं सन् होता है और बध् तथा मान् धातुके पूर्वभागस्थित अकार एवं आकारके स्थानमैं ईकार होता है (३)। यथा, कित्—चिकित्सति (४); तिज्—तितिक्षते; गुप्—जुगुप्सते; बध्-बीभत्सते; मान्—मीमांसते।

---

(१) सन् प्रत्ययान्त पत् और पद् धातुओँ के स्थानमैं पित्स्, और शक् धातुके स्थानमैं शिक्ष् होता है। यथा, पत्—पित्सति, (इट् होनेसे) पिपतिषति; पद्—पित्सते; शक्—शिक्षति। (२) दा (अदा० प०)—दिदासति।

(३) कित् (रोगापनयन, to cure); तिज् (क्षमा, to endure or forbear); गुप् (निन्दा, to despise or censure); बध् (निन्दा, to loathe or censure); मान् (विचार, to investigate or decide); ऐसे अर्थमैं ही इनके उत्तर स्वार्थमैं सन् होता है दूसरे अर्थमैं नहीँ। दान् (ऋजुकरण, to straighten). शान् (तीक्ष्णीकरण, to whet or sharpen); ऐसे अर्थमैं इन दोनोँ धातुओँ के उत्तर भी स्वार्थमैं सन् होता है। यथा, दान्—दीदांसति-ते; शान्—शीशांसति-ते। (४) किसी किसीके मतमैं आ० पदी, चिकित्सते।

Note :—कुछ सनन्त धातुके लट् प० पद एकवचनके रूप—अद्—जिघत्सति, इ (to go)—जिगमिषति ; अधि + इ (to learn) अधिजिगांसते; प्रति + इ (to know)—प्रतीषिषति ; कृ—चिकरिषति ; चि—चिकी (ची) षति ; तन्—तितनिषति, तित (तां)—सति ; नी—निनीषति; पच्—पिपक्षति ; पत्—पिपतिषति ; ब्रू or वच्—विवक्षति ; भुज्—बुभुक्षति-ते ; भू—बुभूषति ; भृ—बिभरिषति, बुभूर्षति ; मुच्—मुमुक्षति-ते ; रम्—रिरंसते ; रुह्—रुरुक्षति ; रुध्—रुरुत्सति-ते ; वृ—वुवूर्षति, विवरि (री)-षति ; शी—शिशयिषते ; सिच्—सिसिक्षति-ते ; सृज्—सिसृक्षति-ते ; स्तु—तुष्टूषति-ते।

EXERCISE.

Translation Model :—Ram wishes to read this book=रामः पुस्तकमिदं पिपठिषति। I wish to go there= अहं तत्र जिगमिषामि। We wish to live = वयं जिजीविषामः। You (two) wish to speak =युवां विवदिषथः।

1. *Translate into Sanskrit* :—They wish to drink milk. The fowler wishes to kill all the birds. The patient wishes to lie down. Forgive your friends' faults. Do you wish to conquer your enemies? He wished to steal my books. All men wish to get (आप्) money. Thieves wish to steal money somehow or other. The boys and the girls wish to ask me a question. Why do you wish to cry? The cowherd wishes to let loose (मुच्) the cows. Sita wished to go to the forest with her dear husband Ram. We wish to eat (अद्) the fine ripe fruits. You (two) wish to cross the ocean by means of this frail float. Do they wish to gain (लभ्) fame by their charitable works? He wishes to take this nice cloth. The king wished to give her two boons. They wish to sleep on the soft grass.

2. *Substitute single words for* :—जीवितुम् इच्छामि ; स्थातुम् इच्छेत् ; मर्त्तुम् ऐच्छम् ; वक्तुम् इच्छन्ति ; प्रष्टुम् इच्छसि ; रन्तुम्

ऐच्छत्; ग्रहीतुम् इच्छथ; बोद्धुम् इच्छामः; आसुम् इच्छ; कर्त्तुम् ईषतुः; हन्तुम् ईष; दग्धुम् इच्छन्ति; वर्त्तितुम् इच्छावः।

3. *Correct giving reason in each case* :—राजा शत्रून् जोगिषति; कः पुस्तकमिदं जिगृक्षति; नाहं फलानि लिप्सामि; ते दोषं नाहं तितिक्षामि; नरोऽयम् सुषुपिषति; दिद्रक्षन्ति ते चन्द्रम्।

यङन्त प्रकरण (Frequentative Verbs)।

२७४। एकस्वरयुक्त आदिमें व्यञ्जनवर्ण विशिष्ट धातुके उत्तर पौनःपुन्य (frequency) और अतिशय (intensity) अर्थमें यङ् प्रत्यय होता है (१)। यङ्का य रहता है। यङन्त धातु आत्मनेपदी होता है (२)।

२७५। "सन् यङोः।" यङ् प्रत्यय परे होनेसे धातु अभ्यस्त होता है और सब अभ्यस्त कार्य प्राप्त होता है।

२७६। "दीर्घोऽकितः।" यङ् प्रत्ययान्त धातुके पूर्वभागके अकारके स्थानमें आकार होता है। यथा, लप्—लालप्यते; तप्—तातप्यते; लष्—लालष्यते।

---

(१) "धातोरेकाचो हलादेः क्रियासमभिहारे यङ्।" किन्तु एकाधिकस्वरयुक्त सूत्र, सूच, ऊर्णु और स्वरादि अश्, अट् और ऋ-धातुओंके उत्तर भी इसी अर्थमें यङ् होता है। यथा, सूत्र—सोसूत्र्यते; सूत्र—सोसूत्र्यते; सूच्—सोसूच्यते; ऊर्णु—ऊर्णोनूयते; अट्—अटाट्यते; अश्—अशाश्यते; ऋ—अरार्यते। शुभ् और रुच् धातुओंके उत्तर पौनःपुन्य अर्थमें यङ् होता है अतिशय अर्थमें नहीं। "नित्यं कौटिल्ये गतौ" इस सूत्रके अनुसार कौटिल्य (टेढ़ा) अर्थमें ही गत्यर्थक धातुओंके उत्तर यङ् होता। यथा, कुटिलं व्रजति—वाव्रज्यते; कुटिलं क्रामति—चङ्क्रम्यते; कुटिलं गच्छति—जङ्गम्यते इत्यादि। गॄ, लुप्, सद्, चर्, जभ्, जप्, दश् और दह् धातुओंके उत्तर केवल गर्हार्थमें यङ् होता है।

(२) णिजन्त तथा सनन्त धातुके ऐसा यङन्त धातु भी स्वतन्त्र धातुओंमें गिना जाता है और समस्त धातुकार्य प्राप्त होता है। लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् विभक्तियोंमें यङन्त धातुके रूप भ्वादिगणीय धातुके तुल्य होते हैं।

२७७। "गुणो यङ्लुकोः।" यङ् प्रत्ययान्त धातुके पूर्व-भागको गुण होता है। यथा, शुच्—शोशुच्यते, दीप्—देदीप्यते, लुप्—लोलुप्यते, रुद्—रोरुद्यते, सिच्—सेसिच्यते, भिद्—बेभिद्यते।

२७८। "नुगतोऽनुनासिकान्तस्य।" यङ् प्रत्यय होनेसे नान्त और मान्त धातुके पूर्वभागस्थित स्वरवर्णके परे अनुस्वार होता है। यथा, जन्—जञ्जन्यते (१); मन्—मम्मन्यते; क्रम्—चङ्क्रम्यते; गम्—जङ्गम्यते (२)।

२७९। "रीगृदुपधस्य च।" ऋकारोपध-धातुके पूर्वभागके परे री होता है। यथा, नृत्—नरीनृत्यते; सृप्—सरीसृप्यते; कृष्—चरीकृष्यते।

२८०। "रीङृतः।" ऋकारान्त धातुके ऋके स्थानमें री होता है। यथा, कृ—चेक्रीयते; सृ—सेस्रीयते (३)।

---

(१) जाजायते भी होता है। (२) चल्—चाचल्यते; गल्—जागल्यते। (३) कुछ यङन्त धातुके लट् प्र० पु० एकवचनका रूप:—भू बोभूयते; दा देदीयते; मा मेमीयते; हा जेहीयते; पा पेपीयते; स्था तेष्ठीयते; गै जेगीयते; सो सेषीयते; ज्वल् जाज्वल्यते; नी नेनीयते; मुह् मोमुह्यते; लिह् लेलिह्यते; श्रु शोश्रूयते; श्वि शोशूयते, शेश्वीयते; कु कोकूयते (कु, अ० और तु०) चोकूयते; गॄ जेगिल्यते; स्मृ सास्मर्यते, सद् सासद्यते; वञ्च् वनीवच्यते; पत् पनीपत्यते; पद् पनीपद्यते; स्रंस् सनीस्रस्यते; ध्वंस्—दनीध्वस्यते; भ्रंस् बनीभ्रस्यते; स्कन्द् चनीस्कद्यते; यम् यंयम्यते; दह् दन्दह्यते; दंश् दन्दश्यते; भञ्ज् बम्भज्यते; जप् जञ्जप्यते; दप् दादप्यते; हन् (हिंसार्थ) जेघ्नीयते, अन्य अर्थमें जङ् घन्यते; दृश् दरीदृश्यते; वृत् वरीवृत्यते; प्रच्छ् परीपृच्छ्यते; ग्रह् जरीगृह्यते; चर् चञ्चूर्यते-चंचूर्यते; फल् पम्फुल्यते-पंफुल्यते; व्ये वेवीयते; स्वप् सोषुप्यते; वश् वावश्यते; घ्रा जेघ्रीयते; ध्मा देध्मीयते; शी शाशय्यते; रुच् रोरुच्यते; शुभ् शोशुभ्यते।

लुट्, लृट्, लृङ्, आशीर्लिङ्, लिट्, लुङ्।

२८१। "यस्य हलः।" लुट् आदि विभक्तियोंमें व्यञ्जन वर्णके परस्थित यङ्का लोप होता है। यथा, लुट्—शोशुचिता; लृट्—शोशुचिष्यते; लृङ्-अशोशुचिष्यत; आशीर्लिङ्—शोशुचिषीष्ट; लिट्—शोशुचाम्बभूव, शोशुचामास, शोशुचाञ्चक्रे; लुङ्—अशोशुचिष्ट।

Note:—धातुके उत्तर यङ् प्रत्यय करनेके पश्चात् कभी कभी यङ्का लोप किया जाता है। यङ् लोप होनेपर भी यङन्तके अभ्यासादि सब कार्य होते हैं और धातु यङ् लुगन्त कहे जाते हैं। यङ् लुगन्त धातु परस्मैपदी होते हैं और इसकी गणना अदादिगणमें की जाती है। यङ् लुगन्त धातुके उत्तर हलादि पित् सार्वधातुक विभक्ति (अर्थात् लट्की ति, सि, मि, लोट्की तु; लङ् की द्, स्: और लुङ् की द् विभक्ति) हो तो उसके उत्तर विकल्पमें ईट्का आगम होता है। वेदमें भू धातु को यङ् लुगन्त प्रयोगमें गुण नहीं होता, परन्तु लौकिक प्रयोगमें गुण होता ही है। यङ् लुगन्तका प्रयोग वेदमें ही अधिक है, लोकमें कम। यङ् लुगन्त भू धातुके हलादि पित् सार्वधातुक विभक्तिमें रूप। यथा—लट् ति-बोभवीति, बोभोति; सि—बोभवीषि, बोभोषि; मि—बोभवीमि, बोभोमि; लोट् तु—बोभवीतु, बोभोतु; लङ् द्—अबोभवीत्, अबोभोत्; स्—अबोभवी, अबोभोः; लुङ् त्—अबोभूवीत्, अबोभोत्।

Exercise.

1. *Translate into Sanskrit using one word for the italicised words in each sentence*:—He *reads* this book *over and over again*. Tigers *frequently roam* in the dense forest. Why *do* you *cry repeatedly?* The old father *mourns constantly*. The boys *dance again and again*. We *remember* you *very often*. They *did it more than once*. The girl *will constantly smell* the flower. *Does* he *stealthily go there over and over again?* They *are looking at* me *again and again*.

Substitute single words for :—पुन: पुनरश्नाति; पुन: पुनर्वक्रमृच्छति; पुन: पुनर्ददाति; पुन: पुन: पिबति; गर्हितं गिरति; पुन: पुनर्हन्मि; भृशं रोदिषि; गर्हितं जपत:; पुन: पुनर्भ्रामः।

3. *Correct giving reasons*:—कृषको भूमिं चरिकृष्यति। असौ वनमप्राध्यन् कुटीरं ददर्श। रोरुद्यती बालिका मां प्राह। बालकोऽयम् लल जगम्यते। युवती नरीनृत्यति।

नाम-धातु (Nominal or Denominative Verbs).

२८२। नाम अर्थात् शब्दों के उत्तर कईएक प्रत्यय (१) होते हैं। उन सब प्रत्ययों के होनेसे शब्द धातु-रूपको प्राप्त होता है और उसे नामधातु कहते हैं।

२८३। सब नामधातुओं के रूप भ्वादिगणीय धातुके सदृश होते हैं।

२८४। "काम्यच।" आत्मसंक्रान्त इच्छा (२) बोध होनेसे शब्दके उत्तर काम्य (च्) और परस्मैपद होता है। यथा, आत्मन: पुत्रमिच्छति, पुत्रकाम्यति (He desires to have a son); आत्मनो धनमिच्छति, धनकाम्यति; आत्मनो यश इच्छति, यशस्काम्यति। लट्—पुत्रकाम्यति; लोट्—पुत्रकाम्यतु; लङ्—अपुत्रकाम्यत्; विधिलिङ्—पुत्रकाम्येत्; लुट्—पुत्रकाम्यिता; लृट्—पुत्रकाम्यिष्यति; लृङ्—अपुत्रकाम्यिष्यत्; आशीर्लिङ्—पुत्रकाम्यात्; लिट्—पुत्रकाम्याम्बभूव, पुत्रकाम्यामास, पुत्रकाम्याञ्चकार; लुङ्—अपुत्रकाम्यीत्।

२८५। "सुप आत्मन: क्यच्।" आत्मसंक्रान्त इच्छा (२)

---

(१) काम्यच्, क्यच्, क्यङ्, क्विप्, णिच् प्रभृति प्रत्यय अर्थविशेषमें होते हैं। क्यङ् प्रत्ययान्त नामधातु आत्मनेपदी और सब प्रत्ययान्त नाम-धातु प्राय: परस्मैपदी होते हैं। (२) अन्यसंक्रान्त इच्छा बोध होनेसे नहीं होता। यथा पुत्रस्य पुत्रमिच्छति इत्यादि स्थलमें पुत्रकाम्यति अथवा पुत्रीयति ऐसा प्रयोग नहीं होता।

बोध होनेसे शब्दके उत्तर क्यच् और परस्मैपद होता है (१)। क्यच्का य रहता है।

२८६। "क्यचि च।" क्यच् प्रत्यय करनेपर शब्दके अन्त-स्थित अकारके स्थानमें ई होती है और ह्रस्वस्वर दीर्घ होता है। यथा—आत्मनः पुत्रमिच्छति, पुत्रीयति (He wishes to have a son); आत्मनः पतिमिच्छति, पतीयति (२)।

२८७। "अशनायोदन्यधनायाः बुभुक्षापिपासागर्द्धेषु।" बुभुक्षा (भोजनकी इच्छा) अर्थमें अशन-शब्दके उत्तर क्यच् होता है और अशन शब्दके अन्त्य अ-के स्थानमें आ होता है। यथा, अशनायति (He wishes to eat) (३)।

२८८। पिपासा (पीनेकी इच्छा) अर्थ में उदक-शब्द के उत्तर क्यच् होता है और उदक-शब्दके स्थान में उदन् होता है। यथा, उदन्यति (४)।

२८९। "नमोवरिवश्चित्रङः क्यच्।" नमस् तरत् और वरिवस् शब्दों के उत्तर करण (doing) अर्थमें क्यच् होता है।

---

(१) अव्यय शब्द और मकारान्त शब्दोंके उत्तर क्यच् नहीं होता, काम्य होता है। यथा, स्वरिच्छति इस अर्थमें स्वःकाम्यति; किमिच्छति इस अर्थमें किं-काम्यति।

(२) इस अर्थमें क्यच् प्रत्ययके दूसरे उदाहरण—आत्मनः कर्त्तारमिच्छति कर्त्रीयति (कर्तृ+क्यच्); गिर् गीर्यति; पुर् पूर्यति; आत्मनो गामिच्छति, गो गव्यति; नौ नाव्यति; राजन् राजीयति; गार्ग्य गार्गीयति; दिव् दिव्यति विद्वस् विद्वस्यति; वाच् वाच्यति; पुमस् पुंस्यति; समिध् समिध्यति; लुट्—समिधिता, समिध्यिता।

(३) उसी रूपसे ग्रहण करनेकी इच्छा बोध होनेसे धन-शब्दके भी अ-के स्थानमें आ होता है। यथा—धनरूपेण ग्रहीतुमिच्छति, धनायति। अन्य अर्थमें अशनीयति, धनीयति होते हैं।

(४) दूसरे अर्थमें उदकीयति होता है।

यथा—नमः करोति, नमस्यति (देवान्); तपः करोति, तपस्यति; वरिवः (सेवाम्) करोति, वरिवस्यति *serves* (गुरून्)।

२६०। "उपमानादाचारे" आचरण-अर्थमें कर्मवाचक (१) उपमानके उत्तर क्यच् होता है। यथा—शिष्यं पुत्रमिव आचरति, पुत्रीयति शिष्यम्; द्विजं विष्णु मिवाचरति विष्णूयति द्विजम भृत्यं सखायमिव आचारति, सखीयति भृत्यम्; मित्रं रिपुमिव आचरति, रिपूयति मित्रम् (२)।

"रीङृतः।" अन्तस्थित ऋ-के स्थानमें री होता है। यथा—उपाध्यायं पितरमिव आचरति, पित्रीयति उपाध्यायम्; परस्त्रीं मातरमिव आचरति, मात्रीयति परस्त्रीम्।

२६१। "कर्त्तुः क्यङ् सलोपश्च।" आचरण-अर्थमें कर्त्तृवाचक उपमानके उत्तर क्यङ् तथा आत्मनेपद होता है। क्यङ्का य रहता है।

२६२। क्यङ् परे रहनेसे शब्द के अन्तस्थित न् और स् का

---

(१) अधिकरणवाचक उपमानके उत्तर भी क्यच् होता है। प्रासादीयति कुट्यां भिक्षुः (The beggar looks upon his cottage as a palace); कुटीयति प्रासादे (He looks upon the palaces as if it were his cottage); पर्य्यङ्कीयति मञ्चके (Looks upon the raised wooden bed as a couch)।

(२) अतितृष्णा (Excessive desire) अर्थ बोध होनेसे प्रातिपदिक और क्यच्के मध्यमें विकल्पसे स् और अस् का आगम होता है। यथा—मधु मधुस्यति, मध्वस्यति; दधि दधिस्यति दध्यस्यति; सामान्य इच्छा बोध होनेसे नहीं होता। यथा, मधूयति, मदधीयत। आत्मप्रीति (One's own satisfaction) अर्थ बोध होने से क्यच् परे लवण, क्षीर, अश्व, और वृष शब्दोंके उत्तर स्-का आगम होता है। यथा, लवणस्यति उष्ट्रः (The camel wants salt for its own satisfaction); क्षीरस्यति बालः (The boy wants milk for his own satisfaction)। ऐसा—अश्वस्यति (वड़वा), वृषस्यति (गौः)।

लोप होता है। यथा, राजन्—राजायते; अप्सरस्—अप्सरायते; ओजस्—ओजायते।

२६३। क्यङ् परे रहनेसे शब्दके अन्तस्थित ह्रस्वस्वरको दीर्घ होता है और पयस् शब्दके स्-का विकल्पसे लोप होता है। यथा—पुत्र इव आचरति, पुत्रायते; हंस इव आचरति, हंसायते; शिष्य इव आचरति, शिष्यायते; सखा इव आचरति, सखीयते; पय इव आचरति, पयायते पयस्यते (१)। अन्तस्थित ऋ-के स्थानमें री होता है। यथा—पितेव आचरति, पित्रीयते मातेव आचरति, मात्रीयते (२)।

२६४। "शब्दवैरकलहाभ्रकण्वमेघेभ्यः करणे।" करण (doing) अर्थमें शब्द, वर तथा कलह (३) शब्दों के उत्तर क्यङ् होता है। यथा—शब्दं करोति, शब्दायते; वैरं करोति, वैरायते; कलह करोति, कलहायते।

२६५। "सुखादिभ्यः कर्तृवेदनायाम्।" अनुभव-अर्थमें सुख, दुःख (४) और कृच्छ्र शब्दोंके उत्तर क्यङ् होता है। यथा—

---

(१) ऐसे, यशस्-यशायते, यशस्यते; विद्वस्-विद्वायते, विद्वस्यते।

(२) क्यङ् करनेसे कहीं कहीं स्त्रीलिङ्ग शब्द को पुंवद्भाव होता है। यथा—कुमारीव आचरति, कुमारायते। ऐसा—गुर्वी, गुरूयते; सुन्दरी, सुन्दरायते; युवती, युवायते; विदुषी, विद्वायते-विद्वस्यते; सपत्नी, सपत्नायते-सपतीयते-सपत्नीयते। किन्तु उपधामें क रहने से प्रायः नहीं होता। यथा—पाचिका, पाचिकायते। त्वमिवाचरति इस अर्थमें युस्मद्+क्यङ्+ते=त्वद्यते अहमिवाचरति, अस्मद्+क्यङ्+ते=मद्यते; यूयमिवाचरति, युष्मद्+क्यङ्+ते=युष्मद्यते; वयमिवाचरति, अस्मद्+क्यङ्+ते=अस्मद्यते।

(३) अभ्र, कण्व (पाप), मेघ, प्रलोप, कन्द, नीहार, दुर्दिन, सुदिन आदि शब्दोंके उत्तर भी करण अर्थमें क्यङ् होता है। यथा—अभ्रायते, कण्वायते, मेघायते इत्यादि।

(४) तृप, करुण, कृपण प्रभृति शब्दों के उत्तर भी कर्तृवेदना अर्थमें क्यङ् होता है। यथा—तृप्रायते, करुणायते, कृपणायते।

सुखं वेदयते, सुखायते ; दुःखं वेदयते, दुःखायते ; कृच्छ्रं वेदयते, कृच्छ्रायते (१)।

२६६। "बाष्पोष्मभ्यामुद्वमने, फेनाच्चेति वक्तव्यम्।" उद्वमन-अर्थमें बाष्प, फेन, धूम और उष्मन् शब्दों के उत्तर क्यङ् होता है। यथा—बाष्पमुद्वमति, बाष्पायते ; फेनमुद्वमति, फेनायते ; धूममुद्वमति, धूमायते ; उष्माणमुद्वमति, उष्मायते।

२६७। "कर्मणो रोमन्थतपोभ्यां वर्त्तिचरोः।" चर्वित को अपकर्ष कर पुनः चर्वण अर्थमें रोमन्थ शब्दके उत्तर क्यङ् होता है। यथा—रोमन्थायते चर्वितमपकृष्य पुनः चर्वयतीत्यर्थः।

२६८। "भृशादिभ्यो भुव्यच्वेर्लोपश्च हलः।" भृश, शीघ्र, चपल, मन्द, पण्डित, उत्सुक, सुमनस्, दुर्मनस्, उन्मनस् शब्दोंके उत्तर अभूततद्भाव (२) अर्थमें क्यङ् होता है (३)। यथा, अभृशो भृशो भवति, भृशायते; अशीघ्रः शीघ्रो भवति, शीघ्रायते; अचपलश्चपलो भवति, चपलायते ; अमन्दो मन्दो

---

(१) बहुतोंके मतमें "पापं चिकीर्षति" इस अर्थमें ही कृच्छ्रायते होता है, कर्तृवेदना अर्थमें नहीं। "पापं चिकीर्षति" इस अर्थमें गहनायते, सत्रायते, कक्षायते भी सिद्ध होते हैं। "कष्टाय क्रमणे" अर्थात् पापं कर्त्तुमुत्सहते इस अर्थमें कष्टायते होता है। कारण इनके मतमें कष्ट, सत्र, गहन कक्ष तथा कृच्छ्र शब्दोंके उत्तर पाप-प्रवृत्ति अर्थमें ही क्यङ् होता है।

(२) वस्तु वा व्यक्ति जिस भावमें नहीं था उसी भावमें होना।

(३) अभूततद्भाव अर्थमें भृशादि शब्दोंके उत्तर क्यङ्, तथा च्वि प्रत्यय होते हैं। यथा, अभृशो भृशो भवति—(क्यङ्) भृशायते, (च्वि) भृशीभवति। अभूततद्भाव अर्थमें लोहित, नील, हरित, मन्द, फेन, मद्र प्रभृति शब्दोंके उत्तर क्यष्, और डाच् प्रत्ययान्तसे अभूततद्भाव अर्थ फेन होने पर भी होता है। क्यष् का य रहता है और क्यष् प्रत्ययान्त नामधातु उभयपदी होते हैं। यथा, अलोहितो लोहितो भवति। इस अर्थमें लोहित+क्यष्—लोहितायति लोहितायते; च्वि—लोहिती भवति। ऐसे नीलायति-ते; नीलीभवति इत्यादि डाच् प्रत्ययान्त—पटपटाभवति, पटपटायति-ते; पटपटाभवति।

भवति, मन्दायते; अपण्डितः पण्डितो भवति, पण्डितायते; अनुत्सुक उत्सुको भवति, उत्सुकायते; असुमनाः सुमना भवति, सुमनायते; अदुर्मना-दुर्मना भवति, दुर्मनायते; अनुन्मना उन्मना भवति, उन्मनायते।

२९९। "सर्वप्रातिपदिकेभ्यः क्विब्वा वक्तव्यः।" आचरण अर्थमें कर्तृवाचक उपमानके उत्तर क्विप् होता है। क्विप् का कुछ नहीं रहता। क्विप् करनेसे परस्मैपद होता है। यथा—पुत्र इव आचरति, पुत्रति; शिष्य इव आचरति, शिष्यति; सखा इव आचरति, सखयति; कविरिव आचरति, कवयति; बन्धुरिव आचरति, बन्धवति; गुरुरिव आचरति, गुरवति; पितेव आचरति, पितरति; मातेव आचरति, मातरति।

३००। "तत्करोति तदाचष्टे" करण (doing और कथन saying) अर्थोंमें शब्दके उत्तर णिच् होता है। णिजन्त-प्रकरणमें जो सब विधान हैं यहाँ भी यथासम्भव वे ही सब होते हैं। प्रश्नं करोति, प्रश्नयति (१) शब्दं करोति, शब्दयति।

३०१। णिच् करनेसे पृथु, मृदु और दृढ शब्दों के ऋ-के स्थान में र होता है और अन्त्यस्वरका लोप होता है। यथा—पृथुं करोति, प्रथयति; मृदुं करोति, म्रदयति; दृढं करोति, द्रढयति (२)।

३०२। णिच् करनेसे स्थूलके स्थानमें स्थव, दूरके स्थानमें दव, अन्तिकके स्थानमें नेद, और बहुलके स्थानमें बंह होता है। यथा—स्थूलं करोति, स्थवयति; दूरं करोति, दवयति (Places

---

(१) आख्यान अर्थात् कथन-अर्थमें शब्दके उत्तर णिच् होता है, यथा प्रश्नमाचष्टे प्रश्नयति।

(२) ऐसे—कृश, क्रशयति; भृश, भ्रशयति।

at a distance); (१) अन्तिकं करोति, नेदयति (nears); (२) बहुलं करोति, बंहयति (multiplies) (३)।

(१) "दूराद्दा" संक्षिप्तसारके इस सूत्रके अनुसार दूरयति भी होता है। "दूरयति अवनते विवस्वति"—कालिदासः।

(२) अर्थविशेषमें शब्दविशेषके उत्तर णिच् होता है। यथा—त्वचं गृह्णाति, त्वचयति; कलिं गृह्णाति, कलयति; रूपं पश्यति, रूपयति; वर्णं गृह्णाति, वर्णयति; पाशं विमुञ्चति विपाशयति; लोमान्यनुमार्ष्टि, अनुलोमयति; श्लोकैरुपस्तौति, उपश्लोकयति; वीणया उपगायति, उपवीणयति; वस्त्रेण समाच्छादयति, संवस्त्रयति; वर्म्मणा संनह्यति, संवर्म्मयति; हस्तिना अतिक्रामति, अतिहस्तयति; चूर्णैरवध्वंसते, अवचूर्णयति; सेनया अभिमुखं याति, अभिषेणयति; चीवरं (कोपीनम्) अर्जयति परिदधाति वा, सञ्चीवरयते (भिक्षुः); पुच्छमुत्क्षिपति, उत्पुच्छयते (गौः) इत्यादि। सत्यमाकरोति, सत्यापयति। ऐसा, वेद-वेदापयति; अर्थ—अर्थापयति। एकस्वर विशिष्ट अकारान्त शब्दका भी ऐसा होता है। यथा, स्व—स्वापयति।

(३) ऐसा हीः—"करोति आचष्टे वा" इस अर्थमें, युवन्—युवयति, कनयति; वृद्ध—वर्षयति, ज्यापयति; अल्प—अल्पयति, कनयति; प्रशस्य—प्रशस्ययति; क्षिप्र—क्षेपयति; क्षुद्र—क्षोदयति; प्रिय—प्रापयति; स्थिर—स्थापयति; उरु—वरयति; गुरु—गरयति; पटु—पटयति; लघु—लघयति; दीर्घ-द्राघयति; ह्रस्व—ह्रसयति; कर्तृ—कारयति; "बहोर्भूरिति" बहु करोति आचष्टे वा, भावयति। वसुमन्तं करोति आचष्टे वा इस अर्थमें वसुमत्—वसयति; स्रग्विन्—स्रजयति; ब्रह्मार्णी—ब्रह्मयति इत्यादि।

कण्डू प्रभृतिके उत्तर यक् होता है। वोपदेवके मतमें कण्डू आदि शब्दोंके उत्तर कृति (अर्थात् करण, doing) अर्थमें यक् होता है; पाणिनिके मतमें कण्डू आदि धातुके उत्तर स्वार्थमें यक् होता है। "यक्" का य रहता है। यथा, कण्डू (गात्रविघर्षण, खुजलाना)—कण्डूयति-ते; असु-असू (उपताप)—असूयति-ते; हृणी (लज्जा)—हृणीयते; मही (पूजा)—महीयते।

Exercise.

1. *Distinguish between* :—मालीयति, मालीयते; उदन्यति, उदकीयति; अशनायति, अशनीयति; लवणस्यति, लवणायति; दधिस्यति, दधीयति।

2. *Give one word for each* :—पृथुं करोति, दृढं करोति, स्थूलं करोति, दूरं करोति, अन्तिकं करोति, बहुलं करोति, आत्मनः यशः इच्छति, तपः करोति, सखा इव आचरति, असिना लुनाति, वस्त्रेण समाच्छादयति, हस्तिना अतिक्रामति, पाशं विमुञ्चति चीवरमर्जयति।

3. *Under what circumstances are* क्यच्, क्यङ्, णिच् and क्विप् used to form nominal verbs? Give examples.

4. *Translate into Sanskrit using nominal verbs* :—Good boys treat their teacher like their fathers. The old king wishes to have a son. A good teacher looks upon his pupil as his own son. Fire smokes. Cows chew the cud. Even poison, given by a mother, acts like nectar. The lambs are bleating. Ram regards a Brahmin as Vishnu himself. Why do you muddle (आविल) this pure water? Let my servant whitewash (धवल) my house. Why are you so heavy at heart? The locomotive steam engine (वाष्पीययानम्) shortens the distance of a far-off place. Easily digestible nutritious food hardens and fattens the body.

5. *Correct* :—सा स्त्री तव मातरीयति । अनलः जलायति । बालकाः कलहायन्ति । छागः रोमन्थयति । सत्प्रभुः भृत्यान् सखायते । सः नरः दुर्मनसायते । दुर्जनः सुजनते । सा दृढयति । स उपाध्यायं पितरीयते ।

परस्मैपद-विधान ।

३०३ । (व्याङ्-परिभ्यो रमः) रम्-धातु आ० पदी किन्तु वि, आ ङ्), परिपूर्वक रम्-धातु परस्मैपदी होता है । यथा—विरमति (ceases, stops, abstains), आरमति (takes rest), परिरमति (is pleased, sports).

३०४ । (उपाच्च) उप पूर्वक रम्-धातु परस्मैपदी होता है । यथा—स यज्ञदत्तम् उपरमति (उपरमयतीत्यर्थः He *causes* Jajnadatta *to desist*) । (विभाषाऽकर्मकात्) किन्तु उप+रम् अकर्मक होनेसे उभयपदी होता है । यथा, उपरमति, उपरमते (desists, dies), स कार्यात् उपरमति उपरमते वा (He desists from the work).

३०५ । (अनुपराभ्यां कृञः । कृ-धातु उभयपदी, किन्तु अनु और परा पूर्वक कृ-धातु परस्मैपदी ही होता है, यथा, अनुकरोति (imitates) पराकरोति (rejects, slights) (१) ।

३०६ । (अभिप्रत्यतिभ्यः क्षिपः) क्षिप्-धातु (तुदा) उभयपदी किन्तु अभि, प्रति, अति पूर्वक क्षिप्-धातु परस्मैपदी ही होता है । यथा—अभिक्षिपति, प्रतिक्षिपति, अतिक्षिपति (overthrows, excels) (२) ।

---

(१) श्रिया यद्वेषानुकरोति पूर्दिवं, पराकरोत्यन्यमहीभृतां पुरोः ।

(२) साक्षादभिक्षिपति योऽस्यमुमेव मूढम्, तं न प्रतिक्षिपति भूपतिरस्तगर्वः । स विद्यया वृहस्पतिमप्यतिक्षिपति ।

३०७। (प्राद्वहः) वह्-धातु उभयपदी किन्तु प्र पूर्वक वह्-धातु परस्मैपदी ही होता है। यथा, प्रवहति (flows, bears) (१)।

३०८। (लिट् लटो म्रुङः लृङ् लुटोश्च) मृ-धातु आ० पदी किन्तु लिट्, लुट्, लृट् और लृङ् विभक्तियोंमें परस्मैपदी ही होता है। यथा—ममार, मर्त्ता, मरिष्यति, अमरिष्यत्।

३०९। (परेर्मृषः) दिवादिगणीय मृष्-धातु (to suffer) उभयपदी किन्तु परि पूर्वक मृष्-धातु परस्मैपदी ही होता है। यथा—परिमृष्यति (युक्त किमत्र परिमृष्यति दीर्घकालम्)।

३१०। (बुधयुधनशजनेङ्प्रुद्रुस्रुभ्यो णेः) बुध्, युध्, नश्, जन्, अध्ययनार्थक अधि पूर्वक इ (इङ्) धातु तथा प्रु, द्रु और स्रु-धातु णिजन्त होनेसे केवल परस्मैपदी होते हैं। यथा, बोधयति, योधयति, नाशयति, जनयति, अध्यापयति, प्राव-यति, द्रावयति, स्रावयति (२)।

३११। (निगरणचलनार्थेभ्यश्च) भोजनार्थक और चलना-र्थक धातु णिजन्त होनेसे केवल परस्मैपदी होते हैं। यथा, निगारयति, भोजयति, आशयति, चलयति, कम्पयति इत्यादि। किन्तु (अदेः प्रतिषेधः) णिजन्त अद्-धातु उभयपदी होता है। यथा—आदयति, आदयते; (माता शिशुना अन्नं आदयति आदयते वा)।

---

(१) प्रवहति (flows) सरिदियं शान्तसलिला चित्ते न हि प्रवहति (bears) प्रभुरेव कोपम्।

(२) कुमुदान्येव शशाङ्कः सविता बोधयति (blooms forth) पङ्कजान्येव। स युधि योधयन्तमरिं योधयति। सन्तोषः दुःखं नाशयति धर्म्मः सुखं जनयति। गुरुः शिष्यमध्यापयति। स्रावयेदपि पयोदमकाले द्रावयेदपि सुधा सुरनाथम्। प्रावयेदपि गिरीन् भुजतुङ्गान् पार्थिवेषु गणनास्य न काचित्।

३१२। (अणावकर्म्मकाच्चित्तवत्कर्त्तृकात्) यदि किसी अकर्म्मक धातुका अणिजन्त अवस्थामेँ प्राणी कर्त्ता हो तो णिजन्त अवस्थामेँ वह केवल परस्मैपदी होता है। यथा, (अणिजन्त) पुत्रः शेते, (णिजन्त) माता पुत्रं शाययति। यहाँ अणिजन्त अवस्थामेँ शी-धातु अकर्मक है और उसका कर्त्ता "पुत्रः" प्राणी है, इसलिये णिजन्त अवस्थामेँ शी+णिच्=शायि-धातु केवल परस्मैपदी हुआ है। ऐसे—शिशुर्जागर्त्ति, माता शिशुं जागरयति; वत्सः क्रीडति, गोपो वत्सं क्रीडयति। प्राणी कर्त्ता न होने से नहीँ होता। यथा, जलं शुष्यति, सूर्य्यो जलं शोषयति शोषयते वा; नदी वर्द्धते, जलदकालो नदीं वर्द्धयति वर्द्धयते वा (१)।

अतिरिक्त।

१। (द्युद्भ्यो लुङि) लुङ् विभक्तिमेँ द्युतादि-धातु उभयपदी होते हैँ। यथा, अद्युतत् अद्योतिष्ट; अरुचत्, अरोचिष्ट।

२। (वृद्भ्यः स्यसनोः) लृट् और लृङ् विभक्तियोँमेँ और सन् परे रहनेसे वृतादि (वृत् वृध् शृध् स्यन्द् और कृप्) धातु उभयपदी होते हैँ। यथा, वर्त्स्यति, वर्त्तिष्यते; अवर्त्स्यत, अवर्त्तिष्यत; विवृत्सति, विवर्त्तिषते।

---

(१) "न पा दम्याङ्यमाङ्यस-परिमुह-रुचि-नृति वद वसः।" पा, दमि, आङ्+यम्, आङ्+यस्, परि+मुह्, रुचि, नृति, वद्, वस्—ये सब धातु णिजन्त होनेपर (३११और३१२सूत्रोँके अनुसार परस्मैपदका विधान रहते भी) परस्मैपदी नहीं होते। यथा—पाययते, दमयते, आयामयते, आयासयते, परिमोहयते, रोचयते, नर्त्तयते, वादयते, वासयते। "आगमेः क्षान्तौ" णिजन्त आ+गम्-धातु केवल क्षान्ति अर्थात् प्रतीक्षा अर्थमेँ आत्मनेपदी होता है। यथा, स कालमागमयते (प्रतीक्षते इत्यर्थः) He awaits the time. क्षान्ति भिन्न अर्थमेँ परस्मैपदी होता है। यथा, गोपी धेनुमागमयति (brings)।

३। (लुटि च क्लृपः) लुट् विभक्तिमें क्लृप्—धातु उभयपदी होता है। यथा, कल्प्तासि, कल्पितासे कल्प्तासे।

आत्मनेपद-विधान।

३१३। (नेर्विशः) विश्-धातु परस्मैपदी होता है, किन्तु नि पूर्वक विश्-धातु आत्मनेपदी होता है। यथा, निविशते (enters)—राजा नगरं निविशते।

३१४। (परिव्यवेभ्यः क्रियः) क्री-धातु उभयपदी, किन्तु वि, परि और अवपूर्वक क्री-धातु आत्मनेपदी ही होता है। यथा, विक्रीणीते (sells) परिक्रीणीते (buys), अवक्रीणीते buys, lets out)।

३१५। (विपराभ्यां जेः) जि-धातु परस्मैपदी, किन्तु वि और परा पूर्वक जि-धातु आत्मनेपदी होता है। यथा, विजयते (conquers) पराजयते (defeats); वीरः शत्रून् विजयते पराजयते वा (The hero conquers or defeats his enemies)।

३१६। (आङो दोऽनास्यविहरणे) दा-धातु उभयपदी, किन्तु आ पूर्वक दा-धातु आत्मनेपदी ही होता है। यथा, आदत्ते (takes or accepts)—विद्यामादत्ते, अस्त्रमादत्ते। आस्य विहरणे (१) अर्थात् मुख के विस्तार अर्थमें परस्मैपदी होता है। यथा, मुखं

(१) "अनास्यविहरणे"=आस्यविहरणे (मुखविस्तार-अर्थमें) आ० पदी नहीं होता। यहाँ आस्य शब्द अविवक्षित इसलिये केवल विस्तार अर्थ लिया गया है। किसी किसी के मत में आस्य विहरण का अर्थ स्वाङ्ग (अपना अङ्ग) विस्तार है। इसलिये पराङ्ग विस्तार अर्थमें आ+दा धातु आत्मनेपदी होता है। यथा, व्याददते पिपीलिकाः पतङ्गस्य मुखम्। ग्रहण (to take) अर्थमें आ+दा-धातु आत्मनेपदी ही होता है। यथा, सहस्रगुणमुत्स्रष्टुमादत्ते हि रसं रविः (रघु), नादत्ते केवलां लेखां हर-चूड़ामणिकृताम् (कुमार), फलान्यादत्स्व चित्राणि (भट्टि), विनिश्चितार्था-मिति वाचमाददे (भारवि)।

व्याददाति सिंहः (The lion *opens* his mouth *wide*), नदी कूलं व्याददाति (The river *breaks open* its bank), वैद्यो विस्फोटकं व्याददाति (The surgeon *opens* the boil)।

३१७। (क्रीडोऽनुसम्परिभ्यश्च) क्रीड् धातु परस्मैपदी है, किन्तु परि, अनु, आ (१) और सम् पूर्वक क्रीड्-धातु आत्मनेपदी होता है। यथा, परिक्रीडते, अनुक्रीडते, आक्रीडते, संक्रीडते (plays) (२)। (समोऽकूजने) कूजन (अव्यक्त ध्वनि) अर्थ बोध होने से सम् पूर्वक क्रीड्-धातु आत्मनेपदी नहीं होता। यथा, संक्रीडति चक्रम्, संक्रीडन्ति विहङ्गमाः, संक्रीडन्ति शकटानि।

३१८। (किरतेर्हर्ष-जीविका-कुलायकरणेषु, अपाच्चतुष्पाच्छकुनिष्वालेखने) कृ-धातु परस्मैपदी है, किन्तु पक्षी अथवा चतुष्पद जन्तु कर्त्ता होनेसे और हर्षप्रकाश, आहारान्वेषण या वासग्रहणेच्छा हेतु आलेखन (scratching) अर्थ का बोध होने से अप पूर्वक कृ-धातु आत्मनेपदी होता है और धातुके आदिमें "स्" का आगम होता है। यथा, हर्षप्रकाश—अपस्किरते वृषभो हृष्टः (The bull scratches and scatters about earth in great glee) आहारान्वेषण—अपस्किरते कुक्कुटो भक्षार्थी (The cock scratches and throws about grass or earth with a desire to eat something); वासग्रहणेच्छा—अपस्किरते सारमेय आश्रयार्थी (The dog

(१) परर्यन्वबाङ्: क्रीडः" मुग्धबोध।

(२) संक्रीडन्ते मणिभिरमरप्रार्थिता यत्र कन्याः"—मेघदूत। अनु प्रभृतिकी कर्म्मप्रवचनीय संज्ञा होने से अर्थात् अनुप्रभृतिका सहार्थ (with or along with अर्थ) होने से उनके परस्थित क्रीड्-धातु परस्मैपदी होता है। यथा, स माधवं अनुक्रीडति—माधवेन सह इत्यर्थः (He plays with Madhawa)।

scratches and throws about grass with a desire to take shelter) (१)।

३१९। (आङि नुप्रच्छ्योः) नु और प्रच्छ् धातु परस्मैपदी है, किन्तु आ पूर्वक नु और प्रच्छ्-धातु आत्मनेपदी होते हैं। यथा, आनुते (yells) शृगालः, आपृच्छस्व (bid adieu to or take leave of) ते आत्मीयान् (relatives)।

३२०। (समवप्रविभ्यः स्थः) स्था-धातु परस्मैपदी है, किन्तु सम्, अव, प्र, और वि पूर्वक स्था-धातु आत्मनेपदी होता है (२) यथा, सन्तिष्ठते, अवतिष्ठते, प्रतिष्ठते, वितिष्ठते।

---

(१) चतुष्पद जन्तु या पक्षी कर्त्ता नहीं होनेसे नहीं होता। यथा, मल्लोऽपकिरति (The wrestler scratches the earth to obtain dust)। चतुष्पद जन्तु या पक्षी कर्त्ता हो और हर्षप्रकाशादि अर्थों का बोध भी हो किन्तु आलेखन अर्थ का बोध नहीं हो तो आत्मनेपद और "स्" का आगम नहीं होता। यथा, अपकिरत्यम्भो गजः (The elephant scatters the water about)।

(२) *Examples* :—न कोऽपि दरिद्रस्य वाक्ये सन्तिष्ठते (No one acts up to the words of a poor man); क्षणमात्रमत्र अवतिष्ठस्व or वितिष्ठस्व (Remain here for a moment); अहमधुना गृहं प्रतिष्ठे (Now I set out for home)। "आङः प्रतिज्ञायामुपसंख्यानम्। प्रतिज्ञा (solemn assertion) अर्थ बोध होने से आ पूर्वक स्था-धातु आत्मनेपदी होता है। यथा, शब्दं नित्यमातिष्ठते (शब्दोनित्य इति प्रतिज्ञां करोति, He solemnly asserts that souud is eternal)। "प्रकाशनस्थेयाख्ययोश्च" स्वाभिप्राय प्रकाश (disclosing one's intention) और स्थेय (मध्यस्थ स्वीकार, accepting one as an umpire or arbiter) अर्थ बोध होनेसे स्था-धातु आत्मनेपदी होता है। यथा—रामाय तिष्ठते सीता (Sita wishes to disclose her intentions to Rama); संशय्य कर्णादिषु तिष्ठते यः who, in dubious matters, accepts Karna and others as umpires or arbiters, *i. e.*, relies upon counsellors like Karna)।

३२१। (उदोऽनूर्द्ध्वकर्मणि-ईहायामेव) ऊर्द्ध्वकर्मचेष्टा (attempt to get up) भिन्न अन्य चेष्टाका बोध होनेसे उत् पूर्वक स्था-धातु आत्मनेपदी होता है। यथा, मुक्तौ स उत्तिष्ठते (मुक्तिविषये चेष्टते इत्यर्थः He exerts to get salvation)। ऊर्द्ध्व—चेष्टा अर्थात् उत्थान-अर्थ बोध होनेसे नहीँ होता। यथा, स आसनादुत्तिष्ठति (He rises from his seat)। चेष्टा-बोध नहीँ होने से भी नहीँ होता। यथा—ग्रामात् शतमुत्तिष्ठति (शतमुत्पद्यते, are obtained)।

३२२। (उपाद् देवपूजासङ्गतिकरणमित्रकरणपथिषु) देवपूजा, मिलन और मैत्रीकरण अर्थोंमें अथवा पथकर्त्ता होनेसे उप पूर्वक स्था-धातु आत्मनेपदी होता है (१) यथा, देवपूजा—विष्णुमुपतिष्ठते वैष्णवः (विष्णुं पूजयतीत्यर्थः, worships Vishnu)। मिलन—गङ्गा यमुनामुपतिष्ठते (यमुनया मिलतीत्यर्थः, unites with the Jamuna)। मैत्रीकरण—साधुमुपतिष्ठते साधुः (मित्रं करोतीत्यर्थः, makes friends with)। पथकर्त्ता—गङ्गामुपतिष्ठते पन्थाः (गङ्गां प्राप्नोतीत्यर्थः, leads to the Ganges)।

३२३। (अकर्मकाच्च) उप पूर्वक स्था-धातु अकर्मक होनेसे आत्मनेपदी होता है। यथा, भोजनकाले उपतिष्ठते

(१) "उपान्मंत्रकरणे" मन्त्रके द्वारा स्तुति-करण अर्थका बोध होनेसे उप पूर्वक स्था-धातु आत्मनेपदी होता है। यथा, गायत्र्या अर्कमुपतिष्ठते विप्रः (The Brahimn worships the sun-god by reciting Gayatri), स मन्त्रैः सूर्य्यमुपतिष्ठते (He invokes the sun with holy verses)। अन्य अर्थमें नहीँ होता। यथा, सोऽतिथिमातिथ्येनोपतिष्ठति (He waits upon the guest with hospitality), उपतस्थुर्महात्मानं धर्मपुत्रं युधिष्ठिरम् (They waited upon the noble-minded Yudhisthir, the son of Dharma)।

(He comes at dinner-time)। सकर्मक होनेसे नहीं होता। यथा, शिष्यो गुरुमुपतिष्ठति (The disciple approaches his preceptor)।

३२४। (वा लिप्सायाम्) लाभेच्छाका बोध होनेसे उप पूर्वक स्था-धातु विकल्पसे आत्मनेपदी (अर्थात् उभयपदी) होता है। यथा, धनिनमुपतिष्ठते उपतिष्ठति वा भिक्षुः (लाभेच्छया धनिसमीपं गच्छतीत्यर्थः)।

३२५। आङो यमहनः—स्वाङ्गकर्मकाभ्यां अकर्मकाभ्याञ्च) यम् और हन् परस्मैपदी धातु हैं, किन्तु स्वाङ्ग (आत्म-अवयव) कर्म होनेसे अथवा अकर्मक होनेसे आ पूर्वक यम् और हन्-धातु आत्मनेपदी होते हैं। स्वाङ्ग-कर्म यथा, आयच्छते (दीर्घं करोति, stretches, puts forth) पाणिमात्मीयम्; आहते (पीडयति, strikes) स्वीयं शिरः। अकर्मक यथा, आयच्छते (दीर्घो भवति, lengthens, spreads) आयच्छते तरुः (The tree spreads), आहते (पीडितो भवति, is struck or wounded) आहते तरुः वज्रेण, (The tree is struck by thunder)। पराङ्ग कर्म होनेसे नहीं होता। यथा, रामो रावणस्य शिरः आयच्छति, आहन्तीत्यर्थः। अङ्गको छोड़कर अन्य कर्म होनेसे भी नहीं होता। यथा, आयच्छति (draws up) कूपाद्रज्जुम्, आहन्ति (strikes) शत्रुम् (१)।

३२६। (समो गम्यृच्छिप्रच्छिस्वरत्यर्त्तिश्रु विदिभ्यः दृशेश्च) सम् पूर्वक गम्, ऋच्छ् (तुदा०) प्रच्छ, स्वृ, ऋ (भ्वादि), (ह्वादि),

(१) पराङ्ग कर्म होनेसे अथवा अङ्ग भिन्न अन्य कर्म होनेसे भी आत्मनेपदका प्रयोग मिलता है। यथा, "गाण्डीवी कनकशिलानिभं भुजाभ्यामाजघ्ने विषमविलोचनस्य वक्षः"—भारवि; "आहध्वं मा रघूत्तमम्"—भट्टि।

श्रु, विद् (अदा०) और दृश् धातु अकर्मक होनेसे आत्मनेपदी होते हैं। यथा, संगच्छते (संगतो भवति—अयमर्थः न संगच्छते, This meaning is not proper), समृच्छते, संपृच्छते, संस्वरते, समियृते, (ह्वादि, भ्वादि—समृच्छते), संशृणुते (हितान्न यः संशृणुते स किम्प्रभुः, He is a bad master who does not listen to his well-wisher), संविद्ते, संपश्यते। सकर्मक होनेसे नहीं होता। यथा, संगच्छति मित्रम् (He associates with a friend), संशृणोति शास्त्रम् (He hears the Shastras), संपश्यति ग्रामम् (He sees the village) (१)। किन्तु जानना (to recognise) अर्थमें सम् पूर्वक विद्-धातु सकर्मक होनेसे भी कहीं आत्मनेपदी होता है। यथा, मम जननी अपीदानीं मां न संविद्ते (Even my mother does not recognise me now)।

३२७। (स्पर्द्धायामाङः) ह्वे-धातु उभयपदी है, किन्तु स्पर्द्धा (युद्धार्थ आह्वान challenge) अर्थमें आ पूर्वक ह्वे-धातु आत्मनेपदी होता है (२)। यथा, मल्लमाह्वयते (challenges to combat) मल्लः। स्पर्द्धा भिन्न अर्थमें नहीं होता। यथा, पिता पुत्रमाह्वयति (calls)।

---

(१) "रक्षांसीति पुरापि संश्रृणुमहे"—अनर्घ राघव। मुरारिका यह प्रयोग व्याकरणदुष्ट है अथवा कथयद्भिः यह पद अध्याहृत करना। सम्+गम् (लुङ्—त)=समगत, समगंस्त; आशी०-सीष्ट=संगसीष्ट, संगंसीष्ट। सम्+ऋ लुङ्—प्र० पु० (भ्वा०) समार्त्त, समार्षाताम्, समार्षत; (ह्वा०)—समारत, समारेताम्, समारन्त। सम्+विद् (लट्—अन्ते) = संविदते, संविद्रते; लोट्—अन्ताम्=संविदताम्, संविद्रताम्; लङ्—अन्त=समविदत, समविद्रत।

(२) "निसमुपविभ्यो ह्वः"। नि, सम्, उप और वि पूर्वक ह्वे-धातु आत्मनेपदी होता है। यथा, निह्वयते, संह्वयते, उपह्वयते, विह्वयते; यज्ञादुपाह्वये प्रीतः संह्वयस्व विवक्षितम्। (भट्टि)।

३२८। (वृत्तिसर्गतायनेषु क्रमः) अप्रतिबन्ध (वृत्तिः un-obstruction), उत्साह (सर्गः perseverance, energy) और वृद्धि (तायनं increase) अर्थ बोध होनेसे क्रम्-धातु आत्मनेपदी होता है (१)। यथा, शास्त्रेषु क्रमते बुद्धिः (न प्रतिहन्यते इत्यर्थः His intellect is not obstructed in the study of the Shastras, *i. e.*, he easily comprehends them), अध्ययनाय क्रमते शिष्यः (उत्सहते इत्यर्थः shows eagerness or exherts himself), सतां श्रीः (wealth) क्रमते (वर्द्धते इत्यर्थः increases)।

३२९। (आङ उद्गमने) ग्रह नक्षत्र प्रभृति ज्योतिः पदार्थका उर्द्ध्व गमन बोध होनेसे (in the sense of ascending or rising of a luminary body) आ (आङ्) पूर्वक क्रम्-धातु आत्मनेपदी होता है। यथा, आक्रमते (rises) सूर्यः (नभोमण्डलमारोहतीत्यर्थः)। ज्योतिः-पदार्थ भिन्न अन्य पदार्थका उर्द्ध्व गमन बोध होनेसे नहीं होता। यथा, आक्रामति (issues forth or rises) धूमो हर्म्यतलात्; आकाशमाक्रामति (rises, spreads over, covers) धूमजालम् (a volume of smoke) (२)।

---

(१) "उपपराभ्यां" अप्रतिबन्ध प्रभृति अर्थोंमें उप और परा पूर्वक क्रम् धातु आत्मनेपदी होता है। यथा, उपक्रमते, पराक्रमते। उप और परा भिन्न अन्य उपसर्गके योगमें नहीं होता। यथा, संक्रामति। उप अथवा परा पूर्वक क्रम्-धातुको अप्रतिबन्ध, उत्साह और वृद्धि भिन्न अन्य अर्थमें नहीं होता। यथा, उपक्रामति (begins), पराक्रामति (displays prowess)।

(२) "उपमानेनापि यत्रोपमेयस्य ज्योतीरूपता प्रतीयते तत्राप्यात्मनेपदम्।" यथा, दिवमाक्रममाणेव केतुतारा भयप्रदाः —भट्टि। "अन्यथा न।" यथा, रविर्यथैवाक्रमते तमोपहस्तथायमाक्रामति वैरिमण्डलम्।—रावणार्जुनीय।

३३०। (वेः पादविहरणे) पदविक्षेप अर्थमें विपूर्वक क्रम्-धातु आत्मनेपदी होता है। यथा, साधु विक्रमते वाजी। अन्य अर्थमें नहीं होता। यथा, विक्रामति सन्धिः (द्विधा भवतीत्यर्थः), वाजिना विक्रामति राजा ।

३३१। (प्रोपाभ्यां समर्थाभ्याम्) आरम्भ अर्थमें प्र और उप पूर्वक क्रम्-धातु आत्मनेपदी होता है। यथा, प्रक्रमते भोक्तुम्, उपक्रमते भोक्तुम्, आरभते इत्यर्थः। आरम्भ अर्थका बोध नहीं होनेसे नहीं होता। यथा, प्रक्रामति (गच्छति), उपक्रामति (आगच्छति)।

३३२। (अनुपसर्गाद्वा) उपसर्गहीन क्रम् धातु विकल्पसे आत्मनेपदी होता है। यथा, क्रमते क्रामति (१)।

३३३। (अपह्नवे ज्ञः) ज्ञा-धातु उभयपदी है (२) किन्तु अपह्नव (अपलाप, अस्वीकार, denying) अर्थमें ज्ञा-धातु (३) आत्मनेपदी होता है। यथा, शतमपजानीते, उक्तमपजानीते, अपलपतीत्यर्थः।

३३४। (अकर्मकाच्च) ज्ञा-धातु अकर्मक होनेसे आत्मनेपदी होता है। यथा, सर्पिषो जानीते (सर्पिषा उपायेन प्रवर्त्तते

---

(१) ३२८ सूत्रके अनुसार अप्रतिबन्ध प्रभृति अर्थोंमें उपसर्गहीन क्रम्-धातु नित्य आत्मनेपदी होता है। और अप्रतिबन्ध, उत्साह और वृद्धि भिन्न अन्य सब अर्थोंमें उपसर्गहीन क्रम्-धातु उभयपदी होता है। यथा, यथास्य कीर्त्तिः क्रमते पयोनिधीन्, तथास्य श्रीः क्रामति नोपक्रमठतः —रावणार्जुनीय।

(२) अनु पूर्वक सकर्मक ज्ञा-धातु परस्मैपदी होता है। ततोऽनुजज्ञे गमनं सुतस्य। यहाँ कर्ममें प्रत्यय है नृपेण अध्याहार करके। (Then he gave his consent to the departure of his son); अनुजानीहि मामुटजगमनाय (Let me go to the hut made of leaves)।

(३) अप पूर्वक (generally with अप)।

इत्यर्थः, He proceeds to perform a sacrifice, having received ghee for it)।

३३५। (सम्प्रतिभ्यामनाध्याने) अनाध्यान (स्मरण भिन्न अन्य) अर्थमें सम् और प्रति पूर्वक ज्ञा-धातु आत्मनेपदी होता है। यथा, संजानीते (expects, looks for), प्रतिजानीते (promises)। स्मरण अर्थमें नहीं होता। यथा, पुत्रं संजानाति (स्मरतीत्यर्थः, remembers, recollects)।

३३६। (समः प्रतिज्ञाने) प्रतिज्ञा अर्थमें सम् पूर्वक तुदादिगणीय गृ-धातु आत्मनेपदी होता है। यथा, शतं संगिरते (प्रतिजानीते इत्यर्थः, promises); प्रतिज्ञा भिन्न अन्य अर्थमें नहीं होता। यथा, संगिरति ग्रासं (ददातीत्यर्थः, gives); संगिरति (भक्षयतीत्यर्थः, eats or swallows) ग्रासम् (the mouthful) (१)।

३३७। (उदश्चरः सकर्मकात्) चर्-धातु परस्मैपदी है, किन्तु उत् पूर्वक चर्-धातु सकर्मक होनेसे आत्मनेपदी होता है। यथा, गुरुवचनमुच्चरते (उल्लङ्घ्य गच्छतीत्यर्थः, oversteps, violates or disobeys)। अकर्मक होनेसे नहीं होता। यथा, उच्चरति धूमः (उद्गच्छतीत्यर्थः, rises up)।

३३८। (समस्तृतीयायुक्तात्) तृतीयान्त पदके योगमें सम् पूर्वक चर्-धातु आत्मनेपदी होता है। यथा, अश्वेन सञ्चरते, रथेन सञ्चरते। हेत्वर्थ तृतीयाके योगमें भी होता है। यथा, बुद्ध्या सञ्चरते नृपः। किन्तु सहार्थतृतीयाके योगमें नहीं होता। यथा, सैन्यैः सह सञ्चरति। सम् पूर्वक नहीं होनेसे नहीं होता। यथा, रथेन चरति। तृतीयान्त पद का योग

(१) "अवाद्ग्रः" अव पूर्वक तुदादिगणीय गृ-धातु आत्मनेपदी होता है। यथा, अवगिरते शोणितं पिशाचः (The devil drinks blood)।

नहीं होनेसे भी नहीं होता। यथा, उभौ लोकौ सञ्चरति इमञ्चामुञ्च देवलः (१)।

३३९। (उपाद्यमः स्वकरणे) स्वकरण अर्थात् स्वीकार (विवाह marrying; ग्रहण taking or accepting) अर्थमें उप पूर्वक यम्-धातु आत्मनेपदी होता है। यथा, रामः सीतामुपयच्छते (marries), शस्त्रमुपयच्छते (takes), शकटमुपयच्छते (takes or accepts) (२)।

३४०। (प्रोपाभ्यां युजेरयज्ञपात्रेषु) सम्, निर् और दुर् भिन्न अन्य उपसर्गके परस्थित युज्-धातु आत्मनेपदी होता है; किन्तु यज्ञपात्र कर्म रहनेसे नहीं होता। यथा, प्रयुङ्क्ते, नियुङ्क्ते, वियुङ्क्ते, उद्युङ्क्ते इत्यादि (३)। किन्तु संयुनक्ति, निर्युनक्ति, दुर्युनक्ति। प्रयुनक्ति यज्ञपात्राणि (makes use of the sacrificial vessels)।

---

(१) "दाणश्च सा चेच्चतुर्थ्यर्थे" चतुर्थी विभक्तिके अर्थमें तृतीया विभक्तिका प्रयोग होनेसे सम् पूर्वक दा (ण)-धातु आत्मनेपदी होता है। यथा, दास्या मालां संप्रयच्छते (दास्यै मालां ददातीत्यर्थः), संप्रायच्छन्त वन्दीभिरन्ये पुष्पफलं शुभम्। —भट्टि।

(२) यह नियम पाणिनि और संक्षिप्तसारके अनुसार है। मुग्धबोधके मतमें (उपयमो विवाहः) उप+यम् केवल विवाह अर्थमें आ० पदी होता है। (समुदाङ्भ्यो यमोऽग्रन्थे) कर्त्ता क्रियाके फलभागी होनेसे सम्, उत् और आ पूर्वक सकर्मक यम्-धातु आ० पदी होता है। यथा, व्रीहीन् संयच्छते (gathers); भारमुद्यच्छते (raises, lifts up); वस्त्रमायच्छते (puts on)। किन्तु ग्रन्थ कर्म होनेसे प० पदी होता है। यथा, उद्यच्छति (tries hard to learn) वेदम्, संयच्छति मन्त्रान्, आयच्छति चिकित्सां वैद्यः।

(३) *Examples*:—य इमामाश्रमधर्मे नियुङ्क्ते (appoints); पणबन्धमुखान् गुणानजः, षड पायुङ्क्त समीक्ष्य तत् फलम् (Considering their fruits, Aja employed the six expedients beginning with peace); अन्वयुङ्क्त (asked) गुरुमीश्वरः क्षितेः।

३४१। (भुजोऽनवने) रक्षा (पालन, protecting) भिन्न अन्य अर्थमें भुज्-धातु आत्मनेपदी होता है। यथा, ओदनं भुङ्क्ते (eats); बुभुजे (enjoyed) पृथिवीपालः पृथिवीमेव केवलाम्; अहं दुःखशतानि भुञ्जे (suffer)। रक्षार्थमें परस्मैपदी होता है। यथा, भुनक्ति (पालयतीत्यर्थः, protects) पृथिवीं राजा।

३४२। (स्वरितञितः कर्त्रभिप्राये क्रियाफले, णिचश्च) कर्त्ता स्वयं क्रियाके फलभागी होनेसे उभयपदी धातुके और णिजन्त धातुके उत्तर केवल आत्मनेपद होता है। उभयपदी यथा, यजते विप्रः (The Brahmin performs the sacrifice for his own benefit) किन्तु यजति याजकः (The priest performs the sacrifice for the benefit of his यजमान)। णिजन्त यथा, कटं कारयते, ओदनं पाचयते (१)।

---

(१) (णेरणौ यत् कर्मणौ चेत् स कर्त्ताऽनाध्याने) अणिजन्त अवस्थाका कर्म णिजन्त अवस्थाका कर्त्ता होने से णिजन्त धातु आत्मने-पदी होता है। स्मरण अर्थमें नहीं होता। यथा, अणिजन्त—भक्ता हरिं पश्यन्ति, णिजन्त—हरिः भक्तान् दर्शयते (आत्मानमिति शेषः)। यहां अणिजन्त अवस्था का कर्म णिजन्त अवस्था में कर्त्ता होने के कारण "दर्शयते" आ० पद हुआ है। अणिजन्त—साधकाः शिवं पश्यन्ति, णिजन्त साधना साधकान् शिवं दर्शयति। यहाँ अणिजन्त अवस्थाका कर्म णिजन्त अवस्थामें कर्त्ता न होकर कर्म ही रह गया है इस लिए "दर्शयति" प० पद हुआ है, परन्तु यहां पुनरार्थस्याविवक्षायां दर्शयते भवः आ० प० होता है। अणिजन्त—भक्ता विष्णुं स्मरन्ति, णिजन्त—विष्णुः भक्तान् स्मारयति (आत्मानमिति शेषः)। यहाँ स्मरणार्थक होनेके कारण "स्मारयति" प० पद हुआ है, आ० पद नहीं हुआ। (भीस्म्योर्हेतुभये) कर्त्तासे धातु का अर्थ निष्पन्न होनेसे णिजन्त भी और स्मि धातु आ० पदी होता है। आ० पदी होनेसे णिजन्त भी-धातुके स्थानमें भाप् और भीष् और स्मि-धातुके स्थान में स्माप् आदेश होता है। यथा,

३४३। (ज्ञाश्रुस्मृदृशां सनः) ज्ञा, श्रु, स्मृ, और दृश् धातु सनन्त होनेसे आत्मनेपदी होते हैं। यथा, धर्मं जिज्ञासते, गुरुं शुश्रूषते, नष्टं सुस्मूर्षते (wishes to remember the thing lost), चन्द्रं दिदृक्षते। (नानोर्ज्ञः) अनुपूर्वक ज्ञा-धातु सनन्त होनेसे आत्मनेपदी नहीं होता। यथा, पुत्रमनुजिज्ञासति (wishes to give permission to the son)। (प्रत्याङ्भ्यां श्रुवः) प्रति और आङ् पूर्वक श्रु-धातु सनन्त होनेसे

जटिलः भापयते भीषयते वा; मुण्डः विस्मापयते। यहाँ भय तथा विस्मय कर्त्तासे उत्पन्न होता है, इसलिये आ० पद हुआ है। किन्तु कुञ्चिकया (earthworm) भाययति; रूपेण विस्मापयति। यहाँ भय तथा विस्मय कर्त्तासे उत्पन्न नहीं हुआ, इसलिए आ० पद नहीं होकर प० पद हुआ है।

(गृधिवञ्च्योः प्रलम्भने) प्रतारण (deceiving) अर्थ में णिजन्त गृध् और वञ्च् धातु आ० पदी होता है। यथा, राक्षसान् गर्धयते, वञ्चयते प्रतारयतीत्यर्थः। अन्य अर्थमें नहीं होता। यथा, श्वानं गर्धयति (makes the dog greedy), अहिं वञ्चयति (avoids the snake)।

(लियः संमाननशालीनीकरणयोश्च) पूजा (adoring), अभिभव (defeating) और प्रतारणा (deceiving) अर्थमें लापि (णिजन्त ली और ला) धातु आ० पदी होता है। यथा, जटाभिर्लापयते (becomes adorable on account of his matted hair), श्वानं दण्डेन लापयते (defeats the dog by means of a stick), बालमुल्लापयते (deceives the boy)।

(मिथ्योपपदात् कृञोऽभ्यासे) पौनःपुन्य (repetition) अर्थका बोध होनेसे मिथ्या शब्दके परस्थित णिजन्त कृ-धातु आ० पदी होता है। यथा, पदं मिथ्या कारयते (स्वरादिदुष्टं पदं पुनः पुनरुच्चारयतीत्यर्थः, repeatedly pronounces the *pada* with wrong and defective intonation, *i. e.*, repeatedly mispronounces the word)। मिथ्या शब्दके अप्रयोगमें नहीं होता। यथा, साधु पदं कारयति (pronounces the word correctly)। पौनःपुन्य बोध नहीं होनेसे नहीं होता। यथा, सकृत् (once) पदं मिथ्या कारयति। कृ-धातुके अप्रयोगमें भी नहीं होता। यथा, मिथ्या पदं वाचयति (repeatedly utters the word wrongly)।

आत्मनेपदी नहीँ होता। यथा, प्रतिशुश्रूषति, आशुश्रूषति। किन्तु देवदत्तं प्रति शुश्रूषते; यहां प्रति उपसर्ग नहीँ है, कर्मप्रवचनीय है, इसलिये आत्मनेपद हुआ है (१)।

अतिरिक्त।

(१)। (गन्धनावक्षेपणसेवनसाहसिक्यप्रतियत्नप्रकथनोपयोगेषु कृञः) कृ-धातु उभयपदी किन्तु गन्धन प्रभृति अर्थमैं उपसर्गयुक्त कृ-धातु आत्मनेपदी होता है। यथा, गन्धन (हिंसात्मकसूचन, disclosure of others faults prompted by envy or doing an injury to) उत्कुरुते शत्रुम् (discloses the enemy's faults); अवक्षेपण (भर्त्सन, censure or overcoming)—श्येनो वर्त्तिकामुदा कुरुते (भर्त्सयतीत्यर्थः The hawk overcomes a snail); सेवन (सेवा, serving)—राजानमुपकुरुते (सेवते इत्यर्थः, serves the king); साहसिक्य (साहस, acting violently, stealing or outraging)—परदारान् प्रकुरुते (तत्र साहसा प्रवर्त्तते इत्यर्थः takes other's wives); प्रतियत्न (गुणान्तराधान, adding another quality to, transforming,

---

(१) "पूर्ववत् सनः" प० पदी धातुके उत्तर सन् प्रत्यय करनेसे सनन्त धातु प० पदी और आ० पदी धातुके उत्तर सन् प्रत्यय करनेसे सनन्त धातु आ० पदी होता है। यथा, भू—बुभूषति; शी—शिशयिषते; जि—जिगीषति; वि+जि—विजिगीषते; नि+विश्—निविविक्षते। (शदेः शितः) किन्तु शद् (to cut, to sharpen, लट् शीयते) केवल लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् विभक्तियोँमेँ आ० पदी अन्यत्र प० पदी और (म्रियतेर्लुङ्लिङोश्च) मृ-धातु केवल लट्, लोट् लङ् विधिलिङ्, आशीर्लिङ् और लुङ् विभक्तियोँमेँ आ० पदी अन्यत्र प० पदी होता है, इसलिए इनसे निष्पन्न सनन्त धातु प० पदी ही होते हैँ। यथा, शिशत्सति, मुमूर्षति। किन्तु इनके उत्तर शतृ प्रत्यय नहीँ होता शानच् प्रत्यय होता है। यथा, शद्+शानच्=शीयमान, मृ+शानच्=म्रियमाण।

preparing, dressing)—पटस्य पटं वा उपस्कुरुते (पटस्य गुणान्तराधानं करोति, रञ्जयतीत्यर्थः, colours or dyes the cloth), एधोदकस्य उपस्कुरुते (fuel prepares, *i. e.*, boils water); प्रकथन (प्रकर्ष कथन, reciting)—गाथाः प्रकुरुते (प्रकर्षेण कथयतीत्यर्थः, recites stories); उपयोग (धर्मादिके लिये द्रव्य विनियोग, devoting or applying wealth to sacred purposes)—शतं प्रकुरुते राजा (धर्मार्थे विनियुङ्क्ते इत्यर्थः, The king devotes a hundred to the religious purpose)। दूसरे अर्थमें नहीँ होता। यथा कटं करोति।

(२)। (अधेः प्रसहने) क्षमा (forbearing, enduring) अथवा अभिभव (overpowering, overcoming) अर्थमैं अधि पूर्वक कृ-धातु आत्मनेपदी होता है। यथा, शत्रुमधिकुरुते क्षमते अभिभवति वा, pardons or conquers an enemy)। उपेक्षा (disregard) अर्थमैं भी अधि पूर्वक कृ-धातु आ० पदी होता है। यथा, भवादृशाश्चेदधिकुर्वते रतिं निराश्रया हन्त हता मनस्विता। दूसरे अर्थमैं नहीँ होता। यथा, मनुष्यानधिकरोति शास्त्रम् (The Shastras authorise men); राजा परराज्यमधिकरोति (The king takes possession of his enemy's kingdom)।

(३)। (वेः शब्दकर्म्मणः, अकर्म्मकाच्च)। शब्द (sound) कर्म होनेसे अथवा अकर्मक होनेसे वि पूर्वक कृ-धातु आ० पदी होता है। शब्द कर्म यथा, असौ नरः स्वरान् विकुरुते (That man makes various sorts of sounds), गायकः स्वरान् विकुरुते (The singer modulates the sounds)। अकर्मक यथा, छात्राः विकुर्व्वते (The students act at will), विकुर्व्वते सैन्धवाः (The horses move gracefully),

विकुर्व्वे नगरे तस्य पापस्याद्य रघुद्विषः (To-day I will act according to my will in the city of the wicked enemy of Raghu)। अन्यत्र नहीँ होता। यथा, क्रोधः चित्तं विकरोति (Anger perverts the mind)।

(४)। सम्माननोत्सञ्जनाचार्यकरणज्ञान-भृति-विगणनव्ययेषु नियः), यथा सम्मानन to give instructions in उत्सञ्जनम् (lifting up) आचार्यकरण investiture with the sacred thread), ज्ञान (instructing), भृति (employing on wages), विगणन paying off debts) और व्यय (spending) अर्थोंमेँ उपसर्गहीन वा उत्, उप, वि उपसर्गयुक्त नी-धातु आ० पदी होता है। शास्त्रे नयते (gives instructions in), स यष्टिं (stick) उपनयते (lifts up); पिता पुत्रं उपनयते (invests with the sacred thread); तत्त्वं नयते (instructs)। प्रभुः भृत्यं उपनयते (employs on wages); अहं ऋणं विनेष्ये (shall pay off); धनीशतं विनयते (The rich man spends his hundred Rs. for charity)।

(५)। (कर्त्तृस्थे चाशरीरे कर्म्मणि) कर्म अवयवहीन (devoid of physical form) हो और कर्त्तामेँ अवस्थित हो तो (साधारणतः वि तथा, अप उपसर्गयुक्त) नी-धातु आ० पदी होता है। यथा, ज्ञानी क्रोधं विनयते (The wise man restrains his anger ; मानिनि, मानमपनयस्व (give up); यहाँ क्रोध तथा मान अवयवहीन और कर्त्तामेँ अवस्थित है, इसलिये नी-आ० पदी हुआ है। किन्तु पुत्रः पितुः क्रोधं विनयति (appeases), स गण्डं (cheek or boil) विनयति (turns away or removes); यहाँ क्रोध कर्त्तामेँ अवस्थित नहीँ है और गण्ड अवयवहीन नहीँ है, इसलिये नी आ० पदी नहीँ हुआ।

(६)। (भासनोपसंभाषा-ज्ञान-यत्न-विमत्युपमंत्रणेषु वदः) भासन प्रभृति अर्थ बोध होनेसे वद्-धातु आ० पदी होता है। यथा, भासन (showing brilliance)—वदते मनुः स्मृतौ (Manu shows brilliance in Smriti); उपसंभाषा (conciliating, pacifying, consoling)—सदयः, पुरुषोऽयम् क्लिष्टानुपवदते (This kind man consoles the afflicted); ज्ञान (knowledge)—वदते पाणिनिर्व्याकरणे (Panini knows fully well to speak in Grammar); यत्न (toil, effort, enthusiasm)—क्षेत्रे वदते कृषकः (The cultivator toils in the field), स युद्धे वदते (Full of enthusiasm for war he says); विमति (difference of opinion, contradiction, quarrel)—छात्रा विवदन्ते (The students are contradicting one another), परस्परं विवदमानानामपि धर्म्मशास्त्राणाम् of the mutually conflicting Dharma-Shastras); उपमन्त्रण (coaxing, flattering, alluring) —दातारमुपवदते (praises the donor), गुरुः शिष्यमुपवदते (The preceptor allures the desciple)।

(७)। (व्यक्तवाचां समुच्चारणे) एक ही साथ अनेक मनुष्योंकी सुस्पष्ट (distinct) उक्ति (अर्थात् सहोक्ति) बोध होनेसे (सम् + प्र उपसर्गयुक्त) वद्-धातु आ० पदी होता है। यथा, संप्रवदन्तेवेदं ब्राह्मणाः (The Brahmins are reciting together the Veda loudly and distinctly)। मनुष्योंकी सहोक्ति नहीं होने से आ० पदी नहीं होता। यथा, एते खगाः संप्रवदन्ति (These birds are chirping together loudly); वरतनु, संप्रवदन्ति कुक्कुटाः (O beautiful one, the cocks are crowing)। सहोक्ति न होने से भी, नहीं होता। यथा, वदति ब्राह्मणः।

(८)। (अनोरकर्म्मकात्) व्यक्त वाक्यकी (अर्थात् कादि वर्णात्मक स्पष्ट मनुष्यवाक्यकी) उक्ति बोध होनेसे अनु पूर्वक अकर्मक वद्-धातु आ० पदी होता है। यथा, अनुवदते कठः कालापस्य। (The Katha Brahmin imitates, follows or is similar to the Kalap recension of the Vedas)। अकर्मक न होने से नहीं होता। यथा, पूर्वोक्तम् अनुवदति (Repeats or reproduces what has been said before)। व्यक्त वाक्य न होनेसे भी नहीं होता। यथा, अनुवदति वीणा (वीणा वंशस्य स्वनितमनुकरोतीत्यर्थः The harp imitates the sound of the flute)।

(६)। (विभाषा विप्रलापे) परस्पर विरुद्ध व्यक्त वाक्यकी सहोक्ति होनेपर (वि + प्र उपसर्गयुक्त) वद्-धातु विकल्पसे आ० पदी होता है। यथा, विप्रवदन्ते विप्रवदन्ति वा वैद्याः (The physicians are disputing)।

(१०)। (अपाद्वदः) कर्त्ता क्रिया के फलभागी होनेपर अप पूर्वक वद्-धातु आ० पदी होता है। यथा, धनकामो न्याय-मपवदते (The seeker after wealth disregards justice)।

(११)। (उद्विभ्यां तपः) उत् और वि उपसर्ग के परस्थित तप्-धातु अकर्मक होनेपर आ० पदी होता है। यथा, रविरुत्त-पते वितपते वा (The sun is shining)। (स्वाङ्ग कर्म्मकाच्च) निजाङ्ग कर्म हो तो सकर्मक उत्+तप् तथा वि+तप् आ० पदी होते हैं। यथा, उत्तपते वितपते वा पाणिं जनः (The man warms his hand)। निजाङ्ग कर्म न होनेसे नहीं होता। यथा, उत्तपति सुवर्णं सुवर्णकारः (The goldsmith heats the gold; चैत्रः मैत्रस्य पाणिमुत्तपति (Chaitra warms Maitra's hand) तपः शब्द कर्म होने से तप्-धातु कर्त्तृ वाच्य में आ० पदी होता है, और लट् आदि चार विभक्तियोंमें य

होता है। यथा, तप्यते तपस्तापसः (तपोऽर्ज्जयतीत्यर्थः earns)। अन्यत्र नहीँ होता। यथा, तपांसि तापसांस्तपन्ति (दुःखयन्तीत्यर्थः afflict)।

(१२)। कर्त्ता श्रद्धाविशिष्ट हो तो सृज्-धातु कर्त्तृवाच्य मैँ आ० पदी होता है और लट् आदि चार विभक्तियोँमैँ य होता है। यथा, सृज्यते (makes) स्त्रजं (wreath, garland) भक्तः (a devotee)। श्रद्धाविशिष्ट कर्त्ता नहीँ होनेसे प० पदी होता है। यथा, सृजति (makes) स्त्रजं मालिकः (a flower-seller)।

(१३)। (आशिषि नाथः) आशिस् अर्थात् अभिलषित वस्तु लाभ हो ऐसी इच्छा बोध होनेसे नाथ्-धातु आ० पदी होता है। यथा, सर्पिषः (ghee) नाथते यहाँ आशीर्वाद अर्थमैँ षष्ठी भी होती है सर्पिष् शब्द से (longs for) जनः (man) ऐसी इच्छा बोध नहीँ होनेसे प० पदी होता है। यथा, नाथति (begs) भूमिं नृपं विप्रः; नाथति (afflicts) शत्रुं बली (a strong man)।

(१४)। (आशंसेराशंसायाम्) आशंसा (आशा, hope) बोध होनेपर आ+शन्स् धातु आ० पदी होता है। यथा, तदा नाशंसे विजयाय सञ्जय (O Sanjaya, then I gave up all hopes of success)।

(१५)। (भाव कर्म्मणोः) भाववाच्य और कर्मवाच्यमैँ सब धातु आ० पदी होते हैँ। यथा, मया स्थीयते (I stay); त्वया चन्द्रो दृश्यते (The moon is being seen by you)।

(१६)। (हरतेर्गतताच्छील्ये) गति (gait, motion) के वा स्वभाव (conduct) के अनुकरण—(imitation, resemblance) अर्थका बोध होनेपर अनु पूर्वक हृ-धातु आ० पदी होता है। यथा, पैतृकमनुहरते अश्वः (The horse

resembles his father in motion or conduct)। गति वा स्वभाव भिन्न अन्य कुछके अनुकरण बोध होनेपर प० पदी होता है। यथा, पितुरनुहरति रूपेण पुत्रः (The son resembles his father in appearance)।

(१७)। (शप उपालम्भे) शपथ करनेका (सौगन्द खानेका swearing) अर्थ बोध होनेपर शप्-धातु आ० पदी होता है। यथा, प्रियायै शपते पतिः (The husband solemnly swears with the intention of satisfying his wife)। दूसरे अर्थमें प० पदी होता है। यथा, स मित्रं शपति (He curses his friend)। मुग्धबोध टीकाकार दुर्गादासके अनुसार शपथ भिन्न अर्थमें शप्-धातु उभयपदी होता है।

(१८)। (समः क्ष्णुवः) क्ष्णु-धातु प० पदी है, किन्तु सम्-पूर्वक क्ष्णु-धातु आ० पदी होता है। यथा, संक्ष्णुते शस्त्रं (whets or sharpens the weapon); उत्कण्ठां संक्ष्णुते (dispels anxiety)।

(१६)। (कर्त्तरि कर्म्मव्यतिहारे) क्रिया-विनिमय बोध होनेसे कर्तृवाच्यमें धातुके उत्तर आत्मनेपद होता है। यथा, व्यतिभवते अर्कइन्दुः (As the sun rises when the moon sets, so the moon rises when the sun sets); व्यतिलुनीते धान्यं ब्राह्मणः (A Brahmin cuts paddy like a cultivator)। व्यति+अस् (व्यतिहारमें आ० पद), लट् प्र० पु० व्यतिस्ते, व्यतिषाते, व्यतिषते; म० पु० व्यतिसे, व्यतिषाथे, व्यतिध्वे; उ० पु० व्यतिहे, व्यतिस्वहे, व्यतिस्महे।

(२०)। (न गति-हिंसार्थेभ्यः) क्रियाविनिमय अर्थ बोधहोनेसे गत्यर्थक, हिंसार्थक तथा शब्दार्थक धातु, और हस्-धातु

आ० पदी नहीं होता। यथा, व्यतिगच्छन्ति, व्यतिसर्पन्ति, व्यतिहिसन्ति, व्यतिघ्नन्ति, व्यतिजल्पन्ति, व्यतिहसन्ति। हृ-धातु गत्यर्थक होनेपर भी आ० पदी होता है। यथा, व्यतिहरन्ते।

(२१)। (इतरेतरान्योन्योपपदाच्च। परस्परोपपदाच्चेति वक्तव्यम्)। इतरेतर, अन्योन्य अथवा परस्पर शब्दका प्रयोग रहनेसे क्रियाविनिमय-अर्थ बोध होनेपर भी आत्मनेपद नहीं होता। यथा, इतरेतम् अन्योन्यं परस्परं वा व्यतिलुनन्ति। मुग्धबोधके अनुसार अन्योन्यार्थबोधक शब्दके प्रयोग रहनेसे भी नहीं होता। यथा, सम्पद्विनिमयेनोभौ दधतुर्भुवनद्वयम्—रघु। यहाँ विनिमय शब्द अन्योन्यार्थ बोधक है।

(२२)। (अनुपसर्गाज् ज्ञः) कर्त्ता क्रियाके फलभागी होनेपर उपसर्गरहित ज्ञा-धातु आत्मनेपदी होता है। यथा, गां जानीते। उपसर्गयुक्त होनेपर नहीं होता। यथा, स्वर्गलोकं न प्रजानाति मूढः। कर्त्ता फलभागी नहीं हो तो नहीं होता। यथा, गृहिणो गां जानाति गोरक्षकः।

(२३)। (विभाषोपपदेन प्रतीयमाने) कर्त्ता क्रियाके फलभागी यह बात यदि उपपदसे (अर्थात् पदके समीप प्रयुक्त अन्य पदसे) स्पष्टरूपसे समझा जाय तो धातु विकल्पसे आ० पदी होता है। यथा, स्वं यज्ञं यजति यजते वा। यहाँ कर्त्ता जो क्रियाके फलभागी यह स्वं उपपदसे समझा जाता है इसलिये विकल्पसे आ० पद हुआ। ऐसे—स्वं व्रीहिं संयच्छति संयच्छते वा; स्वं यज्ञं कारयति कारयते वा; स्वं कटं करोति कुरुते वा।

Exercise.

1. *Translate into Sanskrit*:—The Ganges flows (प्र+वह्) from the North to the South. The mother *lells* the child *to sleep* (शी+णिच्). The

bull *turns up the earth with joy* (अप+कृ). The boy scatters (अप+कृ) the flowers. The protector of the earth enjoyed (बुभुजे) the earth alone. The *sylvan deity* (वनदेवता) worships (उप+स्था) me with the offerings of fruit, flower and foliage. The *royal horse* (वाजी) *is walking* वि+क्रम्) *with good grace* (साधु). The smoke rises (आ+क्रम्) from the surface of the earth. He *does* not *listen to* (सम्+श्रु) the advice of his friends. A pious man *makes friends with* (उप+स्था) a pious man. His proposal *is* not *consistent with reason* (सम्+गम्). The traveller *set out* (प्र+स्था) with a party of the villagers. A virtuous man refrains (वि+रम्) from practising vice. I *am pleased* (परि+रम्) at your sight. Arjun did not desist from seeing the milkwomen (वल्लरी). According to religious rites, he married (उप+यम्) Mena who was respected even by the saints. Shakuntala, *though fond of ornaments* (प्रियमण्डनाऽपि) *does* not *pluck* (आ+दा) your foliage, through affection. He who *initiates* a boy *into the sacred ceremonies* (उप+नी) and teaches (अधि+इ+णिच्) him sacred learning, is called *Acharya*. At mid-night, while I was sleeping soundly in my bed, I was awakened by a noise proceeding from persons quarrelling with one another. The king, who protects his subjects as if they were his own children, himself

enjoys unending happiness. He challenges me *in a duel* (द्वन्द्वयुद्धे).

2. *Correct the following showing reasons:—*

संक्रीडन्ति रत्नैर्वालिकाः अलकायां; ब्राह्मणाः सूर्य्यं गायत्र्या उपातिष्ठन्; यूयं किं जिज्ञासध्वे? शठाः उत्क्रमं प्रजानाति; उत्तपते महीं भानुः; अश्वेन सञ्चरन् राजा मुनिकन्यां ददर्श; विनय सर्वथा क्रोध; चित्तं विकुरुते कामः; संजानीते स्वदेशमपराधी; सर्वमनुकुर्वन्ते शिशवः; अधिकरोति दैत्यान् देवकीनन्दनः; उपयच्छति सः राजा तां कन्यां सुलक्षणाम्; इदं कर्त्तुम् स प्रतिजानाति; कथमत्रावतिष्ठसि? शीघ्रं प्रतिष्ठ; नियोक्ष्यामि त्वामहमेकस्मिन् गुरुकर्म्मणि; रोगिणां शुश्रुषन्नहं प्राप्नोमि विपुलं सुखं; चन्द्रापीडस्यानुरागं जिज्ञासन्ती कादम्बरी प्राह; प्रवासगामी पुत्रः मातरमापृच्छति; ज्येष्ठतनयं राज्यं दत्वा राजा तपसे वनं प्रतस्थौ; मूर्खाः सदा निरर्थकं विवदन्ति।

3. *Illustrate and explain the difference in usage and meaning, if any, between:*—आक्रामति, आक्रामते; आददाति, आदत्ते; संजानाति, संजानीते; आहन्ति, आहते; भुनक्ति, भुङ्क्ते; उपतिष्ठति, उपतिष्ठते; सञ्चरति, सञ्चरते; भाययति, भीषयते; संगच्छति, संगच्छते; संक्रीडति, संक्रीडते; उच्चरति, उच्चरते; संगिरति, संगिरते; करिष्यामि, करिष्ये।

4. Say which *causative verbs* (णिजन्त धातु) are used in Parasmaipada and which in Atmanepada.

5. What roots *in desiderative form* (सनन्त) are used only in Atmanepada?

6. What roots with the prefix आङ् are used in Atmanepada ?

7. Explain and illustrate the following Sanskrit Rules :—(a) अणावकर्म्मकाच्चित्तवत्कर्त्तृकात् ; (b) आङो दोऽनास्यविहरणे ; (c) उदोऽनूर्द्ध्वकर्म्मणि ; (d) आङ उद्गमने ; (e) अपह्नवे ज्ञः ; (f) उपाद्यमः स्वकरणे ।

कर्मवाच्य और भाववाच्य प्रकरण ।*

Transitive-Passive and Intransitive-Passive Voices.

३४४ । (भावकर्मणोर्लस्यात्मनेपदम्) । कर्मवाच्य और

---

*संस्कृतमें प्रधानतः तीन वाच्य होते हैं—कर्तृवाच्य (Active voice), कर्मवाच्य (Passive voice) और भाववाच्य (Intransitive Passive or Impersonal Passive voice)। इनके सिवाय कर्मकर्तृवाच्य (Passive-Active or Reflexive-Passive voice), नामके और भी एक वाच्य होता है। "कर्तृवाच्य प्रयोगे तु प्रथमा कर्तृकारके। द्वितीयान्तं भवेत् कर्म कर्त्रधीनं क्रियापदम् ॥" कर्तृवाच्यके कर्त्तामें प्रथमा विभक्ति और कर्ममें द्वितीया विभक्ति होती है और क्रियापद कर्त्ताके अधीन होता है अर्थात् क्रियाके पुरुष तथा वचन कर्त्ताके पुरुष तथा वचनके अनुसार होते हैं (१५ पृष्ठ देखो)। "कर्मवाच्य-प्रयोगे तु तृतीया कर्तृकारके। प्रथमान्तं भवेत् कर्म कर्माधीनं क्रियापदम् ॥" कर्मवाच्यके कर्त्तामें तृतीया और कर्ममें प्रथमा विभक्ति होती है और क्रियापद कर्मके अधीन होता है अर्थात् क्रियाके पुरुष तथा वचन कर्मके पुरुष तथा वचनके अनुसार होते हैं। "भावे कर्मणि वाच्ये च सदा स्यादात्मनेपदम्। लडादिषु चतुर्ष्वेव यकारस्यागमो भवेत् ॥" कर्मवाच्यमें और भाववाच्यमें सभी धातु आत्मनेपदी हो जाते हैं और लट् आदि चार विभक्तियोंमें धातुओंके उत्तर यकारका आगम होता है, यथा—

कर्तृवाच्य—शिशुः ग्रन्थं पठति। शिशुः ग्रन्थौ पठति। शिशुः ग्रन्थान् पठति। अहं त्वां पश्यामि। त्वं मां पश्यसि।

भाववाच्यमें धातु आत्मनेपदी होता है, इसलिये धातुके उत्तर केवल आत्मनेपदकी ही विभक्तियां होती हैं।

कर्मवाच्य—शिशुना ग्रन्थः पठ्यते। शिशुना ग्रन्थौ पठ्येते। शिशुना ग्रन्थाः पठ्यन्ते। मया त्वं दृश्यसे। त्वया अहं दृश्ये।

"भावे कर्त्तृतृतीया स्यात् कर्मभावश्च सर्वदा। प्रथमपुरुषस्यैकवचनान्तं क्रियापदम्॥" भाववाच्यके कर्त्तामें तृतीया विभक्ति होती है, कर्म नहीं रहता और क्रियापदमें सदा प्रथमपुरुषके एकवचनकी विभक्ति होती है। यथा—

कर्त्तृवाच्य। बालकाः रुदन्ति। यूयं हसथ। अहं तिष्ठामि।

भाववाच्य। बालकैः रुद्यते। युष्माभिः हस्यते। मया स्थीयते।

"प्रयुज्यते भाववाच्ये कृदन्तं यत् क्रियापदम्। क्लीवलिङ्गं प्रथमैकवचनान्तञ्च तद्भवेत्॥" भाववाच्यमें क्त, तव्य, अनीय, य प्रभृति कृत् प्रत्ययान्त क्रियापद क्लीवलिङ्गके प्रथमाके एकवचनमें व्यवहृत होते हैं। यथा, तेन स्थितम्, मया स्थातव्यम्, त्वया लज्जनीयम् इत्यादि।

कर्त्तृवाच्यके सकर्मक क्रियापदको कर्मवाच्यमें और अकर्मक क्रियापदको भाववाच्यमें परिवर्त्तित किया जा सकता है और कर्म कर्त्तृवाच्यके क्रियापदको भाववाच्यमें परिवर्त्तित किया जा सकता है। यथा, रामो मृगं पश्यति (कर्त्तृ वा०), रामेण मृगो दृश्यते (कर्म वा०); रामः पश्यति, (कर्त्तृ वा०); रामेण दृश्यते (भाव वा०); वृक्षः छिद्यते (कर्म कर्त्तृ वा०), वृक्षेण छिद्यते (कर्मकर्त्तृ वा० से भाव वा०)।

इन चार वाच्योंके अतिरिक्त संस्कृतमें और भी चार वाच्य हैं, जिसे कारकवाच्य कहते हैं। यथा—(१) करणवाच्य (Instrumental voice), नीयते अनेनेति नयनम् (नी-धातुके उत्तर करणवाच्यमें अनट्); (२) सम्प्रदानवाच्य (Dative voice), सम्प्रदीयते अस्मै इति सम्प्रदानम् (सम्+प्र+दा सम्प्रदानवाच्यमें अनट्); (३) अपादानवाच्य (Ablative voice), उपाधीयते अस्मादिति उपाध्यायः (उप+अधि+इ+अपादानवाच्यमें घञ्); (४) अधिकरणवाच्य (Locative voice), शय्यते अस्मिन्निति शयनम् (शी+अधिकरणवाच्यमें अनट्)।

N. B. तिङन्त क्रियाओंका प्रयोग केवल कर्त्तृवाच्य, कर्मवाच्य, भाववाच्य और कर्मकर्त्तृवाच्यमें ही होता है, किन्तु कृत् प्रत्ययोंका प्रयोग सभी वाच्योंमें होता है।

३४५। कर्मवाच्यमें कर्मपदका जो पुरुष और जो वचन होता है क्रियापदका भी वही पुरुष और वही वचन होता है, अर्थात् कर्मपद अस्मद् होनेसे क्रियामें उत्तम पुरुषकी विभक्ति होती है; युष्मद् होनेसे मध्यमपुरुषकी और तद्भिन्न होनेसे प्रथम पुरुषकी विभक्ति होती है। ऐसे ही कर्मपद एकवचनका होनेसे क्रियापद भी एकवचनका होता है, द्विवचनका होनेसे क्रियापद भी द्विवचनका, और बहुवचनका होनेसे क्रियापद भी बहुवचनका होता है।

३४६। भाववाच्यकी क्रियामें सदा ही प्रथमपुरुषके एकवचनकी विभक्ति होती है।

३४७। (सार्वधातुके यक्) कर्मवाच्य तथा भाववाच्यमें लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ्, इन चार विभक्तियोंमें सर्वगणीय धातुके उत्तर य (क्) होता है और धातुओंके रूप दिवादिगणीय धातुके सदृश होते हैं। यथा, गम् गम्यते; पठ् पठ्यते; त्यज् त्यज्यते; भुज् भुज्यते; भिद् भिद्यते; छिद् छिद्यते; शुच् शुच्यते; स्पृश् स्पृश्यते; लभ् लभ्यते; नी नीयते; हन् हन्यते; ज्ञा ज्ञायते; सृज् सृज्यते; ध्मा ध्मायते; सेव् सेव्यते; लुप् लुप्यते। य परे रहने से शी-धातुके स्थानमें शय् होता है। यथा, शय्यते।

३४८। (घुमास्थेतीत्वम्) य परे रहनेसे दा, धा, मा, गा (to go), गै (to sing), हा, पा (पानार्थक to drink), सो और स्था, इन धातुओंके अन्त्यस्वरके स्थानमें दीर्घ ईकार होता है। यथा, दा दीयते; धा धीयते; मा मीयते; गा, गै गीयते; हा हीयते; पा पीयते; सो सीयते; स्था स्थीयते।

३४९। १२७ से लेकर १३५ तक नौ (९) सूत्रोंके अनुसार आशीर्लिङ् के परस्मैपदमें जिस धातुको जो कार्य्य होता है,

य प्रत्यय परे रहनेसे भी उस धातुको वही कार्य्य होता है। यथा—(१२७ सूत्रके अनुसार) जि जीयते; चि चीयते; श्रि श्रीयते; क्षि क्षीयते; श्रु श्रूयते; स्तु स्तूयते। (१२८ सूत्रके अनुसार) कृ क्रियते; भृ भ्रियते; हृ ह्रियते; मृ म्रियते। (१२६ सूत्रानुसार) स्मृ स्मर्य्यते; स्तृ स्तर्य्यते; ऋ अर्य्यते। (१३० सूत्रानुसार) तॄ तीर्य्यते; कॄ कीर्य्यते पॄ पूर्य्यते। (१३१ सूत्रानुसार) ग्रह् गृह्यते; प्रच्छ् पृच्छते; व्यध् विध्यते; यज् इज्यते। (१३२ सूत्रानुसार) वच् उच्यते; वद् उद्यते; वप् उप्यते; वस् उष्यते; वह् उह्यते; स्वप् सुप्यते। (१३३ सूत्रानुसार) ह्वे हूयते। (१३४ सूत्रानुसार) दन्श् दश्यते; भ्रन्श् भ्रश्यते; शन्स् शस्यते; मन्थ् मथ्यते; भन्ज् भज्यते; बन्ध् बध्यते (१)। (१३५ सूत्रानुसार) शास् शिष्यते।

३५०। य परे रहनेसे णिजन्त धातुके अन्तस्थित इकारका लोप होता है। यथा, कारि कार्य्यते; स्थापि स्थाप्यते; दूषि दूष्यते; दर्शि दर्श्यते।

लिट्, लुट्, लृट्, लृङ्, आशीर्लिङ्।

सेव्-धातु। लिट्—सिषेवे, सिषेवाते, सिषेविरे। लुट्—सेविता, सेवितारौ, सेवितारः। लृट्—सेविष्यते सेविष्येते, सेविष्यन्ते। लृङ्—असेविष्यत, असेविष्येताम्, असेविष्यन्त। आशीर्लिङ्—सेविषीष्ट, सेविषीयास्ताम्, सेविषीरन्।

भुज्-धातु। लिट्—बुभुजे, बुभुजाते, बुभुजिरे। लुट्—भोक्ता, भोक्तारौ, भोक्तारः। लृट्—भोक्ष्यते, भोक्ष्येते, भोक्ष्यन्ते। लृङ्—अभोक्ष्यत, अभोक्ष्येताम्, अभोक्ष्यन्त। आशीर्लिङ्—भुक्षीष्ट, भुक्षीयास्ताम्, भुक्षीरन्।

---

(१) इदित् धातुके "न्" का लोप नहीं होता। यथा, निन्द् निन्द्यते; वन्द् वन्द्यते; कुन्थ् कुन्थ्यते; नन्द् नन्द्यते; स्पन्द् स्पन्द्यते इत्यादि।

३५१। (स्य-सिच्-सीयुट्-तासिषु भावकर्मणोरुपदेशेऽज्झन-ग्रहदृशां वा चिण्वदिट् च) लुट्, लृट्, लृङ्, आशीर्लिङ्, इन चार विभक्तियोँमेँ स्वरान्त तथा ग्रह्, दृश्, और हन् धातुके उत्तर विकल्पसे इ (चिण्) होता है।

३५२। (चिण्वद्भावाद्वृद्धिः) इ परे रहनेसे धातुके अन्त्य-स्वरको और उपधा अकारको वृद्धि होती है। यथा, स्वरान्त-श्रु-धातु; लिट्—शुश्रुवे। लुट्—श्रोता, श्राविता। लृट्—श्रोष्यते श्राविष्येते। लृङ्—अश्रोष्यत, अश्राविष्यत। आशीर्लिङ्—श्रोषीष्ट, श्राविषीष्ट। ग्रह्-धातु; लिट्—जगृहे। लुट्—ग्रहीता, ग्राहिता। लृट्—ग्रहीष्यते, ग्राहिष्यते। लृङ्—अग्रहीष्यत, अग्राहिष्यत। आशीर्लिङ् ग्रहीषीष्ट, ग्राहिषीष्ट।

३५३। इ परे रहनेसे उपधा लघुस्वरको गुण होता है। यथा, दृश् धातु; लिट्—ददृशे। लुट्—द्रष्टा, दर्शिता। लृट्—द्रक्ष्यते, दर्शिष्यते। लृङ्—अद्रक्ष्यत, अदर्शिष्यत। आशीर्लिङ्—द्रक्षीष्ट, दर्शिषीष्ट।

३५४। इ परे रहनेसे हन्-धातुके "ह्" के स्थानमेँ घ् होता है। यथा, लिट्—जघ्ने। लुट्—हन्ता, घानिता। लृट्—हनिष्यते, घानिष्यते। लृङ्—अहनिष्यत, अघानिष्यत। आशीर्लिङ्— वधिषीष्ट, घानिषीष्ट।

३५५। इ परे रहनेसे आकारान्त धातुके उत्तर य् होता है। यथा, दा-धातु; लिट्—ददे। लुट्—दाता, दायिता। लृट्—दास्यते, दायिष्यते। लृङ्—अदास्यत, अदायिष्यत। आशीर्लिङ्—दासीष्ट, दायिषीष्ट।

३५६। (चिण् भावकर्मणोः) कर्मवाच्य और भाववाच्यमैं लुङ्की "त" विभक्तिके स्थानमैं इ (चिण्) होता है। इ परे रहनेसे अन्त्यस्वर और उपधा अकारको वृद्धि होती है और उपधा लघुस्वरको गुण होता है। यथा, वद्-धातु—अवादि-अवादिषाताम्, अवदिषत ; सिव्-धातु—असेवि, असेविषाताम्, असेविषत ; भज्-धातु—अभाजि, अभक्षाताम्, अभक्षत ; मन्-धातु—अमानि, अमंसाताम्, अमंसत (१)।

३५७। स्वरान्त तथा ग्रह्, दृश्, हन् और दा-धातु के लुङ्की त भिन्न अन्य विभक्तियोँमैं लुट् प्रभृतिके तुल्य कार्य होता है। यथा, श्रु-धातु—अश्रावि, अश्रोषाताम्-अश्राविषाताम्, अश्रोषत-अश्राविषत ; ग्रह्-धातु—अग्राहि, अग्रहीषाताम्-अग्राहिषाताम्, अग्रहीषत-अग्राहिषत ; दृश्-धातु—अदर्शि, अदृक्षाताम्-अदर्शिषाताम्, अदृक्षत-अदर्शिषत ; हन् धातु—अवधि-अघानि, अवधिषाताम्-अघानिषाताम्-अहसाताम्, अवधिषत-अघानिषत-अहसत ; दा-धातु—अदायि, अदिषाताम्-अदायिषाताम्, अदिषत-अदायिषत।

---

(१) कर्म्म और भाववाच्यमैं कुछ धातुओँके लुङ्की त विभक्तिके रूप। वद्—अवादि, पठ्—अपाठि, पच्—अपाचि, गम्—अगामि, कृ—अकारि, जि—अजायि, श्रु—अश्रावि, नी—अनायि, भू—अभावि, भिद्—अभेदि, कृष्—अकर्षि, जन्—अजनि, शम्—अशमि, शमि (शम्+णिच्)—अशमि अशामि, दम्—अदमि, अदामि, कम्—अकामि, वम्—अवामि, आ+चम्—आचामि, यम्—अयमि अयामि, वि+श्रम्—व्यश्रमि-व्यश्रामि, या—अयायि, जागृ—अजागारि, (जागृ+ णिच्) अजागारि, भञ्ज्—अभञ्जि-अभाञ्जि, लभ्—अलम्भि-अलाभि, प्र+लभ्—प्रालम्भि। भू-धातु (भाववाच्य, लिट् ए)—बभूवे।

कर्म्मकर्त्तृवाच्य (१) प्रकरण।

(Passive Active or Reflexive Passive Voice).

३५८ कर्म्मकर्त्तृवाच्यमें कर्म्मपद कर्त्तृपद हो जाता है और कर्म्मपद नहीं रहता और लट्, लोट्, लङ् विधिलिङ् इन चार विभक्तियोंमें सर्वगणीय धातुके उत्तर य (क्) होता है। इस वाच्यमें धातु आत्मनेपदी होता है, इसलिये केवल आत्मनेपदकी विभक्तियां होती हैं (२)। यथा, स्वयमेव भिद्यते वृक्षः गजेन किं भिद्यते; (नरेण पच्यमानं स्वयमेव) पच्यते भक्तम्।

---

(१) क्रियमाणन्तु यत् कर्म्म स्वयमेव प्रसिध्यति।
सुकरैः स्वैर्गुणैः कर्त्तुः कर्म्मकर्त्तेति तद्विदुः॥

(२) पच् और दुह् धातुको छोड़कर कर्मकर्त्तृवाच्यमें और किसी द्विकर्मक धातुका प्रयोग नहीं होता। इसलिये "याच्यते राजा (स्वयमेव) भूमिम्" ऐसा प्रयोग नहीं हो सकता; किन्तु "अपक्त आम्रः फलम्" (कालेन फलं पच्यमान आम्रवृक्षः स्वयं फलं अपक्त); अदुग्ध गौ दुग्धम् (गोपेन दुग्धं दुह्यमाना गौः स्वयं दुग्धं अदुग्ध) ऐसे प्रयोग होते हैं। जिन धातुओंका अर्थ कर्मस्थ अर्थात् जिन धातुओंसे निष्पन्न क्रियाओंका कार्यविशेष कर्मकारकमें स्पष्टरूपसे अनुभव किया जाता है, कर्म्मकर्त्तृवाच्यमें केवल उन ही धातुओं का प्रयोग होता है। यथा, छिद्यते वृक्षः (स्वयमेव); भिद्यते काष्ठं (स्वयमेव; पच्यते ओदनः (स्वयमेव)। छिद्-धातुका अर्थ छेदन, यह केवल वृक्षादिमें ही रह सकता है, छेदकर्त्तामें नहीं, इसलिये छिद्-धातुका अर्थ कर्मस्थ और छिद्-धातुका प्रयोग कर्म्मकर्त्तृवाच्यमें हुआ है। ऐसे भिद्-धातुका अर्थ भेद, विदारण; यह काष्ठादिमें ही रह सकता है, भेदकर्त्तामें नहीं, इसलिये भिद्-धातुका अर्थ कर्मस्थ और कर्म्मकर्त्तृवाच्यमें इसका प्रयोग हुआ है; पच्-धातुका अर्थ पाक (cooking), विक्लित्ति (Softening); यह केवल तण्डुलादिमें ही रह सकता है, पाककर्त्तामें नहीं, इसलिये पच् धातुका अर्थ कर्मस्थ है और इसका प्रयोग कर्म्मकर्त्तृवाच्यमें हुआ है। किन्तु जिन धातुओंसे निष्पन्न क्रियाओंका कार्यविशेष कर्म्मकारकमें परिलक्षित नहीं होता उन

EXERCISE.

1. *Translate into Sanskrit using* कर्म्मवाच्य *or* भाववाच्य:— Some sweetmeats are made from milk. A wise man never laments the death of his friends and relatives. Danger follows danger. Every one enjoys the fruits of his actions, good or bad. His horse Chaitak runs very fast. Ram

---

धातुओंका अर्थ कर्त्तृस्थ है और इसलिये कर्म्मकर्त्तृवाच्यमें उनका प्रयोग नहीँ होता। बुध्-धातुका अर्थ ज्ञान् (knowing) जो बोधकर्त्ता शिष्यादिमें ही रह सकता है। बोधका विषय ग्रन्थादिमें नहीँ, इसलिए बुध् धातुका कर्त्तृस्थ सुतरां कर्म्मकर्त्तृवाच्यमें इसका प्रयोग नहीँ होता। अतः "बुध्यते ग्रन्थः" (स्वयमेव) ऐसा प्रयोग नहीँ हो सकता। ऐसे ही गम्यते ग्रामः (स्वयमेव) इत्यादि प्रयोग नहीँ हो सकता। कर्म्मकर्त्तृवाच्यके कोई एक उदाहरण—

(१) "तृणानि भूमिरुदकं वाक् चतुर्थी च सूनृता। एतान्यपि सतां गेहे नोच्छिद्यन्ते कदाचन॥"

(२) "एकैव मूर्त्तिर्बिभिदे त्रिधा सा।"—कुमार।

(३) "परिहीयते गमनवेला"—शकुन्तला।

(४) "स्वयं प्रशाम्यतेऽल्पेऽपि परबाधावुपेयुषि"—माघ।

(५) "स्वयं प्रदुग्धेऽस्य गुणैरुपस्नुता"—किरात।

(६) "भिद्यते हृदयग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्वसंशयाः क्षीयन्ते चास्य कर्म्माणि तस्मिन् दृष्टे परावरे॥" सा० कौ०

कर्म्मकर्त्तृवाच्यमें, कुप् कुप्यति-ते; रन्ज् रज्यति-ते। लुङ् त—तप् अतप्त; रुध् अरुद्ध; कृ अकारि, अकृत; दुह् अदोहि, अदुग्ध। कर्म्मकर्त्तृवाच्यमें कुछ धातुओंके उत्तर य (क्) और इ (ण) नहीं होते। यथा, सनन्त कृ चिकीर्षते अचिकीर्षिष्ट; श्रन्थ् श्रथ्नीते, अश्रन्थिष्ट; ग्रन्थ् ग्रथ्नीते अग्रन्थिष्ट; ब्रू ब्रूते अवोचत, कॄ किरते, अकीर्ष्ट, अकरिष्ट, अकरीष्ट गॄ गिरते, अगीर्ष्ट, अगरिष्ट, अगरीष्ट दुह् दुग्धे, अदुग्ध, अदोही, नम् नमते, अनंस्त; भूषार्थक तनूस् तंसते, अतंसिष्ट; णिजन्त कारि कारयते, अचीकरत; स्नु स्नुते, अस्नविष्ट-अस्नोष्ट; श्रि श्रयते, अशिश्रियत-अश्रायिष्ट-अश्रयिष्ट; आत्मनेपदमें अकर्म्मक धातु आ+हन् आहते आवधिष्ट-आघानिष्ट, आहत।

heard a very sweet song sung *by the sylvan nymph* (वनदेवताभिः). Be pleased to take this offering of fruits and flowers. I do not know them. I saw a big lion in the forest. You should not lie down on the damp ground. A pious man is respected by all men. Who has killed the demon? Rama showed Sita the abodes of the hermits. Long live our beloved Emperor. Kindly fill (पॄ) this pitcher (कलसः) with the water of the Ganges. Birds leave their nests in the morning. The girls are plucking the flowers. Where do they live? The two boys fell down from a tree. Did you laugh? No, Sir, I did not. The powerful king will surely conquer all his enemies. He always remembers us. The parents and teachers should be obeyed with equal respects. A sickly man often wishes to eat spicy things. If you do not listen to what your teacher says you will not at all benefit by his teaching. Do you know who wrote the Ramayana? Has he got his desired object? Beautiful gardens are seen on all sides of Pataliputra.

2. *Change the voice of*:—इमे पक्षिणः मधुरं गायन्ति। ते सर्वे क्षेत्रे बीजानि वपन्ति। मुनयः वने वसन्ति। शिष्यो वेदमधीते। सदयो भवतु भवान्। अस्त्युत्तरापथे गृध्रकूटोनाम पर्वतः, तत्रैव रेवातीरे न्यग्रोधपादपे वका निवसन्ति, तस्य वटस्य अधस्तात् विवरे सर्पस्तिष्ठति। स रथात् पपात ममार च। त्वया वृथा रुद्यते। दाता चिरंजीवतु। विदिशायां कश्चित् प्रतापवान् नृपतिरासीत्। त्वं कुत्र गमिष्यसि ? मम पाशान् छेत्स्यसि। अनृतं मा वद।

3. *Correct*:—रामेण वनं जगाम। मार्जारेण पक्षिशावकान् खादति। भवान् फलमिदं गृह्यताम्। न ज्ञायतेऽह कुत्र त्वं वस्यते। वायसेन व्याधोऽपश्यत्। मया तत्र न जगाम। त्वया सत्वरमेव आगमिष्यसि। भक्तः प्रह्लादेन हरिः स्मरति। बालया पुष्पाणि चीयते। स्मर नित्यमनित्यता। जेष्यति तारकः इन्द्रेण। प्राज्ञेन उपायः चिन्तयेत।

लकारार्थ-निर्णय (१)।

(Rules for the use of Tenses and Moods).

३५६। "वर्त्तमाने लट्।" वर्त्तमानकाल (*Present tense*) में धातुके उत्तर लट् विभक्ति होती है। यथा, गम्—गच्छति, भू—भवति, दृश्—पश्यति, स्था—तिष्ठति।

---

(१) साधारणतः वर्त्तमानकालमें लट् होता है; अतीत (भूत) काल में लङ्, लिट् तथा लुङ् होते हैं और भविष्यत्कालमें लृट् तथा लुट् होते हैं। अंगरेज़ी Indicative Mood Present Indefinite और Present Progressive Tense के Verb का अनुवाद लटसे किया जाता है। यथा, Ram *laughs* रामो हसति; He *is going* home स गृहं गच्छति; The earth *moves* round the sun (universal truth नित्यवर्त्तमान-क्रिया) पृथिवी सूर्यं परितः आवर्त्तते; As the spot in the moon is *immersed* in her beams, so a single fault amidst the assemblage of merits—एकोहि दोषो गुणसन्निपाते निमज्जतीन्दोः किरणेष्विवाङ्कः। Historic Present और Habitual action बोध होनेपर अंगरेज़ीमें Verb, Past tense में हो, तो भी उसका अनुवाद लट्से किया जाता है। यथा, There *was* a city named Mahilaropya in the Deccan—अस्ति दाक्षिणात्ये महिलारोप्यं नाम नगरम्; A crow *used to sleep* on the branch of a tree—कश्चिद् वायसः वृक्षशाखायां स्वपिति। Immediate future or Recent past action का बोध होनेपर भी लट् का प्रयोग होता है (वर्त्तमानसामीप्ये वर्त्तमानवद् वा)। यथा, I *shall come presently*—अयमहमागच्छामि; When have you come? कदा आगतोऽसि? I *have come just now.*—अयमागच्छामि। भविष्यत्कालमें लट् का प्रयोग:—(*i*) यावत् और पुरा शब्दोंके योगसे (३६५), आर्य्य माधव्य! अवलम्बस्व चित्रफलकं यावत् आगच्छामि (*i. e.*, आगमिष्यामि)—शकु; इयमिव स एवाग्निर्भ्रान्तिं करोति (*i. e.*, करिष्यति) पुरायतः—नैषध; (*ii*) कदा और कर्हि शब्दोंके योगमें विकल्पसे (३६६), कदा त्वं गृहं गच्छसि गमिष्यसि वा; कर्हि स ददाति दास्यति वा। (*iii*) अङ्गरेज़ी Interrogative sentence को संस्कृतमें अनुवाद करनेमें कभी-कभी, What shall I do? किं करोमि?

३६०। "अनद्यतने लङ् परोक्षे लिट् (भूत-सामान्ये) लुङ्" अतीतकाल (*Past tense*) में धातुके उत्तर लिट्, लङ् और लुङ् विभक्तियाँ होती हैं। यथा, गम्-जगाम, अगच्छत्, अगमत्; भू-बभूवः अभवत्; अभूत्; दृश्-ददर्श, अपश्यत्, अदर्शत्; स्था-तस्थौ, अतिष्ठत् अस्थात् (१)।

Where shall I go? क गच्छामि? (*iv*) Condition बोध होनेपर कभी-कभी, यः पितरं हन्ति (*i. e.*, हनिष्यति) स नरकं याति (*i. e.*, यास्यति)। कथं शब्दके योगसे सब कालों में विकल्पसे लट् और विधिलिङ् होता है, यथा, कथं गच्छसि गच्छेः वा (३३७)।

(१) पाणिनिके अनुसार (अनद्यतने लङ्) अनद्यतन अतीत अर्थमें अर्थात् अतीत रात्रिके पश्चिम (शेष) याम (प्रहर) से लेकर परवर्ती रात्रिके प्रथम याम तक छः प्रहर के पहिलेकी घटनाको जतानेके लिये धातुके उत्तर लङ् होता है; अद्यतन अतीत अर्थमें लङ् नहीं होता। यथा, ह्यः (yesterday) कर्म्म अकरोत्। (परोक्षे लिट्) परोक्ष अनद्यतन अतीत अर्थमें अर्थात् जो अनद्यतन अतीत घटना वक्ता (बोलने वाले) के सामने नहीं हुई उसी घटनाको जतानेके लिए धातुके उत्तर लिट् होता है। यथा, रामो रावणं जघान। और (भूतसामान्ये लुङ्) साधारण अतीत अर्थमें अर्थात् अनद्यतन तथा अनद्यतन परोक्ष अतीत को छोड़कर और सब अतीत अर्थ में अतःएव अद्यतन अतीत अर्थ में ही लुङ् होता है। यथा, अद्याभूदवलोकनं मृगदृशः। पाणिनिके मतमें अनद्यतन भविष्यत् अर्थ में लुट् होता है। यथा, श्वः (to-morrow) कर्त्ता (he *will do*), श्वः भोक्ता (he *will eat*) इत्यादि। अनद्यतनके सिवाय और सब भविष्यत् अर्थ में लृट् होता है। यथा, अद्य गमिष्यति, वर्षान्तरे (*after a year*) भविष्यति सुखम् इत्यादि (३६१)। परन्तु शिष्टप्रयोगमें इन नियमों के बहुधा व्यतिक्रम देखने में आते हैं, इस हेतु मुग्धबोधकारने नियम किया है "भवद् भूत भव्ये लिता क्याद्याः" (क्याद्याः विभक्तयः तिलस्तिलः क्रमात् वर्त्तमानातीतभविष्यत्सु कालेषु स्युः)। मुग्धबोधकार बोपदेवके और आधुनिक वैयाकरणों के अनुसार अतीतकालमें लङ्, लुङ् तथा लिट् यथेच्छ प्रयोग किया जा सकता है और भविष्यत्कालमें साधारणतः लृट् का, और कभी-कभी लुट् का; केवल देखना चाहिये कि श्रुतिकटु-दोष नहीं हो। यथा, शेते स चित्तशयने मम

३६१। "(भविष्यति) अनद्यतने लुट्, लृट् शेषे च।" भविष्यत्काल (*Future tense*) में धातुके उत्तर लुट् और

मीनकूर्म्मकोलोऽभवन्नृहरिवामनजामदग्न्यः। योऽभूद्बभूव भरताग्रजकृष्णबुद्धः कल्की सताञ्च भविता प्रहरिष्यतेऽरीन्॥ याद रखना कि साधारणतः उत्तमपुरुषमें लिट् का प्रयोग नहीं होता; कर्त्ता की अप्रकृतिस्थता (*unconsciousness*) और दृढ़ अस्वीकृत (*absolute denial*) बोध होने पर ही उत्तमपुरुषमें लिट्का प्रयोग होता है। यथा, अप्रकृतिस्थता—निद्रितोऽहं रुरोद (I cried while asleep); दृढ़ अस्वीकृति—अहं सुरां (*wine*) न (*never*) पपौ (*did drink* or *have drunk*); कलिङ्गेषु स्थितोऽसि? नाहं कलिङ्गान् जगाम। (मत्संकलित उपक्रमणिका पृष्ठ १०२ पादटीका द्रष्टव्य)। अङ्गरेज़ोंके Indicative Mood Present perfect tense के verb का अनुवाद साधारणतः लङ् तथा लुङ् विभक्तिसे अथवा क्तवतु प्रत्ययान्त कृदन्त पदसे किया जाता है। कभी-कभी लिट् या क्त प्रत्ययान्त कृदन्त पदसे भी। यथा, He *has come* home—सगृहम् आगच्छत् (आगमत्, आगतवान्); त्वमिद मकरोः (अकार्षीत्; कृतवान्); He *has gone* home—स गृहं गतः (जगाम, अगच्छत्, अगमत्, गतवान्)। Past tense और Past Perfect tense का अनुवाद लङ्, लुङ्, लिट् अथवा क्त तथा क्तवतु प्रत्ययान्त कृदन्त पद से किया जाता है। यथा, I *saw* a lion, I *had seen* a lion—अहं सिंहमेकं अपश्यम् (अदर्शम्, ददर्श, दृष्टवान्) or मया कश्चित् सिंहो दृष्टः; He *went* there, He *had gone* there—स तत्र अगच्छत् (अगमत्, जगाम, गतवान् or गतः)। अङ्गरेज़ोंसे अनुवादका कुछ विशिष्ट उदाहरण—After he *had prepared* his lesson he came home—पाठमधीत्य स गृहमागतः; He came back *after* his *father had departed*—तस्य पितरि अपक्रान्ते स प्रत्यागतः; I told Ram *who had spoken* thus—; इत्युक्तवन्तं राममहमब्रवम्; *while he was thus speaking*, his mother came—एवं भाषमाणे तस्मिन् तस्य माता समागता; He *did tell* a lie—स खलु (नूनंवा) मृषा अभाषत or स मृषा अभाषत एव; He is or was or will be going or about to go—स गन्तुकामः or गन्तुमनाः अस्ति or बभूव or भविष्यति; As you

लट् होते हैं। यथा, गम्—गन्ता, गमिष्यति; भू—भविता, भविष्यति; दृश्—द्रष्टा, द्रक्ष्यति; स्था—स्थाता, स्थास्यति।

३६२। "लट् स्मे।" स्म-शब्दके योगमें अतीतकालमें लट् होता है। यथा, स मद्‌गृहमागच्छति स्म (*He came to my house*); स व्याकरणमधीते स्म (*He has read Grammar*); हन्ति स्म रावणं रामः (*Rama killed Ravan*); कस्मिंश्चिद्वने भासुरको नाम सिंहः प्रतिवसति स्म (*There lived in a forest a lion named Bhasuraka*).

---

are about to go, I should accompany you—यातुकामेन or यास्यता त्वया सह मया गन्तव्यम्; When I was about to go, he spoke me thus—गन्तुमनसम् or गमिष्यन्तं मां स एवमब्रवीत्; When *he will be about to go*, I shall honour him with a rich present—अहं गमिष्यन्तं or गन्तुकामं or गन्तुमनसं तं बहुमूल्येनोपहारेणार्च्चयिष्यामि; *He has been doing* this for three months—इदं कुर्वतस्तस्य मासत्रयं जातम्; *I had been staying* there for four months—तत्र स्थितस्य मम मासचतुष्टयं समतीतम्; *He shall have been doing* this for two months—इदं कुर्व्वतस्तस्य मासद्वयं यास्यति; *Has* he *gone* home?—अपि स गृहमगच्छत्? *Did* Ram *kill* Ravan? अपि रामो रावणं जघान? He gave money to the poor *throughout his life*—स यावज्जीवम् दीनेभ्यो धनमदात्; Shall you go?—गमिष्यसि किम्? To-day Shakuntala will go to the house of her husband—यास्यत्यद्य शकुन्तला पतिगृहम्; He will quickly make them clever—सनूनं तान् द्राक् प्रबुद्धान् करिष्यति; I shall make your sons well versed in moral science within six months—अहं षण्मासाभ्यन्तरे तव पुत्रान् नीतिशास्त्रज्ञान् करिष्यामि।

३६३। "माङि लुङ्" (१)। मा-शब्दके योगसे सब कालोंमें लुङ् होता है। यथा—मा भूत् (२) दुःखम्, मा भवतु दुःखम्, मा भविष्यति दुःखम्। यहाँ मा शब्द है माङ् शब्द नहीं।

३६४। "स्मोत्तरे लङ् च।" मास्म-शब्दके योगसे सब कालोंमें लङ् तथा लुङ् होते हैं। यथा—मास्म भवत् (२) शोकः मास्म भूत् (२) शोकः।

३६५। "यावत्पुरानिपातयोर्लट्।" यावत् (३) और पुरा शब्दोंके योगमें भविष्यत्कालमें लट् होता है। यथा, स यावत् आगच्छति तावत् अहं गमिष्यामि (जब वह आवेगा तब मैं जाऊँगा *When he comes, I shall go*); पुरा सप्तद्वीपां जयति वसुधाम् (वह शीघ्र सप्तद्वीपा पृथिवीको जय करेगा *He will very soon conquer the earth which consists of seven islands*)।

३६६। "विभाषा कदा कर्ह्योः।" कदा और कर्हि शब्दोंके योगमें भविष्यत्कालमें विकल्पसे लट् होता है। यथा, कदा ददामि न जाने, कदा दास्यामि न जाने (कब दूँगा मैं नहीं

---

(१) पाणिनिके अनुसार मा और माङ् दो पृथक् शब्द हैं। माङ् के योगमें केवल लुङ् होता है, इसलिए मा भवतु, मा भविष्यति इत्यादि किसी किसीके मतमें अप्रयोग है, और किसी किसीके मतमें अङित् मा शब्दका प्रयोग होने के कारण लुङ् नहीं हुआ। इसके लिए मुग्धबोध का सूत्र है "मा टी वा"; विद्यासागरजी का नियम इसी सूत्रके अवलम्बन पर है।

(२) मा और मास्म शब्दोंके योगसे धातुके आदिमें अकारका आगम नहीं होता।

(३) पाणिनिके अनुसार यावत् और पुरा शब्द निश्चयार्थक अव्यय नहीं होनेसे लट् नहीं होता, लृट् होता है। यथा, यावत् दास्यति तावत् भोक्ष्यते; पुरा यास्यति (पुर् होकर जायेगा)। विद्यासागरजी का नियम मुग्धबोधके "यावत् पुराभ्याम् भव्ये" इस सूत्रके अनुसार है।

जानता, I do not know when I shall give); कर्हि पश्यामि शङ्करं, कर्हि द्रक्ष्यामि शङ्करम् (कब शङ्करको देखूँगा, When shall I see Shankar?)।

३६७। (कथमा खी चवा—मुग्धबोध)। कथं शब्दके योगमें सब कालोंमें विकल्पसे लट् और विधिलिङ् होते हैं (१)। यथा, कथं गच्छसि, कथं गच्छेः। (विभाषा कथमि लिङ् च—पाणिनि) निन्दा अर्थ बोध होनेपर कथं शब्दके योगसे सब कालोंमें विकल्पसे लट् और विधिलिङ् होते हैं। यथा, कथं रामं निन्दसि निन्देः वा (२)।

३६८। (जातु यद् यदा यदिभिः खी—मुग्धबोध)। यदा और यदि शब्दोंके योगसे भविष्यत्कालमें विधिलिङ् होता है। यथा, वक्ष्यामि यदा स आगच्छेत्, दास्यामि यदि स आगच्छेत्। (जातुयदोर्लिङ्—पा०) अश्रद्धा (अर्थात् विश्वास नहीं करना—असम्भावना) अथवा अमर्ष (अर्थात् नहीं सहना—अक्षमा) अर्थ बोध होनेपर जातु, यद्, यदा और यदि शब्दोंके योगमें भविष्यत्कालमें विधिलिङ् होता है। यथा, जातु (यद् यदा, यदि) भवान् जनार्दनं निन्देत् तदहं न श्रद्दधे न मर्षये (आप जो जनार्दनकी निन्दा करेंगे यह मैं विश्वास नहीं करता हूँ या

---

(१) विद्यासागरजीका ३६७०३६८ नियम मुग्धबोधके अनुसार है। पाणिनिके अनुसार नियम भी साथ-साथ दिये गये हैं।

(२) किन्तु क्रियातिपत्ति (non-occurrence of an action) बोध होनेपर भविष्यत्कालमें नित्य लृङ् और अतीत कालमें विकल्पसे लृङ् होता है। यथा, कथं नाम तत्र भवान् धर्म्ममत्यक्ष्यत् (आपके ऐसे प्रामाणिक व्यक्ति कैसे धर्म छोड़ेंगे अर्थात् आप धर्म नहीं छोड़ेंगे); कथं नाम भवान् वृषलं अयाजयिष्यत्, याजयाञ्चकार वा (आपके ऐसे प्रामाणिक मनुष्य कैसे वृषलका याजन करने गये अर्थात् नहीं गये)। यह धर्मत्याग और वृषलयाजन नहीं होनेके कारण क्रियातिपत्ति हुआ है।

मैं नहीं सह सकता हूँ—I do not *believe* that you will speak ill of Janardan or I cannot *endure* that you will speak ill of Janardan)।

३६६। (आशिषि लिङ्-लोटौ)। आशीर्वाद (*benediction, blessing*) अर्थमें धातुके उत्तर आशीर्लिङ् और लोट् होते हैं। यथा, तव सुखं भूयात्-तव सुखं भवतु; सज्जनश्चिरं जीव्यात्-सज्जनश्चिरं जीवतु।

३७०। (तुह्योस्तातङाशिष्यन्यतरस्याम्)। आशीर्वाद अर्थमें लोट्के तु और हि के स्थानमें विकल्पसे तात् (तातङ्) होता है। यथा, तव कुशलं भवतात्—तव कुशलं भवतु; ईश मां पातात्—ईश मां पाहि।

३७१। (विधिनिमन्त्रणामन्त्रणाधीष्टसंप्रश्नप्रार्थनेषु लिङ्)। विधि प्रभृति अर्थोंमें धातुके उत्तर विधिलिङ् होता है। विधि दो प्रकारके हैं, प्रवर्त्तना और निवर्त्तना। सत्कर्ममें प्रवृत्तिदान-का नाम प्रवर्त्तना, असत्कर्मसे निवर्त्तनका नाम निवर्त्तना। यथा, प्रवर्त्तना—सत्यं वदेत्; प्रियंब्रूयात्; गुरूनभ्यर्च्चयेत्; दीने दयां कुर्यात्; क्षुधिताय अन्नं दद्यात्। निवर्त्तना—नानृतं वदेत्; न गुरून् निन्देत्; परस्वं नापहरेत्; क्रोधं यत्नेन वर्ज्जयेत्; अहंकारं परिहरेत्; आलस्यं परित्यजेत्।

३७२। (लोट् च) अनुज्ञा, नियोग, निमन्त्रण, अनुरोध, प्रार्थना, जिज्ञासा, इन सब अर्थोंमें विधिलिङ् तथा लोट् होते हैं। यथा, अनुज्ञा—गच्छतु भवान्; नियोग—करोतु भवान्; निमन्त्रण—इह भुञ्जीत भवान्; प्रार्थना—मत्पुत्रमध्यापयेद्-भवान्; जिज्ञासा—किं भो व्याकरणमधीयीय उत साहित्यम्?

३७३। (हेतुहेतुमतोर्लिङ्) दो क्रियाके कार्यकारणभाव (cause and effect) बोध होनेपर, दोनों क्रियाओंमें भविष्यत्कालमें विकल्पसे विधिलिङ् होता है। यथा, यदि

वाल्ये अधीयीत यावज्जीवनं सुखं लभेत। यहाँ वाल्यकालका अध्ययन यावज्जीवन सुखलाभका कारण होता है, इसलिए दोनों क्रियाओंमें विधिलिङ् हुआ है। ऐसे—यदि प्रियंवदेत् सर्व्वस्य प्रियो भवेत्। पक्षे—यदि वाल्ये अध्येष्यते यावज्जीवनं सुखं लप्स्यते ; यदि प्रियं वदिष्यति सर्व्वस्य प्रियो भविष्यति।

३७४। (समर्थनाशिषोर्लोट्—मुग्धबोध)। समर्थना (१) अर्थमें धातुके उत्तर लोट् होता है। यथा, सिन्धुमपि शोषयाणि (समुद्रको भी सुखा सकता हूँ)। शक्ति लिङ् च। शक्ति अर्थात् सामर्थ्य (१) बोध होनेपर विधिलिङ् होता है। यथा, भारं वहेः (You *are able to carry* the load)।

३७५। (इच्छार्थेषु लिङ्लोटौ)। इच्छाप्रकाश अर्थ बोध होनेपर इच्छार्थक धातुके योगमें सब कालोंमें विधिलिङ् और लोट् होते हैं। यथा, इच्छामि भवान् भुञ्जीत भुङ्क्तां वा; इच्छामि (कामये प्रार्थये वा) स आगच्छेत् आगच्छतु वा। इच्छाप्रकाश बोध नहीं होनेसे नहीं होता। यथा, इच्छन् करोति।

३७६। (लिङ् निमित्ते लृङ् क्रियातिपत्तौ, भूते च)। क्रियाको अनिष्पत्ति (non-occurrence) बोध होनेपर अतीत तथा भविष्यत्कालोंमें धातुके उत्तर लृङ् होता है। यथा,

---

(१) समर्थना—अशक्य विषय में अध्यवसाय (attempt at doing a thing which is impossible or impracticable), सामर्थ्य—जो काम किया जा सकता है उसको करनेकी शक्ति (Capacity for doing a thing which others are able to do)। "शक्तिलिङ्" के दूसरे उदाहरण:—कुर्यां हरस्यापि पिनाकपाणेर्धैर्यच्युतिं के मम धन्विनोऽन्ये। —कुमार ; उद्वहेयं भुजाभ्यां वै मेदिनीमम्बरे स्थितः। —रामायण ; अहं हि वचनात् राज्ञः पतेयमपि पावके। भक्षयेयं विषं तीक्ष्णं मज्जेयमपि चार्णवे॥—रामायण।

अतीतकालमें—सचेत् आगमिष्यत् तदाहमगमिष्यम् (यदि वह आता, मैं जाता, अर्थात् वह नहीं आया इसलिए मैं नहीं गया); ज्ञानं चेत् अभविष्यत् तदा सुखमभविष्यत् (यदि ज्ञान होता, तो सुख होता, अर्थात् ज्ञान नहीं हुआ इसलिये सुख नहीं हुआ)। भविष्यत्कालमें—सुवृष्टिश्चेदभविष्यत् तदा सुभिक्षमभविष्यत् (यदि सुवृष्टि हो, तो सुभिक्ष होगा, अर्थात् सुवृष्टि नहीं होगी तो सुभिक्ष भी नहीं होगा); अभोक्ष्यत भवान् घृतेन, यदि मत्समीपमागमिष्यत् (मेरे पास आओगे तो घृतयुक्त अन्न खाओगे अर्थात् मेरे पास नहीं आओगे तो घृतान्न भी नहीं खाओगे)।

३७७। (अभिज्ञावचने लृट्)। स्मरणार्थक धातुके योगसे अतीतकालमें लृट् होता है। यथा, स्मरसि कृष्ण गोकुले वत्स्यामः (Krishna, do you remember we lived in Gokul?)। (न यदि)। यद् शब्दके योगमें नहीं होता। यथा, अभिजानासि देवदत्त यत् काश्मीरेषु अवसाम (Do you remember, Devdatta, that we lived in Kashmir?)। स्मरसि, बुध्यसे, अभिजानासि, चेतयसे इत्यादि स्मरणार्थक धातु निष्पन्न पद हैं।

३७८। (क्रियासमभिहारे लोट् लोटो हिस्वौ वा च तध्वमोः)। पौनःपुन्य (repetition) और अतिशय (intensity) अर्थ बोध होनेपर सब धातुओंके उत्तर सब कालोंमें सब पुरुषोंमें और सब विभक्तियोंमें लोट् को हि, त, स्व, ध्वम् विभक्तियाँ होती हैं (१)। यथा, पुनः पुनः अतिशयेन वा हरति,

(१) मुहुर्भृशार्थे हि-त-स्व-ध्वम्—मुग्धबोध। उदाहरण—पुरीमवस्कन्द लुनीहि नन्दनम् मुषाण रत्नानि हरामराङ्गनाः। विगृह्य चक्रे नमुचिद्विषा-बली य इत्थमस्वास्थ्यमहर्दिवं दिवः॥—माघ।

जहार, हरिष्यति, इन अर्थों में हर, हरत, हरस्व, हरध्वम्, ऐसे पद हो सकते हैं।

EXERCISE.

1. *Translate into Sanskrit*:—When (यावत्) he will come here. I shall give him some good fruits to eat. There lived a jackal, Chandarab by name, in this forest. Jadu dwells where Nabin lives with his father, mother, brothers and sisters. Let him bring cold water for me. Bring the books which I gave you. When (कदा) have you come? I have come just now. Let them do it by themselves. He has gone home. The diligent boy acquired much knowledge. Arjuna conquered all the kings of Northern India. The boy with so many good signs will soon be a great man. As long as I breathe, I shall defend (रक्ष्) my beloved king and my dear country even at the cost of my life. A wise man should give up (उत्+सृज्) his life and wealth for the sake of others. Follow (अनु+सृ) the foot-print of your forefathers. If it rains, we shall not go out. Had there been knowledge, there would have been happiness. Our soul will never die. He will be a dunce all his life. May God save our Emperor. Birds can fly but beasts cannot. There can be no pleasure without pain. Please accept our hospitality if no other duty suffer

thereby. *Would that* (अपि नाम) he will stay here for three months. He has been staying here for the last five months. God made the sun, the moon, the stars and the earth with all its animate and inanimate objects. Hari went there before Ram had come. We wish to see that parrot and to hear from you its history from the beginning. Let us go to the palm-tree grove and take our breakfast there. We saw your uncle there but we did not see your brothers and sisters. Tell the truth, tell the pleasant, do not tell the unpleasant truth. Gopal though honest and truthful, was very selfish. I saw a fawn play on the lawn. Formerly Krishna lived in this holy city. He read the Vedas. May you enjoy bliss.

2. *Translate into English* :—यो विपदि सहायो भवति स एव प्रकृतो बन्धुः। एकोहि दोषो गुणसन्निपाते निमज्जतीन्दोः किरणेष्विवाङ्कः। सत्संगतिः कथय किं न करोति पुंसाम। लिखितमिह ललाटे प्रोज्झितुं कः समर्थः? अतिभारभंगुराममूं पृथिवीं लघूकरिष्यन् त्वं त्रिदिवादवातरः। मधोरागमनात् प्रागेव स तत्र गमिष्यति। एकाकी हयमारुह्य स गहनं वनं जगाम। इत्थं यदा यदा वाधा दानवोत्था भविष्यति, तदा तदावतीर्य्याहं करिष्याम्यरिसंक्षयम्। भया-द्रणादुपरतं मंस्यन्ते त्वां महारथाः, येषाँ च त्वं बहुमतो भूत्वा यास्यसि लाघवम्। अथापरः शिष्यस्तस्यैव धौम्यस्य वेदो नाम आसीत्। अर्कवासरादारभ्य (Since Sunday) अहमक्षैः

क्रीड़ामि (have been playing)। तस्योपस्थितिरेव (his very presence) तं वेपमानमकरोत्। रामस्य वन-गमनान्तरं दशरथोहतचेतनः सन् धरण्यां पपात। मलयकेतुना सह सन्धाय राक्षसश्चन्द्रगुप्तमभियोक्तु मुद्यतः।

3. *Correct* (giving reason in each case):—
अहं महान् दुःखे पतितोऽस्ति। निरसः तरुवरः पुरतः भान्ति। त्वं धनुं मा निक्षिपतु। अहमयोध्यां जगाम। मास्म अभवत् दुःखम्। चौरः गृहमप्रविशत्। मा आश्रमपीड़ा अभूत्। मे पिता अद्य गृहं याता। सा तव विरहेण प्राणान् त्यजिष्यति। यः गृहागतं हनेत् तस्य पापं स्युः। अनृतं न ब्रुवीत्। कल्या-हमेकः सिंह; अपश्यत्। सखे, वद तवाहं किं प्रियं करिष्ये। स चेत् धनी अभविष्यः तर्हि साहाय्यमकरोत्। साधुः चिरं-जीव्याः।

तृतीय भाग।

कृत्-प्रकरण—(Primary Suffixes).

साधारण नियम।

१। धातुके उत्तर तव्य, निष्ठा, प्रभृति कईएक प्रत्यय होते हैं जिनको कृत्-प्रत्यय कहते हैं।

२। कृत्-प्रत्यय होनेपर धातुके अन्त्यस्वर और उपधा लघुस्वरको गुण होता है। क् अथवा ङ् इत् होनेसे गुण नहीं होता।

३। कृत्-प्रत्ययका ण् अथवा ञ् इत् होनेसे धातुके अन्त्य-स्वर और उपधा अकारको वृद्धि होती है; और आकारान्त धातुके उत्तर य् होता है।

४। कृत्-प्रत्यय (१) परे रहनेसे णिच् का लोप होता है।

५। कृत्-प्रत्ययका घ् इत् होनेसे धातुके अन्तस्थित "च्" के स्थानमें क् और "ज्" के स्थानमें ग् होता है।

६। कृत्-प्रत्ययका ख् इत् होनेसे पूर्वपद द्वितीयाके एकवचनान्त होता है।

७। कृत्-प्रत्ययका प् इत् होनेसे ह्रस्वस्वरान्त धातुके उत्तर त् होता है।

८। कृत्-प्रत्ययका य् परे रहनेसे धातुके अन्तस्थित "ओ" के स्थानमें अव् और "औ" के स्थानमें आव् होता है।

कृत्यप्रत्यय (२)।

(*Suffixes forming Sanskrit Future Participles and Potential Passive Participles*).

तव्य।

९। "तव्यत्तव्यानीयरः।" कर्मवाच्य और भाववाच्यमें धातुके उत्तर तव्य प्रत्यय होता है (३)।

१०। लुट् विभक्तिमें इट् प्रभृति जो सब कार्य होते हैं तव्य प्रत्यय परे रहनेसे वे ही सब कार्य होते हैं। यथा, दा दातव्य, स्था स्थातव्य, जि जेतव्य, शी शयितव्य, श्रु श्रोतव्य, स्तु-स्तोतव्य, भू भवितव्य, कृ कर्त्तव्य, स्मृ स्मर्त्तव्य, वच् वक्तव्य,

(१) आलु, इष्णु, इलु, प्रभृति और शित् प्रत्यय परे रहनेसे तथा इट् व्यवधान होनेसे नहीं होता। जिस प्रत्ययका श् इत् होता है उसे शित् प्रत्यय कहते हैं।

(२) "तव्यानीयौ च यच्चण्यत्क्यप् चैते कृत्य संज्ञकाः।" तव्य, अनीय, ण्यत्, यत्, क्यप् और (वार्त्तिकके अनुसार) केलिम भी कृत्यप्रत्यय हैं।

(३) "तव्यानीययाः ढ भावे"—मुग्धबोध। ढ=कर्मवाच्य। वस् धातुके उत्तर कर्त्तृवाच्यमें भी तव्य होता है और णिद्वत् होता है, इसलिए तव्य होनेसे वस् के "अ" के स्थानमें आ होता है। वस् कर्त्तरि तव्य—वास्तव्य; वस् कर्मणि तव्य—वस्तव्य।

याच् याचितव्य, प्रच्छ् प्रष्टव्य, वांछ् वाञ्छितव्य, त्यज् त्यक्तव्य, यत् यतितव्य, नृत् नर्त्तितव्य, छिद् छेत्तव्य, विद् वेदितव्य, बुध् बोद्धव्य, मन् मन्तव्य, हन् हन्तव्य, आप् आप्तव्य, लभ् लब्धव्य, क्षम् क्षन्तव्य, गम् गन्तव्य, चल् चलितव्य, जीव् जीवितव्य, सेव् सेवितव्य, दृश् द्रष्टव्य, विश् वेष्टव्य, स्पृश् स्पृष्टव्य, भक्ष् भक्षितव्य, श्वस् श्वसितव्य, हस् हसितव्य, ग्रह् ग्रहीतव्य, दुह् दोग्धव्य, वह् वोढव्य, कारि कारयितव्य, योजि योजयितव्य, चिकीर्ष चिकीर्षितव्य, मीमांस मीमांसितव्य।

अनीय (अनीयर्)

११। कर्मवाच्य और भाववाच्यमें धातुके उत्तर अनीय होता है। यथा, पा पानीय, चि चयनीय, शी शयनीय, श्रु श्रवणीय, कृ करणीय, स्मृ स्मरणीय, हृ हरणीय, वच् वचनीय, सिच् सेचनीय, शुच् शोचनीय, भुज् भोजनीय, युज् योजनीय, छिद् छेदनीय, विद् वेदनीय, मन् मननीय, शुभ् शोभनीय, रम् रमणीय, सेव् सेवनीय, दृश् दर्शनीय, रक्ष् रक्षणीय, तुष् तोषणीय, पूजि पूजनीय, अर्चि अर्चनीय, यापि यापनीय, स्थापि स्थापनीय, रोपि रोपणीय, ख्यापि ख्यापनीय, ज्ञापि ज्ञापनीय, अध्यापि अध्यापनीय, पालि पालनीय।

णयत् (ध्यण्)।

१२। "ऋहलोर्ण्यत्।" कर्मवाच्य और भाववाच्य में ऋकारान्त तथा व्यञ्जनवर्णान्त धातुओंके उत्तर णयत् होता है (१) ण् और त् इत् य रहता है। यथा, ऋकारान्त—कृ कार्य,

(१) उकारान्त यु धातु तथा आ+सु धातुके उत्तर भी णयत् होता है। यथा यु याव्य, आ+सु आसाव्य। क्रियाका अवश्यम्भाव अर्थ बोध होनेसे उकारान्त तथा ऊकारान्त धातुओं के उत्तर णयत् होता है। यथा, स्तु स्ताव्य, भू भाव्य। अवश्यम्भाव बोध नहीं होनेसे (स्तु+क्यप्) स्तुत्य, (भू+यत्) भव्य होते हैं।

धृ धार्य, सृ सार्य, स्मृ स्मार्य, हृ हार्य। व्यञ्जनवर्णान्त—वच् वाच्य, सिच् सेच्य, त्यज् त्याज्य, यज् याज्य, युज् योज्य, भज् भाज्य, भुज् भोज्य, बुध् बोध्य, छिद् छेद्य, भिद् भेद्य, विद् वेद्य, मन् मान्य, भक्ष् भक्ष्य, श्वस् श्वास्य, हस् हास्य, वह् वाह्य।

१३। "चजोः कुघिण्यतोः।" ण्यत् परे रहनेसे पच्, रुज् आदि धातुओंके च् के स्थानमें क् और ज् के स्थानमें ग् होता है। यथा, पच् पाक्य (that which may be cooked), रुज् रोग्य, मृज् मार्ग्य (१)।

१४। ण्यत् प्रत्यय परे रहनेसे अर्थविशेषमें वच्, भुज्, युज्, प्रभृत धातुओंके च् के स्थानमें क् और ज् के स्थानमें ग् होता है (२)। तथा, वच् शब्द-अर्थमें वाक्य; भुज् भोग-अर्थमें भोग्य; युज् अर्ह-अर्थमें योग्य; नि-पूर्वक युज्, ण्यत्, प्रभु-अर्थमें नियोग्य (३)।

"अमावस्यदन्यतरस्याम्।" अमावस्या शब्द निपातनमें सिद्ध होता है। यथा, अमा सह वसतोऽस्यां चन्द्रार्कौ, अमावस्या, अमावास्या।

---

(१) "मृजेर्वृद्धिः" ऋ को वृद्धि हुई है। "मृजेर्विभाषा।" मृज् धातुके उत्तर विकल्पसे क्यप् भी होता है। यथा, मृज्य। (२) "वचोऽशब्दसंज्ञायाम्, भोज्यं भक्ष्ये प्रयोज्यनियोज्यौ शक्यार्थे।" (३) वाच्यं—वचनीयम्, वाक्यं—पदसमुदायः। भोज्यं=(भुज्यते यत् तत्) भक्ष्यं; भोग्यः=उपभोग्यः पालनीयः वा। प्रयोक्तुं नियोक्तुञ्च शक्यते असौ प्रयोज्यः नियोज्यः=सेवकः (a servant); नियोक्तुमर्हति नियोग्यः=प्रभुः (a lord or a master)। क्त प्रत्ययमें जिन धातुओंके उत्तर इट् होता है उनके च् के स्थानमें क् और ज् के स्थानमें ग् नहीं होता। यथा, गर्ज्+ण्यत्=गर्ज्य। वञ्च्+ण्यत् गति-अर्थमें वञ्च्य, (वञ्च्यो ग्रामः), किन्तु वक्रीभाव अर्थमें वङ्क्य (वङ्क्यं काष्ठम्)। आवश्यकता अर्थ बोध होनेसे नहीं होता। यथा, अवश्यपाच्यम्। त्यज्, यज्, याच्, रुच्, ऋच्, प्र+वच् धातुओं के भी नहीं होता। यथा, त्याज्य, याज्य, याच्य, रोच्य, अर्च्य, प्रवाच्य।

यत् (य)।

१५। "अचो यत्।" कर्मवाच्य और भाववाच्यमैं स्वरान्त धातुके उत्तर यत् होता है, त् इत् य रहता है। यथा, चि चेय, जि जेय, नी नेय, श्रु श्रव्य, भू भव्य।

१६। "ईद्यति।" यत् परे रहनेसे धातुके अन्तस्थित आ के स्थानमैं ए होता है। यथा, दा देय, गा गेय, पा पेय, स्था स्थेय, मा मेय, हा हेय, धा धेय।

१७। "पोरदुपधात्, शकिसहोश्च।" कर्मवाच्य और भाववाच्यमैं शक्, सह् (१), और पवर्गान्त (२) धातुओँ के उत्तर यत् होता है। यथा, शक् शक्य, सह् सह्य, शप् शप्य, रभ् रभ्य, लभ् लभ्य, गम् गम्य, नम् नम्य, रम् रम्य।

१८। "गदमदचरयमश्चानुपसर्गे।" कर्मवाच्य और भाववाच्यमैं उपसर्गहीन गद्, मद्, चर् (३), और यम् धातुओँ के उत्तर यत् होता है। यथा, गद् गद्य, मद् मद्य, चर् चर्य्य, यम् यम्य। उपसर्ग पूर्वक होनेसे ण्यत् होता है। यथा, निगद् निगाद्य, प्र-मद् प्रमाद्य, वि-चर् विचार्य्य, नि-यम् नियाम्य।

क्यप्।

१९। "एतिस्तुशास्वृदृजुषः क्यप्।" कर्मवाच्य तथा

---

(१) तक्, चत्, यत्, शस् धातुओँ के उत्तर भी यत् होता है। यथा, तक्य, चत्य, यत्य, शस्य। (२) पवर्गान्त होने पर भी चम्, वप्, रप्, लप्, त्रप् और दभ् धातुओँ के उत्तर ण्यत् होता है यत् नहीँ होता। यथा, चम् चाम्य, वप् वाप्य, रप् राप्य, लप् लाप्य, त्रप् त्राप्य, दभ् दाभ्य। जप् धातुके उत्तर यत् और ण्यत् होते हैँ। यथा, जप्य, ज्याप्य। भज्, यज् और आ+नम् धातुओँके उत्तर यत् और ण्यत् होते हैँ। यथा, भज्—भज्य, भाग्य; यज्—यज्य, याज्य; आ+नम्=आनम्य, आनाम्य। आ+लभ्+यत् =आलभ्यः (मारणीयः स्पर्शनीयो वा) गौः। (३) आ+चर् धातुके उत्तर गति-अर्थमैं यत्=आचर्य्यः (गन्तव्यः), गुरु अर्थमैं ण्यत्=आचार्य्यः।

भाववाच्यमेँ इ, दृ, वृ, स्तु, जुष् और शास् धातुओँ के उत्तर क्यप् होता है, और भृ धातु से असंज्ञामेँ क्यप् होता है, जैसे भृत्य, संज्ञा मेँ नहीँ, जैसे भार्य्या ; क् प् इत्, य रहता है। यथा, इ इत्य, दृ दृत्य, वृ वृत्य, स्तु स्तुत्य (१) जुष् (to serve, to please) जुष्य। कृ-धातुके उत्तर विकल्पसे (२) क्यप् होता है। यथा, कृत्य ; पक्षान्तरमेँ ण्यत् कार्य्य। "शास इदङ् हलोः।" शास्-धातुके आ के स्थानमेँ इ होता है और स् को ष्। यथा, शिष्य (३)।

२०। "वदःसुपि क्यप् च।" सुबन्त पदके परस्थित वद् धातुके उत्तर भावमेँ क्यप् और यत् होते हैँ और क्यप् होनेपर व्-के स्थानमेँ उ होता है। यथा, ब्रह्मोद्य, ब्रह्मवद्य (knowledge of Brahma, expounding the Veda)। मृषा शब्दके परवर्त्ती होनेसे केवल क्यप् होता है। यथा, मृषोद्य (falsehood)।

२१। "भुवो भावे।" भाववाच्यमेँ सुबन्त पदके परवर्त्ती भू-धातुके उत्तर क्यप् होता है। यथा, ब्रह्मभूय (ब्रह्मणो भाव ब्रह्मभूयं=ब्रह्मत्वम्=Identity with Brahma), देवभूय।

२२। "हनस्त च।" भाववाच्यमेँ सुबन्त पदके परवर्त्ती हन्-धातुके उत्तर क्यप् होता है और न्-के स्थानमेँ त् होता है

---

(१) "ह्रस्वस्य पिति कृति तुक्।" प् इत् कृत् प्रत्यय परे रहनेसे ह्रस्वस्वरान्त धातुके उत्तर त् होता है। (२) वृष्, मृज्, गुह्, दुह्, शन्स्, सं+भृ, प्रति+ग्रह्, अपि+ग्रह् धातुओँके उत्तर भी विकल्पसे क्यप् और ण्यत् होते हैँ। यथा, वृष्—वृष्य, वर्ष्य ; मृज्—मृज्य, मार्ग्य ; गुह्—गुह्य, गोह्य ; दुह्—दुह्य, दोह्य ; शन्स्—शस्य, शंस्य ; सं+भृ—संभृत्य, संभार्य्य ; प्रति+ग्रह्—प्रतिगृह्य, प्रतिग्राह्य ; अपि+ग्रह्—अपिगृह्य, अपिग्राह्य। (३) धातुके उपधामेँ ऋ रहे तो उनके उत्तर क्यप् होता है। यथा, वृत् वृत्य, वृध् वृध्य।

और वह शब्द स्त्रीलिंग होता है। यथा, स्त्रीहत्या (killing a woman), गोहत्या (killing a cow), पितृहत्या (parricide), ब्रह्महत्या (murder of a Brahmin)।

"राजसूयसूर्य्यमृषोद्यरुच्यकुप्यकृष्टपच्याव्यथ्याः।" राजसूय आदि पद निपातनसे सिद्ध होते हैं। यथा, राजा सोमलता सूयते अत्र इति राजसूयः, वा राज्ञा सोतव्यः राजसूयः, सरति आकाशे इति सूर्य्यः, मृषोद्यम् (मृषा+वद्+क्यप्), रुच्यः, कुप्यः, कृष्टपच्यः, अव्यथ्यः।

केलिम (केलिमर्)।

२३। "केलिमर उपसंख्यानम्।" कर्मवाच्यमें धातुके उत्तर केलिम होता है; क इत् एलिम रहता है। यथा, भिद्—भिदेलिम (भिद्यन्ते इति भिदेलिमाः सरलाः Pine trees *fit to be felled*), पच्—पचेलिम (पच्यन्ते इति पचेलिमाः माषाः, Pulses *ripening naturally* or *fit to be cooked*). छिद्—छिदेलिम।

२४। कृत्यप्रत्ययसे बने हुए शब्द जब क्रियाके ऐसे व्यवहृत होते हैं तब भाववाच्यमें नपुंसकलिङ्गकी प्रथमाके एकवचनान्त होते हैं। और कर्मवाच्यमें कर्मके विशेषण होते हैं, इसलिए कर्मके लिङ्ग, विभक्ति और वचनको प्राप्त होते हैं। यथा, भाववाच्यमें—मया स्थातव्यम्, त्वया स्नातव्यम्, शिशुना शयितव्यम्। कर्मवाच्यमें—त्वया वृक्षः सेचनीयः, वृक्षौ सेचनीयौ, वृक्षाः सेचनीयाः; मया नदी द्रष्टव्या, नद्यौ द्रष्टव्ये, नद्यो द्रष्टव्याः; तेन पुष्पं चेयम्, पुष्पे चेये, पुष्पाणि चेयानि इत्यादि।

२५। कृत्यप्रत्ययसे बने हुए शब्द जब विशेषण होते हैं तब विशेष्यके लिङ्ग विभक्ति और वचन प्राप्त होते हैं। यथा, गन्तव्यो ग्रामः, गन्तव्यं ग्रामम्, गन्तव्येन ग्रामेण, गन्तव्याय ग्रामाय, गन्तव्यात् ग्रामात्, गन्तव्यस्य ग्रामस्य, गन्तव्ये ग्रामे; दृश्या नदी, दृश्यां नदीम्, दृश्यया नद्या इत्यादि; पानीयं जलम्, पानीयेन जलेन, पानीयस्य जलस्य इत्यादि।

२६। सभी कृत्यप्रत्यय भविष्यत्कालमें और औचित्य तथा अनुज्ञा अर्थमें होते हैं। यथा, भविष्यत्कालमें—मया गन्तव्यम्, मैं जाऊँगा; त्वया कार्यम्, तुम करोगे; तेन शयनीयम्, वह सोयेगा। औचित्य अर्थमें—असत्संगः परिहर्त्तव्यः, असत्का संग छोड़ना उचित है; दीनेभ्यो धनं देयम्, दीनजनोंको धन देना उचित है; परनिन्दा न कर्त्तव्या, दूसरे की निन्दा करनी उचित नहीं है। अनुज्ञा अर्थमें—त्वया अध्ययनीयम्, तुम अध्ययन करना; त्वया इह भोक्तव्यम्, तुम यहाँ भोजन करना; त्वया प्रातस्तत्र गन्तव्यम्, तुम सवेरे वहाँ जाना (१)।

EXERCISE.

1. *Translation Model* :—This *ought to be done* or this *must be done*—एतत् कर्त्तव्यम्, करणीयम् or कार्य्यम्। You *should see* Calcutta—त्वया कलिकाता द्रष्टव्या or दर्शनीया। He *has to come* (आगन्तव्यम्) here—तेनात्रागन्तव्यम्। This book *should be read* by you—एतत् पुस्तकं त्वया पाठ्यम्। Vishnu *is to be praised* by me मया विष्णुः स्तुत्यः। This *will be done* by him—तेनैतत् कर्त्तव्यम्, करणीयम्, कार्य्यम् वा। *Do* it presently—अधुनैव त्वयैतत् कर्त्तव्यम्। Your son *should be* mindful of his studies—तव पुत्रेण पाठेषु अवहितेन भाव्यम्। My friend *must be* present here—मम मित्रेणात्र सन्निहितेन भवितव्यम्। The strength of this animal *in all probability is* corresponding to its roaring—अस्य प्राणिनः शब्दानुरूपेण बलेन भवितव्यम्।

---

(१) "कृत्यल्युटो बहुलम्।" कृत्यप्रत्यय और ल्युट् (अनट्) प्रत्यय अनेक वाच्यों में होते हैं। यथा, स्नाति अनेन, स्नानीयं जलम् (करणवाच्यमें); दीयते अस्मै, दानीयो विप्रः (सम्प्रदानवाच्यमें); बिभेति अस्याः, भेतव्या रजनी (अपादानवाच्यमें); रमते अस्मिन्, रमणीयं रम्यं वा गृहम् (अधिकरणवाच्यमें)।

2. *Translate into Sanskrit*:—You must do it. Therefore I must go *to another country* (देशान्तरं). Never live or walk *with the wicked* (दुर्जनेन समं). You should read the Ramayana. He should see Benares. The two deer will be killed by a lion. The enemy is to be conquered by Ram. You ought to read the Mahabharat. Boys should respect their teachers. The king should be told thus by you *according to my directions* (मद्वचनात्)। How can he live without food and drink? My son ought to be taken by you to the town. I too shall go *at ease* (सुखेन). He will surely make a noise. You should not forsake your friends in their distress. All students must remember that everything is to be learnt with great care. We should know the *history* (इतिवृत्तम्) of our mother-country. The goddess Lakshmi is to be worshipped by you.

शतृ और शानच् (Suffixes forming Sanskrit Present Participles)।

२७। कर्त्तृवाच्यमें परस्मैपदी धातुके उत्तर वर्त्तमान-कालमें शतृ प्रत्यय होता है (१) श् तथा ऋ इत्, अत् रहता है।

२८। लट्की अन्ति-विभक्तिमें जिस धातुके जो कार्य होते हैं शतृ होनेसे भी वे ही सब कार्य होते हैं (२)। यथा, भ्वादिगणीय—धाव् धावत् (*running*), वद् वदत्, रस् रसत्, भू भवत्, जि जयत्, कृष् कर्षत्, शुच् शोचत्, ग्लै ग्लायत्, ध्यै ध्यायत्, गै गायत्, तृ तरत्, तप् तपत्, नम् नमत्, चल् चलत्, फल् फलत्, पत् पतत्, स्था तिष्ठत्, पा पिबत्, घ्रा जिघ्रत्,

---

(१) "लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे।" (२) लट्की अन्ति विभक्तिमें जो रूप होता है उससे न् तथा इ निकाल देनेसे जो बचता है वही शतृका रूप है।

गम् गच्छत्, दृश् पश्यत्, सद् सीदत्, क्रम् क्रामत्, सन्ज् सजत्, दन्श् दशत्। दिवादिगणीय—दिव् दीव्यत् (*playing, glittering*), सिव् सीव्यत्, नश् नश्यत्, जृ जीर्य्यत्, व्यध् विध्यत्, शम् शाम्यत्, श्रम् श्राम्यत्, नृत् नृत्यत्, श्लिष् श्लिष्यत्, पुष् पुष्यत्, मुह् मुह्यत्। तुदादिगणीय—सृज् सृजत् (*creating*), इष् इच्छत्, प्रछ् पृच्छत्, मस्ज् मज्जत्, मुच् मुञ्चत्, सिच् सिञ्चत्, कृ किरत्, स्पृश् स्पृशत्, मृश् मृशत्। क्र्यादिगणीय—अश् अश्नत् (*eating*), ज्ञा जानत्। स्वादिगणीय—सु सुन्वत् (*troubling*), श्रु शृण्वत्, आप् आप्नुवत्, चि चिन्वत्। रुधादिगणीय—हिन्स् हिंसत् *killing*), छिद् छिन्दत्, भिद् भिन्दत्। अदादिगणीय—अद् अदत् (*eating*) रुद् रुदत्, हन् घ्नत्, इण् यत्, या यात्, अस् सत्, स्वप् स्वपत्, श्वस् श्वसत्, शास् शासत्, रु रुवत्। ह्वादिगणीय—हु जुह्वत् (*offering oblation to*), भी बिभ्यत्, हा जहत्। णिजन्त—कारि कारयत् (*causing to do*). स्मारि स्मारयत्, स्थापि स्थापयत्, पालि पालयत्, जनि जनयत्। सनन्त—चिकीर्ष चिकीर्षत् *wishing to do*), जिघृक्ष जिघृक्षत्।

२९। "विदेः शतुर्वसु।" अदादिगणीय—विद् धातुके परे शतृके स्थानमें विकल्पसे वस् (वसु) होता है। यथा, विद्वस् विदत् (*knowing*)।

३०। कर्त्तृवाच्यमें आत्मनेपदी धातुके उत्तर वर्त्तमानकालमें शानच् होता है। श् च् इत् आन रहता है।

३१। धातुके उत्तर शानच् होनेसे लट्की आते-विभक्तिके सब कार्य होते हैं।

३२। "आने मुक्।" भ्वादि, दिवादि तथा तुदादि-गणीय (१) धातुओँसे परे शानच्के स्थानमैं मान होता है। यथा, भ्वादिगणीय—सेव् सेवमान (*serving, attending*) वृत् वर्त्तमान, वृध् वर्द्धमान, व्यथ् व्यथमान, सह् सहमान। दिवादिगणीय—जन् जायमान (*growing*), दीप् दीप्यमान, पद् पद्यमान, बुध् बुध्यमान, विद् विद्यमान। तुदादिगणीय—मृ म्रियमाण (*dying, perishing*), दृ द्रियमाण, धृ ध्रियमाण। अदादिगणीय—शी शयान (*lying down*), अधि+इ अधीयान। तनादिगणीय—मन् मन्वान (*considering*) ह्वादिगणीय—मा मिमान (*measuring*)।

३३। "ईदासः।" अदादिगणीय—आस् धातुसे परे शानच्के स्थानमैं ईन होता है। यथा, आस् आसीन (*sitting*)।

३४। कर्त्तृवाच्यमैं उभयपदी धातुओँके उत्तर वर्त्तमान-कालमैं शतृ और शानच् दोनोँ हो होते हैँ। यथा, भ्वादिगणीय—श्रित श्रयत् श्रयमाण (*going, reaching, serving*); नी नयत्, नयमान; हृ हरत्, हरमाण; राज् राजत्, राजमान; भज् भजत्, भजमान; यज् यजत्, यजमान; वह् वहत्, वहमान। अदादिगणीय—द्विष् द्विषत्, द्विषाण (*envying, hating*); दिह् दिहत्, दिहान; दुह् दुहत्, दुहान; स्तु स्तुवत्, स्तुवान; ब्रू ब्रुवत्, ब्रुवाण। ह्वादिगणीय—दा ददत्, ददान (*giving*); धा दधत्, दधान; भृ बिभ्रत्, बिभ्राण। रुधादिगणीय—रुध् रुन्धत्, रुन्धान (*obstruct-*

(१) "अदन्ताङ्गस्य मुगागमः स्यादाने परे।" अकारके परस्थित शानच्के आनके स्थानमैं मान होता है। इसलिए भ्वादि, दिवादि, तुदादियोँके ऐसे चुरादिगणीय धातुके परस्थित शानच्के स्थानमैं भी मान होता है। यथा, अर्थ अर्थयमान; मन्त्र मन्त्रयमाण।

ing)। तनादिगणीय—तन् तन्वत्, तन्वान (*spreading*); कृ कुर्वत्, कुर्वाण। क्र्यादिगणीय—क्री क्रीणत्, क्रीणान (*buying*); ग्रह् गृह्णत्, गृह्णान।

३५। कर्मवाच्यमें धातुके उत्तर वर्त्तमानकालमें शानच् होता है।

३६। कर्मवाच्यके शानच्के स्थानमें मान होता है। यथा, कृ क्रियमाण, वच् उच्यमान, दा दीयमान, पा पीयमान, ग्रह् गृह्यमाण, सेव् सेव्यमान, वह् उह्यमान, दृश् दृश्यमान, कृष् कृष्यमाण, सृज् सृज्यमान, ज्ञा ज्ञायमान।

३७। शतृ और शानच् प्रत्ययोंसे जो सब शब्द सिद्ध होते हैं वे विशेषण होते हैं, इसलिए वे विशेष्यके लिङ्ग, विभक्ति तथा वचन प्राप्त होते हैं। यथा, पश्यन् पुरुषः, पश्यन्तं पुरुषम्, पश्यता पुरुषेण; गच्छन्ती स्त्री, गच्छन्तीं स्त्रियम्, गच्छन्त्या स्त्रिया; पतत् फलम्, पतता फलेन, पततः फलस्य इत्यादि।

अतिरिक्त।

(१) "लक्षणहेत्वोः क्रियायाः।" क्रियाके हेतु (कारण या फल *cause or result*) और लक्षण (*an accompanying circumstance*) बोध होनेसे भी शतृ और शानच् होते हैं। यथा, हेतु (कारण)—धन-मर्जयन् नगरे वसति (He lives in the town *for earning* money); हेतु (फल)—स कृष्णं पश्यन् मुच्यते (*Seeing* Krishna he gets absolution); लक्षण—शयाना एव भुञ्जते यवनाः (The Yavanas take their meals *lying down*); स गच्छन्नधीते (He studies *while going*)।

(२) "ताच्छील्यवयोवचनशक्तिषु शानच्।" ताच्छील्य (*habit*), वयस् (*some standard of age*), शक्ति (*ability*) बोध होनेसे सब पद्की धातुओंके उत्तर शानच् होता है। यथा, भोगं भुञ्जानः पुरुषः (a person *habituated to enjoy*), कवचं बिभ्राणः कुमारः (the prince *wearing*

armour, *i. e.*, the prince *is of the age at which* armour may be worn), अरातिं निघ्नानः (*able to destroy* the enemy)।

(३) शतृ-प्रत्ययान्त शब्दोंके उत्तर स्त्रीलिङ्गमें ई होता है। ई परे शतृ प्रत्ययान्त भ्वादि (जिन धातुओंके भ्वादिगणीय धातुओंके ऐसे रूप होते हैं वे अर्थात् णिजन्त और चुरादिगणीय धातु भी) और दिवादिगणीय धातुओंके उत्तर नू-का आगम् होता है (शतुर्नुम् भूदिवादिभ्याम्) और तुदादिगणीय तथा आकारान्त अदादिगणीय धातुओंके उत्तर विकल्पसे नू-का आगम होता है (वा तुदादेः, अदादेरादन्तात्)। यथा, भ्वादि—गच्छत् गच्छन्ती, पश्यत् पश्यन्ती; णिजन्त—दर्शयत् दर्शयन्ती; चुरादि—भक्षयत् भक्षयन्ती; दिवादि—नृत्यत् नृत्यन्ती; नश्यत् नश्यन्ती; तुदादि—स्पृशत् स्पृशन्ती, स्पृशती; अदादि—यात् यान्ती, याती।

(४) शानच्-प्रत्ययान्त शब्दोंके उत्तर स्त्रीलिङ्गमें आ होता है। यथा, सेवमान सेवमाना, लज्जमान, लज्जमाना, दीप्यमान दीप्यमाना।

(५) शतृ-प्रत्ययान्त शब्दोंके रूप पुंलिङ्गमें धावत् शब्दके सदृश होते हैं केवल अभ्यस्त धातुके उत्तर शतृ करके निष्पन्न जाग्रत्, शासत्, ददत्, दधत्, बिभ्रत्, जुह्वत्, बिभ्यत् इत्यादि शब्दोंके रूप भूभृत् शब्दके तुल्य होते हैं। स्त्रीलिङ्गमें ईकारान्त होनेके कारण नदी शब्दके सदृश और नपुंसक लिंगमें भ्वादि और दिवादिगणीय धातुओंसे निष्पन्न शतृप्रत्ययान्त शब्दोंके रूप गच्छत् शब्दके तुल्य, तुदादिगणीय तथा दरिद्रा भिन्न आकारान्त अदादिगणीय धातुओंसे निष्पन्न शतृ प्रत्ययान्त शब्दोंके रूप इच्छत् शब्दके सदृश, अभ्यस्त धातुओंसे निष्पन्न शतृप्रत्ययान्त शब्दोंके रूप ददत् शब्दके तुल्य, और इनको छोड़कर और सब शतृप्रत्ययान्त शब्दोंके रूप भविष्यत् शब्दके तुल्य होते हैं, केवल प्रथमा और द्वितीयाके द्विवचनमें भविष्यतीके ऐसे होते हैं, भविष्यन्तीके ऐसे नहीं। शानच्प्रत्ययान्त शब्दोंके रूप पुंलिंगमें नर शब्दके सदृश, स्त्रीलिंगमें आकारान्त होनेके कारण लता शब्दके तुल्य और नपुंसक लिंगमें फल शब्दके सदृश होते हैं।

(६) यदि प्रधान तथा अप्रधान क्रियाओंके कार्य एक ही समयमें सम्पन्न होते हों तो अप्रधान क्रिया शतृ अथवा शानच् प्रत्ययसे बनती है। अंगरेज़ी Present participle का संस्कृत अनुवाद प्रायः शतृ अथवा शानच् प्रत्ययान्त पदसे किया जाता है। यथा, स नृत्यन् आगच्छति (He comes *dancing*), वानरं कम्पमानमपश्यम् (I saw the monkey *shivering*)।

EXERCISE.

Translation model :—The girl (बालिका) went (अगच्छत्) *smiling* (हसन्ती)=बालिका हसन्ती अगच्छत्। He saw the *weeping* woman=स रुदतीं नारीं ददर्श। *Are* you not *ashamed to censure* me in this way? एवं तिरस्कुर्वन् मां न लज्जसे? *While running* (धावन्) he fell down on the ground=स धावन् भूमौ अपतत्। *While thinking* thus, the night passed away=एवं चिन्तयतस्तस्य निशा अतिचक्रमे। *When* he *was going* home, he saw a snake=गृहं गच्छन् स सर्पमेकमपश्यत्। *As*, I *was playing* with him, I asked him=तेन सह क्रीडन्नहं तमपृच्छम्।

Translate into Sanskrit :—He reads walking. She went away weeping. We saw him going home. Ram will give five rupees to the man who is begging some money. I saw the thief *enter* (प्र+विश्) the room. A stag while drinking in the tank saw his shadow in the water. One day while going to school, I saw a poor boy in the street. Have you heard me sing? The crow saw from a distance the fowler to come towards them. The poor beggar sat on the ground shivering with cold. They are plucking flowers while going along the road. The jackal roaming at will near the precincts of the town, fell into an indigo pot.

क्वसु और कानच् (Suffixes forming Sanskrit perfect participles)।

३८। "(लिटः) क्वसुश्च।" अतीतकालमें धातुके उत्तर परस्मैपदमें क्वसु होता है; क् उ इत्, वस् रहता है।

३९। लिट्के उत्तमपुरुषके द्विवचनमें जो सब कार्य होते हैं क्वसु होनेपर धातु इट् भिन्न वे ही सब कार्य प्राप्त होते हैं। यथा, श्रु शुश्रुवस् (*having heard*), विद् विविद्वस्, मृद् मम्रद्वस्, स्तु तुष्टुवस्, भू बभूवस्, कृ चकृवस्।

४०। "वस्वेकाजाद् घसाम्।" क्वसु होनेसे घस्, इण्, अद् तथा आकारान्त धातुओंके उत्तर इट् होता है (१)। यथा, घस् जक्षिवस्, इ ईयिवस्, आदिवान्, स्था तस्थिवस्, दा ददिवस्, पा पपिवस्।

४१। अभ्यस्त कार्य होनेपर जो सब धातु एकस्वर विशिष्ट रहते हैं क्वसु प्रत्ययसे परे उन सब धातुओंके उत्तर इट् होता है। यथा, पच् पेचिवस्, सद् सेदिवस्, अद् आदिवस्, पत् पेतिवस्, वच् ऊचिवस्, वस् ऊषिवस्, यज् ईजिवस्।

४२। "विभाषा गम्हन् विद्दृश् विशाम्।" क्वसु प्रत्यय होनेसे गम्, हन्, विद्, दृश्, तथा विश् धातुके उत्तर विकल्पसे इट् होता है। यथा, गम् जग्मिवस्, जगन्वस्; हन् जघ्निवस्, जघन्वस्; विश् विविशिवस्, विविश्वस्; दृश् ददृशिवस्, ददृश्वस्; विद् विविदिवस्, विविद्वस्।

४३। "लिटः कानज्वा।" अतीतकालमें धातुके उत्तर आत्मनेपदमें कानच् होता है; क् च् इत् आन रहता है।

४४। कानच् होनेसे धातु लिट्की आते-विभक्तिका सब कार्य प्राप्त होता है। यथा, युध् युयुधान, रुच् रुरुचान, वन्द् ववन्दान, शिक्ष् शिशिक्षाण, व्यथ् विव्यथान, सह् सेहान, कृ चक्राण, वच् ऊचान।

४५। क्वसु और कानच् प्रत्ययोंसे निष्पन्न शब्द विशेषण होते हैं इसलिए वे विशेष्यके लिङ्ग विभक्ति और वचन को प्राप्त होते हैं। यथा, शुश्रुवान् पुरुषः, शुश्रुवांसं पुरुषम्, शुश्रुवुषा पुरुषेण; विविदुषी कन्या, विविदुषीं कन्याम्, विविदुष्या कन्यया; पेतिवत् पत्रम्, पेतुषा पत्रेण इत्यादि।

---

(१) ऋ धातुके उत्तर भी होता है। यथा, ऋ+क्वसु=आरिवस।

स्यतृ और स्यमान (Suffixes forming Sanskrit Future participles)।

४६। "तौ (शतृशानचौ) सत्; लृटः सद्वा।" भविष्यत्-कालमें परस्मैपदी धातुके उत्तर कर्त्तृवाच्यमें स्यतृ होता है; ऋ इत, स्यत् रहता है।

४७। लृट् विभक्तिमें गुण, इट् प्रभृति जो सब कार्य होते हैं स्यतृ प्रत्यय परे रहनेसे वे ही सब कार्य होते हैं। यथा, भू भविष्यत् (*going to happen* or *about to happen*). गम् गमिष्यत् (*about to go*), श्रु श्रोष्यत्, जि जेष्यत्, या यास्यत्, स्था स्थास्यत्, पा पास्यत्, दृश् द्रक्ष्यत्, हन् हनिष्यत्, मृ मरिष्यत्, पत् पतिष्यत्, कारि कारयिष्यत्, दर्शि दर्शयिष्यत्, योजि योजयिष्यत्।

४८। "तौ सत्; लृटः सद्वा।" भविष्यत्कालमें आत्मनेपदी धातुके उत्तर कर्त्तृवाच्यमें स्यमान होता है। स्यमान परे रहनेसे भी लृट् विभक्तिके सब कार्य होते हैं। यथा, सेव् सेविष्यमाण, वृत् वर्त्तिष्यमाण, व्यथ् व्यथिष्यमाण, जन् जनिष्यमाण, पद् पत्स्यमान, सह् सहिष्यमाण।

४६। भविष्यत्कालमें उभयपदी धातुके उत्तर कर्त्तृवाच्यमें स्यतृ और स्यमान दोनों होते हैं। यथा, स्तु स्तोष्यत्, स्तोष्यमाण; दा दास्यत्, दास्यमान; धा धास्यत्, धास्यमान; ग्रह् ग्रहीष्यत्, ग्रहीष्यमाण; कृ करिष्यत्, करिष्यमाण।

५०। भविष्यत्कालमें धातुके उत्तर कर्मवाच्यमें स्यमान होता है। यथा, ज्ञा ज्ञापिष्यमाण-ज्ञास्यमान, श्रु श्राविष्यमाण-श्रोष्यमाण, कृ कारिष्यमाण-करिष्यमाण, दृश् दर्शिष्यमाण-द्रक्ष्यमाण, दह् धक्ष्यमाण, वच् वक्ष्यमाण।

५१। स्यतृ तथा स्यमान प्रत्ययोंसे निष्पन्न शब्द विशेषण होते हैं, इसलिए वे विशेष्यके लिङ्ग विभक्ति और वचनको प्राप्त

होते हैं। यथा, गमिष्यन् पुरुषः, गमिष्यन्तौ पुरुषौ, गमिष्यन्तः पुरुषाः, गमिष्यन्तं पुरुषम्, गमिष्यता पुरुषेण; जनिष्यमाणा कन्या, जनिष्यमाणां कन्याम्, जनिष्यमाणया कन्यया; पतिष्यत् पत्रम्, पतिष्यता पत्रेण, पतिष्यतः पत्रस्य इत्यादि। करिष्यमाणं कर्म, करिष्यमाणे कर्मणी, करिष्यमाणानि कर्माणि, करिष्यमाणेन कर्मणा, करिष्यमाणात् कर्मणः, करिष्यमाणे कर्मणि; वक्ष्यमाणं वचनम्, वक्ष्यमाणेन वचनेन, वक्ष्यमाणात् वचनात्, वक्ष्यमाणस्य वचनस्य, वक्ष्यमाणेषु वचनेषु इत्यादि।

Note :—स्यमान प्रत्ययान्त शब्दसे कभी कभी इच्छा वा अभिप्राय समझा जाता है। यथा, स वेदमध्येष्यमाणो गुरुगृहं गच्छति (He is going to his preceptor's house *for the purpose of studying* the Vedas), करिष्यमाणः सशरं शरासनम् (*Resolved* to put arrows on the bow).

तुमुन् (चतुम्) Sanskrit Infinitive Suffix.

५२। "तादर्थ्येचतुम, समानकर्त्तृकेषु तुमुन्।" यदि दो क्रियाओंमें एक कर्त्ता हो तो दो क्रियाओंके मध्यमें निमित्तार्थ-बोधक धातुके उत्तर तुमुन् होता है (१) उन् इत्, तुम् रहता है। पाणिनिके अनुसार तुमुन्, हो है।

(१) इच्छार्थक धातुका अथवा निमित्तार्थबोधक धातुका यदि एक ही कर्त्ता हो तो निमित्तार्थबोधक धातुके उत्तर तुमुन् होता है। पाणिनि तथा संक्षिप्तसारके अनुसार यह एक कर्तृकत्व नियम केवल इच्छार्थक धातुके प्रयोगमें ही लगता है। यथा, भोक्तु, मिच्छामि। यहाँ भोक्तुम् तथा इच्छामि इन दोनों क्रियाओंका कर्त्ता एक अहम् ही है, इसलिये भुज् धातुके उत्तर तुमुन् हुआ है। किन्तु देवदत्तः पुत्रः भोक्तु मिच्छति यह ठीक नहीं है, कारण यहाँ "इच्छति" का कर्त्ता देवदत्त है और भोक्तु म् का कर्त्ता पुत्र है, इसलिये यहाँ भोक्तु म् नहीं होता। इनके मतमें इच्छार्थक धातुका प्रयोग न रहनेसे दोनों क्रियाओंका कर्त्ता एक न होने पर भी निमित्तार्थबोधक धातुके उत्तर तुमुन् हो सकता है। यथा, राजानं भोक्तुं मापान् हरति,

५३। लुट् विभक्तिमें धातुके उत्तर जो सब कार्य होते हैं तुमुन् होनेसे वे ही सब कार्य होते हैं। यथा, दृश्-द्रष्टुं याति, भुज्—भोक्तुमभिलषति, अधीङ्—अध्येतुमिच्छति; पत् पतितुम्, भू भवितुम्, शी शयितुम्, बुध् बोद्धुम्, रुध् रोद्धुम्, कृ कर्त्तुम्, ग्रह् ग्रहीतुम्, दा दातुम्, स्था स्थातुम्, ज्ञा ज्ञातुम्, जि जेतुम्, यज् यष्टुम्, सृज् स्रष्टुम्, वह् वाढुम्, श्रु श्रोतुम्, स्तु स्तोतुम्, सह् सहितुम्-सोढुम्, क्रम् क्रमितुम्, वद् वदितुम्, फल् फलितुम्, गम् गन्तुम्, हन् हन्तुम्, तॄ तरितुम्-तरीतुम्, सेव् सेवितुम्, वृत् वर्त्तितुम्, भ्रम् भ्रमितुम्, विद् वेदितुम्, रुद् रोदितुम्, शास् शासितुम्, नृत् नर्त्तितुम्, स्थापि स्थापयितुम्, योजि योजयितुम्, मोचि मोचयितुम्।

तुम्-प्रत्ययान्त और कुछ पद :—अद् अत्तुम्, अस् (भू) भवितुम्, इ एतुम्, ईक्ष् ईक्षितुम्, कथ् कथयितुम्, कारि कारयितुम्, कुप् कोपितुम्, कृष् कर्ष्टुम्-क्रष्टुम्, क्री क्रेतुम्, क्रीड् क्रीडितुम्, क्षिप् क्षेप्तुम्, खन् खनितुम्, गुप् गोप्तुम्-गोपितुम्-गोपायितुम्, चि चेतुम्, चिन्त् चिन्तयितुम्, चुर् चोरयितुम्, छिद्-छेत्तुम्, जागृ जागरितुम्, जीव् जीवितुम्, त्यज् त्यक्तुम्, त्रै त्रातुम्, दन्श् दंष्टुम्, ध्यै ध्यातुम्, निन्द् निन्दितुम्, नी नेतुम्, पच् पक्तुम्, पू पवितुम्, पूज् पूजयितुम्, प्रच्छ् प्रष्टुम्, बन्ध् बन्धुम्, ब्रू (वच्) वक्तुम्, भक्ष् भक्षयितुम्, भञ्ज् भंक्तुम्, भिद् भेत्तुम्, मिल् मेलितुम्, मुच् मोक्तुम्, मृ मर्त्तुम्, या यातुम्, युज् योक्तुम्, रक्ष् रक्षितुम्, रम् रन्तुम्, लभ् लब्धुम्, लिख् लेखितुम्, वच् वक्तुम्, वस्

प्रभुः भृत्यं गन्तुमादिशति। बहुतोंके मतमें यह अशुद्ध है। कारण दोनों क्रियाओंके कर्त्ता एक नहीं होनेसे तुमुन् नहीं होता। इस हेतु भोक्तुम् के स्थानमें भोजनाय, गन्तुम्के स्थानमें गमनाय होना ही उचित है। चतुम् और तुमुन् एक ही है। चतुम् से च इत् तुम् रहता है और तुमुन्से उन् इत् तुम् रहता है। "तुमुन्ण्वुलौ क्रियायां क्रियार्थायाम्।" एक क्रियाके निमित्त दूसरी क्रिया उपपद रहे तो भविष्य अर्थमें धातुसे परे तुमुन् और ण्वुल् प्रत्यय होते हैं; ण्वुल्से वु=अक रहता है। यथा, कृष्णं द्रष्टुं याति; कृष्णं दर्शको याति। दृश्+ण्वुल्=दर्शकः।

(to dwell) वस्तुम् (to wear) वसितुम्, वाञ्छ् वाञ्छितुम्, शिक्ष् शिक्षितुम्, शुच् शोचितुम्, श्वस् श्वसितुम्, सिच् सेक्तुम्, स्पृश् स्पर्ष्टुम्-स्प्रष्टुम् स्पृह् स्पृहयितुम्, स्मृ स्मर्त्तुम् स्वप् स्वप्तुम्, हस् हसितुम्, हा हातुम्, हिन्स् हिंसितुम्, हृ हर्त्तुम, ह्वे ह्वातुम्।

५४। "पर्य्याप्तिवचनेष्वलमर्थेषु।" समर्थार्थबोधक शब्दों के (१) योगसे धातुके उत्तर तुमुन् होता है। यथा, बोद्धुं समर्थः, भोक्तुं पटुः, वर्त्तितुं निपुणः, कारयितुं कुशलः, योजयितुं प्रवीणः (२)।

५५। "कालसमयवेलासु तुमुन्।" कालवाचक शब्दों के योगमें धातुके उत्तर तुमुन् होता है। यथा, गन्तु समयोऽयम्, अध्येतुं कालोऽयम्, शयितु वेलेयम् (३)।

अतिरिक्त।

(१) "शकधृषज्ञाग्लाघटरभलभक्रमसहार्हास्त्यर्थेषु तुमुन्। शक्, धृष्, ज्ञा, ग्ला, घट्, रभ्, लभ्, क्रम्, सह्, अर्ह्, और अस् धातु तथा इसके तुल्यार्थक धातुओं के प्रयोग होनेपर निमित्त अर्थ बोध नहीं होनेसे भी धातुके उत्तर तुमुन् होता है। यथा, गातुं शक्नोमि (I can sing), मां तोषयितुं जानासि (You know how to please me), स नर्त्तितुमारभते (He begins to dance), स वक्तुं प्रचक्रमे (He began to speak), न विषहे विपत्तिमवलोकयितुम् (I cannot bear to see the distress), दोषं मे क्षन्तुमर्हसि (Please excuse my fault), अस्ति (भवति विद्यते वा) भोक्तुमन्नम् (There is food to eat) इत्यादि।

(२) काम और मनस् शब्द परे रहनेसे तुमुन् के म्, उ, न् इत् होकर केवल तु रहता है। यथा, गन्तुकामः (wishes to go), कर्त्तुमनाः (wishes to do) इत्यादि।

---

(१) समर्थार्थबोधक शब्द यथा—समर्थ, पटु, अलम्, निपुण, कुशल, प्रवीण, क्षम, पर्याप्त इत्यादि। (२) Other examples :—लिखितमपि ललाटे प्रोज्झितुं कः समर्थः (Who is able to avoid what is written on the forehead ?), पर्याप्तोऽसि प्रजाः पातुम् (You are able to protect your subjects, सोऽस्मिन् सिंहासने उपवेष्टुं क्षमः (He is fit for sitting on this throne)। (३) अवसरोऽयमात्मानं प्रकाशयितुम् (This is the opportunity for showing myself)।

EXERCISE.

1. *Translate into Sanskrit* :—The brother is going to see his sister. I am going to drink water. You wish to go home. Ram goes to bathe in the Ganges. You know how to *please* (तोषयितुम्) me. He then went to conquer *the inhabitants of Magadha* (मागधान्). He came here to see me. *Do not consider* (मम्प्रतिपत्तुमर्हसि) me *to be a stranger* (परं). Who *in this world* (इह) is able *to avoid* (प्रोज्झितुं) what is written on the forehead. I cannot bear to see the distress. Is he able to rule the earth? *It behoves you* (भवान् अर्हति) to pardon me. *It is time* (कालोऽयम्) to go to school. *This is the opportunity* (अवसरोऽयम्) for showing myself. Who can do this but Hari? Is he fit for sitting on this throne? Sita *desired* (इयेष) to obtain Ram for her husband. Are you able to count the stars? He has gone out to collect some fruits and to bring some water to drink. Raghu then *set out* (प्रतस्थे) to conquer *the persians* (पारसीकान्) *by land* (स्थलवर्त्मना). You are able to protect the subjects. He is not fit for sitting on this throne. *To sleep in the day-time* (दिवानिद्रा) *is bad* (नोचिता) *To lie* (मिथ्याकथनं) *is sinful* (पापजनकम्). *To walk in the morning* (प्रातर्भ्रमणं) *is healthful* (हि स्वास्थ्यकरम्). To steal is a sin. *To rise early* (प्रातरुत्थानं) makes one healthy. To do good to others is our duty. Who is able to bear this burden? Morning is the best time to walk. I wish to know who can do this work without my help.

2. *Correct*:—आगच्छ वयं गृहं गमितुं यते। प्रभुः भृत्यं भक्षयितुम् आदिशति। नाहं तव भारं वहितुं समर्थः। स रामं गातुं शुश्राव। तस्मै उपवेष्टु आसनं देहि। सखि! उचितं न ते मङ्गलकाले रुदितुम्। एतन्मे संशयं कृष्ण छित्तुं अर्हस्यशेषतः। लज्जया स मे दर्शनपथं उपगमितुं न शक्नोति। उपाध्यायः अस्याम् उपविशतुम् अर्हति। ऋते रवेः क्षालितुम् क्षमेत कः? त्वां तत्र गन्तुं अभिलषामि।

णमुल् (चणम्)।

५६। "आभीक्ष्ण्ये णमुल् च।" पौनःपुन्य अर्थ बोध होनेसे पूर्वकालिक क्रियावाचक धातुके उत्तर णमुल् होता है (१); ण् उल् इन् अम् रहता है। यथा, स्मृ स्मारम्, श्रु श्रावम्, स्तु स्तावम्, नम् नामम्, ग्रह् ग्राहम्, भुज् भोजम् भिद् भेदम्, क्षिप् क्षेपम्, मृश् मर्शम्, स्पृश् स्पर्शम्, हस् हासम्, गाह् गाहम्, सेव् सेवम्।

५७। णमुल् प्रत्यय परे रहनेसे हन्-धातुके स्थानमें घात् होता है। यथा, घातम्।

५८। णमुल्-प्रत्ययनिष्पन्न पद प्रयोगके समय प्रायः द्वित्व प्राप्त होता है पौनः पुन्य अर्थ में। यथा, स्मारं स्मारम् (२), ग्राहं ग्राहम्, घातं घातम्।

५९। अन्यथा, एवम्, कथम् और इत्थम्, शब्दोंके परस्थित कृ-धातुके उत्तर णमुल् होता है। यथा, अन्यथाकारम् (Differently), एवङ्कारम् (In this way), कथङ्कारम् (In what manner), इत्थङ्कारम् (In this manner) (३)।

---

(१) "समानकर्त्तृकयोः पूर्वकाले।" दो क्रियाओंका कर्त्ता एक होने पर क्त्वा भी होता है। यथा, स्मारं स्मारम्, स्मृत्वा स्मृत्वा वा व्रजति; स्थायं स्थायं क्वचिद् यान्तं क्रान्त्वा क्रान्त्वा स्थितं क्वचित्। भट्टि ५। ५१

(२) स्मारं स्मारं स्वगृहचरितं दारुभूतो मुरारिः (Having constantly thought of the affairs of his family, Murari was turned into wood).

(३) "अन्यथैवं कथमित्थं सु सिद्धाप्रयोगश्चेत्।" अन्यथाकारम् आदि पदोंमें जब कृ धातु निरर्थक होता है अर्थात् कृ-धातुका कुछ अर्थ नहीं रहता है तब इसके उत्तर णमुल् होता है; और जब कृ-धातु अर्थ-युक्त होता है तब इसके उत्तर क्त्वा होता है। यथा, "अन्यथाकारं भुङ्क्ते" (वह अन्य प्रीतिसे खाता है), यहाँ कृ निरर्थक है; किन्तु "शिरोऽन्यथा कृत्वा भुङ्क्ते" (वह शिरको अन्य प्रकार करके खाता है) यहाँ कृ-धातु अर्थयुक्त है।

६०। "कर्मणि दृशिविदोः साकल्ये।" साकल्य अर्थ बोध होनेसे कर्मपदके परवर्ती दृश् और विद् धातु के उत्तर णमुल् होता है। यथा, दरिद्रदर्शं ददाति, सर्वान् दरिद्रान् दृष्ट्वा ददातीत्यर्थः; विप्रदर्शं भोजयति सर्वान् विप्रान् दृष्ट्वा भोजयितुमिच्छतीत्यर्थः; ऐसे दरिद्रदर्शं, विप्रवेदम्।

६१। "यावति विन्दजीवोः।" यावत् शब्दके परवर्ती जीव् धातुके उत्तर णमुल् होता है। यथा, यावज्जीवमधीते (He studies to the last moment of his life)।

६२। "चर्मोदरयोः पूरेः।" चर्म और उदर (१) शब्दके परवर्त्ती पूरि धातुके उत्तर णमुल् होता है। यथा, चर्मपूरं स्तृणाति (He covers leatherful) उदरपूरं भुङ्क्ते, उदरं पूरयित्वा भुङ्क्ते इत्यर्थः (He eats his bellyful)।

६३। "निमूलसमूलयोः कषः।" निमूल और समूल (२) शब्दके परवर्त्ती कष् धातुके उत्तर णमुल् होता है। यथा, निमूलकाषं कषति, समूलकाषं कषति। "समूलाकृत जीवेषु हन् कृञ् ग्रहः" समूल, अकृत ग्रीव इन तीन शब्दोंके परवर्त्ती हन् कृञ् ग्रह् धातुओंसे यथाक्रम णमुल् होता है। यथा, समूलघातं हन्ति, अकृतकारं करोति, हन्-धातुके ह् के स्थानमें घ् और न् के स्थानमें त् होता है। यथा, समूलघातं हन्ति (३)।

६४। जीवग्राहं गृह्णाति (Captures one alive)।

६५। "हस्ते वर्त्तिग्रहोः।" हस्तवाचक (४) शब्दके परस्थित ग्रह्-धातुके उत्तर णमुल् होता है। यथा, हस्तग्राहं

---

(१) कर्मवाचक। (२) क्रियाविशेषणवाचक। (३) यहाँसे लेकर जिस धातुके उत्तर णमुल् विहित होगा उस धातुका पुनः प्रयोग करना होगा। इसलिये सब उदाहरणोंमें ही धातुओंका पुनः प्रयोग देखनेमें आवेगा। (४) करणबोधक।

गृह्णाति, हस्तेन गृह्णातीत्यर्थः (Takes one by the hand); ऐसे पाणिग्राहम्, करग्राहम्।

६६। "स्वे पुषः।" स्ववाचक शब्दके परवर्त्ती पुष्-धातुके उत्तर णमुल् होता है। यथा, स्वपोषं पुष्णाति, स्वेन पुष्णातीत्यर्थः; ऐसे धनपोषम्, अन्नपोषम्, मातृपोषम्—धनेन, अन्नेन, मात्रा पुष्णातीत्यर्थः।

६७। "ऊर्द्ध्वे शुषिपूरोः।" कर्त्तृविशेषण ऊर्द्ध्व शब्दके परवर्त्ती शुष् धातुके उत्तर णमुल् होता है। यथा, ऊर्द्ध्वशोषं शुष्यति तरुः, तरुरूर्द्ध्व एव तिष्ठन् शुष्यतीत्यर्थः। ऊर्द्ध्वपूरं पूर्य्यते ऊर्द्ध्वमुखएव घटादिर्वर्षोदकेन पूर्णो भवतीत्यर्थः।

६८। "उपमाने कर्मणि च।" उपमानवाचक कर्तृपद तथा कर्मपदके परवर्त्ती धातुके उत्तर णमुल् होता है। यथा, विद्युत्प्रणाशं प्रनष्टः विद्युदिव क्षणेनैव विनष्ट इत्यर्थः; शलभनाशं नश्यति, शलभ इव अविमृष्यकारी पुरुषो नश्यतीत्यर्थः; पितृवेदं वेत्ति गुरुम् गुरुं पितरमिव जानातीत्यर्थः; पुत्त्रदर्शं पश्यति शिष्यम् शिष्यं पुत्त्रमिव सस्नेहं पश्यतीत्यर्थः।

ल्यप् (यप्)। (Sanskrit Indeclinable Past Participle Suffix).

६९। "समासेऽनञ् पूर्वे क्त्वो ल्यप्।" नञ् भिन्न अव्यय पदके साथ समास होनेसे पूर्वकालिक क्रियावाचक धातुके उत्तर ल्यप् होता है; ल् प् इत् य रहता है। यथा, आ-घ्रा आघ्राय, आ-दा आदाय, वि-धा विधाय, अपि-धा पिधाय अपिधाय, प्र-स्था प्रस्थाय, वि-हा विहाय, वि-आ-ख्या व्याख्याय, वि-ज्ञा विज्ञाय, आ-लिङ्ग् आलिङ्ग्य, सम्-त्यज् सन्त्यज्य, वि-भज् विभज्य, प्र-नि-पत् प्रणिपत्य, प्र-आप् प्राप्य, प्र-कम्प् प्रकम्प्य, आ-रभ् आरभ्य, नि-शम् निशम्य, वि-श्रम् विश्रम्य,

आ-सेव् आसेव्य, सम्-रक्ष् संरक्ष्य, उत्-अस् उदस्य, अभि-अस् अभ्यस्य, नि-श्वस् निश्वस्य, वि-हस् विहस्य, वि-गर्ह् विगर्ह्य।

७०। ल्यप् प्रत्यय परे रहनेसे धातुके अन्त्य स्वर तथा उपधा लघु स्वरको गुण नहीं होता। यथा, वि-जि विजित्य, सम्-चि सञ्चित्य, अधि-इ अधीत्य, प्र-इ प्रेत्य, आ-श्रि आश्रित्य, सम्-श्रि संश्रित्य, वि-स्मि विस्मित्य, सम्-श्रु संश्रुत्य, सम्-स्तु संस्तुत्य, उप-प्लु उपप्लुत्य, आ-हृ आहृत्य, वि-धृ विधृत्य, आ-वृ आवृत्य, प्र-हृ प्रहृत्य, सम्-सृ संसृत्य, सम्-स्तृ संस्तृत्य, प्र-कृ प्रकृत्य, द्विधा-कृ द्विधाकृत्य, नाना-कृ नानाकृत्य (१), आ-नी आनीय, वि-नी विनीय, वि-धू विधूय, सम्-भू सम्भूय, प्र-सू प्रसूय, आ-लिख् आलिख्य, उत्-मुच् उन्मुच्य, सम्-भुज् सम्भुज्य, नि-युज् नियुज्य, वि-सृज् विसृज्य, आ-छिद् आच्छिद्य, वि-भिद् विभिद्य, नि-रुध् निरुध्य, सम्-क्षिप् संक्षिप्य, प्र-कुप् प्रकुप्य, वि-लुप् विलुप्य, वि-सृप् विसृप्य, प्र-विश् प्रविश्य, सम्-स्पृश् संस्पृश्य, आ-कृष् आकृष्य, निर्-पिष् निष्पिष्य, वि-शिष् विशिष्य, आ-श्लिष् आश्लिष्य, सम् दिह् सन्दिह्य, आ-रुह् आरुह्य, वि-सह् विसह्य, वि-गाह् विगाह्य, अव-गाह् वगाह्य अवगाह्य।

७१। ल्यप् प्रत्यय परे रहने से हन् मन् तन् आदि धातुओंके न् के स्थानमें विकल्पसे त् होता है। यथा, आ-हन् आहत्य, सम्-मन् सम्मत्य, वि-तन् वितत्य।

७२। "वा ल्यपि।" ल्यप् प्रत्यय परे रहनेसे यम् रम् नम् गम् आदि धातुओंके म् के स्थानमें विकल्पसे त् होता है।

(१) "ह्रस्वस्य पिति कृति तुक्।" पकार इत्संज्ञक कृत् प्रत्यय परे रहनेसे ह्रस्वस्वरान्त धातुके परे तुक्का आगम होता है। तुक्में से उक् इत् त् रहता है। ल्यप् पकारेत् कृत् प्रत्यय है, इसलिये ह्रस्व स्वरके परे त् हुआ है।

यथा, सम्-यम् संयत्य, संयम्य, वि-रम् विरत्य विरम्य, प्र-नम् प्रणत्य प्रणम्य, आ-गम् आगत्य आगम्य।

७३। ल्यप् परे रहनेसे सन्ज् आदि धातुओंके उपधा नकारका लोप होता है। यथा, आ-सन्ज् आसज्य, प्र-शन्स् प्रशस्य, सम्-दन्श् सन्दश्य, वि-स्रन्स् विस्रस्य, प्र-भ्रन्श् प्रभ्रश्य प्र-मन्थ् प्रमथ्य।

७४। ल्यप् परे रहनेसे शी-के स्थानमें शय्, प्रच्छ् के स्थानमें पृच्छ् और ग्रह् के स्थानमें गृह् होता है। यथा, अधि-शी अधिशय्य, आ-प्रच्छ् आपृच्छय, सम्-ग्रह् संगृह्य, वि-ग्रह् विगृह्य, नि-ग्रह् निगृह्य।

७५। ल्यप् परे रहनेसे ह्वे धातुके स्थानमें हू और क्षि धातुके स्थानमें क्षी होता है। यथा, आ-ह्वे आहूय, प्र क्षि प्रक्षीय।

७६। ल्यप् परे रहनेसे स्वप्, वच् वप् वस्, वह् और वद् धातुओंके अकार-सहित व्-के स्थानमें उ होता है। यथा, सम्-स्वप् संसुप्य, प्र वच् प्रोच्य, सम्-वप् समुप्य, अधि-वस् अध्युष्य, प्र-वह् प्रोह्य, अनु-वद् अनूद्य।

७७। ल्यप् परे रहनेसे दीर्घ ॠकारान्त धातुओंके ॠ के स्थानमें ईर् होता है। यथा, वि-कॄ विकीर्य्य, उत्-गॄ उद्गीर्य्य, वि-तॄ वितीर्य्य, वि-दॄ विदीर्य्य, वि-शॄ विशीर्य्य, वि-स्तॄ विस्तीर्य्य।

७८। ल्यप् परे रहनेसे णिच्का लोप होता है। यथा, नि-मीलि निमील्य, वि-चारि विचार्य्य, सम्-प्र-धारि सम्प्रधार्य्य, सम्-स्थापि संस्थाप्य, प्र-काशि प्रकाश्य, वि-नाशि विनाश्य, आ-श्वासि आश्वास्य, उत्-सारि उत्सार्य्य, अधि-आपि अध्याप्य, सम्-अर्पि समर्प्य, वि-दारि विदार्य्य, आ-लोचि

आलोच्य, सम्-पीडि सम्पीड्य, निर्-पीडि निष्पीड्य, आ-छादि आच्छाद्य, आ-स्वादि आस्वाद्य, आ-राधि आराध्य।

७९। "ल्यपि लघुपूर्वात्।" णिच्का पूर्ववर्त्ती स्वर यदि लघु हो तो ल्यप् परे रहनेसे णिच्के स्थानमें अय् होता है। यथा, वि-गणि विगणय्य, वि-रचि विरचय्य, प्र-नमि प्रणमय्य, वि-रमि विरमय्य, सम्-घटि संघटय्य, वि-रहि विरहय्य।

८०। "विभाषापः।" ल्यप् परे रहनेसे आप्-धातुके णिच्के स्थानमें अय् होता है और पक्षान्तरमें णिच्का लोप होता है। यथा, प्र-आपि प्रापय्य प्राप्य, सम्-आपि समापय्य समाप्य।

८१। तुमुन्, णमुल् और ल्यप् प्रत्ययोंसे बने हुए शब्द अव्यय होते हैं, इसलिये इनके उत्तर विभक्तियाँ नहीं रहतीं। ये असमापिका (पूर्वकालिक) क्रिया होते हैं।

निष्ठा (क्त, क्तवतु)। (Suffixes forming *Sanskrit Past Participles*).

८२। "क्त। क्तवतू निष्ठा।" धातुके उत्तर अतीत (भूत) कालमें क्त और क्तवतु प्रत्यय होते हैं। क् उ इत्, त और तवत् रहते हैं। इन दोनों प्रत्ययोंका नाम निष्ठा प्रत्यय है।

८३। तिङन्त प्रकरणमें जो सब धातु अनिट् नामसे निर्दिष्ट हैं, निष्ठा प्रत्यय परे रहनेसे उनके उत्तर इट् नहीं होता। यथा, ख्या ख्यातः, ख्यातवान् (*famous*); ज्ञा ज्ञातः, ज्ञातवान्; ध्यै ध्यातः, ध्यातवान्; या यातः, यातवान्; स्ना स्नातः, स्नातवान्; इ इतः, इतवान्; चि चितः, चितवान्; जि जितः, जितवान्; स्मि स्मितः, स्मितवान्; क्री क्रीतः, क्रीतवान्; नी नीतः, नीतवान्; प्री प्रीतः, प्रीतवान्; भी भीतः, भीतवान्; द्रु द्रुतः, द्रुतवान्; धु धुतः, धुतवान्; श्रु

श्रुतः, श्रुतवान्; स्तु स्तुतः, स्तुतवान्; स्रु स्रुतः, स्रुतवान्; हु हुतः, हुतवान्; कृ कृतः, कृतवान्; दृ दृतः, दृतवान्; धृ धृतः, धृतवान्; भृ भृतः, भृतवान्; मृ मृतः, मृतवान्; सृ सृतः, सृतवान्; स्तृ स्तृतः, स्तृतवान्; स्मृ स्मृतः, स्मृतवान्; हृ हृतः, हृतवान्।

८४। तिङन्त प्रकरणमें साधारण नियमोंसे जो सब कार्य होते हैं निष्ठा प्रत्यय परे रहनेसे भी यथासम्भव वे ही सब कार्य होते हैं (१)। यथा, शक् शक्तः, शक्तवान्; मुच् मुक्तः, मुक्तवान्; रिच् रिक्तः, रिक्तवान्; सिच् सिक्तः, सिक्तवान्; त्यज् त्यक्तः, त्यक्तवान्; भज् भक्तः, भक्तवान्; भुज् (२) भुक्तः, भुक्तवान्; युज् युक्तः, युक्तवान्; सृज् सृष्टः, सृष्टवान्; क्रुध् क्रुद्धः, क्रुद्धवान्; बुध् बुद्धः, बुद्धवान्; युध् युद्धः, युद्धवान्; राध् राद्धः, राद्धवान्; रुध् रुद्धः, रुद्धवान्; शुध् शुद्धः, शुद्धवान्; सिध् (३) सिद्धः, सिद्धवान्; आप् आप्तः, आप्तवान्; क्षिप् क्षिप्तः, क्षिप्तवान्; तप् तप्तः, तप्तवान्; तृप् तृप्तः, तृप्तवान्; दृप् दृप्तः, दृप्तवान्; लिप् लिप्तः, लिप्तवान्; लुप् लुप्तः, लुप्तवान्; शप् शप्तः, शप्तवान्; रभ् रब्धः, रब्धवान्; लभ् लब्धः, लब्धवान्; दिश् दिष्टः, दिष्टवान्; दृश् दृष्टः, दृष्टवान्; विश् विष्टः, विष्टवान्; स्पृश् स्पृष्टः, स्पृष्टवान्; कृष् कृष्टः, कृष्टवान्; तुष् तुष्टः, तुष्टवान्; दुष् दुष्टः, दुष्टवान्; पिष् पिष्टः, पिष्टवान्; पुष् पुष्टः, पुष्टवान्; मृष् मृष्टः, मृष्टवान्; शिष् शिष्टः, शिष्टवान्; श्लिष् श्लिष्टः, श्लिष्टवान्; दह् दग्धः,

---

(१) क्त्वा और क्तिन् प्रत्ययोंके लिये भी यही नियम है।

(२) रुधादिगणीय भोजनार्थक।

(३) दिवादिगणीय सिद्ध्यर्थक। भ्वादिगणीय गमनार्थक सिध् धातु का भी ऐसा।

दग्धवान्; दिह् दिग्धः, दिग्धवान्; नह् नद्धः, नद्धवान्; रुह् रूढः, रूढवान्; लिह् लीढः, लीढवान् (१)।

८५। तिङन्त प्रकरणमें जिन सब धातुओंके उत्तर इट् होता है निष्ठा प्रत्यय परे रहनेसे भी प्रायः उन सब धातुओंके उत्तर इट् होता है। यथा, लिख् लिखितः, लिखितवान्; लिङ्ग् लिङ्गितः, लिङ्गितवान्; लङ्घ् लङ्घितः, लङ्घितवान्; श्लाघ् श्लाघितः, श्लाघितवान्; अर्च्च् अर्च्चितः, अर्च्चितवान्; चर्च्च् चर्च्चितः, चर्च्चितवान्; याच् याचितः, याचितवान्; वञ्च् वञ्चितः, वञ्चितवान्; वाञ्छ् वाञ्छितः, वाञ्छितवान्; गर्ज्ज् गर्ज्जितः, गर्ज्जितवान्; तर्ज्ज् तर्ज्जितः, तर्ज्जितवान्; राज् राजितः, राजितवान्; उज्झ् उज्झितः, उज्झितवान्; घट् घटितः, घटितवान्; घट्ट घट्टितः, घट्टितवान्; चेष्ट् चेष्टितः, चेष्टितवान्; त्रुट् त्रुटितः, त्रुटितवान्; वेष्ट् वेष्टितः, वेष्टितवान्; स्फुट् स्फुटितः, स्फुटितवान्; कुण्ठ् कुण्ठितः, कुण्ठितवान्; पठ् पठितः, पठितवान्; लुण्ठ् लुण्ठितः, लुण्ठितवान्; क्रीड् क्रीडितः, क्रीडितवान्; पिण्ड् पिण्डितः, पिण्डितवान्; मण्ड् मण्डितः, मण्डितवान्; लोड् लोडितः, लोडितवान्; घूर्ण् घूर्णितः, घूर्णितवान्; पण् पणितः, पणितवान्; पत् पतितः, पतितवान्; प्रथ् प्रथितः, प्रथितवान्; व्यथ् व्यथितः, व्यथितवान्; क्रन्द् क्रन्दितः, क्रन्दितवान्; खाद् खादितः, खादितवान्; गद् गदितः, गदितवान्; नर्द्द् नर्द्दितः, नर्द्दितवान्; निन्द् निन्दितः, निन्दितवान्; नन्द् नन्दितः, नन्दितवान्; मुद् मुदितः, मुदितवान्; रुद् रुदितः, रुदितवान्; विद् विदितः, विदितवान्; वाध् वाधितः, वाधितवान्; स्पर्द्ध् स्पर्द्धितः, स्पर्द्धितवान्; कुप् कुपितः, कुपितवान्; कम्प् कम्पितः, कम्पितवान्;

(१) अद् जग्ध, जग्धवान्; शास् शिष्टः, शिष्टवान्।

जल्प् जल्पितः, जल्पितवान्; गुम्फ् गुम्फितः, गुम्फितवान्; चुम्ब् चुम्बितः, चुम्बितवान्; लम्ब् लम्बितः, लम्बितवान्; क्षुभ् क्षुभितः, (मंथ शब्द के विशेषण करने में क्षुब्धः भी होता है) क्षुभितवान्; जृम्भ् जृम्भितः, जृम्भितवान्; स्तिम् स्तिमितः, स्तिमितवान्; श्रय् श्रयितः, श्रयितवान्; क्षर् क्षरितः, क्षरितवान्; चर् चरितः, चरितवान्; त्वर् त्वरितः, त्वरितवान्; स्फुर् स्फुरितः, स्फुरितवान्; गल् गलितः, गलितवान्; चल् चलितः, चलितवान्; ज्वल् ज्वलितः, ज्वलितवान्; दल् दलितः, दलितवान्; फल् फलितः, फलितवान्; मिल् मिलितः, मिलितवान्; मील् मीलितः, मीलितवान्; वेल्ल् वेल्लितः, वेल्लितवान्; शल् शलितः, शलितवान्; शील् शीलितः, शीलितवान्; स्खल् स्खलितः, स्खलितवान्; खर्व् खर्वितः, खर्वितवान्; गर्व् गर्वितः, गर्वितवान्; जीव् जीवितः, जीवितवान्; धाव् धावितः धावितवान् (१); सेव् सेवितः,

(१) धाव्-धातुके दो अर्थ हैं—गति (*to run, to flow*) और शुद्धि (*to wash, to purify*)। "धावु गति विशुद्ध्योः" इति पाणिनिः। दुर्गादासके मतमें गत्यर्थक धाव्-धातुके उत्तर निष्ठा (क्त और क्तवतु) प्रत्यय नहीं होता "अस्य (धाव्-धातोः) जवे निष्ठाया अप्रयोगः," केवल शुद्धि-अर्थ-बोधक धाव् धातुके उत्तर ही निष्ठा प्रत्यय होता है। इसलिये "च्छ्वोः शूडनुनासिके च" इस सूत्रके अनुसार धाव्+क्त=धौतः पद ही होता है। दुर्गादासके अनुसार धावितः पद धाव् शब्दके उत्तर इत प्रत्यय करके सिद्ध है (धावो धावनं स जातोऽस्य इति वाक्ये इत)। परन्तु पद्मनाभके अनुसार गत्यर्थक धाव्-धातुसे धावितः पद सिद्ध होता है ("गतौ धावितः")। और पाणिनि तथा अनेक व्याकरणोंके अनुसार उदित् होनेके कारण धाव्-धातुके उत्तर विकल्पसे इट् होता है (उदित्त्वात् विकल्पितेट्)। इसलिये इनके अनुसार धावितः पद व्याकरण सम्मत है। और शिष्टप्रयोगमें भी धावितः पद बहुधा मिलता है।

सेवितवान्; अश् (१) अशितः, अशितवान्; काश् काशितः, काशितवान्; ईक्ष् ईक्षितः, ईक्षितवान्; काङ्क्ष् काङ्क्षितः, काङ्क्षितवान्; तृष् तृषितः, तृषितवान्; भिक्ष् भिक्षितः, भिक्षितवान्; मुष् मुषितः, मुषितवान्; रक्ष् रक्षितः, रक्षितवान्; लष् (२) लषितः, लषितवान्; शिक्ष् शिक्षितः, शिक्षितवान्; भर्त्स् भर्त्सितः, भर्त्सितवान्; रस् रसितः, रसितवान्; श्वस् श्वसितः, श्वसितवान्; आ+शन्स् आशंसितः, आशंसितवान् (३); हस् हसितः, हसितवान्; हिन्स् हिंसितः, हिंसितवान्; ईह् ईहितः, ईहितवान्; ऊह् ऊहितः, ऊहितवान्; गर्ह् गर्हितः, गर्हितवान्; रह् रहितः, रहितवान्।

८६। "निष्ठायां सेटि।" निष्ठा प्रत्ययके सहयोगमैं इट् परे रहनेसे णिच्का लोप होता है। यथा, कारि कारितः, कारितवान्; क्षालि क्षालितः, क्षालितवान्; पालि पालितः, पालितवान्; अर्पि अर्पितः, अर्पितवान्; स्थापि स्थापितः, स्थापितवान्; श्रावि श्रावितः, श्रावितवान्; रोपि रोपितः, रोपितवान्; जनि जनितः, जनितवान्।

८७। "निष्ठा शीङ् स्विदिमिदिक्ष्विदिधृषः।" निष्ठा प्रत्यय परे रहनेसे शी-धातुके स्थानमैं शय् होता है। यथा, शी शयितः, शयितवान्।

८८। निष्ठा प्रत्यय परे रहनेसे श्रि, उकारान्त, ऊकारान्त

---

(१) क्र्यादिगणीय भोजनार्थक। स्वादिगणीय व्याप्त्यर्थक अश्+क्त=अष्टः।

(२) लष् (*to wish*) भ्वादि, दिवादि उ० पदी। भ्वादिगणीय प० पदी लस् (*to shine*) धातुसे भी लसितः, लसितवान् होते हैं।

(३) यह शन्स् धातु आ० पदी इच्छार्थक। इसका प्रयोग केवल आङ् उपसर्गके योगसे ही होता है। यथा, "तदा नाशंसे विजयाय सञ्जय।" भ्वादि प० पदी स्तुत्यर्थक शन्स्+क्त=शस्तः, शन्स्+क्तवतु=शस्तवान्।

और वृ धातुके उत्तर इट् नहीँ होता। यथा, श्रि श्रितः, श्रितवान्; यु युतः, युतवान्; रु रुतः, रुतवान्; नु नुतः, नुतवान्; स्नु स्नुतः, स्नुतवान्; धू धूतः, धूतवान्; पू पूतः, पूतवान्; भू भूतः, भूतवान्; सू (१) सूतः, सूतवान्; वृ वृतः, वृतवान्।

८९। गणपाठके समय जो सब धातु ईकारयुक्त रहते हैँ निष्ठा प्रत्यय परे रहनेसे उनके उत्तर इट् नहीँ होता। यथा, दीप् दीप्तः, दीप्तवान्; त्रस् त्रस्तः, त्रस्तवान्; पृच् पृक्तः, पृक्तवान्।

९०। और और प्रकरणोँमैँ जिन धातुओँके उत्तर विकल्पसे इट्का विधान है निष्ठा प्रत्यय परे रहनेसे उन धातुओँके उत्तर इट् नहीँ होता। यथा, इष् इष्टः, इष्टवान्; गुप् गुप्तः, गुप्तवान्; दृप् दृप्तः, दृप्तवान्; लुप् लुप्तः, लुप्तवान्; अस् (२) अस्तः, अस्तवान्; ग्रस् ग्रस्तः, ग्रस्तवान्; वृष् वृष्टः, वृष्टवान्, धृष् धृष्टः, धृष्टवान्; मृज् मृष्टः, मृष्टवान्; गाह् गाढः, गाढवान्; गुह् गूढः, गूढवान्; स्निह् स्निग्धः, स्निग्धवान्; मुह् मुग्धः, मूढः, मुग्धवान् मूढवान्; सह् सोढः, सोढवान्।

९१। निष्ठा प्रत्यय परे रहनेसे दिव्, ष्ठिव् और सिव् धातुओँके व् के स्थानमैँ ऊकार होता है (३)। यथा, दिव् द्यूतः, द्यूतवान्; ष्ठिव् ष्ठ्यूतः, ष्ठ्यूतवान्; सिव् स्यूतः, स्यूतवान्।

९२। निष्ठा प्रत्यय परे रहनेसे क्रम् आदि धातुओँके म् के

---

(१) अदादिगणीय। दिवादिगणीय सू+क्त=सून.।

(२) दिवादिगणीय क्षेपणार्थक। अदादि अस्+क्त=भूतः।

(३) क्तिन् प्रत्यय होनेपर भी यही नियम है। क्त्वा प्रत्ययमैँ इट् होने से नहीँ होता।

स्थानमें आ होता है (१)। यथा, क्रम् क्रान्तः, क्रान्तवान्; क्लम् क्लान्तः, क्लान्तवान्; क्षम् क्षान्तः, क्षान्तवान्; चम् चान्तः, चान्तवान्; तम् तान्तः, तान्तवान्; दम् दान्तः, दान्तवान्; वम् वान्तः, वान्तवान्; शम् शान्तः, शान्तवान्; श्रम् श्रान्तः, श्रान्तवान्।

६३। "अनुदात्तोपदेशवनतितनोत्यादीनामनुनासिकलोपो झलि क्ङिति।" निष्ठा प्रत्यय परे रहनेसे गम् नम्, यम्, रम्, क्षण्, तन्, मन्, और हन् धातुओंके अन्त्य वर्णका लोप होता है (१)। यथा, गम् गतः, गतवान्; नम् नतः, नतवान्; यम् यतः, यतवान्; रम् रतः, रतवान्; तन् ततः, ततवान्; मन् मतः, मतवान्; हन् हतः, हतवान्।

६४। निष्ठा प्रत्यय परे रहनेसे खन्, जन् और सन् धातुओंके स्थानमें क्रमसे खा, जा, सा होता है। यथा, खन् खातः, खातवान्; जन् जातः, जातवान्; सन् सातः, सातवान्।

६५। "अनिदितां हल उपधायाः क्ङित।" निष्ठा प्रत्यय परे रहनेसे दन्श् आदि धातुओंके उपधा न्-का लोप होता है (१)। यथा, दन्श् दष्टः, दष्टवान्; रन्ज् रक्तः, रक्तवान्; सन्ज् सक्तः, सक्तवान्; बन्ध् बद्धः, बद्धवान्; स्तन्भ् स्तब्धः, स्तब्धवान्; भ्रन्श् भ्रष्टः, भ्रष्टवान्; स्रन्भ् स्रब्धः, स्रब्धवान्; ध्वन्स् ध्वस्तः, ध्वस्तवान्; स्रन्स् स्रस्तः, स्रस्तवान्; शन्स् शस्तः शस्तवान्; ग्रन्थ् ग्रथितः, ग्रथितवान्; मन्थ् मथितः, मथितवान्।

६६। "रदाभ्यां निष्ठातो नः पूर्वस्य च दः।" निष्ठा प्रत्यय परे रहनेसे दकारान्त धातुके द् के स्थानमें न् और उसके परवर्त्ती

(१) क्तिन् प्रत्ययमें भी यही नियम है। क्त्वा प्रत्ययमें इट् होनेसे नहीं होता।

निष्ठाके त् के स्थान मैं न् होता है। यथा, क्लिद् क्लिन्नः, क्लिन्नवान्; क्षुद् क्षुण्णः, क्षुण्णवान्; खिद् खिन्नः, खिन्नवान्; छिद् छिन्नः, छिन्नवान्; भिद् भिन्नः, भिन्नवान्; पद् पन्नः, पन्नवान्; सद् सन्नः, सन्नवान्। मद् धातुका नहीं होता। यथा, मद् मत्तः, मत्तवान्।

९७। "ओदितश्च ल्वादिभ्यः।" गणपाठके समय जो सब धातु ओकार संयुक्त रहते हैं उनके उत्तर विहित निष्ठा प्रत्ययके त् के स्थानमैं न् होता है। यथा, रुज् रुग्णः, रुग्णवान्; विज् विग्नः, विग्नवान्; भुज् (१) भुग्नः, भुग्नवान्; भन्ज् भग्नः, भग्नवान्। मस्ज्-धातुके स् का लोप होता है। मग्नः, मग्नवान्; दू दूनः, दूनवान्; सू (२) सूनः, सूनवान्; लू लूनः, लूनवान्; दी दीनः, दीनवान्; डी डीनः, डीनवान्। "निष्ठायामण्यदर्थे। क्षियो दीर्घात्।" क्षि-धातुका इकार दीर्घ होता है। क्षीणः, क्षीणवान्।

९८। "रदाभ्यां निष्ठातो नः पूर्वस्य च दः।" पूर्वमैं र् रहनेपर निष्ठाके त्-के स्थानमैं न् होता है। यथा, गूर् गूर्णः, गूर्णवान्; पूर् पूर्णः, पूर्णवान्; चूर् चूर्णः, चूर्णवान्।

९९। निष्ठा प्रत्यय परे रहने से दीर्घ ऋकारान्त धातुओंके ऋके स्थानमैं ईर् होता है। यथा, कॄ कीर्णः, कीर्णवान्; गॄ गीर्णः, गीर्णवान्; जॄ जीर्णः, जीर्णवान्; तॄ तीर्णः, तीर्णवान्; दॄ दीर्णः, दीर्णवान्; शॄ शीर्णः, शीर्णवान्; स्तॄ स्तीर्णः, स्तीर्णवान्।

१००। "संयोगादेरातो धातोर्यण्वतः।" ग्ला (ग्लै), म्ला, द्रा और स्त्या धातुओंके उत्तर निष्ठाके त्-के स्थानमैं न् होता है।

(१) तुदादिगणीय वक्रार्थक। (२) दिवादिगणीय।

यथा, ग्ला ग्लानः, ग्लानवान्; म्ला म्लानः, म्लानवान्; द्रा द्राणः, द्राणवान्; स्त्या स्त्यानः, स्त्यानवान्।

१०१। "नुदविदोन्दत्राघ्राह्रीभ्योऽन्यतरस्याम्।" ह्री, घ्रा, त्रा, नुद् उन्द् और विन्द् धातुओंके उत्तर निष्ठाके त्-के और उसके पूर्ववर्त्ती द्-के स्थानमें विकल्पसे न् होता है। यथा, ह्री ह्रीणः ह्रीतः, ह्रीणवान् ह्रीतवान्; घ्रा घ्राणः घ्रातः, घ्राणवान् घ्रातवान्; त्रा त्राणः त्रातः, त्राणवान् त्रातवान्; नुद् नुन्नः नुत्तः, नुन्नवान् नुत्तवान्; उन्नः, उत्तः उन्नवान्, उत्तवान् विन्द् विन्नः वित्तः, विन्नवान् वित्तवान् (१)।

१०२। "क्लिशः क्त्वानिष्ठयोः। रुष्यमत्वरसंघुषास्वनाम्। हृषेर्लोमसु।" निष्ठा प्रत्यय परे रहनेसे क्लिश्, अम्, हृष्, त्वर्, रुष्, संपूर्वक घुष् और आ पूर्वक स्वन् धातुओंके उत्तर निष्ठाको विकल्पसे इट् होता है। यथा, क्लिश् क्लिष्टः क्लिशितः, क्लिष्टवान् क्लिशितवान्; अम् आन्तः अमितः, आन्तवान् अमितवान्; हृष् हृष्टः हृषितः, हृष्टवान् हृषितवान्; तूर्णः, त्वरितः, तूर्णवान् त्वरितवान्; मुष् मुष्टः मुषितः, मुष्टवान् मुषितवान्; रुष् रुष्टः रुषितः, रुष्टवान् रुषितवान्; संघुष् संघुष्टः संघुषितः, संघुष्टवान् संघुषितवान्; आस्वन् आस्वान्तः आस्वनितः, आस्वान्तवान् आस्वनितवान्।

१०३। निष्ठा प्रत्यय परे रहनेसे छादि और ज्ञपिके स्थानमें विकल्पसे छद् और ज्ञप् होता है और इट् नहीं होता। यथा,

(१) ओदितो निष्ठायाम्।

छादि छन्नः छादितः, छन्नवान् छादितवान्; ज्ञपि ज्ञप्तः ज्ञपितः, ज्ञप्तवान् ज्ञपितवान् (१)।

१०४। "स्फायः स्फी निष्ठायाम्। प्यायः पी।" निष्ठा प्रत्यय परे रहनेसे स्फाय् धातुके स्थानमें स्फी और प्याय् धातुके स्थानमें स्वाङ्ग अर्थ में पी और अन्यत्र प्या होता है। यथा, स्फीतः स्फीतवान्; पीनः प्यानः, पीनवान् प्यानवान्।

१०५। "द्यतिस्यतिमास्थामित्ति किति।" निष्ठा प्रत्यय परे रहनेसे दो, सो (२), मा तथा स्था धातुओंके आकारके स्थानमें इकार होता है (३)। यथा, दो (दा) दितः, दितवान्; सो (सा) सितः, सितवान्; मा माङ्, मेङ् मितः, मितवान्; स्था स्थितः, स्थितवान्। "शाच्छोरन्यतरस्याम्।" शो तथा छो (४) धातुओंके आकार को विकल्पसे होता है। यथा, शा शितः शातः, शितवान् शातवान्; छो छितः छातः, छितवान् छातवान्।

१०६। "दो दद् घोः, दधातेर्हिः।" निष्ठा प्रत्यय परे रहनेसे दा धातुके स्थानमें दत् और धा धातुके स्थानमें हि होता है (५)। यथा, दा दत्तः दत्तवान्; धा हितः, हितवान्।

१०७। "अच उपसर्गात्तः।" स्वरान्त उपसर्गके परवर्त्ती दा धातुके स्थानमें दत् और त् होता है। यथा, आ+दा आदत्तः आत्तः, आदत्तवान् आत्तवान् (६)।

---

(१) वा दान्तशान्तपूर्णदस्तस्पष्टच्छन्नज्ञप्ताः। (२) दिवादिगणीय दो (to cut)=दा, सो (to destroy)=सा होता है। (३) क्त्वा और क्तिन् प्रत्ययोँ के लिये भी यही नियम है। (४) दिवादिगणीय शो (*to sharpen*)=शा, छो (*to cut*)=छा होता है। (५) क्त्वा और क्तिन् प्रत्ययोँके लिये भी यही नियम है। (६) दा धातुके स्थानमें जात त् परे रहनेसे उपसर्गके इ तथा उ दीर्घ होते हैं। यथा, नि+दा नीत्तः, नीत्तवान्।

१०८। निष्ठा प्रत्यय परे रहनेसे यज् और व्यध् धातुके य् और अ-के स्थानमें इ होता है (१)। यथा, यज् इष्टः, इष्टवान्; व्यध् विद्धः, विद्धवान्।

१०९। निष्ठा प्रत्यय परे रहनेसे ग्रह्, प्रच्छ् और भ्रस्ज् धातुओंके र् तथा अ-के स्थानमें ऋ होता है (१)। यथा, ग्रह् (२) गृहीतः, गृहीतवान्; प्रच्छ् पृष्टः, पृष्टवान्। भ्रस्ज् धातुके स्-का लोप होता है। भृष्टः, भृष्टवान्।

११०। निष्ठा प्रत्यय परे रहनेसे श्वि धातुके स्थानमें शू और ह्वे-के स्थान में हू होता है (१)। यथा, श्वि शूनः, शूनवान्; ह्वे हूतः, हूतवान्।

१११। "वसतिक्षुधोरिट्।" निष्ठा प्रत्यय परे रहनेसे क्षुध् और वस् धातुके उत्तर इट् होता है। यथा, क्षुध् क्षुधितः, क्षुधितवान्।

११२। निष्ठा प्रत्यय परे रहनेसे वच्, वद्, वप्, वस्, वह् और स्वप् धातुओंके व् और अ-के स्थानमें उ होता है (३)। यथा, वच् उक्तः, उक्तवान्; वद् उदितः, उदितवान्; वप् उप्तः, उप्तवान्; वस् उषितः, उषितवान्; वह् ऊढः, ऊढवान्; स्वप् सुप्तः, सुप्तवान्।

११३। निष्ठा प्रत्यय परे रहनेसे गा (गै) पा और हा (३)

---

(१) क्त्वा और क्तिन् प्रत्ययोंके लिये भी यही नियम है। (२) इट्का इ दीर्घ होता है। क्त्वा-के लिये भी यही नियम है। (३) "गा" गानार्थक भ्वादिगणीय गै धातु है। "पा" भ्वादिगणीय पानार्थक धातु है। अदादिगणीय पालनार्थक पा धातुसे पातः, पातवान् होता है। हा (ह्वादि प० पदी) त्यागार्थक। गमनार्थक ह्वादि आ० पदी हा-धातुसे हातः, हातवान् होता है।

धातुओंके आ-के स्थानमें ई होता है (१)। यथा, गा (गै) गीतः गीतवान्; पा पीतः, पीतवान्; हा हीनः, हीनवान्।

११४। "शुषः कः, पचो वः, क्षायो मः।" निष्ठा सहित शुष्, पच् और क्षै धातुओंके स्थानमें क्रमसे शुष्क, पक्व और क्षाम होते हैं। यथा, शुष् शुष्कः, शुष्कवान्; पच् पक्वः, पक्ववान्; क्षै क्षामः, क्षामवान् (२)।

११५। कर्त्तृवाच्यमें क्तवतु प्रत्यय होता है; इसलिये क्तवतु प्रत्ययसे बने हुए शब्द कर्त्ताके विशेषण होते हैं और कर्त्ताके लिंग विभक्ति और वचन प्राप्त होते हैं। यथा, स पुस्तकं पठितवान्, तौ पुस्तकं पठितवन्तौ, ते पुस्तकं पठितवन्तः; सा चन्द्रं दृष्टवती, ते चन्द्रं दृष्टवत्यौ, ताश्चन्द्रं दृष्टवत्यः; वृक्षात् फलं पतितवत्, वृक्षात् फले पतितवती, वृक्षात् फलानि पतितवन्ति।

११६। "सकर्मकात कर्मणि।" सकर्मक धातुके उत्तर कर्म-वाच्यमें क्त होता है, इसलिये कर्मवाच्यमें क्त-प्रत्ययसे बने हुए शब्द कर्मके विशेषण होते हैं और कर्मके लिंग, विभक्ति और वचन प्राप्त होते हैं। यथा, कुम्भकारेण घटः कृतः, घटौ कृतौ, घटाः कृताः; मित्रेण पत्री लिखिता, पत्र्यौ लिखिते, पत्र्यः लिखिताः; मालिना पुष्पं चितम्, पुष्पे चिते, पुष्पाणि चितानि।

११७। "अकर्मकात् कर्त्तरि क्तः।" अकर्मक धातुके उत्तर कर्त्तृवाच्यमें क्त होता है, इसलिये कर्त्तृवाच्यके क्त-प्रत्ययसे बने हुए शब्द कर्त्ताके विशेषण होते हैं। यथा, स जागरितः, सा भीता, जलं शुष्कम्, शिशुः शयितः, वृद्धो मृतः।

---

(१) क्त्वा और क्तिन् प्रत्ययोंके लिये भी यही नियम है; परन्तु हा (*to abandon*)+क्त्वा = हित्वा, हा (*to go*)+क्त्वा=हात्वा। हा+क्तिन्= हानिः।

(२) "दृढः स्थूल बलयोः।" वृद्धिअर्थक दृह-धातुसे स्थूल (मोटा) और बलवान् (बली) अर्थमें दृढः, दृढवान्, निपातनसे सिद्ध होता है।

११८। "गत्यर्थाकर्मकश्लिषशीङ्स्थासवसजनरुहजीर्यतिभ्यश्च।" गमनार्थक धातुके उत्तर कर्त्तृवाच्यमें भी क्त होता है। यथा, स ग्रामं गतः, स गृहं प्रस्थितः, स विद्यालयं प्रयातः।

११९। उपसर्गके योगसे शी, स्था, आस्, वस्, श्लिष्, रुह् प्रभृति (१) धातु सकर्मक होने पर भी इनके उत्तर कर्त्तृवाच्यमें क्त होता है। यथा, स गृहमधिशयितः, स शय्यामधिष्ठितः, मुनिराश्रममध्यासितः, स ग्राममध्युषितः (१), पिता पुत्रमाश्लिष्टः, वानरो वृक्षमारूढः।

१२०। जब क्तवतु और क्त प्रत्ययों से निष्पन्न शब्द समापिका क्रियाके सदृश प्रयुक्त न होकर केवल विशेषणके रूपसे प्रयुक्त होते हैं तब वे विशेष्यके लिंग, विभक्ति और वचन प्राप्त होते हैं (२)। यथा, अधीतवान् छात्रः, अधीतवन्तं छात्रम्, अधीतवता छात्रेण, अधीतवते छात्राय इत्यादि; भीतः शिशुः, भीतं शिशुम्, भीतेन शिशुना इत्यादि।

१२१। सभी अकर्मक धातुओंके उत्तर भाववाच्यमें क्त होता है। भाववाच्यमें क्त-प्रत्ययसे बने हुए शब्द जब समापिका क्रियाकी नाईं व्यवहृत होते हैं तब वे सदा ही क्लीबलिंगके प्रथमा का एकवचनान्त होते हैं। यथा, तेन कृतम्, ताभ्यां कृतम्, तैः कृतम्; त्वया कृतम्, युवाभ्यां कृतम्, युष्माभिः कृतम्; आवाभ्यां कृतम्, अस्माभिः कृतम्; शिशुना रुदितम्, तेन भुक्तम्, मया ज्ञातम्, त्वया दृष्टम्, कन्यया हसितम्। और

---

(१) जन् और जॄ धातुओंके भी ऐसा होता है। यथा, राममनुजातः, विश्वमनुजीर्णः।

(१) अधि+वस्+(कर्तरि) क्त। (२) भूतार्थ "वृत्तेर्धातोर्निष्ठा।" अतीतकालमें धातुके उत्तर निष्ठा प्रत्यय होते हैं। इसलिये क्तवतु और क्त प्रत्ययोंसे बने हुए शब्द भूतकालके द्योतक होते हैं चाहे वे समापिका क्रियाके ऐसे प्रयुक्त हों चाहे विशेषणके ऐसे।

जब वे विशेष्य शब्दकी भाँति व्यवहृत होते हैं तब उनके रूप अकारान्त क्लीबलिंगके तुल्य होते हैं। यथा, गतम्, गते, गतानि ; कृतम्, कृते, कृतानि ; रुदितम्, रुदिते, रुदितानि।

अतिरिक्त।

(१) "मतिबुद्धिपूजार्थेभ्यश्च।" मन् (*to think or to wish*), बुध् (*to know*) पूज् (*to adore*) और इनके समानार्थबोधक धातुओंके उत्तर कर्मवाच्यमें वर्तमानकालमें क्त होता है और तब इनके कर्तामें षष्ठी विभक्ति होती है। यथा, सतां मतमिदम् (*It is approved by the good*), ज्ञानी सतां पूजितः (*A wise man is honoured by the good*), विदितं तप्यमानञ्चतेन मे भुवनत्रयम् (*I know that the three worlds are being tormented by him*). राज्ञां इष्टः, बुद्धः इत्यादि।

(२) "क्तोऽधिकरणे च ध्रौव्यगतिप्रत्यवसानार्थेभ्यः।" गत्यर्थक, निश्चलार्थक और भोजनार्थक धातुओंके उत्तर अधिकरणवाच्यमें क्त होता है (भूतकालमें) और इनके कर्तामें षष्ठी विभक्ति होती है। अधिकरणवाच्यके क्त-प्रत्ययसे बने हुए शब्द क्लीबलिङ्गकी प्रथमाके एकवचनमें ही व्यवहृत होते हैं। यथा, रमापतेरिदं यातम्, रामस्येदंमासितम्, श्रीकृष्णस्येदं भुक्तम् इत्यादि।

N. B. अतीतकालमें सकर्मक अकर्मक सभी धातुके उत्तर कर्तृवाच्यमें क्तवतु प्रत्यय होता है ; इसलिए अङ्गरेज़ी Active voice के Past tense के सभी Verb को क्तवतु-प्रत्ययान्त पदसे अनुवाद किया जा सकता है। यथा, He *gave* him the book=स तस्मै पुस्तकं "दत्तवान्" ; He *fell* from a tree—स वृक्षात् "पतितवान्"।

क्त्वा (क्त्वाच् or त्वाच्)।

(Sanskrit Indeclinable Past Participle).

१२२। "समानकर्त्तृकयोः पूर्व्वकाले।" दो क्रियाओंका एक कर्त्ता होनेपर पूर्वकालिकक्रियाबोधक धातुके उत्तर क्त्वा होता है ; क् इत् त्वा रहता है।

१२३। निष्ठा प्रत्यय परे रहनेसे जिस नियमसे इट् होता

है क्त्वा प्रत्यय परे रहनेसे भी प्रायः उसी नियमसे इट् होता है। यथा, ज्ञा ज्ञात्वा, ध्या (ध्यै) ध्यात्वा, स्ना स्नात्वा, पा पीत्वा, स्था स्थित्वा, दा दत्त्वा, धा हित्वा, चि चित्वा, जि जित्वा, श्रि श्रित्वा, क्री क्रीत्वा, नी नीत्वा, श्रु श्रुत्वा, भू भूत्वा (१), कृ कृत्वा, धृ धृत्वा, स्मृ स्मृत्वा, मुच् मुक्त्वा, सिच् सिक्त्वा, त्यज् त्यक्त्वा, भुज् भुक्त्वा, सृज् सृष्ट्वा, छिद् छित्त्वा, भिद् भित्त्वा, बुध् बुद्ध्वा, क्षिप् क्षिप्त्वा, तप् तप्त्वा, लभ् लब्ध्वा, दृश् दृष्ट्वा, स्पृश् स्पृष्ट्वा, दह् दग्ध्वा, याच् याचित्वा, गर्ज् गर्जित्वा, पठ् पठित्वा, क्रीड् क्रीडित्वा, यत् यतित्वा, व्यथ् व्यथित्वा, सेव् सेवित्वा, भिक्ष् भिक्षित्वा, व्यध् विद्ध्वा, यज् इष्ट्वा, ग्रह् गृहीत्वा, प्रछ् पृष्ट्वा, वस् (२) उषित्वा, स्वप् सुप्त्वा, गम् गत्वा, नम् नत्वा, मन् मत्वा, हन् हत्वा, बन्ध् बद्ध्वा, स्तम्भ् स्तब्ध्वा।

१२४। क्त्वा प्रत्यय परे रहते इट् होनेपर धातुके अन्त्य-स्वरको और उपधा लघुस्वरको गुण होता है। यथा, शी शयित्वा, अर्पि अर्पयित्वा, कारि कारयित्वा, स्थापि स्थापयित्वा, श्रावि श्रावयित्वा, वृत् वर्त्तित्वा, नृत् नर्त्तित्वा।

१२५। "मृडमृदगुधकुषक्लिशवदवसः क्त्वा।" मृड्, मृद्, गुध्, कुष्, वद्, और क्लिश् वस् विद्मुष् रुद् धातुओंके उपधा लघुस्वरका गुण नहीं होता। यथा, मृडित्वा, मृदित्वा, रुदित्वा, विदित्वा, मुषित्वा इत्यादि।

१२६। "तृषिमृषिकृशेः काश्यपस्य।" सिल्, लिख्, स्तिम्, कुप्, क्षुध्, त्रुट्, द्युत्, रुच्, स्फुट्, कृश्, तृष् और मृष् धातुओं

(१) अस्+क्त्वा=भू भूत्वा; अद्+क्त्वा=जग्ध्वा। (२) वस् भ्वादि प० पदी (*to dwell*) उषित्वा, अदादि आ० पदी (*to wear* or *to put on*)=वसित्वा। वश् अदा प० पदी (*to wish*)=उशित्वा।

के उपधा लघुस्वरको विकल्पसे गुण होता है। यथा, मिल् मिलित्वा, मेलित्वा; लिख् लिखित्वा, लेखित्वा; स्तिम् स्तिमित्वा, स्तेमित्वा; कुप् कुपित्वा, कोपित्वा; क्षुध् क्षुधित्वा, क्षोधित्वा; त्रुट् त्रुटित्वा, त्रोटित्वा; द्युत् द्युतित्वा, द्योतित्वा; रुच् रुचित्वा, रोचित्वा; स्फुट् स्फुटित्वा, स्फोटित्वा; कृश् कृशित्वा, कर्शित्वा; तृष् तृषित्वा, तर्षित्वा; मृष् मृषित्वा, मर्षित्वा।

१२७। "नोपधात् थफान्ताद्वा। जान्तनशां विभाषा।" क्त्वा प्रत्यय परे होनेसे जान्त (१), थान्त और फान्त धातुओँके उपधा नकारका विकल्पसे लोप होता है। यथा, भन्ज् भक्त्वा, भङ्क्त्वा; रन्ज् रक्त्वा, रङ्क्त्वा; ग्रन्थ् ग्रथित्वा, ग्रन्थित्वा; मन्थ् मथित्वा, मन्थित्वा; गुम्फ् गुफित्वा, गुम्फित्वा।

१२८। 'वञ्चिलुञ्च्यृतश्च।' क्त्वा प्रत्यय परे रहनेसे वन्च् तथा लुन्च् धातुओँके न्-का विकल्पसे लोप होता है। यथा, वन्च् वचित्वा, वञ्चित्वा; लुन्च् लुचित्वा, लुञ्चित्वा।

१२९। क्त्वा प्रत्यय परे रहनेसे पू और क्लिश् धातुओँके उत्तर विकल्पसे इट् होता है। यथा, पू पवित्वा, पूत्वा; क्लिश् क्लिशित्वा, क्लिष्ट्वा।

१३०। "उदितो वा, क्रमश्च क्त्वि।" गणपाठमेँ जो सब धातु उकारयुक्त रहते हैँ, क्त्वा प्रत्यय होनेसे उनके उत्तर विकल्पसे इट् होता है और क्रमधातु को इट् के अभाव पक्षमेँ विकल्पसे दीर्घ होता है। यथा, क्रम् क्रमित्वा, क्रान्त्वा क्रन्त्वा; क्षम् क्षमित्वा, क्षान्त्वा; भ्रम् भ्रमित्वा, भ्रान्त्वा; शम् शमित्वा, शान्त्वा; दिव् देवित्वा, द्यूत्वा; सिव् सेवित्वा, स्यूत्वा; इष् एषित्वा, इष्ट्वा।

---

(१) जान्त धातु अनिट् होनेसे ही न्-का विकल्पसे लोप होता है, सेट् होनेसे नहीँ होता। यथा, अन्ज् अञ्जित्वा।

१३१। "जहातेश्च क्त्वि।" क्त्वा प्रत्यय होनेसे त्यागार्थक हा-धातुके स्थानमैं हि होता है। यथा, हित्वा (१)।

१३२। "अलंखल्वोः प्रतिषेधयोः प्राचां क्त्वा।" निषेध अर्थ बोध होनेसे अलम् तथा खलु शब्दौंके योगमैं धातुके उत्तर क्त्वा होता है (२)। यथा, अलं गत्वा, अलं स्थित्वा, अलं दृष्ट्वा, अलं सृष्ट्वा, अलं श्रुत्वा; खलु उक्त्वा, खलु कृत्वा, खलु भुक्त्वा, खलु क्षिप्त्वा।

१३३। क्त्वा प्रत्ययसे बने हुए शब्द अव्यय और असमापिका क्रिया होते हैँ और इनमैं समास नहीँ होता।

क्तिन् (क्ति)।

१३४। भाववाच्यमैं धातुके उत्तर क्तिन् होता है, क् तथा न् इत्, ति रहता है। "स्त्रियां क्तिन्।" क्तिन् प्रत्ययसे निष्पन्न शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैँ। यथा, ख्या ख्यातिः (fame), गै (गा) गीतिः (song), मा मितिः (measure), स्था स्थितिः (state, position), इ इतिः (motion), चि चितिः (collection), नी नीतिः (polity, moral rule), प्री प्रीतिः (pleasure, love), भी भीतिः (fear), च्यु च्युतिः (a fall), द्रु द्रुतिः (swiftness), नु नुतिः (praise), श्रु श्रुतिः (ear, hearing), स्तु स्तुतिः (praise), स्रु स्रुतिः (oozing, stream), कृ कृतिः (act, action), धृ धृतिः (sacrifice, offering), भृ भृतिः (wages), मृ मृतिः (death), वृ वृतिः (selection), सृ सृतिः (way, road),

---

(१) धा-धातुसे भी हित्वा होता है। गमनार्थक हा-धातुसे हात्वा होता है। (२) विकल्पसे होता है। यथा, अलं गत्वा, अलं गमनेन, गमनं निषिद्धमित्यर्थः *(No need of going)*; खलु भुक्त्वा खलु भोजनेन वा *(No need of eating)* इत्यादि।

स्मृ स्मृतिः (recollection), शक् शक्तिः (power, strength), मुच् मुक्तिः (salvation, final beatitude), वच् उक्तिः (speech, saying), भज् भक्तिः (faith), भुज् भुक्तिः (food) यज् इष्टिः (sacrifice), युज् युक्तिः (union, propriety), सृज् सृष्टिः (creation), कृत् कृत्तिः (skin), वृत् वृत्तिः (livelihood), छिद् छित्तिः (a cutting), पद् पत्तिः (foot-soldier), भिद् भित्तिः (foundation), विद् वित्तिः (discussion), सद् सत्तिः (decay, rest), ऋध् ऋद्धिः (fortune, prosperity), बुध् बुद्धिः (intellect), वृध् वृद्धिः (increase), शुध् शुद्धिः (purification), सिध् सिद्धिः (accomplishment, success), क्षण् क्षतिः (wound, loss), तन् ततिः (line, row), मन् मतिः (opinion, intellect, understanding), आप् आप्तिः (gain), गुप् गुप्तिः (concealment, secrecy), तृप् तृप्तिः (satisfaction, contentment), दीप् दीप्तिः (splendour, light), स्वप् सुप्तिः (sleep), लभ् लब्धिः (gain, acquisition), क्रम् क्रान्तिः (proceeding), क्लम् क्लान्तिः (fatigue), क्षम् क्षान्तिः (forbearance), गम् गतिः (motion, course), नम् नतिः (bow), भ्रम् भ्रान्तिः (mistake, error), रम् रतिः (sport), शम् शान्तिः (peace, tranquility), श्रम् श्रान्तिः (exhaustion), दृश् दृष्टिः (eye sight), कृश् कृष्टिः (thinness, weakness), तुष् तुष्टिः (pleasure, satisfaction), पुष् पुष्टिः (nourishment), वृष् वृष्टिः (rain), रुह् रूढिः (growth)।

१३५। ग्ला, म्ला, हा प्रभृति धातुओंके उत्तर ति के स्थानमें नि होता है। यथा, ग्लानिः (exhaustion), म्लानिः (weariness), हानिः (loss, injury)।

अतिरिक्त।

(१) "ऋल्वादिभ्यः क्तिन्निष्ठावद्वाच्यः। तेननत्वम्।" दीर्घ ऋकारान्त (जैसे कॄ, गॄ, पॄ इत्यादि) तथा लू आदि, (लू, धू, ज्या, पू) धातुओंके परे क्तिन् प्रत्यय निष्ठावत् होता है। इसलिये ति-के स्थानमें नि होता है। यथा, कॄ कीर्णिः (sprinkling) गॄ गीर्णिः (sound) पॄ (पूर्) पूर्णिः (fulfilment), लू लूनि (cutting), धू धूनिः (shaking). ज्या ज्यानिः (growing old), विनाश अर्थमें पू पूनिः (destruction) किन्तु पवित्रता अर्थ में पू पूतिः (purification)।

(२) ऊतिः (protecting), यूतिः (joining, combining), जूतिः (swift motion), सातिः (from सो *destruction*), हेतिः (from हि, *weapon*) और कीर्तिः (fame) यह छः निपातनसे सिद्ध होते हैं।

णक (ण्वुल्)।

१३६। "ण्वुल् तृचौ।" धातुके उत्तर कर्तृवाच्यमें णक होता है, ण् इत् अक रहता है और ण्वुल् में ण्, ल् इत् वु को अक होता है। यथा, नी नायकः, श्रु श्रावकः, पू पावकः (purifier, fire), कृ कारकः, तृ तारकः (pilot), स्मृ स्मारकः, नश् नाशकः, पच् पाचकः (cook), पठ् पाठकः, रेच् रेचकः (purgative), सिच् सेचकः, मुच् मोचकः, क्षिप् क्षेपकः, रुध् रोधकः, शुष् शोषकः, दा दायकः, गै गायकः, जनि जनकः, पालि पालकः, योजि योजकः।

१३७। निमित्त अर्थ बोध होनेसे भविष्यत्कालमें धातुके उत्तर कर्तृवाच्यमें णक होता है, पाणिनिके मतमें ण्वुल्। यथा, भुज् भोजको व्रजति, भोजन करनेके निमित्त जाता है (is going to eat); पच् पाचको व्रजति, पाक करनेके निमित्त जाता है (is going to cook)।

षक (ष्वुन्)।

१३८। "शिल्पिनि ष्वुन् नृतिखनिरञ्जिभ्य एव।" शिल्पी (अर्थात् कार्यकुशल, skilled in an art) बोध होनेसे नृत,

खन् तथा, रन्ज् धातुओँके उत्तर कर्त्तृवाच्यमेँ षक होता है, ष् इत् अक रहता है। यथा, नृत् नर्त्तकः (one skilled in the art of dancing, a dancer), खन् खनकः (a digger)। "रञ्जेर्नलोपो वाच्यः।" रन्ज्-धातुके न्-का लोप होता है। रजकः (a washerman, a dyer) (१)।

णनट् और थक।

१३९। "(शिल्पिनि) गस्थकन्। णयुट् च"। शिल्पी बोध होनेसे गै धातुके उत्तर कर्तृवाच्यमेँ णनट् और थक होते हैँ; ण् ट् इत्, अन रहता है। यथा, गायनः (२), गाथकः।

तृच् (तृन्)।

१४०। "ण्वुल्तृचौ।" धातुके उत्तर कर्त्तृवाच्यमेँ तृच् होता है, च् इत्, तृ रहता है (३)। यथा—दा दाता, पा पाता, मा माता, जि जेता, नी नेता, श्रु श्रोता, कृ कर्त्ता, हृ हर्त्ता, क्षिप् क्षेप्ता, सिच् सेक्ता, विद् अदा-भिन्न वेत्ता, बुध् बोद्धा, युध योद्धा, रुध् रोद्धा, गम् गन्ता, हन् हन्ता।

१४१। लुट् विभक्तिमेँ जिन धातुओँके उत्तर जिस नियमसे इट् होता है तृच् प्रत्यय परे रहनेसे भी उन धातुओँके उत्तर उसी नियमसे इट् होता है। यथा, भू भविता, वद् वदिता, फल् फलिता, चल् चलिता, दिव् देविता, नुद् नोदिता, नृत् नर्त्तिता, दीप् दीपिता, सेव् सेविता, कारि कारयिता, स्थापि स्थापयिता, जनि जनयिता, सू सविता-सोता, स्तु स्तोता, इष् एषिता-एष्टा, शुच् शोचिता, रुष् रोषिता-रोष्टा।

---

(१) ष् इत् होनेके कारण स्त्रीलिंगमेँ ई होता है। यथा, नर्त्तकी, खनकी। रजकी। (२) ट् इत् होनेके कारण स्त्रीलिंगमेँ ई और ण् इत्-के कारण यकारका आगम होता है। यथा, गायनी। (३) शील, धर्म, और सम्यक्करण अर्थमेँ भी तृन् होता है।

अण् (षण्)।

१४२। "कर्मण्यण्।" कर्मवाचक पदके परवर्त्ती धातुके उत्तर कर्तृवाच्यमें अण् होता है, ण् इत्, अ रहता है। यथा, कुम्भं करोति कुम्भकारः (a potter); तन्तून् वयति तन्तुवायः, तन्त्रं वयति तन्त्रवायः (a weaver); शास्त्राणि करोति शास्त्रकारः। ऐसे सूत्रकारः; चाटुकारः (a flatterer); सूत्रधारः (a stage-manager); मालाकारः; भाष्यकारः (a commentator); कर्मकारः (a mechanic); वारिवाहः (cloud)।

ट (अट्)।

१४३। दिवा आदि (१) कर्मवाचक पदके परवर्त्ती कृ धातुके उत्तर कर्तृवाच्यमें ट होता है, ट् इत्, अ रहता है। यथा, दिवाकरः, विभाकरः, प्रभाकरः, भास्करः (the sun); निशाकरः (the moon); अन्तकरः (destroyer, destructive); किङ्करः (a servant); लिपिकरः (a scribe); बलिकरः; भक्तिकरः; अहस्करः (the sun); चित्रकरः (a painter); कर्म्मकरः (a hired labourer, a servant) (२)

१४४। "कृञो हेतुताच्छील्यानुलोम्येषु।" हेतु तथा अनुकूल अर्थ (३) बोध होनेसे कर्मवाचक पदके परवर्त्ती कृ-धातुके उत्तर कर्तृवाच्यमें ट होता है। यथा, हेतु अर्थमें—शोककरः बन्धुनाशः, बन्धुनाश शोकका हेतु है; अर्थकरः यशस्करः विद्यालाभः, विद्यालाभ अर्थ और यशका हेतु है; ऐसे—क्लेशकरः, क्षोभकरः, रोगकरः। अनुकूल अर्थमें—बलकरं पुष्टिकरं अन्नम्,

---

(१) "दिवाविभानिशाप्रभाभास्कारान्तानन्तादिबहुनान्दीकिम्लिपिलिबिबलिभक्तिकर्तृचित्रक्षेत्रसंख्याजङ्घाबाह्वहर्यत्तद्धनुररुष्षु।"

(२) "कर्म्मणि भृतौ।" भृत्य अर्थ बोध होनेसे ट होता है, अन्यत्र अण्।

(३) ताच्छील्य (शील, स्वभाव) अर्थ बोध होनेसे भी होता है। यथा, श्राद्धकरः (श्राद्धकरना जिसका स्वभाव है)।

अन्न बल और पुष्टिके विषयमें अनुकूल; ऐसे—हितकरः (beneficent), प्रीतिकरः (pleasant), मंगलकरः (auspicious)। तच्छील्य श्राद्धकरः।

१४५। "पुरोऽग्रतोऽग्रेषु सर्त्तेः।" पुरः, अग्र—अग्रे, अग्रतः, इन तीन शब्दोंके परवर्त्ती सृ धातुके उत्तर ट होता है। यथा, पुरःसरः, अग्रसरः (१), अग्रेसरः, अग्रतःसरः (going in front, taking the lead, a leader)।

१४६। "चरेष्टः।" अधिकरणवाचक पदके परवर्त्ती चर्-धातुके उत्तर कर्त्तृवाच्यमें ट होता है। यथा, जले चरति जलचरः (aquatic); वारिणि चरति वारिचरः (aquatic fish); स्थले चरति स्थलचरः, भुवि चरति भूचरः (land-going); वने चरति वनचरः; निशायां चरति निशाचरः; पार्श्वे चरति पार्श्वचरः; खे चरति खेचरः (a bird) (२)। रात्रि शब्द विकल्पसे द्वितीयाके एकवचनान्तवत् होता है। यथा, रात्रौ चरति रात्रिचरः, रात्रिञ्चरः (a night-rover)।

१४७। कर्मवाचक पदके परवर्त्ती गै-धातुके उत्तर कर्तृवाच्य में ट होता है। यथा, साम गायति सामगः।

१४८। कर्मवाचक पदके परवर्त्ती हन् धातुके उत्तर कर्तृवाच्य में ट होता है और हन्-के स्थानमें घ्न होता है। यथा, शत्रुं हन्ति शत्रुघ्नः (killing a foe), पापं हन्ति पापघ्नः (removing sin), पित्तं हन्ति पित्तघ्नः (antibilious), वातं हन्ति वातघ्नः, कृतं हन्ति कृतघ्नः (ungrateful), मित्रं हन्ति मित्रघ्नः, गां हन्ति गोघ्नः, पशून् हन्ति पशुघ्नः, त्रिदोषं हन्ति त्रिदोषघ्नः।

---

(१) पाणिनिके सूत्रके अनुसार "अग्रसरः" नहीं होता। "अग्रम् अग्रेण अग्रे वा सरतीति अग्रेसरः"—सिद्धान्तकौमुदी। (२) कभी कभी अधिकरण-वाचक पद विभक्त्यन्त रह जाता है। यथा, वनेचरः, खेचरः इत्यादि।

अच् (अन्, अ)।

१४९। "नन्दिग्रहिपचादिभ्यो ल्युणिन्यचः" (नन्दादेर्ल्युः, ग्रहादेः णिनिः, पचादेरच् (१) स्यात्)। पच् आदि धातुके उत्तर अच् होता है; च् इत् अ रहता है। यथा, पच् पचः, चल् चलः, सृप् सर्पः (a snake), दिव् देवः (deity), चर् चरः (movable, a spy), धृ धरः (holding);

१५०। "हरतेरनुद्यमनेऽच्।" कर्मवाचक पदके परवर्त्ती हृ-धातुके उत्तर कर्तृवाच्यमें अच् (अ) होता है। यथा, अंशं हरति अंशहरः (a sharer); भागं हरति भागहरः। ऐसे—रोगहरः, शोकहरः, दुःखहरः, क्लेशहरः (२)।

१५१। "अर्हः।" कर्मवाचक पदके परस्थित अर्ह्-धातुके उत्तर कर्तृवाच्यमें अच् (अ) होता है। यथा, पूजां अर्हति पूजार्हः (deserving worship, adorable); तत् अर्हति तदर्हः; सत्कारं अर्हति सत्कारार्हः; निन्दां अर्हति निन्दार्हः (deserving censure, reproachable)।

१५२। "अधिकरणे शेते" अधिकरणवाचक पदके परवर्त्ती शी-धातुके उत्तर कर्त्तृवाच्यमें अच् (अ) होता है। यथा, शिलायां शेते शिलाशयः; भूमौ शेते भूमिशयः; शय्यायां शेते शय्याशयः।

१५३। पार्श्व आदि शब्दके परस्थित शी-धातुके उत्तर कर्त्तृवाच्यमें अच् (अ) होता है। यथा, पार्श्वाभ्याम् शेते पार्श्व-

---

(१) "ल्यु" का ल् इत् होकर शेष रहा यु। तत्र "युवोरनाकौ" इस सूत्र के अनुसार यु-के स्थानमें अन हुआ अर्थात् ल्यु=अन। यथा, नन्द्+ल्यु=नन्दनः; लू+ल्यु=लवणः (*salt*); जन+अर्द्+ल्यु=जनार्दनः।

(२) भारवहन अर्थमें नहीं होता। यथा, भारं हरति भारहारः, यहाँ अण् हुआ है।

शयः; पृष्ठेन शेते पृष्ठशयः; उदरेण शेते उदरशयः; उत्तानः शेते उत्तानशयः; अवमूर्द्धा (१) शेते अवमूर्द्धशयः।

क (अ)

१५४। "आतोऽनुपसर्गे कः।" कर्मवाचक पदके परवर्ती आकारान्त धातुओंके उत्तर कर्त्तृवाच्यमें क होता है, क् इत्, अ रहता है और धातुके आकारका लोप होता है। यथा, अन्नं ददाति अन्नदः (one who gives food); भूमिं ददाति भूमिदः; करं ददाति करदः; धनं ददाति धनदः; जलं ददाति जलदः, वारि ददाति वारिदः (cloud); तनुं त्रायते तनुत्रम् (an armour) (२); धर्म्मं जानाति धर्म्मज्ञः; रसं जानाति रसज्ञः; सर्वं जानाति सर्व्वज्ञः (allknowing, omniscient); नॄन् पाति नृपः, भुवं पाति भूपः, भूमिं पाति भूमिपः (a king); मधु पिबति मधुपः (a bee) (३)।

१५५। "सुपि स्थः।" सुबन्त पद वा उपसर्गके परवर्त्ती स्था धातुके उत्तर कर्त्तृवाच्यमें क (अ) होता है और धातुके आकार का लोप होता है। यथा, गृहे तिष्ठति गृहस्थः (a house-holder); मध्ये तिष्ठति मध्यस्थः (an umpire); बने तिष्ठति बनस्थः; प्रकृतौ तिष्ठति प्रकृतिस्थः; सुस्थः, दुःस्थः,

(१) अवनतो मूर्द्धा यस्य सः अवमूर्द्धा अधोमुखः इत्यर्थः।

(२) त्रा-धातुसे अपादानके उत्तर भी होता है। यथा, आतपात् त्रायते आतपत्रम् (*an umbrella*)। (३) कर्मवाचक पदके परवर्त्ती केवल उपसर्ग-हीन आकारान्त धातुके उत्तर ही क होता है। यथा, गां ददाति गोदः; उपसर्गयुक्त होनेसे क नहीं होता, अण् होता है। यथा, गां सम्प्रददाति गोसम्प्रदायः। किन्तु कर्मवाचक पदके परवर्त्ती न होनेपर "आतश्चोपसर्गे" इस सूत्रके अनुसार उपसर्गयुक्त आकारान्त धातुके उत्तर क होता है। यथा, विज्ञः, प्रज्ञः, अभिज्ञः प्रदः, व्याघ्रः (*a tiger*), प्रभः, निभः (*like, similar*)।

संस्थः, उत्थः, निष्ठः। यहाँ सुपि पृथक् सूत्र और स्थः पृथक् सूत्र योगविभागसे होता है सूत्र विधान से द्विपः आखूनामुत्थानमाखूत्थः उदाहरण हैं।

१५६। "इगुपधज्ञाप्रीकिरः कः।" जिन धातुओंके उपधामें इ, तथा उ रहता है उनके उत्तर कर्तृवाच्यमें क होता है। यथा, विद् विदः, बुध् बुधः (a learned man); नुद् नुदः (pushing)।

१५७। प्री, कॄ तथा गॄ धातुके उत्तर कर्त्तृवाच्यमें क होता है, और ई के स्थानमें इय् और ॠ-के स्थानमें इर् होता है। यथा, प्री प्रियः, कॄ किरः, गॄ गिरः (१)।

१५८। "दुहः कप् घश्च।" सुबन्त पदके परवर्त्ती दुह्-धातुके उत्तर कर्त्तृवाच्यमें क (२) होता है। दुह्-के ह्-के स्थानमें घ् होता है। यथा, कामं दोग्धि कामदुघा धेनुः।

ड (अ)।

१५९। "सप्तम्यां जनेर्डः।" "पञ्चम्याम् जातौ" उपसर्गे च संज्ञायाम्।" "अन्येष्वपिदृश्यते" उपसर्ग वा सुबन्त पदके परवर्त्ती जन्-धातुके उत्तर कर्त्तृवाच्यमें ड् होता है; ड् इत्, अ रहता है और धातुके अकारका तथा न्-का लोप होता है। यथा, सरसि जायते सरोजम् (lotus); मनसि जायते मनोजः (३); अप्सु जायते अब्जम् (lotus); अङ्गात् जायते अङ्गजः; जले जायते जलजम् (lotus); पङ्के जायते पङ्कजम् (lotus); संस्काराज्जातः संस्कारजः; स्वेदात् जायते स्वेदजः (worms

---

(१) पाणिनिके सूत्रमें गॄ का उल्लेख नहीं है। उपपद वा उपसर्गसे हीन ज्ञा-धातुके उत्तर भी क होता है। यथा, जानातीति ज्ञः। (२) पाणिनिके सूत्रके अनुसार कप्। (३) "तत्पुरुषे कृति बहुलम्" कभी कभी पूर्वपद विभक्त्यन्त रह जाता है। यथा, सरसिजम्, मनसिजः।

and insects); अण्डात् जायते अण्डजः; जरायोर्जायते जरायुजः; अनु जायते अनुजः प्रजा; (descendants, subjects) अग्रे जायते अग्रजः; द्वाभ्यां जन्मसंस्काराभ्यां जायते द्विजः; आत्मनो जायते आत्मजः; सह जायते सहजः (a son)।

१६०। "अन्तात्यन्ताध्वदूरपारसर्व्वानन्तेषु डः।" अन्त, अत्यन्त, अध्व, पार, सर्व, अनन्त, इन सुबन्त पदके परवर्त्ती गम्-धातुके उत्तर कर्त्तृवाच्यमेँ ड होता है और धातुके अकारका तथा म्-का लोप होता है। यथा, अन्तं गच्छति अन्तगः अत्यन्तगः; अध्वानं गच्छति अध्वगः; दूरं गच्छति दूरगः; पारं गच्छति पारगः; सर्व्वं गच्छति सर्व्वगः; अनन्तं गच्छति अनन्तगः; सर्वत्रपन्नयोरुपसंख्यानम्, सर्वत्रगः, पन्नगः। गृहं गच्छति गृहगः; ग्रामं गच्छति ग्रामगः; तल्पं गच्छति तल्पगः; खे गच्छति खगः।

१६१। "अपे क्लेशतमसोः।" क्लेश, और तमस् शब्दके परवर्त्ती अप-पूर्वक हन्-धातुके उत्तर कर्त्तृवाच्यमेँ ड होता है और धातुके अकार तथा न्-का लोप होता है। यथा, क्लेशम् अपहन्ति क्लेशापहः; तमः अपहन्ति तमोपहः (the sun)।

णिनि (णिन्)।

१६२। "नन्दिग्रहिपचादिभ्यो ल्युणिन्यचः।" धातुके उत्तर कर्त्तृवाच्यमेँ णिनि होता है, ण् और इ इत्, इन् रहता है। यथा, ग्रह् ग्राही; मन्त्र् मन्त्री (adviser, minister); वद् वादी (plaintiff, accuser), वस् वासी, राध् अपराधी; चर् चारी; स्था स्थायी; पा पायी; रुध् रोधी; सह् उत्साही; भास् उद्भासी; शी विशायी; षि विषयी।

१६३। "सुप्यजातौ णिनिस्ताच्छील्ये," "व्रते," "बहुलमाभीक्ष्ण्ये।" उपसर्ग और सुबन्त पदके परवर्त्ती धातुके

उत्तर व्रत, शील और पौनःपुन्य अर्थमें णिनि होता है। यथा, व्रत अर्थमें—स्थण्डिले शेते स्थण्डिलशायी, अश्राद्धभोजी। शील अर्थमें—उष्णं भुङ्क्ते उष्णभोजी, अनु याति अनुयायी, अनु जीवति अनुजीवी, सोमं पिवति सोमपायी, अग्रे याति अग्रयायी, साधु करोति साधुकारी, प्रमाद्यति प्रमादी, सत्यं वदति सत्यवादी, प्रियं वदति प्रियवादी, मनो हरति मनोहारी, वि करोति विकारी, हृदयं गृह्णाति हृदयग्राही, कणान् वहति कणवाही, पण्डितं मन्यते पण्डितमानी, सुभगं मन्यते सुभगमानी, अनु गच्छति अनुगामी, सह गच्छति सहगामी। पौनःपुन्य अर्थमें—पुनः पुनः मिथ्या वदति मिथ्यावादी, पुनः पुनः पापं करोति पापकारी, पुनः पुनः कलहं करोति कलहकारी, पुनः पुनः मित्राय द्रुह्यति मित्रद्रोही।

१६४। "करणे यजः।" करणवाचक पदके परवर्त्ती यज्-धातुके उत्तर कर्त्तृवाच्यके अतीतकालमें णिनि होता है। यथा, सोमेन इष्टवान् सोमयाजी; अग्निष्टोमेन इष्टवान् अग्निष्टोमयाजी।

१६५। "कर्म्मणि हनः।" कर्म्मवाचक पदके परवर्त्ती हन्-धातुके उत्तर कर्त्तृवाच्यके अतीतकालमें णिनि होता है और हन्धातुके ह् के स्थानमें घ् और न्-के स्थानमें त् होता है। यथा, पितरं हतवान् पितृघाती (a patricide); पितृव्यं हतवान् पितृव्यघाती; पुत्रं हतवान् पुत्रघाती; मित्रं हतवान् मित्रघाती।

१६६। भविष्यत्काल बोध होनेसे भू, या, स्था, गम्, बुध्, युध् तथा रुध् धातुओंके उपसर्गयुक्त होने पर इनसे उत्तर कर्त्तृवाच्यमें णिनि होता है। यथा, भू प्रभावी, या प्रयायी, स्था प्रस्थायी, गम् प्रगामी, बुध् प्रतिबोधी, युध् प्रतियोधी, रुध् प्रतिरोधी।

घिनुण्।

१६७। युज्, त्यज्, भज्, रन्ज्, वि-पूर्वक विच् और सम्-पूर्वक पृच् और सम्पूर्वक सृज् धातुओंके उत्तर शील अर्थमें कर्त्तृवाच्यमें घिनुण् होता है; घ् उ ण् इत्, इन् रहता है। यथा, युज् योगी (a devotee), वियोगी, प्रतियोगी (a rival); त्यज् त्यागी, भज् भागी, रन्ज्-धातुके न-का लोप होता है। रागी, विविच् विवेकी (discreet); सम्-पृच् सम्पर्की; सम्-सृज् संसर्गी।

इन्।

१६८। "कर्म्मणीनि विक्रियः।" निन्दा बोध होनेसे कर्म्मवाचक पदके परवर्त्ती वि-पूर्वक क्री धातुके उत्तर कर्तृवाच्य के अतीतकालमें इन् होता है (१)। यथा, मांसं विक्रीतवान् मांसविक्रयी (one who has sold flesh), सुतविक्रयी, तैलविक्रयी, घृतविक्रयी, शुक्रविक्रयी, सोमविक्रयी।

१६९। "शमित्यष्टाभ्यो घिनुण्।" शम् आदि आठ धातुओँ के उत्तर शील अर्थमें कर्तृवाच्यमें इन् होता है। यथा, शम् शमी; तम् तमी; श्रम् श्रमी, परिश्रमी (laborious); दम् दमी; क्लम् क्लमी; भ्रम् भ्रमी; क्षम् क्षमी; प्रमद् प्रमादी (२)।

---

(१) यथा, मांसविक्रयी द्विजः, कारण द्विजके लिये मांस बेचना निषिद्ध है, इसलिये यह उसकी निन्दाकी बात है। निन्दा बोध न होनेसे अण् होता है। यथा, मांसविक्रायः व्याधः, कारण व्याधका मांस बेचना निन्दा की बात नहीँ है। (२) पञ्जीकार त्रिलोचन दासके अनुसार अकर्मक धातुके उत्तर घिनुण् और सकर्मक धातुके उत्तर तृन् होता है। अतएव अकर्मक होनेपर शमी और सकर्मक होनेपर शमिता ऐसे ही प्रयोग होता है।

खश् (१)

१७०। "विध्वरुषोस्तुदः।" विधु तथा अरुस् शब्दों के परवर्ती तुद्-धातुके और पर और द्विषत् शब्दों के परवर्त्ती तापि तथा ललाट शब्द के परवर्त्ती तप-धातुके उत्तर कर्त्तृवाच्य मैं खश् होता है, ख् और श् इत्, अ रहता है। यथा, विधुं तुदति विधुन्तुदः (The tormentor of the moon, *i. e*, Rahu)। "अरुर्द्विषदजन्तस्य मुम्।" अरुस् शब्दके स्-के स्थान मैं म् होता है। अरुस्तुदति अरुन्तुदः (wounding the vital parts); परं तापयति परन्तपः। द्विषन्तं तापयति द्विषन्तपः (२)। ललाटं तपति ललाटन्तपः (scorching the foehead)।

१७१। "असूर्य्य ललाटयोर्द्दशितयोः उग्रम्पश्येरम्मदपाणि-धमाश्च।" असूर्य्य तथा उग्र शब्दके परवर्त्ती दृश् धातुके उत्तर कर्त्तृवाच्यमैं खश् होता है और दृश्के स्थानमैं पश्य् होता है। यथा, न सूर्य्यमपि पश्यतीति असूर्य्यम्पश्यः (३) (one who does not see even the sun); उग्रम्पश्यः (fierce looking)।

१७२। "उदिकूले रुजिवहोः।" कूल शब्दके परवर्त्ती उत्पूर्वक रुज् और वह् धातुके उत्तर कर्त्तृवाच्यमैं खश् होता है। यथा, कूलमुद्रुजः (breaking down the banks), कूलमुद्वहः (carrying away the banks)।

---

(१) "एजेः खश्।" णिजन्त एज् (*to shake*) धातुके उत्तर खश् होता है। यथा, जनम् एजयति (जन+एज्+णिच्+खश्+सु)=जनमेजयः (*one who makes people shake with fear, the name of a king*)।

(२) "द्विषत्परयोस्तापे, खचि ह्रस्वः।" पर शब्दके परवर्त्ती तापि-धातुके उत्तर खश् होता है और आकारके स्थानमैं अकार होता है। यथा, परं तापयति परन्तपः।

(३) न सूर्य्यं पश्यन्तीति असूर्य्यम्पश्यानि मुखानि, चसूर्य्यम्पश्या राज-दाराः, राजदाराणां गुप्तानि मुखानि अपरिहार्य्यदर्शनं सूर्य्यमपि न पश्यन्तीत्यर्थः।

१७३। "नासिकास्तनयोर्ध्माधेटोः।" स्तन शब्दके परवर्त्ती धे-धातुके और नासिका शब्द के परवर्त्ती ध्मा धातुके उत्तर कर्त्तृवाच्यमें खश् होता है। यथा, स्तनं धयति स्तनन्धयः (sucking the breast) शिशुः; स्तनन्धयी कन्या (१) नासिकां धमतीति नासिकंधमः।

१७४। "मनः। आत्ममाने खश्च।" आत्ममनन अर्थमें कर्म्म-वाचक पदके परवर्त्ती मन् (to think) धातुके उत्तर कर्त्तृवाच्य में खश् होता है और मन् धातुके स्थानमें मन्य् होता है। यथा, आत्मानं पण्डितं मन्यते पंडितम्मन्यः (a pedant who thinks himself to be learned); ऐसे ही-कृतार्थम्मन्यः, सुभगम्मन्यः, धन्यम्मन्यः। ऐसे स्थानमें णिनि भी होता है। यथा, पंडितमानी।

१७५। "प्रियवशे वदः खच्, वहाभ्रे लिहः।" प्रिय तथा वश शब्दोंके परवर्त्ती वद्-धातुके और अभ्र तथा वह शब्दोंके परवर्त्ती लिह् धातुके उत्तर खच् होता है, ख् च् इत्, अ रहता है। यथा, प्रियंवदः (one who speaks sweetly), वशंवदः (obedient), अभ्रंलिहः (that which licks the cloud, wind)। वहः स्कंधस्तं लेढीति वहंलिहः; (गौः)।

१७६। "गमश्च।" पत, भुज, तुर और विहायस् शब्दोंके परवर्त्ती गम्-धातुके उत्तर कर्त्तृवाच्यमें खच् विकल्पसे होता है और उरस् के परवर्त्ती गम् के उत्तर केवल ड होता है, और निम्नलिखित पद-समूह निपातनसे सिद्ध होते हैं। यथा, पतेन पक्षेण गच्छति पतगः, पतङ्गः, (a bird or locust); भुजं वक्रं गच्छति भुजगः, भुजङ्गः, भुजङ्गमः (a snake, a serpent,

(१) धे-धातु का ट् इत् होनेके कारण स्त्रीलिङ्गमें ङीप हुआ है।

a reptile) ; तुरेण वेगेन गच्छति तुरगः, तुरङ्गः, तुरङ्गमः (a horse) ; उरसा गच्छति उरगः, (a serpent, a snake) ; विहायसा गच्छति विहगः, विहङ्गः, विहङ्गमः (a bird)।

१७७। वाचियमो व्रते ; व्रत अर्थमें वाच् शब्दके परवर्त्ती यम् धातुके उत्तर कर्त्तृवाच्यमें खच् होता है। यथा, वाचंयमः (one who restrains his speech, perfectly silent) मौनव्रती इत्यर्थः (१)।

१७८। "सर्व्वकूलाभ्रकरीषेषुः कषः।" सर्व्व, कूल, अभ्र और करीष शब्दों के परवर्त्ती कष् धातुके उत्तर कर्त्तृवाच्यमें खच् होता है। यथा, सर्व्वङ्कषः (all destroying), कूलङ्कषः (sweeping away the banks) अभ्रङ्कषः (dashing against the clouds), करीषङ्कषः (blowing away dry cow-dung)।

१७९। "संज्ञायां भृतॄवृजिधारिसहितपिदमः।" संज्ञा बोध होनेपर विश्व शब्दके परवर्त्ती भृ रथ पूर्वक तॄ स्वयम् तथा पति शब्दों के परवर्त्ती वृ, शत्रु पूर्वक जि, शत्रु शब्दके परवर्त्ती सह् शत्रु पूर्वक तप् अरि पूर्वक दम् और वसु शब्दके परवर्त्ती धृ धातुके उत्तर कर्त्तृवाच्यमें खच् होता है। विश्वम्भरः (all-sustaining) विष्णुः, विश्वम्भरा पृथिवी ; स्वयंवरः पतिंवरा, (herself choosing her husband) कन्या (a bride) ; शत्रुंसहः (all-forbearing) वसु शब्दके उत्तर न् होता है। वसुन्धरा (containing riches) पृथिवी। रथन्तरं साम ; शत्रुंजयः, शत्रुंतपः ; अरिंदमः।

१८०। "मेघर्त्तिभयेषु कृञः। क्षेमप्रियमद्रेऽण् च"। मेघ, ऋति तथा भय शब्दों के परवर्त्ती कृ-धातुके उत्तर नित्य

(१) व्रत अर्थका बोध नहीं होनेपर अण् होता है। यथा, वाग्यामः (*a dumb man*)।

और क्षेम, प्रिय तथा मद्र शब्दोँके परवर्त्ती कृ-धातुके उत्तर विकल्पसे कर्त्तृवाच्यमैं खच् होता है। यथा, मेघङ्करः, ऋतिङ्करः, भयङ्करः (causing fear, fearful, dreadful) (१)। क्षेमङ्करः (propitious), प्रियङ्करः (amiable), मद्रङ्करः; पक्षान्तरमैं कर्तृवाच्यमैं अण् होता है। यथा, क्षेमकारः, प्रियकारः, मद्रकारः।

इन्।

१८१। "आत्मोदरकुक्षिषु इति चान्द्राः।" आत्मन्, उदर और कुक्षि शब्दोँके परवर्त्ती भृ धातुके उत्तर कर्त्तृवाच्यमैं इन् होता है, न् इत्, इ रहता है। यथा, आत्मानमेव बिभर्त्ति आत्मम्भरिः (selfish, greedy) (२)। उदरम्भरिः, कुक्षिम्भरिः (feeding one's own belly, gluttonous)।

इन्।

१८२। "स्तम्बशकृतोरिन्।" शकृत् और स्तम्ब शब्दोँके परवर्त्ती कृ-धातुके उत्तर कर्तृवाच्यमैं इन् होता है। यथा, शकृत्करिः वत्सः (calf), स्तम्बकरिः व्रीहिः। शकृत्=विष्ठा; स्तम्ब=विटप (stem, stalk)।

१८३। इन् प्रत्यय होकर फलेग्रहि (२) पद निपातनसे सिद्ध होता है। यथा, फलानि गृह्णाति फलेग्रहिः (fruitful)।

खनट् (पाणिनिके अनुसार ख्युन्)।

१८४। "आढ्यसुभगस्थूलपलितनग्नान्धप्रियेषुच्व्यर्थेष्वच्वौ कृञः करणे ख्युन्।" अभूततद्भाव अर्थ बोध होनेसे प्रिय प्रभृति शब्दोँके परवर्त्ती कृ-धातुके उत्तर करणवाच्यमैं खनट्

---

(१) स्त्रीलिङ्गमैं मेघङ्करा, ऋतिङ्करा, भयङ्करा।

(२) "फलेग्रहिरात्मम्भरिश्च" पाणिनिके अनुसार फलेग्रहि और आत्मम्भरि निपातनसे सिद्ध होते हैँ।

होता है (१); ख् और ट् इत्, अन रहता है। यथा, अप्रियम् प्रियम् कुर्वन्त्यनेन प्रियङ्करणं (gratifying), शीलम्; पलितङ्करणं तैलम्; नग्नङ्करणं द्यूतम्; अन्धङ्करणः शोकः; स्थूलङ्करणं दधि; सुभगङ्करणं (bespeaking good fortune) रूपम्; आढ्यङ्करणं (enriching) वित्तम्।

खिष्णुच् और खुकञ्।

१८५। "कर्त्तरि भुवः खिष्णुच्खुकञौ।" अभूततद्भाव अर्थमें प्रिय प्रभृति शब्दोंके परवर्त्ती भू-धातुके उत्तर कर्त्तृवाच्यमें खिष्णुच् और खुकञ् प्रत्यय होते हैं; खिष्णुच्-का ख् च् इत्, इष्णु रहता है, और खुकञ्-का ख् ञ् इत्, उक रहता है। यथा, अप्रियः प्रियो भवति प्रियम्भविष्णुः (endearing oneself); ऐसे—आढ्यम्भविष्णुः, सुभगम्भविष्णुः; प्रियम्भावुकः (endearing oneself), आढ्यम्भावुकः, सुभगम्भावुकः।

ण्वि (ण्वि, विण्)।

१८६। "भजो ण्विः।" सुबन्त पदके और उपसर्गके परवर्त्ती भज्धातुके उत्तर कर्त्तृवाच्यमें ण्विः होता है; ण्वि-का सब इत् होता है, कुछ भी नहीं रहता (२)। यथा, अंशं भजते

---

(१) अभूततद्भाव अर्थ बोध न होनेसे नहीं होता। यथा, आढ्यं करोति तैलेनाभ्यञ्जयतीत्यर्थः। अभूततद्भाव अर्थमें च्वि प्रत्यय होनेपर भी नहीं होता। यथा, अनग्नः नग्नः करोति नग्नीकरोति। जयादित्यके मतमें ऐसे स्थानमें अनट् प्रत्यय करके "नग्नीकरणम्" पद भी नहीं होता, किन्तु भाष्यके अनुसार होता है (२)। पाणिनिके मतमें सह् और वह् धातुके उत्तर लौकिक प्रयोगमें ण्वि नहीं होता, किन्तु मुग्धबोधके अनुसार सह् और वह् धातुके उत्तर लौकिक प्रयोगमें भी विण् (ण्वि) प्रत्यय होता है। यथा, तुरां सहते तुराषाट् (*Indra or Vishnu*); प्रष्ठं वहति प्रष्ठवाट् (*a bull*) भट्टोजि दीक्षितके अनुसार तुरासाह शब्द तुरा शब्दपूर्वक सिहण्जन्त धातुके उत्तर क्विप् प्रत्यय करके सिद्ध होता है।

अंशभाक् (co-sharer, co-heir); दुःखं भजते दुःखभाक् (one who suffers pain or trouble), प्रकर्षेण भजते प्रभाक् (one who serves highly) ।

क्विप् ।

१८७ । "सत्सूद्विषद्रुहदुहयुजविदभिदछिदजिनीराजाम् उपसर्गेऽपि क्विप् ।" सुबन्त पदके तथा उपसर्गके परवर्त्ती इन धातुओंके उत्तर कर्त्तृवाच्यमें क्विप् होता है ; क्विप् का सब इत् होता है, कुछ भी नहीं रहता । यथा, सद्—सभासद् (one who goes to an assembly or council—*i. e.*, a member of the assembly or council, a councillor), संसद् परिषद् ; सू-पुत्रसूः (one who brings forth a son), वीरसूः (the mother of a hero) प्रसूः (a mother); द्विष्—धर्म्मद्विट् (wicked), मित्रद्विट् (a treacherous friend); विद्—शास्त्रविद् (one who knows the Shastras, well versed in the holy scriptures), धर्म्मविद्, ब्रह्मविद् ; भिद्—गोत्रभिद् (one who splits the mountains—Indra), मर्म्मभिद् (heart-rending); छिद्—पक्षच्छिद्, मर्म्मच्छिद् ; जि—शत्रुजित् (the conqueror of an enemy), इन्द्रजित् ; नी—सेनानीः (leader of an army), अग्रणीः (a leader) ; राज्—विराट् (the Creator), स्वराट् (shining oneself), सम्राट् (an emperor); "स्पृशोऽनुदके क्विन्" स्पृश् क्विन् जलस्पृक् (१) (one who touches water) ।

१८८ । "सुकर्म्मपापमन्त्रपुण्येषु कृञः ।" सु, कर्म्मन्, पाप, मन्त्र तथा पुण्य शब्दोंके परवर्त्ती कृ-धातुके उत्तर कर्त्तृवाच्यके अतीत भूत) कालमें क्विप् होता है । यथा, सुकृतवान् सुकृत्

(१) उदक शब्दके उत्तर क्विन् नहीं होता, क (अ) होता है । यथा,

(virtuous); कर्म्म कृतवान् कर्म्मकृत; ऐसे—पापकृत, मन्त्रकृत्, पुण्यकृत।

१८९। "ब्रह्मभ्रूणवृत्रेषु क्विप्।" भ्रूण, ब्रह्मन् और वृत्र शब्दों के परवर्त्ती हन्-धातुके उत्तर कर्त्तृवाच्यके अतीतकालमें क्विप् होता है। यथा, भ्रूणं जघान भ्रूणहा (one who caused abortion); ब्रह्महा (one who killed a Brahmin); वृत्रहा (the killer of Vritra, *i. e.*, Indra)।

१९०। "सोमे सुञः। अग्नौ चेः।" अग्नि शब्दके परवर्त्ती चि और सोम शब्दके परवर्त्ती सु धातुके उत्तर कर्त्तृवाच्यके अतीतकालमें क्विप् होता है। यथा, अग्निं चितवान् अग्निचित् (a householder); सोमं सुतवान् सोमसुत् (a soma-distiller, *i. e.*, a sacrificer) (१)।

क्विप्, कञ् और क्स (सक्)।

१९१। "त्यदादिषु दृशोऽनालोचने कञ्।" उपमानवाचक त्यद्, तद्, यद्, एतद्, भवत्, अस्मद्, युष्मद्, अदस्, इदम्, किम्, अन्य और समान शब्दोंके परवर्त्ती दृश्-धातुके उत्तर कर्त्तृवाच्यमें

उदकस्पृशः (१)। क्विप्-प्रत्ययान्त और कुछ पद:—उखायाः स्रन्सते उखास्रत् (*what falls from a cooking pot*); पर्णात् ध्वंसते पर्णध्वत् (*what falls from a leaf*); वाहात् भ्रंशते वाहभ्रट् वाहभ्रड् (*one who falls from a horse*); वि+भ्राज् विभ्राट् (*one who shines*); भास् भाः; धुर्व् धूः (*confusion, weight*); वि+द्युत् विद्युत् (*lightning*); ऊर्ज् ऊर्क् (*strong*); पॄ पूः (*a city*), जु जूः (*going or moving swifity*); ग्रावन्+स्तु ग्रावस्तुत् (*a sacrificer citing hymns in praise of the stones*); वच् वाक् (*organ of speech*); प्रच्छ् प्राट् (*one who asks*); आयतं स्तौति (आयत+स्तु) आयतस्तूः (*one who praises too much*); कटं प्रवते (कट्+प्रू) कटप्रूः (*a worm moving through a mat*); श्रयति हरिं (श्रि धातु) श्रीः (*Lakshmi*)।

क्विप्, कञ् और क्स होता है; क्विप्-का सब इत् होता है: कञ्-का क् तथा ञ् इत्, अ रहता है; क्स-का क् इत् स रहता है।

१९२। क्विप्, कञ् और क्स प्रत्ययान्त दृश् धातु परे रहनेसे तद्, यद्, एतद्, अस्मद् और युष्मद् शब्दोंके द्-का लोप होता है और उसके पूर्ववर्त्ती अ-के स्थान में आ होता है; यथा, स (सा, तत्) इव पश्यति तादृक्, तादृशः, तादृक्षः (like him, her or that); ऐसे—यादृक्, यादृशः, यादृक्षः; एतादृक्, एतादृशः, एतादृक्षः (like him, her or it); अस्मादृक्, अस्मादृशः, अस्मादृक्षः (like me); युष्मादृक्, युष्मादृशः, युष्मादृक्षः (like you) (१)।

१९३। क्विप्, कञ् और क्स प्रत्ययान्त दृश् धातु परे रहनेसे, अदस् के स्थानमें अमू, इदम्-के स्थानमें ई, किम्-के स्थानमें की; भवत्-के स्थानमें भवा, समान-के स्थानमें स और अन्य शब्दके स्थानमें अन्या होता है। यथा, असौ इव पश्यति अमूदृक्, अमूदृशः, अमूदृक्षः; अयमिव पश्यति ईदृक्, ईदृशः, ईदृक्षः; कइव पश्यति कीदृक्, कीदृशः, कीदृक्षः; भवान् इव पश्यति भवादृक्, भवादृशः, भवादृक्षः; समान इव पश्यति सदृक्, सदृशः, सदृक्षः; अन्य इव पश्यति अन्यादृक्, अन्यादृशः, अन्यादृक्षः (like another)।

क्वनिप्।

१९४। "दृशेः क्वनिप्।" कर्मवाचक पदके परवर्त्ती दृश्-धातुके उत्तर कर्त्तृवाच्यके अतीत (भूत)-कालमें क्वनिप् होता है,

(१) अस्मद् और युष्मद् शब्दके स्थानमें एकवचनमें क्रमसे मा और त्वा होने से भी होता है। यथा, मादृक्, मादृशः,

क्, इ तथा प् इत्, वन् रहता है। पारं दृष्टवान् पारदृश्वा (one who has seen the other side) (१)।

इष्णु।

१६५। "अलंकृञ्-निराकृञ् प्रजनोत्पचोत्पतोन्मदरुच्यपत्रपवृतुवृधुसहचर इष्णुच्। भुवश्च (छन्दस्येव)।" शील, धर्म तथा सम्यक्करण अर्थमें सह् आदि (२) धातुओंके उत्तर कर्त्तृवाच्यमें इष्णु च् होता है। च् इत् होता है यथा, सह् सहिष्णुः (patient), रुच् रोचिष्णुः (brilliant, shining, pleasant, splendid), वृध् वर्द्धिष्णुः (thriving) अलङ्कृ अलङ्करिष्णुः (decorating), निराकृ निराकरिष्णुः (turning aside), प्रजन् प्रजनिष्णु (generating, producing) उत्पच् उत्पचिष्णुः, उत्पत् उत्पतिष्णुः (clever in flying up), उन्मद् उन्मदिष्णुः, अपत्रप् अपत्रपिष्णुः (bashful), वृत् वर्त्तिष्णुः (staying), चर् चरिष्णुः (movable), भू भविष्णुः (would be)।

मादृक्षः; त्वादृक्, त्वादृशः, त्वदृक्षः। (१) "राजनि युधिकृञः सहे च।" राजन् तथा सह शब्दोंके परस्थित युध् और कृ धातुके उत्तर कर्त्तृवाच्यके भूतकालमें क्वनिप् होता है और यहाँ युधि अन्तर्भावित णयर्थ है। यथा, राजानं योधितवान् राजयुध्वा (*one who has made a king fight*), राजानं कृतवान् राजकृत्वा (*one who has made a king*), सह योधितवान् सहयुध्वा, सह कृतवान् सहकृत्वा। कभी कभी वर्त्तमानकालमें भी क्वनिप् होता है। यथा, प्रातर्+इ (*to go*)+क्वनिप्+सु =प्रातरित्वा (*one who goes in the morning*); वि+जन्+क्वनिप्+सु= विजावा (विजायते इति—*one who is born*); ओण् (*to remove*) +क्वनिप्+सु= अवावा (*one who removes the sin*) (२)। सह्, रुच्, वृध्, अलङ्कृ, निराकृ, प्रजन्, उत्पच् उत्पत्, उन्मद्, अपत्रप्, वृत्, चर्, भू और भ्राज् धातुके उत्तर भी होता है, और णयन्त धातुसे वेद में होता है।

ग्स्नु।

१९६। "ग्लाजिस्थश्च ग्स्नुः।" शीलादि अर्थों में जि, भू, स्था और ग्ला धातुओं के उत्तर कर्त्तृवाच्यमें ग्स्नु होता है, ग् इत्, स्नु रहता है। यथा, जिष्णुः (victorious), भूष्णुः (being), स्थास्नुः (immovable), ग्लास्नुः (wearied, languid)।

क्नु।

१९७। "त्रसिगृधिधृषिक्षिपेः क्नुः।" शीलादि अर्थमें त्रस्, गृध्, धृष और क्षिप् धातुओं के उत्तर कर्त्तृवाच्यमें क्नु होता है, क् इत्, नु रहता है। यथा, त्रस्नुः (timid), गृध्नुः (greedy), धृष्णुः (bold), क्षिप्णुः (casting, throwing)।

उकञ्।

१९८। "लषपतपदस्थाभूवृषहनकमगमशृभ्य उकञ्।" शीलादि अर्थों में कम् (१) आदि धातुओं के उत्तर कर्त्तृवाच्यमें उकञ् होता है, ञ् इत्, उक रहता है। यथा, कम् कामुकः (amorous), लष् लाषुकः (desirous), पत् पातुकः (falling), पद् पादुकः (going on foot), स्था स्थायुकः (standing, waiting), भू भावुकः (happening, living), वृष् वर्षुकः (about to pour down), गम् गामुकः (about to start), शृ शारुकः (piercing)। हन्-के स्थानमें घात् होता है, घातुकः (killing)।

आलु।

१९९। "स्पृहिगृहिपतिदयिनिद्रातन्द्राश्रद्धाभ्यः आलुच्।" शीलादि अर्थोंमें दय् (२) आदि धातुओंके उत्तर कर्त्तृवाच्यमें

---

(१) कम्, लष्, पत्, पद्, स्था, भू, वृष्, हन्, गम्, शृ।

(२) दय्, नि और तन् पूर्वक द्रा, श्रत् पूर्वक धा, शी, गृहि, स्पृहि, पति।

आलुच् होता है। यथा, दय दयालुः (kind), नि+द्रा निद्रालुः (inclined to sleep), तन्+द्रा तन्द्रालुः (overcome with sleep), श्रत्+धा श्रद्धालुः (full of faith), शी शयालुः (sleeping), गृहि गृहयालुः (eager to take), स्पृहि स्पृहयालु (longing for), पति पतयालुः (falling)।

घुरच्।

२००। "भञ्जभासमिदो घुरच्।" शीलादि अर्थोंमें भञ्, भास् और मिद् धातुओंके उत्तर कर्त्तृवाच्यमें घुरच् होता है, घ् और च् इत्, उर रहता है। यथा, भंगुरः (brittle), भासुरः (shining, splendid) मेदुरः (soft, smooth)।

क्वरप्।

२०१। "इण् नश् जिसर्त्तिभ्यः क्वरप्।" शीलादि अर्थोंमें नश्, इ (to go), जि, सृ और गम् धातुओंके उत्तर कर्तृवाच्यमें क्वरप् होता है, क् और प् इत्, वर रहता है। यथा, नश्वरः (perishable), इत्वरः (going, cruel), जित्वरः (victorious), सृत्वरः (moving)। "गत्वरश्च।" गम् धातुके म्-के स्थानमें त् होता है; गत्वरः (going, transitory, transient)।

र।

२०२। "नमिकम्पिस्म्यजसकमहिन्सदीपो रः।" शीलादि अर्थोंमें नम् (१) आदि धातुओंके उत्तर कर्तृवाच्यमें र होता है। यथा, नम् नम्रः (yielding), कम्प् कम्प्रः (shaking), स्मि स्मेरः (smiling), अजस् अजस्रः (perpetual, innumerable), कम् कम्रः (desiring), हिन्स् हिंस्रः (injurious, ferocious). दीप् दीप्रः (shining)।

(१) नम्, कम्प्, स्मि, अजस्, कम्, हिन्स्, दीप्।

उ।

२०३। "सनाशंसभिक्ष उः। विन्दुरिच्छुः।" शीलादि अर्थोंमें आ-पूर्वक सन्स्, इष्, विन्द्, भिक्ष् और सनन्त धातुओंके उत्तर कर्तृवाच्यमें उ होता है। यथा, आशंसुः (desirous); इष् के स्थानमें इच्छ् होता है, इच्छुः, भिक्षुः, जिज्ञासुः, पिपासुः बुभुक्षुः, चिकीर्षुः, विवक्षुः, जिघृक्षुः, जिघांसुः, तितीर्षुः, ईप्सुः, दित्सुः लिप्सुः, जिगीषुः (wishing to conquer)।

वर (वरच्)।

२०४। "स्थेशभासपिसकसो वरच्। यश्च यङः।" शीलादि अर्थोंमें स्था आदि (१) धातुओंके उत्तर कर्तृवाच्यमें वर होता है। यथा, स्था स्थावरः (fixed, immovable), ईश् ईश्वरः (God), भास् भास्वरः (shining, radiant)। यङ् का लोप होता है। यायाय यायावरः (vagrant, a horse)।

ऊक।

२०५। "जागरूकः। यजजपदशां यङः।" शीलादि अर्थोंमें जागृ धातुके और यङन्त यज्, जप् और दन्श् धातुओंके उत्तर ऊक होता है। यङ्-का लोप हो जाता है। यथा, जागरूकः (watchful), यायजूकः (one who performs sacrifices frequently), जञ्जपूकः (an ascetic), (२), दन्दशूकः, (biting frequently, a serpent)।

इत्नु।

२०६। शीलादि अर्थोंमें स्तनि, मदि, पुषि, गदि और हृदि

(१) स्था, ईश्, भास्, पिस्, कस्, प्रमद्, यङन्त या। पाणिनिमें प्र+मद् (प्रमद्) धातुका उल्लेख नहीं है।

(२) पाणिनिके इस सूत्रमें वद् धातुका उल्लेख नहीं है। पाणिनिके अनुसार "वावदूक" शब्द औणादिक ऊक प्रत्ययसे सिद्ध होता है।

हृषि (१) धातुओँके उत्तर इत्नु होता है। यथा, स्तनयित्नुः (cloud), मदयित्नुः दुषयित्नुः, गदयित्नुः, हृदयित्नुः हृषयित्नुः।

कमर (क्मरच्)।

२०७। "सृघस्यदः क्मरच्।" शीलादि अर्थोँमेँ घस्, अद् और सृ धातुओँके उत्तर कमर होता है, क् इत्, मर रहता है। यथा, घस्मरः, (fond of eating, voracious); अद्मरः (voracious); सृमरः (moving, going)।

कुर (कुरच्)।

२०८। "विदिभिदिच्छिदेः कुरच्।" शीलादि अर्थोँमेँ छिद् भिद् और विद् धातुओँके उत्तर कुर होता है, क् इत्, उर रहता है। यथा, छिदुरः (cutting), भिदुरः (breaking, brittle), विदुरः (one who knows, knowing)।

त्र (ष्ट्रन्)।

२०९। "दाम्नीशसयुयुजस्तुतुदसिसिचमिहपतदशनहः करणे" (दाबादेः ष्ट्रन् स्यात् करणेऽर्थे)। करण-अर्थमेँ दाप् और नी आदि (२) धातुओँके उत्तर कर्त्तृवाच्यमेँ त्र होता है। यथा, दान्त्यनेन दात्रम् (a sickle), नयति अनेन नेत्रम् (eye), शसति अनेन शस्त्रम् (weapon), स्तौति अनेन स्तोत्रम् (a hymn of praise), पतति अनेन पत्रम् (the wing of a bird), दशन्ति अनया दंष्ट्रा (large tooth)। ऐसे— यु योत्रम्, युज् योक्त्रम्, तुद् तोत्रम, सि सेत्रम्, सिच् सेक्त्रम, मिह् मेढ्रम्, नह् नद्धी (a leather rope)।

इत्र।

२१०। "अर्त्तिलूधूसूखनसहचरइत्रः। पुवः संज्ञायाम्।"

(१) हृद् शब्दके उत्तर णिच् हृदि नामधातु। मुग्धबोधमेँ हृदि धातु है, परन्तु पाणिनिमेँ नहीँ, इसमेँ हृष् धातु है। (२) दा (दाप्) (*to cut*), नीं, शस्, यु, युज्, स्तु, तुद्, सि, सिच्, मिह्, पत्, दन्श्, नह।

करणवाच्यमेँ ऋ और लू आदि (१) धातुओँके उत्तर इत्र होता है। यथा, ऋच्छति अनेन अरित्रम् पूयते अनेन पवित्रम् (the sacred ring of kusha grass)। ऐसे-चर् चरित्रम् (behaviour), वह् वहित्रम् (raft, boat) (२), खन् खनित्रम् (spade), अरित्रम् (oar or helm)। लू लवित्रम् (a sickle), धू धवित्रम् (a fan), सू सवित्रम् (the cause of birth), सह् सहित्रम् (patience)।

कि (इ)।

२११। "उपसर्गे घोः किः।" उपसर्गके और अन्तर् शब्दके परवर्त्ती दा और धा धातुओँ के उत्तर भाववाच्यमेँ कि होता है, क् इत्, इ रहता है और दा तथा धा धातुओँ के आकारका लोप होता है। यथा, आदिः, विधिः (rule, law), निधिः (treasure), सन्धिः (joint), आधिः (mental agony), अन्तर्द्धिः (disappearance)।

२१२। "कर्म्मण्यधिकरणेच।" कर्मवाचक पदके परवर्त्ती दा और धा धातुके उत्तर अधिकरणवाच्यमेँ कि होता है और धातुके आकारका लोप होता है। यथा, जलानि धीयन्तेऽस्मिन् जलधिः (ocean); वारिधिः, पयोधिः, (ocean)।

त्रिमक् (क्त्रि)।

२१३। "ड्वितः क्त्रिः।" गणपाठकालमेँ जो सब धातु डु संयुक्त रहते हैं (३), उनके उत्तर तन्निर्वृत्त (४) अर्थमेँ त्रिमक् (५) होता है, क् इत् त्रिम रह जाता है। यथा, कृ (क्रियया

---

(१) पू, चर् वह्, खन्, लू, ऋ, धू, सू, सह्। (२) पाणिनिके सूत्रमेँ वह् धातुका उल्लेख नहीँ है।

(३ जैसे—डुपचष् (पच्) डुवप् (वप्), डुकृञ्, डुदाञ् इत्यादि। (४) अर्थात् उसी क्रियाके द्वारा सिद्ध। (५) पाणिनिके अनुसार क्त्रि। "क्त्रेर्मम् नित्यम्।" क्त्रिप्रत्ययान्त धातुसे परे निर्वृत्त (अर्थात् सिद्ध)

निर्वृत्तम्) कृत्रिमम् (caused or produced by art, *i. e.*, artificial)। दा-के स्थानमें दत् होता है। दानेन निर्वृत्तम् दत्त्रिमम् (produced by or resulted from gift); पच् पाकेन निर्वृत्तम् पक्त्रिमम् (produced by cooking, *i. e.*, cooked, matured); ऐसे—वप् उप्त्रिमम् (produced by sowing)।

अथु (अथुच्)।

२१४। "ट्वितोऽथुच्।" गणपाठकालमें जो सब धातु टु-संसृष्ट रहते हैं उनके उत्तर भाववाच्यमें अथु होता है। यथा, वेप् वेपथुः (trembling); वम् वमथुः (vomitting), श्वि श्वयथुः (increasing, swelling)।

अनि।

२१५। "आक्रोशे नञ्यनिः।" नञ्-के परवर्त्ती धातुके उत्तर भाववाच्यमें आक्रोश अर्थमें (१) अनि होता है। अनि-प्रत्ययसे निष्पन्न शब्द स्त्रीलिङ्ग होता है। यथा, जीव् अजीवनिः (non-existence, death); जन् अजननिः (cessation of existence, privation of birth)।

अन (ल्यु, युच्) (२)।

२१६। "नन्दिग्रहिपचादिभ्यो ल्युणिन्यचः।" नन्द् आदि धातुओंके उत्तर कर्त्तृवाच्यमें अन (ल्यु) होता है। यथा,

---

अर्थमें मप् प्रत्यय नित्य होता है (१)। आक्रोश=शाप देना (*to curse*) अर्थमें। यथा, "तस्याजननिरेवास्तु जननीक्लेशकारिणः" *May he cease to exist who is the cause of trouble to his mother*)—माघ २।४५।

(२) पाणिनिके अनुसार अन=ल्यु तथा युच्। ल्युसे ल् इत् और युच् से च् इत् यु रहता है। "युवोरनाकौ" पाणिनिके इस सूत्रके अनुसार युके स्थानमें अन होता है।

नन्दि नन्दनः (one who delights, a son), मदि मदनः (the god of love, Kamadeva), साधि साधनः, वर्द्धि वर्द्धनः शोभि शोभनः, सह् सहनः, तप् तपनः (the sun), दम् दमनः (one who subdues or conquers), रमि रमणः (one who pleases, pleasing), सूदि सूदनः (one who destroys or kills, destroying), भीषि भीषणः (terrible), नाशि नाशनः (destructive) ।

२१७ । "क्रुधमण्डार्थेभ्यश्च (युच्) ।" शीलादि अर्थमें क्रोधार्थ तथा भूषार्थ धातुओंके उत्तर कर्तृवाच्यमें अन होता है। यथा, क्रुध् क्रोधनः, कुप् कोपनः, रुष् रोषणः (passionate, irritative, angry); अ-मृष् अमर्षणः (intolerent) ; मण्डि मण्डनः (decorating) ; अलङ्कृ अलङ्करणः (beautifying) ।

२१८ । "जुचंक्रम्यदन्द्रम्यसृगृधिज्वलशुचलषपतपदः (युच्) ।" शीलादि अर्थमें ज्वल् आदि धातुओंके उत्तर कर्तृवाच्यमें अन होता है। यथा, ज्वल् ज्वलनः, शुच् शोचनः, वृध् वर्द्धनः, चल् चलनः, दह् दहनः ।

अनट् (ल्युट्) ।

२१९ । "ल्युट् च ।" भाववाच्यमें धातुके उत्तर अनट् होता है ; ट् इत्, अन रहता है (१)। अनट् प्रत्ययान्त शब्द प्रायः क्लीबलिङ्ग होते हैं । यथा, गम् गमनम् (going), भुज् भोजनम् (food eating), शी शयनम् (sleeping), वम्

(१) पाणिनि ल्युट्, ल्, ट्, इत्, यु (अन) रहता है ।

वमनम् (vomitting), आरुह् आरोहणम् (ascending), ईक्ष् ईक्षणम् (seeing, sight), चल् चलनम्, (moving, movement), पत् पतनम्, क्षर् क्षरणम्, स्खल् स्खलनम्, रक्ष् रक्षणम्, भक्ष् भक्षणम्, गर्ज् गर्जनम्, लङ्घ्, लङ्घनम्, स्पन्द् स्पन्दनम्, तृप् तर्पणम्, मन् मननम्, अधि-इ अध्ययनम्, वन्च् वञ्चनम्, खण्ड् खण्डनम्, पा पानम् (drinking), दा दानम् (giving), गा (गै) गानम्, घ्रा घ्राणम्, ज्ञा ज्ञानम् (knowledge), वि-धा विधानम्, आ-धा आधानम्, मा मानम्, स्ना स्नानम् (bathing), चि चयनम्, श्रि श्रयणम्, श्रु श्रवणम्, कृ करणम्, भृ भरणम्, मृ मरणम्, वृ वरणम्, स्मृ स्मरणम्, हृ हरणम्, दृश् दर्शनम्, स्पृश् स्पर्शनम्, सिच् सेचनम्, रन्ज् रञ्जनम्, नृत् नर्त्तनम्, मन्थ् मन्थनम् (churning), रुद् रोदनम् (crying, weeping)।

२२०। करण और अधिकरणवाच्यमें भी धातुके उत्तर अनट् होता है। यथा, करणवाच्यमें—नीयते अनेन नयनम् (eye), लोच्यते अनेन लोचनम् (eye) चर्य्यते अनेन चरणम् (foot), क्रियते अनेन करणम्, साध्यते अनेन साधनम् (means, materials), भूष्यते अनेन भूषणम् (ornament), मण्ड्यते अनेन मण्डनम् (ornament, decoration), यायते अनेन यानम् (vehicle, conveyance), वाह्यते अनेन वाहनम् (conveyance), अधिरुह्यते अनया अधिरोहणी (ladder); अधिकरणवाच्यमें—शय्यते अस्मिन् शयनम् (bed), भूयते अस्मिन् भवनम् (house), स्थीयते अस्मिन् स्थानम् (place)।

Note—"कृत्यल्युटो बहुलम्।" पाणिनिके इस सूत्रके अनुसार (ल्युट्) प्रत्यय विविध वाच्यमें होता है। यथा, कर्मवाच्यमें—दीयते यत् तत् दानम् (*gift*), दृश्यते यत् तत् दर्शनम् (*that which is seen, a sight*); सम्प्रदानवाच्यमें—सम्प्रदीयते यस्मै तत् सम्प्रदानम्; अपादान-वाच्यमें—अपादीयते यस्मात् तत् अपादानम्। २३ पादटीका (१) द्रष्टव्य।

घञ्।

२२१। "भावे। अकर्त्तरि च कारके संज्ञायाम्।" भाव-वाच्यमें तथा कर्तृभिन्न कारक-वाच्यमें धातुके उत्तर घञ् होता है; घ् ञ् इत्, अ रहता है। यथा, पच् पाकः (food, maturity), त्यज् त्यागः (abandoning, gift), नश् नाशः (destruction, loss), शुच् शोकः (grief), भुज् भोगः (enjoyment), रुज् रोगः (disease), वस् वासः (dwelling-house), पत् पातः (falling, descending), वद् वादः (discussion), शप् शापः (a curse), तप् तापः (heat, pain), दह् दाहः (burning) श्रु श्रावः, लभ् लाभः (gain), लष् लाषः (desire), पठ् पाठः (lesson), युज् योगः (union, meditation), ह्रस् ह्रासः (decrease), वह वाहः, स्वद् स्वादः (taste) मद् मादः, हृ हारः (necklace), लस् लासः, यज् यागः (sacrifice), भज् भागः (share, division), स्पृश् स्पर्शः (touch), इन्ध् एधः (fuel), चि (१) कायः (body)। "घञि च भावकरणयोः।"

---

(१) "निवासचितिशरीरोपसमाधानेष्वादेश्च कः।" निवास (रहना) चिति (जमा करना), शरीर तथा उपसमाधान (इकट्ठा करना) अर्थ-वाचक चि धातुके उत्तर घञ् होता है और चि-के च्-के स्थानमें क् होता है। यथा, विकायः (*body*), नि-चि निकायः (*dwelling*); गोमय-निकायः (*heap or collection of cowdung*)।

रन्‌ज् धातुके न-का लोप होता है (१)। रागः (affection, colour); भन्‌ज् भङ्गः (breaking), सन्‌ज् सङ्गः (companionship, contact)।

अ (अच्, अप्)।

२२२। इकारान्त धातुके उत्तर भाववाच्यमेँ तथा कर्त्तृभिन्न कारकवाच्यमेँ धातुके उत्तर अच् होता है; च् इत्, अ रहता है। और उकारान्त तथा ऋकारान्त धातुओँके उत्तर अप् होता है। प् इत् अ रहता है। यथा, जि जयः (success, victory) क्षि क्षयः (waning, loss, destruction), स्मि स्मियः (pride, arrogance), श्रि श्रयः, चि चयः, ली लयः (destruction), आलयः (dwelling) नी नयः, भी भयम् (fear), द्रु द्रवः (essence, decoction, retreat), रु रवः (sound), स्रु स्रवः (oozing, dropping) स्तु स्तवः (praise prayer), भू भवः, कृ करः, गृ गरः (collection), "ग्रह वृ दृनिश्चि गमश्च" अप् प्रत्यय होता है ग्रहः, वरः दरः, निश्चयः गमः उपसर्ग रहित व्यध्, जप् धातुओँके उत्तर अप् होता है जप् जपः व्यध् व्यधः। निम्नलिखित शब्दोँ मेँ भावार्थक घञ् होता है। मुद् मोदः, श्लिष् श्लेषः, रुष् रोषः (anger), मुह् मोहः (strance), द्रुह् द्रोहः (rebellion, quarrel), क्रुध् क्रोधः (anger, wrath), कुप् कोपः (anger, wrath), क्षुभ् क्षोभः (agitation, sorrow), तुष् तोषः (satisfaction), बुध् बोधः, खिद् खेदः (sorrow, repentance), मृश् मर्शः (advice), स्पृश् स्पर्शः (touch), भ्रन्‌श् भ्रंशः (a fall), भिद् भेदः, हृष् हर्षः (joy, pleasure)। "नौगदनदपठस्वनः।"

---

(१) केवल भाव और करण अर्थोँमेँ ही न्-का लोप होता है दूसरे अर्थमेँ नहीँ। यथा, अधिकरण अर्थमेँ—रज्यत्यस्मिन्निति रङ्गः (नाट्यशाला, *a theatrical stage*)।

खल्।

२२३। "ईषद्दुःसुषु कृच्छ्राकृच्छ्रार्थेषु खल्।" सु, दुर् और ईषत् शब्दों के परवर्त्ती (१) धातुओं के उत्तर कर्मवाच्यमें तथा भाववाच्यमें खल् होता है; ख् ल् इत्, अ रहता है। यथा, कृ—सुकरः (done easily), दुष्करः (done with difficulty), ईषत्करः (done with slight labour), गम्-सुगमः, दुर्गमः, ईषद्गमः; वह्—सुवहः, दुर्वहः, ईषद्वहः; त्यज्—सुत्यजः, दुस्त्यजः, ईषत्त्यजः; लभ्—सुलभः, दुर्लभः, ईषल्लभः (२)।

खल् तथा अन (युच्)।

२२४। "आतो युच् (३)। भाषायां शासियुधिदृशिधृषिमृषिभ्यो युच् वाच्यः।" सु, दुर् और ईषत् शब्दों के परवर्त्ती शास्, युध्, दृश्, धृष् और मृष् धातुओंके उत्तर कर्मवाच्यमें खल् तथा अन होते हैं। यथा, शास्—सुशासः सुशासनः, दुःशासः दुःशासनः; युध्—सुयोधः सुयोधनः, दुर्योधः दुर्योधनः; दृश्—सुदर्शः सुदर्शनः, दुर्दर्शः दुर्दर्शनः; धृष्—सुधर्षः सुधर्षणः; दुर्धर्षः दुर्धर्षणः; मृष्—सुमर्षः सुमर्षणः; दुर्मर्षः दुर्मर्षणः।

अ।

२२५। "अ प्रत्ययात्।" प्रत्ययान्त धातु और नामधातुके उत्तर भाववाच्यमें अ होता है। अ-प्रत्ययसे बने हुए शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं। यथा, सनन्त—जिज्ञासा (desire to

(१) दुर् कृच्छ्र (दुःख) अर्थमें सु तथा ईषत् अकृच्छ्र (सुख) अर्थमें। (२) अन्य उपसर्ग व्यवधान रहनेपर भी होता है। यथा, दुष्परिहरः, दुष्प्रतिग्रहः। (३) सु, दुर् और ईषत् शब्दों के परवर्त्ती आकारान्त धातुके उत्तर युच् (अन) होता है। यथा, सुपानः, दुष्पानः, ईषत्पानः; ईषत्पानः सोमोभवता (*You can easily drink the Soma juice*)।

know, asking), पिपासा (thirst), चिकीर्षा (desire to do something), जिगीषा (desire to conquer), लिप्सा (wish, desire), जिघांसा (desire to kill), चिकित्सा, मीमांसा, जुगुप्सा (censure); नामधातु— तपस्या (penance), वरिवस्या (worship), अशनाया (hunger), पुत्रकाम्या (desire for a son), कण्डूया (itching)।

२२६। "गुरोश्च हलः" गुरुस्वरविशिष्ट व्यञ्जनान्त धातुओंके उत्तर भाववाच्यमें अ होता है। अ-प्रत्ययनिष्पन्न शब्द स्त्री-लिङ्ग होते हैं। यथा, भिक्ष् भिक्षा (begging, alms), सेव् सेवा (service), आ-काङ्क्ष् आकाङ्क्षा (wish, desire), परि-ईक्ष् परीक्षा (examination, investigation), दीक्ष् दीक्षा (initiation), निन्द् निन्दा (censure), खेल् खेला (play) रक्ष् रक्षा (protection, preservation), शङ्क् शङ्का (fear), अर्च् अर्चा (worship) मूर्च्छ् मूर्च्छा (swoon), लज्ज् लज्जा (shame), व्रीड् व्रीडा (bashfulness), क्रीड् क्रीडा (play) मेध् मेधा (power of apprehension, retentiveness), बाध् बाधा (obstruction), अनु-कम्प् अनुकम्पा (compassion), ईर्ष्य् ईर्ष्या (envy), हिन्स् हिंसा (killing, hurting, envy), आ-शंस् आशंसा, प्र-शन्स् प्रशंसा (praise, applause), वाञ्छ् वाञ्छा (desire), ईह् ईहा (wish, attempt, act) (१)।

अङ् (ङ)।

२२७। "चिन्तिपूजिकथिकुम्बिचर्चश्च।" चिन्ति, पूजि,

---

(१) क्त प्रत्यय करने पर जो सब धातु अनिट् होते हैं उनके उत्तर अ नहीं होता। यथा, राध् राद्धिः (*perfection*)।

कथि, कुम्बि, चर्च्चि, धातुओंके उत्तर भाववाच्यमें अङ् होता है; ङ् इत्, अ रहता है। अङ्प्रत्यय निष्पन्न शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं। यथा, चिन्ता (thinking), पूजा (worship), कथा (story), कुम्बा (covering), चर्च्चा (reflection, culture)।

२२८। "षिद्भिदादिभ्योऽङ्।" जो सब धातु गणपाठ-कालमें षकारसंसृष्ट रहते हैं उनके उत्तर भाववाच्यमें अङ् होता है, और अङ् प्रत्ययसे निष्पन्न शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं। यथा, त्रपा (shame, family), व्यथा (pain), जरा (old age), त्वरा (haste), पचा (cooking)। मृज्-धातुका गुण नहीं होता। मृजा (purification)।

२२९। भिद् आदि धातुओंके उत्तर भाववाच्यमें अङ् होता है; गुण नहीं होता। अङ् प्रत्ययसे निष्पन्न शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं। यथा, भिदा (separation), कृपा (tenderness), तृषा (thirst), क्षमा (patience, forgiveness), दया (kindness, compassion)।

२३०। "इच्छा (शः)।" अङ् प्रत्यय होने पर इष्-धातुके स्थानमें इच्छ्। यथा, इष् इच्छा (desire)।

२३१। "आतश्चोपसर्गे।" उपसर्गके परवर्त्ती आकारान्त धातुओंके उत्तर भाववाच्यमें अङ् होता है। अङ्प्रत्ययसे निष्पन्न शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं। यथा, भा—आभा (light, splendour, beauty), प्रभा (splendour), विभा (beauty, splendour), प्रतिभा (genius, intellect, intelligence); मा—प्रमा (perception), उपमा (resemblance, likeness), अनुमा, प्रतिमा (resemblance); धा—विधा, अभिधा (name) सन्धा, उपधा (penultimate) (१);

(१) धा-धातु श्रत् तथा अन्तर् शब्दोंके परवर्त्ती होने से भी होता है। यथा, श्रद्धा, अन्तर्धा।

ज्ञा—अभिज्ञा (token), प्रज्ञा (knowledge, understanding), अनुज्ञा (order, command), संज्ञा (consciousness, name), अवज्ञा (disrespect) प्रतिज्ञा (proposition, promise), उपज्ञा (self-acquired knowledge), आज्ञा (permission, order); ख्या—आख्या (name), संख्या (number), अभिख्या (beauty); स्था—संस्था, अवस्था (condition), निष्ठा, प्रतिष्ठा (fame), आस्था (regard)।

अन (पाणिनि युच्)।

२३२। "ण्यासश्रन्थो युच्।" णिजन्त धातुके और आस् तथा श्रंथ् धातुके उत्तर भाववाच्यमें अन होता है। अन-प्रत्यय-निष्पन्न शब्द स्त्रीलिङ्ग होता है। और पाणिनिके मतमें युच् और च् इत् यु को अन होता है। यथा, अर्च्चि अर्च्चना (worship), कल्पि कल्पना (imagination), कारि कारणा, गणि गणना (counting), धारि धारणा (conviction, understanding, steadiness, retention), पारि पारणा, वि-मानि विमानना, यन्त्रि यन्त्रणा (pain, affliction), यातिं यातना (agony, pain), वासि वासना (desire)। आसना, श्रंथना किसी किसी स्थानमें अनट् (ल्युट्) होता है और क्लीव (नपुंसक) लिङ्ग होता है। यथा, प्रेरि प्रेरणम्, प्रीणि प्रीणनम्, तर्पि तर्पणम् (oblation, satisfaction), शोधि शोधनम् (purification), साधि साधनम् (१), गोपि गोपनम्।

२३३। घट्ट वन्द्, विद् धातुओंके उत्तर भाववाच्यमें अन होता है। अन-प्रत्ययनिष्पन्न शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं। यथा,

---

(१) "विशेषेण हि सामान्यं बाध्यते न क्वचित् क्वचित्।" संक्षिप्तसारके इस नियमके अनुसार प्रेरि तथा साधि धातुओंके उत्तर अन प्रत्ययसे प्रेरणा और साधना भी होते हैं।

घट्ट् घट्टना, वन्द् वन्दना (praise of gods), विद् वेदना (pain, knowledge)।

न (नङ्, नन्)।

२३४। "यजयाचयतविच्छप्रच्छरक्षो नङ्; स्वपो नन्।" यज्, यत्, स्वप्, प्रच्छ्, याच्, विच्छ् और रक्ष् धातुओंके उत्तर भाववाच्यमें न होता है। यथा, यज्ञः (sacrifice), यत्नः (effort), स्वप्नः (dream, sleep), प्रश्नः (question), याच्ञा (beggary), विश्नः रक्ष्णः (protection)।

यक् (क्यप्)।

२३५। "व्रजयजोर्भावे क्यप्।" व्रज्, विद्, शी, यज्, धातुओंके उत्तर भाववाच्यमें यक् होता है; क् इत्, य रहता है। यक् प्रत्यय-निष्पन्न शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं। यथा, व्रज—व्रज्या, प्रव्रज्या, परिव्रज्या (asceticism); विद् विद्या (learning) शी शय्या, यज् इज्या। परिपूर्वक चर्, परिपूर्वक सृ, यङन्त अट् तथा मृग इनके उत्तर श प्रत्यय और यक् होता है। परिचर्, परिचर्य्या (service); परिसृ परिसर्य्या; मृग्—मृगया; अटाट्य अटाट्या (hunting)।

"कृञः श च।" कृ धातुके उत्तर श-प्रत्यय भी होता है "श" मैंसे श् इत् अ रहता है और निष्पन्न शब्द स्त्रीलिङ्ग होता है। यथा, कृ+यक्=क्रिया, कृ+क्यप् = कृत्या (act, action)। कृ क्तिन् कृतिः।

अतिरिक्त।

उणादि प्रत्यय।

उण—कृ कारुः an artist, mechanical art ; वा वायुः air, wind ; स्वद् स्वादुः sweet ; साध् साधुः a saint ; अश् आशु soon ; रह् राहुः।

ञुण्—दृ दारुः wood ; सन् सानुः a tableland; जन् जानुः knee ; चर् चारुः charming ; वह् वाहुः arm ; तृ तालुः, palate.

उ—मृ मरुः a desert ; तृ तरुः a tree ; तन् तनुः body ; कट् कटुः pungent ; वस् वसु wealth ; बन्ध् बन्धुः friend ; मन् मनुः Manu, मधु honey ; विद् विन्दुः drop, mark, point, spot ; हन् हनुः jaw ; स्यन्द् सिन्धुः ocean ; उन्द् इन्दुः moon ; इष् इषुः arrow और इच्छु a desirous ; सृज् रज्जुः rope ; जन् जतु lac ; व्यध् विधुः moon ; गृ गुरु; heavy, the spiritual guide ; रप् रिपुः enemy ; ऋज् ऋजुः straight ; दृश् पशुः beast ; बाध् बाहुः arm ; शो शिशुः an infant.

किरच्—मद् मदिरा wine ; मन्द् मन्दिरम् temple, house ; तिम् तिमिरम् darkness ; रुच् रुचिरम् pleasing ; रुध् रुधिरम् blood ; बन्ध बधिरम् deaf ; स्था स्थिरम् fixed, स्थविरः old ; श्रन्थ् शिथिलम् loose ।

इलच्—सल् सलिलम् water ; अल् अनिलः air ; मह् महिला female.

ओरन्—कठ् कठोरः hard, cruel ; चक् चकोरः a kind of bird ; किश् किशोरः youth.

गन्—भृ भृङ्गः bee ; श्रृ शृङ्गम् horn ; गम् गङ्गा the Ganges.

ऊरन्—मी मयूरः peacock ; स्यन्द् सिन्दूरम् vermilion.

तुन्—सि सेतु bridge; हि हेतुः origin, cause; धा धातुः metal, root; ऋ ऋतुः season ; कृ क्रतुः sacrifice ; तम् तन्तुः thread ; जन् जन्तुः animal ; चि केतुः flag, mark.

ऊ—चम् चमूः army ; तन् तनूः body ; वह् वधूः wife, daughter-in-law.

मन्—स्तु स्तोमः heap, sacrifice ; सु सोमः moon, Soma juice ; हु होमः burnt offering ; धृ धर्म्मः that which holds, religion; ग्रस् ग्रामः village, scale in music ; क्षि क्षेमम् welfare ; पद् पद्मम् lotus.

मक्—हन् हिमम् dew, snow; युज् युग्मम् pair, couple; तिज् तिग्मम् warm; भी भीमः भीष्मः horrible, dreadful; घृ घर्म्मः sweat; ग्रस् ग्रीष्मः hot, warm, summer.

रक्—छिद् छिद्रम् hole defect; वञ्च् वक्रम् curve; क्षिप् क्षिप्रम् swift; इन्द् इन्द्रः, शक् शक्रः Indra; क्षुद् क्षुद्रः small; चन्द् चन्द्रः moon; वप् वप्रः rampart; शुभ् शुभ्रः white; शुच् शुक्रः the planet Venus.

तृच्—हु होतृ होता the priest who performs a sacrifice; भ्राज् भ्रातृ भ्राता; मा मातृ माता; पा पितृ पिता; दुह् दुहितृ दुहिता daughter.

अनि—ऋ अरणिः a piece of dry wood used for generating fire; सृ सरणिः a straight path; धृ धरणिः, अव् अवनिः the earth; तृ तरणिः boat.

उसि—वप् वपुः, धन् धनुः bow; इ आयुः age, duration of life; चक्ष् चक्षुः।

नक् उष् उष्णः warm; मी मीनः fish; कृष् कृष्णः black; कॄ कर्णः ear; सि सेना army.

प—पा पापः sin; स्तृ स्तूपः heap, mound; सू सूपः sauce; कू कूपः a well; यू यूपः a sacrificial post; शील् शिल्पम् art; शस् शष्पम् green grass.

नु— भा भानुः the sun; धे धेनुः cow; सु सुनुः son; स्था स्थाणुः fixed, steady, a post or a pillar; विष् विष्णुः; री रेणुः dust.

उनन्—कृ करुणः kind; वृ वरुणः the god of waters; तृ तरुणः youthful, new; ऋ अरुणः the dawn, red, tawny; मिथ् मिथुनम् pair, couple.

अन्य—राज् राजन्यः one of the royal castes; शॄ शरण्यः one able to give protection; ऋ अरण्यम् forest.

मि—नी नेमिः circumference of a wheel; भू भूमिः earth, soil; अश् रश्मिः ray of light.

नि— अङ्ग् अग्निः, वह वह्निः fire; श्रि श्रेणिः row, class; यु योनिः source, origin; हा हानिः loss, injury.

इन्—हृ हरिः Vishnu ; शुच् शुचिः clean, pure ; कृष् कृषिः agriculture ; मन् मुनिः a sage ; रु रविः the sun ; कु कविः poet ; ऋ अरिः enemy ; ऋष् ऋषिः sage, saint ; तॄ तरिः boat ; अल् अलिः bee.

यक्—जन् जाया wife.

अलिच्—अञ्ज् अञ्जलिः joined palms.

उलि—अङ्ग् अङ्गुलिः finger.

उरन्—अस् असुरः demon ; शु+अश् श्वशुरः father in-law.

टिषच्—मह् महिषः buffalo ; किल् किल्बिषम् sin.

ख—शम् शङ्खः conch, shell.

उत—मृ मरुत् air ; गृ गरुत् wing.

इति—हृ हरित् green ; सृ सरित् river ; युष् योषित् woman.

ठ—कण् कण्ठः throat.

कल—वृष् वृषलः a reprobate ; सृ सरलः sincere ; तृ तरल- liquid ; लङ्ग् लाङ्गलम् plough ; कश् कश्मलम् dejection.

कयन्—तन् तनयः son ; मल् मलयः a mountain of this name.

रु—मि मेरुः the holy mountain Meru ; अश् अश्रु tear ; शद् शत्रुः enemy.

ष्ट्रन्—वस् वस्त्रम् cloth ; अस् अस्त्रम् a missile ; शस् शस्त्रम् weapon ; छद् छत्रम् umbrella.

द्वित्व-विधि।

१। "नित्यवीप्सयोः"—"आभीक्ष्ण्ये वीप्सायां च द्योत्ये पदस्य द्विर्वचनं स्यात्।" पौनःपुन्य अर्थमें तिङन्त तथा अव्यय संज्ञक कृदन्त पदको द्वित्व होता है और वीप्सा अर्थमें प्रातिपदिकको द्वित्व होता है। यथा, पचति पचति, भुक्त्वा भुक्त्वा ; वृक्षं वृक्षं सिञ्चति ; ग्रामो ग्रामो रमणीयः।

२। "परेर्वर्जने" वर्जन अर्थ बोध होनेसे परि इस उपसर्गको द्वित्व होता है। यथा, परि परि वङ्गेभ्यो वृष्टो देवः वङ्गान् परिहृत्य इत्यर्थः।

३। "उपर्यध्यधसः सामीप्ये।" सामीप्य अर्थमें उपरि, अधि और अधस् शब्दोंको द्वित्व होता है। यथा, उपर्युपरि ग्रामम् ग्रामस्योपरिष्टात् समीपे देशे इत्यर्थः ; अध्यधि सुखम् सुखस्योपरिष्टात् समीपकाले दुःखमित्यर्थः ; अधोऽधो लोकम् लोकस्याधस्तात् समीपे देशे इत्यर्थः।

४। "वाक्यादेरामन्त्रितस्यासूयासम्मतिकोपकुत्सनभर्त्सनेषु।" असूया, सम्मति, कोप, कुत्सा और भर्त्सन अर्थोंमें वाक्यके आदिस्थित आमन्त्रितको (अर्थात् सम्बोधन पदको) द्वित्व होता है। यथा, असूया—सुन्दर सुन्दर वृथा ते सौन्दर्य्यम्; सम्मति—देव देव वन्द्योऽसि; कोप—दुर्विनीत दुर्विनीत इदानीं ज्ञास्यसि; कुत्सा—धानुष्क धानुष्क वृथा ते धनुः; भर्त्सन—चौर चौर घातयिष्यामि त्वाम्।

५। "एकंबहुव्रीहिवत्।" द्विरुक्त एक-शब्द बहुव्रीहि समासके ऐसा होता है। यथा, एकैकम् अक्षरम्, एकैकयाहुत्या।

६। "आबाधे च।" पीड़ा बोध होनेसे शब्दको द्वित्व होता है। यथा, गतगतः (विरहात् पीड्यमानस्येयमुक्तिः)।

७। "प्रकारे गुणवचनस्य।" सादृश्य बोध होनेसे गुणवचनको द्वित्व होता है और कर्मधारयवत् कार्य्य होता है। यथा, पटुपट्वी, पटुपटुः पटुसदृशः ईषत्पटुरिति यावत्।

८। "अकृच्छ्रे प्रियसुखयोरन्यतरस्याम्।" कष्ट बोध न होनेपर प्रिय और सुख शब्दोंको विकल्पसे द्वित्व होता है। यथा, प्रियप्रियेण ददाति प्रियेण वा; सुख-सुखेन ददाति सुखेन वा, अतिप्रियमपि वस्तु अनायासेन ददातीत्यर्थः।

सुट् प्रत्याहार।

१। "सुट् कात् पूर्व्वः।" कृ-धातुके ककारके पूर्व्वमें सम् आदि उपसर्गोंके परे अट्के अ तथा द्वित्व किये शब्दके व्यवधानमें भी सुट् होता है; उ ट इत्, स् रहता है। यथा, सञ्चस्कार, समस्कृत।

२। "सम्परयुपेभ्यः करोतौ भूषणे, समवाये च।" कृ-धातुके ककारके पूर्व्वमें भूषण और समवाय (समूह) अर्थोंमें सम्, परि और उप इन उपसर्गोंके परे सुट् (स्) होता है। यथा, संस्करोति भूषयतीत्यर्थः, संस्कुर्व्वन्ति सङ्घीभवन्तीत्यर्थः। ऐसे परिष्करोति, उपस्करोति सम्पूर्व कृको किसी अन्य अर्थमें भी सुट् होता है। यथा, संस्कृतं भक्ष्याः।

३। "उपात् प्रतियत्नवैकृतवाक्याध्याहारेषु च।" कृ-धातुके ककारके पूर्व्वमें प्रतियत्न, विकार, वाक्याध्याहार (आकाङ्क्षितैकदेशपूरण) अर्थोंमें उप उपसर्गके परे सुट् (स्) होता है। यथा, उपस्कृता कन्या अलङ्कृतेत्यर्थः; उपस्कृता ब्राह्मणाः समुदिता इत्यर्थः; एधोदकस्योपस्कुरुते गुणाधानं करोतीत्यर्थः; उपस्कृतं भुङ्क्ते विकृतमित्यर्थः; उपस्कृतं ब्रूते वाक्याध्याहारेण ब्रूते इत्यर्थः।

४। "अपाच्चतुष्पाच्छकुनिष्वालेखने ; सुट्।" कृ-धातुके ककारके पूर्व्व में आलेखन अर्थमें अप-उपसर्गके परे सुट् (स्) होता है। यथा, अपस्किरते वृषो हृष्टः ; अपस्किरते कुक्कुटः आहारान्वेषणाय ; अपस्किरते सारमेयः वासग्रहणेच्छया।

५। "हिंसायां प्रतेश्च।" कृ-धातुके पूर्व्वमें हिंसा-अर्थमें उप और प्रति इन उपसर्गों के परे सुट् (स्) होता है। यथा, उपस्किरति, प्रतिस्किरति।

६। "गोष्पदं सेवितासेवितप्रमाणेषु।" सेवित, असेवित और प्रमाण इन अर्थों में पद शब्द परे रहनेसे गो शब्दके उत्तर सुट् (स्) होता है। यथा, गोभिः सेवितः देशः गोष्पदः। "आस्पदं प्रतिष्ठायाम्।" प्रतिष्ठा अर्थमें आस्पद होता है।

EXERCISE.

1. *Translate into Sanskrit* :—*Heaving* (नि+श्वस्) a deep sigh, Ram said this to Lakshman. Hearing a cry at a distance, the king called his servants and ordered them to enquire and report its cause. *Rising* (उत्+स्था) early in the morning, Hari washes his face and reads his school books for three *hours* (घटिका) every day. I never *undertake* (कृ) any work without *consulting* (प्रच्छ्) my mother whose advice is always prudent and sound. Having eaten my *breakfast* (प्रातराश), I shall go to Calcutta to buy books for my sons. *Therefore, it is of no use* (तदलम्) *to continue in this state of idleness* (अवलम्ब्या व्यवसायबन्ध्यताम्) *which stands in the way* (प्रतिपक्षम्) of your *advancement* (उन्नति). This man has *acquired* (अर्ज्) vast amount of money by unfair means. What has been done by you? On hearing that terrible sound, my wife fell down in a swoon. By whom was this whole world created? They *studied* (अधि+इ) Sanskrit literature with me for four years. Who has saved you from that danger but my father? When it was *said* (ब्रू) by you in the meeting, we *went away* (प्र+स्था) from that place. Having

thought (मन्) the beast to be a dog and having *placed* (नि+धा) it on the ground, the Brahmin went away. Industry is the mother of good luck. If you wish to prosper, you should be labourious. Be always grateful to your benefactor. Ram taking Hari by the hand, fondly asked him to be his friend to the last moment of his life. A liar deserves censure but a truthful man deserves praise. You should not act in haste for imprudence leads to great danger. Who *can change* (प्रतीपयेत्) the course of water going downwards ? How long has your friend been an ascetic ? *May he not be born at all* (तस्याजननिरेवास्तु) who, though smarting under the pain of *the contempt of others* (परावज्ञा), *still* (अपि) lives. The *survivors* (शेषाः) *putting off* (अपनीत) their *head dress* (शिरस्त्राण) *submitted* (शरणं ययुः) to him *because the wrath of the great is appeased by submission* (प्रणिपातप्रतीकारः संरम्भो हि महात्मनाम्). The mind undoubtedly recognises the associations (सङ्गति) of *former birth* (जन्मान्तर). *Fortunately* (दिष्ट्या) that king has not deviated from the *kingly duties* (राजधर्म्म). *How* (कथम्) can Sita live by falling from one sorrow to a greater one ? Wealth *unquestionably* (निःसन्देहम्) is a good thing but it should be acquired by honest means and spent *for useful porposes* (सन्निमित्ते) only.

2. *Substitute single Sanskrit words for* :—पयांसि धीयन्ते अस्मिन् ; तमः अपहन्ति यः; करोति यः; दुःखेन सह्यते ; सरति आकाशे यः ; स्वयमेव पच्यन्ते ; भुवि चरति यः ; कृतं हन्ति यः ; निन्दाम् अर्हति यः; उदरेण शेते यः; तनुं त्रायते यत् ; मधु पिबति यः ; कामं दोग्धि या ; शोकं अपहन्ति यः ; पुनःपुनः मिथ्या वदति यः ; न सूर्य्यमपि पश्यतीति; आत्मानं पण्डितं मन्यते इति ; उरसा गच्छति यः ; भूयते अस्मिन् ; पाकेन निर्वृत्तम् ; पूयते अनेन ; दशति अनया ; वृत्रं जघान ; शास्त्रं वेत्तीति ; अप्रियः प्रियो भवति ; फलानि गृह्णाति ; स इव पश्यति ; पारं दृष्टवान् ; यः पुनःपुनः मित्राय द्रुह्यति।

3. *Derive:*—हानि, भृत्य, ब्रह्मोद्य, मूढ, संग्राम, आसीन, ब्रह्मभूय, विद्वस्, जुह्वत्, अस्त, शुष्क, अभिहित, शान्त, मन्वान, मिमान, जगन्वस्, विलग्न, अधिप, अजीत्य, युक्त, विप्रदर्शम्, कथङ्कारम्, प्रणमय्य, सिंह, जगत्, दुर्गम, जग्ध्वा, अरिहन्, उषित्वा, सुप्त, क्षाम, लिप्सु, लिप्सा, शिष्य, सुराप, जय, गिरिश, अरण्य, व्याघ्र, अनिल, अवनि, सर्प, अब्ज, पतग, मुनि, युयुधान, यायावर, प्रमथ्य, शय्या, नश्वर, रात्रिञ्चर, पाचक, ज्ञ, विद, सम्राज्, आत्मम्भरि, सदृश, घातुक, स्तनन्धित्नु, स्तनन्धय, कृत्रिम, विश्वम्भरा, भयङ्कर, प्रियंवदा, बुध, नृप, रजक, विधि, उक्थ, अरुन्तुद, शित, भ्रष्ट, भिद्ध, द्यूत्वा, शास्त्रकार, निशाकर, अग्निचित्, कूलमुद्वह, संगृह्य, सामग, स्मार्य्य, पितृहत्या, पारग, संज्ञा, यत्न, प्रतारणा, व्यथा, मीमांसा, उपमा, वरिवस्या, भोग, अजननि, अज्ञर, जलपूक, स्मेर, गत्वर, मेदुर, त्वादृक्ष, द्विज, राग, क्रिया, कृत्या।

4. *Distinguish in meaning between* :—वाचंयम, वाग्याम; कर्म्मकर, कर्म्मकार: मांसविक्राय, मांसविक्रयी; वाच्य, वाक्य; भोज्य, भोग्य; नियोज्य, नियोग्य, नियोगी; धौत, धावितः; नीत, नीत; भारहर, भारहार; भव्य, भाव्य; वस्तव्य, वास्तव्य; स्तुत्य, स्ताव्य, शस्त, शंसित; ज्ञात, ज्ञ; अमी, अमिता।

5. *Give the alternative forms of* :—शात, कार्य्य, त्राण, ब्रह्मोद्य, वित्त, घ्राण, ह्रीत, मुग्ध, सित, ज्ञपित, आदत्त, तुरग, छादित, आगम्य, लिखित्वा, भुङ्क्त्वा, पूत्वा, शमित्वा, आत्त, वान्त, प्रणम्य, ईदृक्।

6. *Give single Sanskrit word for each of the following* :—One who has killed his brother. A bride who chooses her husband. One who has seen the other side. One who touches water. One who delights. One who performs sacrifices frequently. One who goes on foot. One who considers himself a Pandita. One who does not see the sun even. One who takes a share. What ought to be felled. What ought to be approached.

7. *Distinguish between the uses of* शतृ *and* शानच्, ण्यत् *and* यत्, क्वसु *and* कानच्, क्त्वा *and* ल्यप्, *giving examples, and explain the use of* तुम्. *Say where* क्त *is used in* कर्तृवाच्य।

8. *Correct* :—त्वं विद्यालयं गन्तव्यं ; ब्रह्मणा जगत् पुनः सृजितव्यः; वीतरागोऽहं इदं व्रतमध्यवसितम् ; समूलघातमहं शत्रु विनाशयामि ; मैतत् मम हस्ते अर्पित्वा गच्छ ; राम शत्रुन् पराजयन् सोत्साहं रणाङ्गने विचचार ; स नृपः मन्त्रिषु राज्यभारं निहित्वा देशान्तरं निर्गतः ; रामादर्शनजः शोकः प्राणैः आरुजतीव मे ; गजो वृक्षेभ्यः पतमानानि फलानि भक्षयति ; त्वया वीजानि उप्त्वा फलञ्च लब्धः ; आज्ञा गुरूणाम् ह्यविचारणीयम् ; दुर्जनैः सह वसित्वा सज्जनो दुर्जनो भवेत् ; दोषा वाच्यं गुरोरपि ; आत्मानं मृतवत् सन्दर्शयित्वा, वायुना उदरं पूर्य्य, पदानि स्तब्धीकृत्वा अत्र तिष्ठ ; सदैव सत्यं ब्रूयात् ; कदापि मिथ्यां न कथनीयं ।